व० गेओर्गियेव, व० कोप्तेव्स्की,
ये० रुम्यान्त्सेव, ग० श्चेर्बाकोव

सोवियत-भारत संबंध

राजनयिक सबधो की ५०वीं जयती के
उपलक्ष्य में

प्रगति प्रकाशन मास्को



पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लिमिटेड
५ ई रानी झांसी रोड नई दिल्ली ११००५५



राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम.आई. रोड, जयपुर-[illegible]

अनुवादक म० क० अवस्थाव
संपादक सुरेन्द्र कुमार

Георгиев В Н., Коптевский В Н.,
Румянцев Е А Щербаков Г А
СОВЕТСКО ИНДИЙСКИЕ ОТНОШЕНИЯ
на языке хинди

V N Georgiyev V N Koptevsky
E A Rumyantsev G A Shcherbakov
SOVIET INDIAN RELATIONS
in Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित

C $\frac{0802010100-599}{014(01)-87}$ 357-87

विषय-सूची

अध्याय १। मध्य मार्ग का सूत्रपात

अध्याय २। सहयोग के बढ़ते संबंध-सूत्र ३२

अध्याय ३। पृथ्वी पर शांति और सुरक्षा के हितार्थ ५०

अध्याय ४। आर्थिक और तकनीकी सहयोग ८७

अध्याय ५। दो महान जनगण के आत्मिक सामीप्य के ध्वजवाहक १४८

अध्याय १

मध्य-मार्ग का सूत्रपात

सोवियत भारत सबधो के गौरवमय इतिहास मे १३ अप्रैल, १९४७ की तिथि का विशेष स्थान है। दशाब्दिया बीतती जा रही हैं, सोवियत सघ और भारत की मैत्री और सहयोग का सतत विकास नयी-नयी मजिलो से गुजरता जा रहा है, परतु उस दिन की घटना का महत्व पूर्ववत उज्ज्वल बना हुआ है, जब सोवियत सघ और भारत न राज-नयिक सबधो की स्थापना की औपचारिक रूप मे घोषणा की थी।

इस तथ्य का विशेष अर्थ था ससार के प्रथम समाजवादी राज्य और अफ्रो एशियाई देशो मे से एक वृहत्तम देश ने, जो लगभग दो सदी तक औपनिवेशिक जूए से बधा रहा, एक दूसरे को मान्यता देकर सहयोग बढाने की पारस्परिक कामना प्रकट की।

परस्पर अच्छे पडोसी जैसे सपर्क स्थापित करने और एक दूसरे की सभ्यताओ को सास्कृतिक दृष्टि से समृद्ध करने की हमारे जनगण की इच्छा अतीत मे उत्पन्न हुई थी। भारत का उल्लेख रूस के प्रथम इतिवृत्तात्मक वर्णनो म देखने को मिलता है। रूसी लोगो म, जैसा कि पुराने जमाने मे कहा जाता था, "मनीषियो के भारत" तथा उसके जनगण के विषय मे ज्ञान की प्राप्ति की अभिलाषा बहुत पहले पैदा हुई थी। १५वी सदी के उत्तरार्ध मे पुर्तगाली वास्को डि गामो से बहुत पहले त्वेर नगर के व्यापारी अफानासी निकीतिन ने जो रूसी जनता की मैत्री की भावना के वाहक पहले अग्रदूत थे, सुख्यात तीन समुद्र पार की यात्रा'—भारत की यात्रा—की थी। अपने सस्मरणो मे उन्होंने प्रतिभासपन्न तथा उद्यमी भारतीय जनता के जीवन-यापन, उसके रीति रिवाजो का चित्रमय वर्णन किया और भारतीय समाज म सस्कृति, व्यापार शिल्पो तथा सामाजिक सबधो के विकास के बारे मे अपन पर्यवलोकनो से रूसी जनता को अवगत किया।

१८वी सदी के लब्धप्रतिष्ठ रूसी प्रयोगधर्मा तथा वैज्ञानिक म० व० लोमो नोसोव ने भारत के साथ व्यापारिक संपर्कों को कायम करने के पक्ष में जोरदार आवाज उठायी थी। यह उल्लेखनीय है कि १७वी सदी में ही रूस के एक बड़े व्यापार केंद्र – अस्त्रखान – में भारतीय व्यापारियो की एक बस्ती थी। यहां से भारतीय वस्तुएं मास्को आदि रूसी नगरो को भेजी जाती थी। अस्त्रखान के राज्यपाल के निर्देश में भारतीय व्यापारियों के प्रति सद्भावना बरतने और उनकी हर प्रकार से सहायता करने के आदेश दिये गये थे। अस्त्रखान में आबाद भारतीय रूस के प्रति सद्भावना का परिचय देते थे। इसका एक ज्वलंत उदाहरण यह है कि १८१२ के देशभक्तिपूर्ण युद्ध के समय, जब रूसी जनता फ्रांसीसी हमलावरों से लोहा ले रही थी, अस्त्रखान स्थित भारतीय समुदाय ने देश के रक्षा-कोष में २० हजार रूबल जमा किये थे जो उस जमाने के हिसाब से काफी बड़ी रकम थी।

१७८८ में 'भगवद्गीता' रूसी में प्रकाशित हुई थी। कवि व० अ० जुकोव्स्की ने प्राचीन कथा 'नल और दमयंती' का रूपांतर किया, जिसका प्रकाशन १८४४ में पीटर्सबर्ग में हुआ था। महान रूसी कवि अ० स० पुश्किन भी प्राचीन भारत के साहित्य तथा दर्शन में गहरी रुचि लेते थे। उनकी रचनाओं में भारत का छब्बीस बार उल्लेख किया गया था। उदाहरणार्थ उनके 'रुस्लान और ल्युदमीला' काव्य में भारतीय लोक साहित्य की छाप स्पष्ट दिखायी देती है।

यह विदित है कि १८वी सदी के अंत तथा १९वी सदी के पूर्वार्ध के प्रमुख रूसी कवियों, लेखकों और इतिहासकारों ने प्राचीन भारतीय साहित्य एवं दर्शन की उत्कृष्ट कृतियों से रूसी समाज को परिचित कराने में बड़ा योगदान किया था। १७९२ में जाने-माने रूसी इतिहासकार और राजनेता न० म० करामजीन ने 'मास्कोव्स्की जुर्नाल' ('मास्को की पत्रिका') में कालिदास कृत 'शकुंतला' के प्रथम और चतुर्थ अंक छपवाये थे। चतुर्थ अंक के रूपांतर के प्राक्कथन में न० करामजीन ने लिखा: "इस नाटक के प्राय: प्रत्येक पृष्ठ पर मैंने काव्य का राजसी सौंदर्य, भावभीनी अनुभूतियां, कोमल, उत्कृष्टतम एवं अवर्णनीय सहृदयता पायी। मेरी राय में, कालिदास होमर जितने ही महान हैं।"*

---

* द० ई० बेल्किन, अ० स० पुश्किन की रचनाओं में भारत के विषय। – भारत १९८३ वार्षिकी, मास्को, १९८४, पृ० ३६०-३६१।

दो जनगण को समीप लाने मे रूस और भारत के उन सार्वजनिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओ का योग कम नही है, जिन्होंने सामाजिक एव राष्ट्रीय मुक्ति के लिए तथा अत्याचार और तानाशाही के विरुद्ध सग्राम किया था। रूस के प्रगतिमना लोग भारत मे राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन के उत्थान के प्रति गहरी सहानुभूति रखते थे और भारतीय वुद्धिजीवियो तथा जागरूक जनसमुदाय की उपनिवेश विरोधी मनोभावना को पूरी तरह से समझते थे। १८५७-१८५६ के विप्लव की रूस मे जोरदार प्रतिक्रिया हुई थी। पीटर्सबर्ग से प्रकाशित पत्रिका 'ओतचेस्त्वेन्निये जपीस्कि' ('पितृभूमि विषयक टिप्पणिया) ने लिखा था 'इस समय राजनीतिक जगत मे भारत के प्रश्न मे अधिक महत्वपूर्ण, अधिक रोचक और अधिक सजीदा प्रश्न शायद ही कोई और हो भारत से समाचारो का सभी निहायत बेसब्री से इतजार कर रहे हैं, अखबारो के कालमो मे सभी सर्वप्रथम जादूई शब्द ढूढ रहे है जैसे 'भारत', 'भारतीय डाक , 'कलकत्ता मे पत्र'।' *

रूसी समाज के अग्रणी लोगो, क्रातिकारी जनवाद के प्रतिनिधियो ने इस परिघटना को भारत के स्वाधीनता युग का सूत्रपात माना। रूसी क्रातिकारी-जनवादी न० अ० दोब्रोल्यूबोव ने इस पर उचित ही जोर दिया कि यह क्राति असतोष का सायोगिक विस्फोट नही, बल्कि ऐतिहासिक आवश्यकता का कार्य" है। ' जनता उठ खडी हुई है, उन्होंने लिखा था "क्योकि उसने स्वय आग्ल प्रशासन मे अततोगत्वा बुराई देख ली है।"**

१८६६ मे, जब भारत के विस्तृत प्रदेश अकालग्रस्त हुए, रूस मे अकालपीडितो की सहायतार्थ चदा जमा किया गया था।

लेव तोलस्तोय का भारतीय जनता के प्रति रुख बडे प्यार और सहानुभूति से भरा था। भारत के राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन मे नये प्राण सचारित करनेवाले महात्मा गाधी के साथ उनका गहन बौद्धिक सपर्क कायम हुआ था। "भारत के राष्ट्रपिता" यह मानते थे कि तोलस्तोय के व्यक्तित्व का उन पर बडा प्रभाव पडा। यास्नाया पोल्याना स्थित तोलस्तोय के आवास-सग्रहालय मे भारतीय साहित्यकारो की

* १८५७ १८५६ का भारत का गदर मास्को १६५७ पृ० २२६ २३०।
* वही पृ० २३२।

अनक पुस्तको मे महात्मा गाधी की 'इडियन होम रूल' ('भारत का स्वशासन') रचना भी सुरक्षित है, जिसके लेखक ने उसे रूस के प्रसिद्ध लेखक के पास भेजा था। दक्षिण अफ्रीका मे महात्मा गाधी के प्रवास काल म दोनो मे चिट्ठी-पत्री चलती रही। १ अक्तूबर, १९०९ को लिखे अपन पत्र म महात्मा गाधी ने तोलम्तोय को दक्षिण अफ्रीका म भारतीयो के साथ किये जानेवाले अत्याचार के बारे मे बताया था। ७ अक्तूबर, १९०९ के अपने पत्र म तोलस्तोय न दमन के खिलाफ सघर्षशील भारतीयो के प्रति प्रगाढ सहानुभूति प्रकट की।*

यह सुविदित है कि तोलस्तोय के दार्शनिक राजनीतिक दृष्टिकोण ने महात्मा गाधी के विश्वदृष्टिकोण तथा राष्ट्रीय मुक्ति के लिए सग्राम की अहिसा और सत्याग्रह जैसी विधियो के चयन पर उल्लेखनीय छाप डाली थी। लाक्षणिक है कि १९०७ मे लिखे 'हिंदू को पत्र' (तारक नाथ दास के नाम) मे तोलस्तोय ने एक राजनीतिक हथियार क नाते अग्रेजो के देशव्यापी बहिष्कार का सुझाव दिया था जिसमे कर चुकाने से इनकार करना प्रशासन तथा अदालत के काम मे हिस्सा न लेना आदि उपाय शामिल थे। महान रूसी लेखक न लिखा था "बुराई का विरोध न करे, किंतु खुद भी बुराई मे प्रशासन, अदालतो की हिसा, हस्ताक्षर सग्रह मे और सर्वोपरि सेना की हिसात्मक कार्रवाइयो मे भाग न ले तब दुनिया मे कोई भी शक्ति आपको गुलाम नही बना पायेगी। **

यह सुविदित है कि ध्येय सिद्धि मे अहिंसा के सिद्धात को महात्मा गाधी और लेव तोलस्तोय दोनो ने सर्वोपयोगी माना। भारत के राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन के नेता 'आत्मकथा' मे इस बात की आवश्यकता पर बल देते है कि मानवजाति को अतर्राष्ट्रीय कलह सुलझाने मे भी इस सिद्धात का पालन करना चाहिए। 'महात्मा गाधी' नामक अपने निबंध मे अ० गोरेव ने उचित ही लिखा कि "अततोगत्वा गाधी इस निष्कर्ष पर पहुचे कि शाति बनाये रखन का प्रश्न महज सरकारो के अधिकार क्षेत्र म ही नही आता जनगण की सद्भावना के प्रदर्शन तथा युद्ध के

म० म गमापूनाव सोवियत सघ और भारत की मैत्री का अभ्युदय उन्नति तथा सुदृढीकरण मास्को १९५६ पृ० २५।

अ० नीकमान लेव तोलस्तोय और पूरब, मास्को १९६९ पृ० २४२।

विरुद्ध सच्चे अर्थ में जनव्यापी आदोलन के माध्यम से शाति की रक्षा की जा सकती है"।* इतना ही नही, महात्मा गाधी के विचार मे शाति की रक्षा और दृढीकरण सामाजिक बुराई एव औपनिवेशिक गुलामी को मिटाने से घनिष्ठ रूप मे सबद्ध हैं।

महान रूसी लेखक मैक्सिम गोर्की ने अग्रेज उपनिवेशको के खिलाफ भारतीय जनता के बढते सघर्ष की हिमायत मे आवाज उठायी थी। उन्होंने लिखा था कि भारत मे राष्ट्रीय स्वतत्रता हासिल करने का विचार तेजी से फैल रहा है, यह प्रचार दिन प्रतिदिन जोर पकडता जा रहा है कि 'गगा के तटो पर ब्रिटिश तानाशाही का अत निकट आ गया है"।**

१६०५-१६०७ की पहली रूसी क्राति ने भारत पर जोरदार प्रभाव डालकर बहुत-से भारतीय देशभक्तो को स्वातत्र्य-सग्राम के सयुक्त उपायो से काम लेने, इस सग्राम मे आम जनता को खीचने के लिए प्रेरित किया था। रूसी मजदूरो के आम हडताल जैसे एक प्रमुख उपाय का उदाहरण महात्मा गाधी को भी अनुकरणीय लगा था। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान और रूस के बीच बहुत कुछ एकसमान है और अत्याचार के खिलाफ रूसी उपाय का हिंदुस्तान मे भी उपयोग करना सभव है।***

किंतु १६१७ में हुई महान अक्तूबर समाजवादी क्राति तथा विश्व मे पहले समाजवादी राज्य का आविर्भाव वे निर्णयकारी तथ्य सिद्ध हुए जिन्होंने सोवियत और भारतीय जनगण के बीच मित्रता तथा एकता को पुख्ता बनाने म अपरिमित योग दिया है। महान अक्तूबर का भारत पर, भारतीय जनता के राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन पर जो प्रभाव पडा इसकी सर्वाधिक सटीक परिभाषा श्रीमती इदिरा गाधी ने की थी। उन्होंने कहा कि "महान अक्तूबर समाजवादी क्राति का हमारे नेताओ ने मानवजाति के समूचे इतिहास मे महानतम परिघटना के रूप मे सोत्साह स्वागत किया था। इस क्राति के महान नेताओ, खास तौर पर महान लेनिन ने ससार भर मे सर्वत्र आर्थिक और सामाजिक प्रश्नो के मामले मे लोगो के चितन पर प्रभाव ही नही डाला, अपितु उसे

---

* अ गोरेव महात्मा गाधी मास्को १६८४ पृ० १२३।

** ल० स० गमायूनोव सोवियत सघ और भारत की मैत्री का अभ्युदय, उन्नति तथा दृढीकरण मास्को १६५६ पृ० २३।

*** ए० न० कोमारोव अ० द० लिटमन मोहनदास करमचंद गाधी का दर्शन मास्को १६६६ पृ० ७१।

भरमार किया। मेरी राय में यह समझाने की कोई आवश्यकता नहीं है कि क्रांति ने हमारे मुक्ति आन्दोलन पर जबर्दस्त असर डाला।'* अक्तूबर के प्रभाव से जिसने मानवजाति के इतिहास में नये युग का सूत्रपात किया भारत और अन्य एशियाई देशों में राष्ट्रीय-मुक्ति आन्दोलन का उत्थान आरम्भ हुआ। वास्तविक जन-सत्ता की स्थापना सोवियत रूस में उनकी हुई सामाजिक-आर्थिक जातीय, नृजातीय, आदि समस्याएँ सुलझाने के अनुभव ने भारत के स्वातन्त्र्य-सेनानियों को उत्प्रेरित किया उनमें नयी-नयी शक्तियों को सचारित किया। रूस पर मेरी कहानी में जवाहरलाल नेहरू ने लिखा था 'सोवियत रूस भारी भारी कठिनाइयों पर विजय पा चुका है और इस नयी व्यवस्था की तरफ लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ बहुत आगे बढ़ गया है। जब ससार के दूसरे मुल्क मन्दी में जकड़े हुए थे कई दशाओं में पीछे की तरफ जा रहे थे तब सोवियत देश में हमारी आखो के सामने, एक नई ही दुनिया बनाई जा रही थी। महान लेनिन के पदचिह्नों पर चलते हुए रूस की निगाह भविष्य पर थी और उसे केवल इसी बात का विचार था कि आगे क्या होना है। लेकिन ससार के दूसरे देश तो भूतकाल के प्रहार से सुन्न हुए पड़े थे और बीते युग के निरर्थक स्मृति चिह्नों को अक्षुण्ण रखने में ही अपनी ताकत लगा रहे थे।' **

अत इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि अग्रेज औपनिवेशिक सत्ता सोवियत सघ और भारत के जनगण के एक दूसरे के निकट आने की राह में असख्य बाधाएं डाल रही थी सोवियत यथार्थ के बारे में सचाई फैलने नहीं देती थी। इस कारण वे भारतीय देशभक्त अधिक आदर तथा प्रशसा के पात्र है, जो विकट कठिनाइयों को पार करते हुए अक्तूबर क्रांति के पश्चात प्रथम वर्षों में सोवियत देश की यात्रा किया करते थे और समाजवाद के निर्माण में रत सोवियत लोगों के साथ एकताभाव प्रकट करते थे। नवबर १९१८ में प्रथम भारतीय शिष्टमडल सोवियत रूस पहुचा था। उस द्वारा लाये गये अभिनदन सदेश में सोवियत जनता को 'महान विजय के लिए बधाई दी गयी

---

* Speech of Smt Indira Gandhi P M at the National Convention of Friends of Soviet Union N D May 27 1981

** जवाहरलाल नेहरू मेरी कहानी नई दिल्ली आठवा सस्करण १९४२ पृ० ४०७।

थी, जो सारे ससार के जनवाद की खातिर उपलब्ध की गयी है' और उसमे उन "उदार तथा मानवीय उसूलो की तारीफ की गयी थी जिन्हे सोवियत श्रमिक जनो ने सत्ता को हाथ मे लेकर उद्घोषित किया था"।* २३ नवबर, १६१८ को शिष्टमडल की ब्ला० इ० लेनिन से भेंट हुई।

समाजवादी क्राति के नेता भारत की जनता के मुक्ति सग्राम के उत्कर्ष मे लगातार अगाध रुचि ले रहे थे। उन्होंने औपनिवेशिक गुलामी पर उसकी जीत मे गहरा विश्वास किया भारत की धरती पर उपनिवेशको के जुल्मो, मनमानपन तथा हिसा की कटु निदा की। १६१६ मे ब्ला० इ० लेनिन के सचिव ने उनके निर्देश पर 'अमृत बाजार पत्रिका' के सपादक के नाम एक पत्र भेजा किंतु यह अग्रेज अधिकारियो के हाथो मे पड गया और १६६६ मे जाकर ही वह प्रकाशित हो सका। १३ अप्रैल, १६१६ को अग्रेज शासको द्वारा अमृतसर के जलियावाला बाग मे निहत्थे लोगो के हत्याकाड की पत्र मे सख्त भर्त्सना की गयी थी। पत्र मे बताया गया था कि "ब्ला० इ० लेनिन ने आपके सम्मानित समाचारपत्र मे जलियावाला बाग के चौक मे हत्याकाड के बारे मे पढा है। उन्होंने मुझे भारत की जनता का यह सदेश प्रेषित करने के लिए कहा है कि सोवियत सरकार अपने भारतीय भाइयो के न्यायपूर्ण ध्येय के साथ पूर्ण सहानुभूति रखती है।"

मो० क० गाधी मे लेनिन की गहरी अभिरुचि थी। यद्यपि दोनो के विश्व दर्शन भिन्न थे तथापि उनमे एक दूसरे के प्रति बडा आदर-भाव था। लेनिन की नजर मे महात्मा गाधी राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन के महान नेता और प्रगाढ देशभक्त थे। महात्मा गाधी की भी लेनिन के प्रति अत्यधिक सद्भावना थी। उनके शब्दो मे, "लेनिन जैसी महान विभूतियो के आत्मबलिदान से आलोकित आदर्श व्यर्थ नही जा सकता।'

अपने अस्तित्व के आरभिक दिनो से ही सोवियत राज्य ने शाति और उत्पीडित व पददलित कौमो के साथ एकता के लिए प्रयास को अपनी विदेशनीति का बुनियादी उसूल घोषित किया था। सुविख्यात रूस और पूरब के मेहनतकश मुसलमानो को जन कमिसार परिषद का

---

* स० समायूनोव सोवियत सघ और भारत की मैत्री का अभ्युदय उन्नति तथा दृढ़ीकरण, मास्को १६७६ पृ० २७।

सदश म जो ३ दिसबर, १९१७ को स्वीकृत किया गया था, कहा गया था रूस की श्रमिक जनता की एक ही इच्छा है सच्ची शाति हासिल करना और आजादी जीतने मे दुनिया के उत्पीडित जनगण की सहायता करना। *

सोवियत रूस द्वारा जनगण के स्वतत्र विकास और आजादी के अधिकारो के अविचल तथा अडिग समर्थन ने भारत के स्वातत्र्य-सेनानियो को सशक्त प्रेरणा दी, और वे औपनिवेशिक शासको की दमनकारी तथा स्वेच्छाचारी कार्रवाइयो के बावजूद राष्ट्रीय-मुक्ति आदोलन को नित नयी शक्ति से आगे बढाते रहे। मार्च, १९२० मे भारतीय क्रातिकारी सघ ने एक प्रस्ताव स्वीकृत किया था, जिसम रूस के प्रति "अन्य उत्पीडित जातियो की स्वतत्रता प्राप्ति की ओर लक्षित उसके ऐतिहासिक सघर्ष के लिए' आभार प्रकट किया गया था। प्रत्युत्तर सदेश म लेनिन ने लिखा 'मुझे यह सुनकर बडी खुशी हुई है कि मजदूरो और किसानो के जनतत्र ने देशी और विदेशी पूजीपतियो के शोषण से उत्पीडित राष्ट्रो की मुक्ति और उनके आत्मनिर्णय के जिन सिद्धातो की घोषणा की है उनका अपनी आजादी के लिए वीरतापूर्वक लडने वाले सचेतन भारतीयो ने जोरदार स्वागत किया है। **

उपनिवेशक सत्ताधिकारियो द्वारा भारतीय और सोवियत जनगण के आपसी सपर्क के मार्ग मे डाली गयी सब तरह की अडचनो के बावजूद सोवियत रूस मे नवजीवन का निर्माण सघर्षरत भारत के महान मनीषियो को अपनी ओर खीच रहा था, उनमे दिलचस्पी जगा रहा था। १९२७ मे अक्तूबर क्राति की दसवी सालगिरह के दिनो मे मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरू सोवियत सघ की यात्रा पर आये थे। मास्को म चार दिन के आवास के दौरान उन्होने लाल चौक मे समारोही प्रदर्शन देखे व्ला० इ० लेनिन की समाधि और क्राति सग्रहालय मे पहुचे थे उनकी सोवियत राज्य के प्रधान म० इ० कलीनिन तथा विदेशमत्री ग० व० चिचेरिन के साथ मुलाकात व बातचीत हुई। उस समय जवाहरलाल नेहरू ने लिखा था मुझ पर उन विवरणो का बडा असर पडा जिनम सोवियत शासन के पिछडे हुए मध्य-एशियाई प्रदेशो की बडी भारी तरक्की का हाल दिया गया था। इसलिए कुल

* सोवियत सघ की विदेशनीति के दस्तावेज खड १ मास्को १९५७ पृ ३४।
** व्ला इ० लेनिन भारतीय क्रातिकारी सघ के नाम २० मई १९२०।

मिलाकर मेरी राय तो सब तरह से रूस के पक्ष मे ही रही, और मुझे सोवियत तत्रो की मौजूदगी और मिसाल अधेरी और दुखपूर्ण दुनिया मे एक प्रकाशमय और उत्साह देनेवाली चीज मालूम हुई।" *

१६३० मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर सोवियत सघ की यात्रा पर आये। इस यात्रा ने महाकवि के मन पर अमिट छाप डाली। 'रूस से पत्र' शीर्षक उनकी पुस्तक ने साम्राज्यवादी प्रचार द्वारा इस देश के बारे मे फैलाये गये झूठ और लाछनो को बेनकाब किया था। इसलिए यह ताज्जुब की बात नही है कि औपनिवेशिक हुकूमत ने इस पुस्तक को निषिद्ध घोषित किया। इसमे रवि ठाकुर ने उस "असीम उत्साह" का वर्णन किया, "जिससे रूस बीमारियो और निरक्षरता को मिटाने की कोशिश कर रहा था, और जाहिली तथा गरीबी का अत करने मे सफलता पाकर उसने विशाल महाद्वीप के माथे पर अपमान का कलक धो दिया।"

महान साहित्यकार ने सस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र मे सोवियत जनता की उपलब्धियो तथा ज़ारशाही रूस के भूतपूर्व सरहदी जातीय इलाको के पिछडेपन को मिटाने जैसे विराट कार्यो मे गहरी रुचि ली। उन्होने इगित किया कि सोवियत सघ मे शिक्षा सभी को सुलभ है, कि उसका लक्ष्य जनता के सास्कृतिक स्तर को ऊपर उठाना तथा उसे सदियो पुराने पिछडेपन से मुक्ति दिलाना है। उनका मत जवाहरलाल नेहरू के मत के, जो सोवियत सघ मे समाजवाद के निर्माण मे प्राप्त उपलब्धियो की तारीफ करते थे बहुत सदृश था। 'हिंदुस्तान की कहानी' मे जवाहरलाल नेहरू ने लिखा 'लेकिन हमारे सामने जो सबसे बडी मिसाल थी, वह थी सोवियत सघ की, जिसने लडाई, आतरिक सघर्ष और अदम्य प्रतीत होनेवाली कठिनाइयो से भरे बीस बरसो के अदर ही बडी भारी तरक्की की थी। साम्यवाद की तरफ कुछ लोग खिचे और कुछ लोग नही भी खिचे थे, लेकिन सब लोग शिक्षा, सस्कृति स्वास्थ्य प्रबध, शरीर रक्षा और राष्ट्रीयताओ के मसलो के हल के बारे मे सोवियत सघ की प्रगति से आकर्षित हुए थे। वे लोग पुराने पचडो से सोवियत सघ के एक नया ससार बनाने के आश्चर्यपूर्ण भगीरथ प्रयत्न से प्रभावित थे।' **

---

* उपरोक्त, पृ० ५०७-५०८।

** जवाहरलाल नेहरू हिंदुस्तान की कहानी, नई दिल्ली १६६६ पृ० ५०६ ५१०।

सोवियत संघ की यात्रा संबंधी अनुभूतियां ने, जिनको बाद में रवि ठाकुर और जवाहरलाल नेहरू ने अपने संस्मरणों में विस्तारपूर्वक बताया था। ज़ार तत्र पिछड़े रूस में, जिसके और भारत के सामाजिक आर्थिक पहलू बहुत कुछ एकसमान थे, समस्याओं सुलझाने के तजुर्बे की उनकी समझ ने सोवियत संघ और भारत के मैत्रीपूर्ण संबंध तथा दोनों जनगण को एक दूसरे के प्रति अनुराग बढ़ाने में सहायता पहुंचायी थी।

इसकी ज्वलंत अभिव्यक्ति थी फासिस्ट आक्रमण के खिलाफ सोवियत जनता के संघर्ष के साथ भारत के व्यापक सार्वजनिक एवं राजनीतिक तबकों की हमदर्दी तथा एकताभाव। यह बात लाक्षणिक है कि महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के समय में ही, जब सोवियत लोग हिटलरी हमलावरों को अपनी धरती से खदेड़ने के लिए दुश्मन से मोर्चा ले रहे थे, १९४१ में कलकत्ता में 'सोवियत संघ के मित्र' नामक समाज कायम किया गया था। समाज के सदस्यों में भिन्न भिन्न व्यवसायों तथा श्रेणियों के प्रतिनिधि थे। उसी वर्ष, जोकि युद्ध के सभी वर्षों में से सर्वाधिक कठिन वर्ष था, इंडियन नेशनल कांग्रेस की कार्य-समिति की एक बैठक में स्वीकृत प्रस्ताव में राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व करनेवाली पार्टी के नेताओं ने हिंदुस्तानी अवाम की ओर से 'अपनी मातृभूमि और आज़ादी की हिफ़ाजत करनेवाली सोवियत जनता के विस्मयजनक आत्मत्याग और पराक्रम की सराहना की थी तथा उसके प्रति सहानुभूति प्रकट की थी'।* उन विकट दिनों में, जब फासिस्ट झुंड मास्को की ओर बढ़ रहे थे, रोगी शय्या में रवींद्रनाथ ठाकुर पूछा करते थे, 'पूर्वी मोर्चे से कोई खबर?' उन्हें फासिज्म पर सोवियत लोगों की विजय पर दृढ़ विश्वास था, वैसे ही जैसे उन्हें औपनिवेशिक गुलामी से अपने देश के आज़ाद होने में कोई संदेह नहीं था।

अपनी ओर से सोवियत राज्य ने भारत के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की सर्वाधिक उत्तरदायी अवधि में, जब आंग्ल आधिपत्य के खात्मे के लिए संग्राम चरम चरण पर पहुंच चुका था, उसका बेहिचक समर्थन किया था। १९४६ में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के बाद महासभा की पहली बैठक में सोवियत प्रतिनिधिमंडल के प्रधान ने भारत की स्वाधीनता और संप्रभुता का पक्ष लिया और एलान किया कि संयुक्त राष्ट्र संघ के एक सदस्य की हैसियत से, उसकी नियमावली के अनु-

* K. Neelkant *Partners in Peace* New Delhi 1972 p 7

सार भारत और इगलैड के आपसी सबध 'सप्रभु राज्यो की समानता * पर आधारित होने चाहिए। सोवियत प्रतिनिधि ने आगे जोर देकर कहा ' हिंदुस्तान अपनी स्वाधीनता की प्राप्ति मे सहायता चाहता है। इस सब की ओर से उदासीन नही रहा जा सकता – हिंदुस्तान की न्यायोचित मागो को पूरा करने का वक्त आ गया है। **

दिसबर १९४६ मे सयुक्त राष्ट्र सघ म भारत के प्रतिनिधिमडल के प्रधान ने ऐलान किया कि इगलैड अथवा सयुक्त राज्य अमरीका की निसबत हिंदुस्तानी प्रतिनिधिमडल के लिए सोवियत सघ के साथ सहयोग करना अधिक सभव था, क्योकि 'बहुत-सी समस्याओ के प्रति सोवियत रूस कही अधिक उदार था'। ***

प्राय उसी समय यानी सितबर १९४६ मे जवाहरलाल नेहरू ने जो अस्थायी सरकार के उपाध्यक्ष और विदेशमत्री थे इस सरकार की ओर से राष्ट्र के नाम एक रेडियो सदेश मे कहा था कि हम समसामयिक दुनिया के महान देश – सोवियत सघ – का अभिनदन करते हैं जो विश्व घटना प्रवाह के प्रति बडा उत्तरदायित्वपूर्ण काय कर रहा है। एशिया म वह हमारा पडोसी देश है और हम अवश्यभावी रूप से अनेक साझी समस्याए हल करनी होगी तथा एक दूसरे के साथ सबध रखने होगे।**** अपने कालातर के भाषणो और वक्तव्यो मे भी जवाहरलाल नेहरू ने इस दलील को कई बार दोहराया था कि सोवियत सघ एशिया म भारत का सच्चा दोस्त और पडोसी है जिसकी भारतीय जनता को उद्वेलित करनेवाली समस्याओ के हल म सदैव रुचि रही है।

२१ सितबर, १९४६ को अर्थात देश की स्वतत्रता की घोषणा के लगभग एक साल पहले जवाहरलाल नेहरू ने सोवियत सघ के तत्कालीन विदेशमत्री व० म० मोलोतोव के नाम पत्र म दोनो देशो के बीच

---

* सोवियत सघ की विदेशनीति। १९४६। दस्तावेज और सामग्रिया मास्को १९५२ पृ० ४१७।

** वही।

*** मू० प० नामेन्का जवाहरलाल नेहरू और भारत की विदेशनीति मास्को १९७५ पृ० ३५।

**** Jawaharlal Nehru s Speeches Vol One 1946-1949 Delhi 1949 p 3

राजनयिक सपर्क कायम करने और राजदूतो का परस्पर विनिमय का सुझाव पेश किया था। २ अक्तूबर को प्रत्युत्तर मे मास्को ने सूचित किया कि सोवियत सघ इसके लिए तत्पर है।

सोवियत पक्ष के साथ इस प्रश्न पर वार्तालाप और विचारो का आदान प्रदान करने का जिम्मा जवाहरलाल नेहरू ने दो जाने माने राजनयज्ञो वी० के० मेनन और के० पी० एस० मेनन को सौपा था, जो इस बात का प्रमाण था कि हिंदुस्तानी राज्य सोवियत सघ के साथ अपने सबधो को कितना महत्वपूर्ण मानता था। पेरिस मे सोवियत विदेश मत्री के साथ हुई मुलाकात के बाद के० पी० एस० मेनन ने बताया कि स्थायी भारत-सोवियत सबधो का आधार निकटतम मैत्री न होने के कोई कारण नही हैं।*

१२ नवबर १९४६ को भारत म आकाशबाणी स सविधान-सभा मे जवाहरलाल नेहरू के भाषण का प्रसार किया गया, जिसम उन्होने देशवासियो को सूचित किया कि पेरिस मे वी० के० मेनन के साथ बात चीत म व० म० मोलोतोव ने भारत के साथ राजनयिक प्रतिनिधियो का विनिमय करने की सोवियत सरकार की इच्छा प्रकट की।

परतु ब्रिटिश हुकूमत न हिंदुस्तान की अस्थायी सरकार के सोवियत सघ के साथ राजनयिक सबध स्थापित करने की ओर लक्षित हर कदम का विरोध करना आरभ किया। ब्रिटिश सरकार के भारतीय मामलो के विभाग के अभिलेखो क आधार पर सोवियत शोधकर्ता ग० व० गोगेवा न इसक कई तथ्य उपस्थित किय।** भारतीय राजनयज्ञो के कार्यकलाप सोवियत पक्ष के प्रतिनिधियो के साथ उनके सपर्को पर अग्रज गुप्तचर सेवा की नजर थी। औपनिवेशिक अधिकारियो ने जवाहरलाल नेहरू द्वारा उठाये गय कदमो को गैरकानूनी साबित करने की कोशिश की इतना ही नही अस्थायी सरकार के दूसरे सदस्यो को उनके खिलाफ उकसाने का भी प्रयास किया। इस सब का अर्थ था जवाहरलाल नेहरू पर दबाव डालना, सोवियत सघ के साथ राजनयिक सबध कायम करने के उनके आग के प्रयासो को अवरुद्ध करना। ब्रिटेन

---

* ए० प० [illegible] जवाहरलाल नेहरू और भारत की विदेशनीति, मास्को १९७२ पृ० ३७।

** ग० व० [illegible] सोवियत भारत राजनयिक सबधों के इतिहास के कुछ पृष्ठ — [illegible] और अफ्रीका के जनगण अक ३ १९८० पृ० ११४।

की हुकूमत को अपनी हरकतो के विफल होने का तभी यकीन हुआ जब वाइसराय के नाम अपने २१ नवबर, १९४६ के पत्र मे जवाहरलाल नेहरू ने यह स्पष्ट कर दिया था कि, उनकी राय मे सोवियत सघ और दूसरे देशो के साथ राजनयिक सबध कायम करने का काम उनके विभाग (विदेशी मामलो का मत्रालय — व० ग०) का अदरूनी मामला है।*

यह भली भाति समझते हुए कि भारतीय नेतृत्व पर अप्रच्छन्न दबाव और अतर्ध्वंस का ब्रिटेन और आजाद हिंदुस्तान के आपसी सबधो पर नकारात्मक प्रभाव पड सकता है अग्रेज हुकूमत ने प्रतिरोध की दूसरी कार्यनीति की आड ली — वह भारत-सोवियत राजनयिक सबधो की स्थापना से सबद्ध प्रश्नो के हल मे औपचारिक, रूप से अस्थायी सरकार को सहायता देने तक के लिए राजी हो गयी थी। मसलन, मास्को स्थित ब्रिटिश दूतावास को विदेश कार्यालय के एक गुप्त सदेश मे बताया गया था कि भारत सरकार सोवियत सघ के साथ राजनयिक सबध कायम करना चाहती है, और हम (अर्थात विदेश कार्यालय — व० ग०) इसे तब तक टालना हितकर समझते है जब तक कि हिंदुस्तान की स्थिति अधिक स्पष्ट न हो जाये।**

भारतीय मामलो के विभाग के अभिलेखागार मे राइटर एजेसी की सूचनाए, मास्को स्थित ब्रिटिश दूतावास के प्रकाशन विभाग के प्रपत्र, आदि दस्तावेज सुरक्षित है, जिन्हे इस उद्देश्य से दिल्ली भेजा जाता था कि नेतृत्वकारी तथा व्यापक सार्वजनिक श्रेणियो मे सोवियत सघ की नीति के प्रति अविश्वास पैदा किया जा सके।***

किंतु सोवियत-भारत मैत्री और सहयोग के शत्रुओ के इरादो पर पानी फिर गया। दोनो पक्षो के बीच हुए समझौते के अनुसार, १३ अप्रैल, १९४७ को एक ही समय दिल्ली और मास्को मे (दिल्ली समय के अनुसार रात के आठ बजे और मास्को समय के अनुसार शाम के साढे पाच बजे) घोषणा की गयी थी कि सोवियत सघ और भारत के बीच राजनयिक सबध कायम हो गये हैं।

अगस्त १९४७ मे प्रसिद्ध राजनेता, जवाहरलाल नेहरू की बहिन

---

* वही पृ० ३५।

** वही।

*** वही पृ० ३६।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित मास्को में भारत की राजदूत नियुक्त की गयीं। भारत में सोवियत संघ के प्रथम राजदूत [illegible] के० व० नोविकोव थे।

सोवियत-भारत राजनयिक संबंधों की स्थापना राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की अंतिम सफलता—सम्पूर्ण सत्ता का भारतीय जनता के हाथ आने—राजनीतिक स्वतंत्रता के विकास से सम्बद्ध हुई। उसने भारत के अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ सारे स्वाधीनता करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी और अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के आधिकारिक तथा गैर-सरकारी की भूमिका में भारत ने शीघ्र ही उनके समान में सा- लिया।

सोवियत और भारतीय जनता के जीवन में यह घटना साल में युगान्तरकारी परिवर्तन—जर्मन फासिज्म और जापानी सैन्यवाद के ऊपर महान विजय से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई थी। सोवियत जनता की ऐतिहासिक विजय एक ओर विश्व समाजवादी प्रणाली के अभ्युदय का कारण बनी और दूसरी ओर उसने संसार भर में जारी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को सबसे जबरदस्त प्रेरणा प्रदान की तथा पूंजीवादी साम्राज्यवादी औपनिवेशिक प्रणाली को ध्वंस के कगार पर ला खड़ा कर दिया। भारत में ब्रिटिश आधिपत्य का खात्मा इस ऐतिहासिक प्रक्रिया का निस्सन्देह एक सर्वाधिक उज्ज्वल और महानतम परिणाम सिद्ध हुआ। फलस्वरूप समाजवादी राष्ट्रमंडल और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के सबसे बहुसंख्य देशों—मुक्ति प्राप्त देशों—के बीच शांति तथा जनगण के बेहतर भविष्य के लिए चौमुखी सहयोग की वास्तविक परिस्थितियां पैदा हुईं।

२३ मार्च–२ अप्रैल १९४७ को दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू की पहल से आयोजित एशियाई देशों का सम्मेलन हुआ था जिसमें सोवियत मध्य एशिया और ट्रांसकाकेशिया के जनतंत्रों के शिष्टमंडल ने भी हिस्सा लिया।

सम्मेलन ने सब प्रकार के उपनिवेशवाद की सख्त निंदा करने का और विश्व समुदाय के पूर्ण अधिकारप्राप्त सदस्यों के नाते एशियाई देशों के पुनरुत्थान का आह्वान किया था। अपने भाषण में जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि हम अपने पैरों पर खड़े होने और उन सब के साथ सहयोग करने के लिए कृतसंकल्प हैं जो हमसे सहयोग करने के

लिए तत्पर है। हम औरो के हाथो मे खिलौने नही बनग।*

एशियाई देशो के जीवन मे इस सम्मेलन का विशेष स्थान है। उसने उनके सम्मुख प्रस्तुत तात्कालिक समस्याए सुलझाने मे सयुक्त समन्वित प्रयासो की आवश्यकता पर बल दिया और एकता बढाने म उल्लेखनीय योगदान किया था।

जैसे-जैसे भारत की राष्ट्रीय सत्ता दृढ होती गयी वैसे वैसे फौरी अतर्राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान म उसकी भूमिका भी बढती गयी। भारत ने सकटमय स्थितियो पर नियत्रण पाने म सक्रिय रूप से हिस्सा लेना आरभ किया। १९५० मे अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा छेडे गये कोरियाई युद्ध का समाप्त कर देने की ओर लक्षित भारत सरकार के सुझावो का सोवियत सघ समेत अनेक शातिकामी देशो मे सोत्साह स्वागत हुआ था। भारत के प्रधानमत्री जवाहरलाल नेहरू न १५ जुलाई १९५० को जोसेफ स्तालिन के नाम व्यक्तिगत सदेश मे शातिपूर्ण समाधान की आवश्यकता पर बल दिया था और इस ध्येय स सयुक्त राज्य अमरीका सोवियत सघ और चीन के प्रतिनिधियो की बैठक क आयोजन का प्रस्ताव किया था। इसी तरह का सदेश अमरीका के विदेशमत्री डीन एचीसन को भी प्रेषित किया गया था। जहा अमरीकी पक्ष ने भारत के सुझाव को ठुकरा दिया, वहा सोवियत सरकार के प्रधान न अपने उत्तर म लिखा "मैं आपकी शातिकामी पहलकदमी का स्वागत कर रहा हू'। जोसेफ स्तालिन न जवाहरलाल नेहरू के प्रयासो के लिए सफलता की कामना की। सोवियत सरकार ने कोरिया मे तटस्थ देशो के प्रत्यावासन आयोग के अध्यक्ष जैसे उत्तरदायी पद के लिए भारत की उम्मीदवारी का पूरा समर्थन किया।

हिंदचीन मे लगभग आठवर्षीय युद्ध समाप्त कराने की दिशा मे सचेष्ट अन्य शातिप्रेमी देशो सहित भारत के प्रयास इसका प्रमाण सिद्ध हुए कि पृथ्वी के सर्वप्रथम एशिया के विस्फोटजनक स्थलो' पर भारत का प्रभाव बडा हितकारी है। यद्यपि औपचारिक रूप से भारत ने १९५४ की जेनेवा काफ्रेस मे भाग नही लिया था तथापि जेनेवा समझौतो की तैयारी और निष्पादन म उसका योगदान असदिग्ध है। इस सदर्भ मे यह कहना उचित ही होगा कि वियतनाम, लाओस और

---

* Jawaharlal Nehru s Speeches Vol One 1946 1949 Delhi 1949 p 303

कबोडिया (वर्तमान कपूचिया) मे फौजी कार्रवाइया बद करने से सबधित करार की तामील के लिए नियुक्त अतर्राष्ट्रीय नियत्रण आयोग के अध्यक्षपद को भारत के प्रतिनिधि ने सभाला था। हिदचीन की समस्या के शातिपूर्ण समाधान ने, जो समाजवादी देशो और तरुण स्वाधीन राज्यो के सयुक्त और अथक प्रयासो की बदौलत ही सभव हुआ था, साम्राज्यवादियो के मसूबो को नाकाम कर दिया, जो हिदचीन की जनता पर अपना प्रभुत्व बरकरार रखने की बात सोच रहे थे।

स्वाधीनता के प्रथम वर्षों मे ही भारत द्वारा आक्रामक सैन्य राजनीतिक गठबधनो के प्रति अपनाये गये सुस्पष्ट और निश्चित रुख का अतर्राष्ट्रीय सबधो मे उसकी सकारात्मक भूमिका बढाने के लिए अत्यधिक महत्व था। इन गुटो मे प्रवेश करने से इनकार, आक्रामक गुट सिएटो* और बगदाद सधि** की भर्त्सना, जो शाति तथा सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करते थे – इस सब से एशिया और दूसरे प्रदेशो मे शातिकामी शक्तियो की स्थिति निश्चय ही दृढतर बनी।

प्रमुख पश्चिमी देशो के विपरीत सोवियत सघ और दूसरे समाजवादी राज्यो ने १९५४ मे तिब्बत पर हुए समझौते मे उदघोषित शातिमय सहअस्तित्व के पाच सिद्धातो (पचशील) के पक्ष मे मत दिया। ये सिद्धात है – राज्य की अविच्छिन्नता और प्रभुत्व के लिए परस्पर समादर, परस्पर अनाक्रमण का आश्वासन, भीतरी बातो मे अहस्तक्षप, समता और पारस्परिक लाभ शातिमय सहअस्तित्व।

पचशील ने जिसका एक प्रवर्तक भारत था, सुविदित "बाडूग के दस सिद्धातो' के आधार का काम दिया। ये दस सिद्धात विभिन्न व्यवस्थाओ वाले राज्यो के परस्पर सबधो की राजनीतिक और कानूनी

---

*सिएटो – दक्षिण-पूर्वी एशिया मे एक सैन्य राजनीतिक गुट जो अमरीका की पहल से १९५५ मे कायम हुआ था। १९७५ मे साम्राज्यवाद विरोधी मुक्ति सग्राम मे वियतनामी जनता की विजय के फलस्वरूप दक्षिण-पूर्वी एशिया मे जनवादी तथा शातिकामी शक्तियो का दृढीकरण हुआ। अत गुट के कर्णधारो के निर्णय से इसे विघटित कर दिया गया।

**बगदाद सधि अथवा सेन्टो – केद्रीय सधि सगठन – निकट और मध्य पूर्व मे सैन्य राजनीतिक गठबधन। अमरीका और ब्रिटेन की पहल से १९५५ म अस्तित्व मे आया था। आठवे दशक मे इस प्रदेश मे साम्राज्यवाद विरोधी सघर्ष के उत्कर्ष और गुट के भागीदारो मे कलह पड जाने की वजह से यह विघटित हुआ।

प्रणाली साबित हुए। १९५५ में हुई प्रसिद्ध बाडुग कांफ्रेंस के, जिसके आयोजन में आजाद भारत ने ही प्रमुख भूमिका अदा की, परिणामों को सोवियत सघ सहित समूचे समाजवादी राष्ट्रमडल की पूरी हिमायत मिली थी। मास्को में इस कांफ्रेंस को साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के खिलाफ तथा अपनी स्वतत्रता एव सप्रभुता मजबूत करने के लिए अफ्रोएशियाई देशों के सघर्ष की एक महत्वपूर्ण मजिल माना गया था।

दूसरे विश्व युद्ध के लगभग फौरन बाद ही साम्राज्यवादियों द्वारा छेडे गये 'शीत युद्ध" का अत करने में तथा शातिमय सहअस्तित्व के पाच सिद्धातों के कार्य-क्षेत्र का सारी दुनिया में प्रसार करने में सोवियत सघ और भारत की सामान्य दिलचस्पी की बदौलत अतर्राष्ट्रीय सगठनों सर्वप्रथम सयुक्त राष्ट्र सघ में सोवियत भारत सहयोग का मार्ग प्रशस्त हुआ। सोवियत और भारतीय शिष्टमडल सयुक्त राष्ट्र सघ की महासभा की पहली बैठक से ही सयुक्त राष्ट्र सघ के भीतर महाशक्तियों के बीच मतैक्य के सिद्धात, यूनान से ब्रिटिश सेनाओं की वापसी, सयुक्त राष्ट्र सघ की सदस्यता जैसे प्रश्नों पर प्राय एकसमान रुख अपनाते हुए आपस म सहयोग करने लगे थे।

भारत की औपनिवेशिक पराधीनता के उन्मूलन ने उन भारी बाधाओं को दूर किया था, जो सोवियत और भारतीय जनगण के साहचर्य को रोक रही थी उसने विभिन्न स्तरों पर परस्पर सपर्कों को अनुप्राणित किया। १९५३ म इदिरा गाधी सोवियत सघ की यात्रा पर आयी थी। यद्यपि यह एक अनौपचारिक यात्रा थी (वह सोवियत सघ में भारत के तत्कालीन राजदूत के० पी० एस० मेनन की अतिथि थी), फिर भी सोवियत-भारत सबधों की परिपाटी में उसका विशेष स्थान है। यह भारतीय जनता की यशस्वी सुपुत्री का, जिन्होंने भारत की स्वाधीनता के आगे दृढीकरण में अद्वितीय भूमिका निभायी तथा दोनों देशों की मैत्री एव सहयोग बढाने में भारी योग दिया सोवियत सघ स प्रथम परिचय था। जैसा कि उनके वक्तव्यों से जाहिर होता है, नवजीवन के सृजन में जुटे सोवियत जना द्वारा प्रदर्शित निस्स्वार्थ परिश्रम और सस्कृति तथा विज्ञान में प्राप्त सफलताओं ने उनके मन पर अमिट छाप डाली। वह सोवियत सघ में "एकमात्र विशेषाधिकारप्राप्त वर्ग'—बच्चों—के प्रति प्रदर्शित चिता और प्रेम से बहुत प्रभावित हुई। 'ओगोन्योक'

(गोगा) पत्रिका के संवाददाता के साथ भेटवार्ता में उन्होंने कहा कि आपके देश की यात्रा के लिए आनेवाले हर मानव पर जिस पहली चीज की छाप पड़ती है वह आपकी निर्माण-स्थितियाँ, जीवन के सभी क्षेत्रों में निर्माण-स्थितियों की ही छाप होती है। यह महसूस होता है कि इस देश की आबादी की जिंदगी दिन प्रतिदिन बेहतर होती जा रही है। हर क्षेत्र में हर नये कार्य में बच्चों की चिंता सर्वोपरि होती है। उनका इतना स्वस्थ और सुंदर देखकर बड़ा आनंद आता है। वे निस्संकोच होकर मन की बात पूछते हैं। सोवियत लोगों के साथ उनके घरों में मिलना भी बड़ा सुखद लगा। उनके आवास साफ-सुथरे और आरामदेह हैं उनका अतिथिप्रेम मुझे बहुत अच्छा लगा। *

सोवियत सत्तासीन में महिलाओं की दशा में हुए प्रभावकारी सुधार भी उनकी पैनी तथा सद्भावनापूर्ण दृष्टि से अगोचर नहीं रहे। इस बाबत उन्होंने बताया कि सोवियत संघ में महिलाओं को अपने अधिकारों को अमल में लाने की समान संभावनाएं सुलभ हैं मुझे यह जानकर खुशी हुई कि महिलाएं इन अधिकारों का व्यापक उपयोग करती हैं। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि इस या उस पद पर आसीन महिला को खुद अपने पर विश्वास हो और साथ ही उसे जनता का विश्वास भी प्राप्त हो। **

सोवियत संघ में प्रवास के दौरान उन्होंने मास्को लेनिनग्राद, त्बिलिसी सोची ताशकंद और समरकंद की सैर की। हर कहीं उन्हें सोवियत लोगों का सौहार्द और आतिथ्यप्रेम मिला। उन्होंने उनमें मित्र जनता के प्रतिनिधि के दर्शन किये और उन्हें सहर्ष अपने अनुभव बताये। सोवियत संघ में समाजवादी समाज के निर्माण के अनुभव की भारत के राष्ट्रीय पुनरुत्थान की समस्याओं से तुलना करते हुए इंदिरा गांधी ने इंगित किया कि भारत की तरह उनके विशाल देश में भी बहुत सी जातियां आबाद हैं हरेक की अपनी-अपनी भाषा है और सांस्कृतिक विकास के भिन्न भिन्न स्तर भी। पहले वहां जनसमुदाय का कोई संगठन न था वह निरक्षर और गरीब था खेती पिछड़ी हुई और उद्योग का स्तर

---

* न० व० मित्रोखिन इंदिरा गांधी की सोवियत संघ की पहली यात्रा।—भारत १९८१ १९८२। वार्षिकी मास्को १९८३ पृ० २२६ २२७ से उद्धृत।

** वही।

बहुत नीचे था। पैतीस साल मे उन्होंने कृषि का नवीनीकरण और यत्रीकरण कर डाला, उद्योग का उन्नयन और निरक्षरता का उन्मूलन किया। ऐसे है वे तथ्य, जिनकी सभी निष्पक्ष प्रेक्षक पुष्टि करते है। आपका राजनीतिक दृष्टिकोण चाहे कुछ भी हो किंतु तथ्यो की उपेक्षा नही की जा सकती। अगर आपके दिमाग पर ताला न लगा हुआ हो, तो आप इस सब से प्रभावित हुए और अनुप्राणित हुए बिना नही रह सकते।*

शाति के प्रति सोवियत जनता की अगाध निष्ठा, उसके श्रम की शातिमय प्रवृत्ति की भारतीय अतिथि पर सचमुच अमिट छाप पडी। 'सोवियत सघ म सारा कार्य शाति को अर्पित है, वहा का समूचा सृजन शाति के नाम पर ही किया जाता है,' उन्होंने कहा था।

स्वतत्र विकास के मार्ग पर भारत की अग्रगति ने, जिसे राजकीय क्षेत्र के आधार पर उद्योगीकरण की प्रगति, औपनिवेशिक अतीत से विरासत मे मिले कृषि सबधो के ढाचे के रूपातरण और राष्ट्रीय विज्ञान, सस्कृति व प्रविधि के गठन मे प्राप्त सफलताए सुनिश्चित कर रही थी गणराज्य की स्वाधीन विदेशनीति के निर्धारण और सैन्यवाद एव उपनिवेशवाद विरोधी उसकी दिशा पुख्ता करने के लिए वस्तुगत परिस्थितिया जुटायी। यह साम्राज्यवादी तबको की आक्रामक प्रवृत्ति के तीक्ष्णतर बनने के कारण आवश्यक हो गया था। वे दक्षिण एशिया समेत सपूर्ण एशिया को शक्ति की स्थिति की खतरनाक नीति के दायरे मे खीचने की कोशिश कर रहे थे। इसका प्रमाण पाकिस्तान को प्रदत्त विराट अमरीकी सैनिक सहायता और वाशिंगटन की पहल पर एशिया मे आक्रामक गुटो की स्थापना है।

प्रमुख राजनेता और राजनयज्ञ श्री टी० एन० कौल के शब्दो मे, 'सयुक्त राज्य अमरीका और पाकिस्तान के बीच सपन्न सैन्य सहायता सधि ने उपमहाद्वीप मे कायम रणनीतिक सतुलन को भग कर सामान्यीकरण की प्रक्रिया को अवरुद्ध कर दिया और शस्त्रास्त्रो की होड की नीव रख दी, जिससे आवश्यक विकास निधि का अपव्यय होने लगा।' श्री कौल के मतानुसार "जान फोस्टर डलेस के दबाव से सेन्टो और सिएटो गुटो की स्थापना के बाद, जिनका पाकिस्तान सहभागी बना

* वही।

बगाल की खाडी और अरब सागर के क्षेत्र मे 'शीत युद्ध' का प्रसार हुआ। * जैसा कि श्री कौल ने उचित ही इगित किया है, इसका एक प्रमुख कारण यह था कि अमरीका भारत की विदेशनीति से और उसके द्वारा पश्चिम का हुक्म मानने से इनकार किये जाने से नाराज था। इतना ही नही साम्राज्यवाद के सर्वाधिक प्रतिक्रियावादी तत्व भारत द्वारा प्रवर्तित सकारात्मक तटस्थता की नीति पर उसके द्वारा अतराज्यीय सबधो के सिद्धातो के पालन पर भी, जिन्हे पश्चिम मे 'अनैतिक" तक कहा जाता है कीचड उछाल रहे हैं।

भारत की विदेशनीति के सोवियत शोधकर्ता यूरी नासेन्को (स्वर्गीय) ने छठे दशक के मध्य मे स्पष्टत प्रकट हुई निम्न प्रवृत्तियो पर बल दिया। ये थी, सर्वप्रथम उपनिवेशवाद विरोध, जिसकी अभिव्यक्ति उन जनगण के सक्रिय समर्थन मे होती है जो औपनिवेशिक अतीत के कुपरिणामो के उन्मूलन तथा स्वतत्रता के लिए सघर्षरत हैं। दूसरे, यह नसलवाद-विरोध है जो सभी नसलों के लिए पूर्ण समानता की माग मे और उत्पीडित जातियो के प्रति भेदभाव न होने देने मे प्रकट होता है। अतत यह सैनिक गुटो से बाहर रहना है, आम निरस्त्रीकरण के लिए प्रयास है आम सहार के अस्त्रो के विनाश की ओर सचेष्ट प्रथम पग के रूप मे नाभिकीय अस्त्रो के परीक्षणो पर प्रतिबध के लिए प्रयास है। सकारात्मक तटस्थता की शातिप्रिय भारत की नीति के अभिन्न अग है सभी अतर्राष्ट्रीय प्रश्नो पर स्वय अपना मत रखने तथा उनमे से प्रत्येक पर कार्य करने की स्वतत्रता और अतर्राष्ट्रीय तनाव कम करने के ध्येय से अतर्राष्ट्रीय वाद विवाद मे मध्यस्थता निभाना। **

ऐसी नीति के कार्यान्वयन ने ससार भर मे भारत की प्रतिष्ठा को बढाया और विश्व मच पर उसकी स्वतत्र भूमिका को प्रबल बनाने मे योग दिया। साथ ही इसकी बदौलत वर्तमान काल की तीव्रतम समस्याए सुलझाने के मामले मे भी भारत और सोवियत सघ के बीच सहयोग की सभावनाए बढी और उनके द्विपक्षीय सबध विस्तृत तथा

---

* Indo Soviet Seminar on International Affairs Developments in South Asia, T N Kaul New Delhi December 7 9 1981 p 4

** यू० पु० नासेन्को जवाहरलाल नेहरू और भारत की विदेशनीति पृ० २०४ २०५।

अधिकाधिक फलदायी बने। दूसरी ओर, सोवियत सघ और समूचे समाजवादी राष्ट्रमडल के साथ भारत के गहरे होते सपर्कों ने उसकी स्वाधीनता तथा स्वतत्र विदेशनीति को सबल बनाया। विश्व रगमच पर गतिविधिया अकाट्य रूप से प्रमाणित करती हैं कि नवजात राष्ट्रीय राज्यो द्वारा स्वतत्र विदेशनीति चलाने की एक प्रमुख शर्त उनके और समाजवादी देशो के बीच समानाधिकारपूर्ण सहयोग है, जो राष्ट्रीय स्वाधीनता और सप्रभुता दृढ करने मे उनकी सहायता करते हैं। यह अकारण नही है कि १९५७ मे कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के मास्को सम्मेलन ने स्पष्ट बताया था कि "समाजवादी प्रणाली का अस्तित्व, समाजवादी देशो द्वारा नवस्वाधीन राज्यो को समानाधिकारपूर्ण आधार पर प्रदान की जानेवाली सहायता तथा शाति के लिए और आक्रमण के विरुद्ध सग्राम म समाजवादी देशो और इन राज्यो का सहयोग -- इस सब क फलस्वरूप आजादी तथा सामाजिक प्रगति के मार्ग पर उनकी अग्रगति अधिक सुगम बन जाती है।"*

भारत के साथ सोवियत सघ के सबध इसके भव्य उदाहरण हैं। उनकी फलप्रद प्रगति का कारण बहुत हद तक यह है कि वर्तमान काल के मूल प्रश्नो के प्रति दोनो पक्षो का रुख या तो एक-सा है या बहुत सदृश है। विख्यात भारतीय राजनयज्ञ, बाद मे भारत-सोवियत सास्कृतिक समाज के अध्यक्ष के० पी० एस० मेनन ने लिखा "साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद युद्ध के प्रमुख स्रोत है, अत उनका मुकाबला करते हुए भारत और सोवियत सघ शाति के लिए लड़ रहे हैं। भारत जैसे आजाद देश के लिए, जिसकी दीक्षा युद्ध निरपेक्षता के गाधीवादी सिद्धात के आधार पर हुई है, शाति महज औचित्य का प्रश्न नही, अपितु आचार-व्यवहार का उसूल भी है। सोवियत सघ के लिए भी शाति की आवश्यकता अमूल्य है वास्तव मे क्राति के बाद लेनिन द्वारा जारी प्रथम आज्ञप्ति शाति की आज्ञप्ति ही थी।"**

साम्राज्यवाद और सैन्यवाद विरोधी सग्राम मे राष्ट्रीय-मुक्ति शक्तियो के साथ एकताभाव के लेनिनीय सिद्धात से निर्देशित होते हुए

---

* "शाति जनवाद और समाजवाद हेतु सघर्ष के प्रमुख दस्तावेज मास्को १९६४ पृ० १०।

** K P S Menon *A Diplomat Speaks* Delhi 1974 p 121

तथा शाति की रक्षा एव दृढीकरण मे समाजवादी राष्ट्रमडल और नवजात राज्यो की सामान्य रुचि को ध्यान मे रखते हुए सोवियत सघ विश्व मच पर भारत के शातिकामी प्रयासो की अविचल रूप से हिमायत करता रहा। १६५४ मे उसने सयुक्त राष्ट्र सघ के तहत निरस्त्रीकरण उपसमिति की सदस्य-सख्या बढाने तथा इसमे भारत को शामिल करने का सुझाव दिया और नाभिकीय अस्त्रो पर प्रतिबध लगाने की ओर लक्षित जवाहरलाल नेहरू के सुझाव का स्वागत किया (इस तरह का प्रस्ताव सोवियत सघ ने १६४६ मे पेश किया था)।

जून १६५५ मे भारत के प्रधानमत्री जवाहरलाल नेहरू की सोवियत सघ की सरकारी यात्रा दोनो देशो के बीच मैत्री और सहयोग के मार्ग पर एक जबर्दस्त परिघटना सिद्ध हुई। इस यात्रा ने सोवियत और भारतीय राष्ट्रनायको की भेट को स्थायी स्वरूप प्रदान किया और भौतिक तथा बौद्धिक जीवन के विविध क्षेत्रो मे द्विपक्षीय सहयोग को अनुप्राणित किया। राजनीतिक सहयोग को भी सबल प्रेरणा मिली। इस यात्रा ने सारे ससार को दर्शाया था कि विभिन्न सामाजिक एव राजनीतिक व्यवस्थाओ वाले राज्यो के शातिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धात बडे प्रभावी तथा जीवनदायी है।

सोवियत सघ मे सार्वजनिक सभाओ मे जवाहरलाल नेहरू के भाषणो, सोवियत जनो के साथ उनकी असख्य भेटो ने सोवियत भारत मैत्री के इतिहास मे एक भव्य पृष्ठ जोड दिया था, दोनो जनगण तथा नेताओ की परस्पर समझ को अधिक गहरा बना दिया था।

७ से २३ जून तक जवाहरलाल नेहरू और इदिरा गाधी सोवियत देश के मेहमान रहे। इस दौरान उन्होने मास्को के अलावा वोल्गाग्राद (भूतपूर्व स्तालिनग्राद), क्रीमिया, त्बिलिसी, अश्काबाद, ताशकद, समरकद, अल्मा-अता, स्वेर्दलोव्स्क, मग्नितोगोर्स्क, स्वेर्दलोव्स्क और लेनिनग्राद का भ्रमण किया था। उस समय यह सोवियत सघ मे किसी विदेशी राज्य के प्रधान की सबसे लबी और कामकाजी यात्रा थी। जवाहरलाल नेहरू और इन्दिरा गाधी का हर जगह हार्दिक स्वागत-सत्कार किया गया था। यह इस बात का ज्वलत प्रमाण सिद्ध हुआ कि इस देश मे सोवियत भारत सबधो के दृढीकरण को कितना महत्व दिया जाता है, भारत महान भारतीय जनता के प्रति सोवियत लोगो का अनुराग कितना अगाध एव निश्छल है।

सोवियत और भारतीय नेताओ की बातचीत मे आर्थिक सहयोग की बाबत ही नही वरन कई अतर्राष्ट्रीय समस्याओ पर भी विचारो का विनिमय हुआ था। इसके परिणाम सोवियत मत्रिपरिषद के अध्यक्ष और भारत के प्रधानमत्री की २२ जून, १९५५ को हस्ताक्षरित सयुक्त घोषणा मे मूर्तिमान हुए। इस एतिहासिक महत्व के दस्तावेज मे शातिमय सहअस्तित्व के पाच सिद्धातो के आधार पर परस्पर सबधो को आगे भी समुन्नत बनाने की दोनों पक्षों की इच्छा जाहिर की गयी थी। घोषणा मे विश्वास प्रकट किया गया था कि 'इन सिद्धातो का अधिक व्यापक समर्थन शाति-क्षेत्र का विस्तार करेगा जनगण के बीच परस्पर विश्वास बढाने मे सहायक होगा और अतर्राष्ट्रीय सहयोग का मार्ग प्रशस्त करेगा।' सोवियत और भारतीय नेताओ ने बाडुग कान्फ्रेस के परिणामों का ऊचा मूल्याकन करते हुए सर्वव्यापी शाति के दृढीकरण के हेतु उन्हे प्रभावकारी माना। उन्होंने साथ ही शस्त्रास्त्रो की खास तौर से नाभिकीय शस्त्रास्त्रो की होड से शाति के ध्येय के लिए खतरे की ओर ध्यान दिलाया। दस्तावेज मे असदिग्ध रूप से बताया गया था कि 'शस्त्रास्त्रो, साधारण और नाभिकीय दोनो प्रकार के शस्त्रो का बढाने की प्रवृत्ति ने राज्यो मे भय तथा सदेह पैदा किया और उनकी राष्ट्रीय निधियो को उदात्त लक्ष्यो, अर्थात राज्यो की समृद्धि बढाने के लक्ष्यो से विमुख कर दिया।

दोनों पक्षो ने चीन को सयुक्त राष्ट्र सघ मे न्यायोचित स्थान प्रदान करने की माग का दृढ समर्थन किया और हिंदचीन मे शाति सुनिश्चित करने के एकमात्र यथार्थ उपाय के रूप मे जेनेवा समझौते के अविचल पालन की अपील की। सोवियत सघ और भारत की सुसगत नीति अतराष्ट्रीय मामलो मे शाति परस्पर विश्वास और न्यायपरायणता की ओर लक्षित थी।

इस सब से जवाहरलाल नेहरू के उन शब्दो की प्रासगिकता की पुष्टि हुई, जो उन्होंने मास्को मे २२ जून १९५५ को सोवियत-भारत मैत्री सभा मे कहे थे 'हमारे खयाल मे, शाति का मतलब युद्ध से महज अलग रहना ही नही बल्कि अतर्राष्ट्रीय सबधो के प्रति सक्रिय और सकारात्मक रुख अपनाना भी है। इस रुख को--सभी प्रश्न बातचीत के जरिये हल करने के प्रयासो की बदौलत--सर्वप्रथम वर्तमान तनाव को कम करने और फिर विभिन्न क्षेत्रो मे राज्यो के बीच बढ रहे

सहयोग की ओर, सास्कृतिक और वैज्ञानिक सपर्कों की ओर, व्यापार के विस्तार तथा विचारो अनुभव एव सूचनाओ के विनिमय की ओर ले जाना चाहिए।* सोवियत सघ भी यही रुख अपनाता है।

जवाहरलाल नेहरू की सोवियत सघ की यात्रा के परिणाम नवबर-दिसबर १९५५ मे हुई सोवियत नेताओ की जवाबी यात्रा के दौरान सुदृढ हुए तथा उनका और विकास हुआ। उच्चस्तरीय अतिथियो ने दिल्ली बबई, बगलूर, मैसूर, मद्रास, कलकत्ता, जयपुर, श्रीनगर, आदि स्थानो की यात्रा की। सोवियत नेताओ ने अपने वक्तव्यो मे भारत सोवियत मैत्री और सहयोग को जो महत्व दिया, उस पर भारतीय जनता के व्यापक क्षेत्रो मे बहुत सतोष प्रकट किया गया। कोरियाई जनता के विरुद्ध आक्रामक युद्ध की समाप्ति, हिदचीन मे शातिपूर्ण स्थिति की स्थापना सयुक्त राष्ट्र सघ मे चीन को स्थान देने की माग, निरस्त्रीकरण की हिमायत और आम सहार के अस्त्रो पर प्रतिबध जैसे फौरी प्रश्नो के समाधान हेतु शातिप्रिय शक्तियो के प्रयासो मे भारत के योगदान के सोवियत सरकारी शिष्टमडल द्वारा किये गये उच्च मूल्याकन का भी सहर्ष स्वागत किया गया था।

भारत और अन्य देशो के जनमत ने सोवियत प्रतिनिधिमडल की भारत की यात्रा के समय जवाहरलाल नेहरू के वक्तव्य की ओर भी बहुत ध्यान दिया जिसमे उन्होंने कहा था कि सोवियत सघ और भारत के बीच अच्छे पडोसियो जैसे सबध उनके लिए ही हितकर नही हैं, बल्कि उनका मानवजाति के समक्ष खडी अन्य महत्वपूर्ण समस्याए खास तौर पर एक प्रमुखतम समस्या—सर्वव्यापी शाति की सुरक्षा की समस्या—सुलझाने के निमित्त भी बहुत ज्यादा महत्व है।**

इस बीच पश्चिम मे कुछ निश्चित हलको ने मामला को इस तरह पश करन क प्रयत्न किय मानो सोवियत सघ और भारत क बीच बढती मैत्री और सहयोग भारतीय गणराज्य की सकारात्मक तटस्थता को खतरे म डाल रहे हैं। इस तरह की दलील तक दी गयी थी कि

---

* Jawaharlal Nehrus Speeches Vol 3 March 1953—August 1957 Delhi 1958 p 303-304

जवाहरलाल नेहरू भारत की विदेशनीति, मास्को १९६५ पृ० १७३ (रूसी सस्करण)।

भारत को सोवियत विदेशनीति के साथ "नत्थी" कर दिया गया है। किंतु ऐसी दलीलों और सचाई के बीच जमीन-आसमान का फर्क है। सोवियत सघ न अपनी विदेशनीतिक धारणाओ अपनी विचारधारा को किसी पर भी लादने का लक्ष्य अपने सामने न पहले कभी रखा और न रखता है। अन्य देशो की विदेशनीति की विशेषताओ तथा लाक्षणिकताओ के प्रति आदर भरा रुख विश्व रगमच पर सोवियत राज्य के कार्यकलाप का सदैव एक प्रमुख सिद्धात रहा और आज भी है। स्वभावतया यही बात भारत के प्रति भी, जो सैनिक एव राजनीतिक गठबधनो के सदर्भ मे निरपेक्षता सिद्धात का अविचल रूप से पालन करता है सोवियत नीति पर पूर्णत लागू होती है। सोवियत सघ मे भारत की विदेशनीति के आधारभूत सिद्धातो के और इस बारे मे भी समान रूप से पूरी समझ है कि हमारे देश अपनी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाओ के विभिन्न स्वरूप के कारण अदरूनी समस्याओ के हल म भिन्न भिन्न रास्ते अपनाये हुए हैं। उन कुछ बाहरी ताकतो के विपरीत, जो कभी भारत की दोस्ती की खोज मे लगी रहती हैं और कभी प्रत्यक्षत उसकी उपेक्षा करती है उसे अपने प्रभाव-क्षेत्र म खीचने का यत्न करती हैं, सोवियत सघ यह मानकर चलता है कि आजाद भारत विश्व रगमच पर शाति की नीति पर अमल करते हुए शाति के हेतु और अधिनायकत्व विस्तारवाद तथा आधिपत्य के विरुद्ध सग्राम मे एक महान कारक है। सोवियत सघ भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति का सदा पक्षधर रहा और आज भी है और वह उसे सैन्य-राजनीतिक गुट मे खीचने का कोई प्रयास नही करता।

नवबर दिसबर १९५५ मे हुई सरकारी यात्रा के समय सोवियत पक्ष ने सैनिक सधियो तथा गठबधनो के प्रति भारत के रवैये के लिए अपनी हिमायत की पुष्टि की। २० नवबर, १९५५ को सोवियत शिष्ट-मडल के सम्मान मे आयोजित स्वागत-समारोह मे जवाहरलाल नेहरू के शब्दो के प्रति सोवियत नेताओ ने पूरी समझदारी प्रकट की। भारत के प्रधानमत्री ने कहा था *हम यकीन है कि सैन्य सधिया और गठबधन* तथा शस्त्रास्त्रो का सचय, ये सब वे उपाय नही है, जिनके जरिये सर्वव्यापी शाति और सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है। हमारा न किसी भी शिविर से और न किसी फौजी गुट से सबध है। एकमात्र शिविर, जिसमे हम शामिल होना चाहेगे वह शाति और सद्भावना

का शिविर है हम एकमात्र उस संधि को वाञ्छनीय मानते है जो सदभावना और सहयोग पर अवलंबित हो।*

सोवियत सरकारी शिष्टमंडल के प्रस्थान के पूर्व संयुक्त विज्ञप्ति पर हस्ताक्षर किये गये थे। २२ जून १९५५ को हस्ताक्षरित विज्ञप्ति म दो देशो की स्थिति दर्ज किय जाने के साथ साथ उसम संयुक्त राष्ट्र संघ म नय सदस्यो के दाखिल के मामले म सार्विकता के सिद्धात के अविचल अनुपालन पर जोर दिया गया तथा यह आग्रह किया गया कि आर्थिक और सास्कृतिक क्षेत्रो मे परस्पर सहयोग तथा समझ की राह मे मौजूद बाधाओ का निवारण ही अतर्राष्ट्रीय तनाव कम करने का एक सर्वाधिक कारगर रास्ता है।

विज्ञप्ति की इस प्रस्थापना का कि केवल राज्यो के सम्मिलित प्रयासो से ही शाति तथा वास्तविक सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सकता है शाति और अतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के ध्येय के लिए बहुत महत्व है।

सोवियत संघ और भारत के बीच १९५५ मे हुई उच्चस्तरीय भेटो के आदान प्रदान से दो देशो के संबधो के सफल विकास को नयी प्रेरणा मिली।

इन भेटो का मूल्याकन करते हुए जाने माने भारतीय शोधकर्ता डा० बिमल प्रसाद ने लिखा जाहिर है कि १९५५ के अत तक भारत सोवियत दोस्ती की मजबूत नीव पड चुकी थी। इस दोस्ती की बुनियाद किसी तीसरे देश के साथ शत्रुता नही अपितु सारी दुनिया मे शाति ध्येय के प्रति सामान्य निष्ठा है। निकट पडोसियो के नाते दोनो देश अपने दर्शन तथा राजनीतिक एव सामाजिक व्यवस्थाओ के भिन्न भिन्न होने के बावजूद इस निष्कर्ष पर पहुचे कि पृथ्वी पर शाति बनाये रखने खास तौर पर दक्षिण एशिया को अतर्राष्ट्रीय तनाव से बचाने की खातिर सहयोग दोनो के लिए हितकर है। **

यात्राओ के आदान प्रदान ने विश्व मच पर उनके सहयोग के लिए राजनीतिक अयोन्यक्रिया के लिए सभावनाए बढा दी थी। एशिया म

वही।

* Bimal Prasad *Indo Soviet Relations 1947 1972 A Documentary Study* Delhi 1973 p 60

तथा अन्य महाद्वीपो मे शाति की रक्षा और निरस्त्रीकरण के लिए तथा युद्ध के खतरे के खिलाफ दोनो देशो के सयुक्त प्रयासो की नयी उन्मुक्त सभावनाए अत्यत सार्थक सिद्ध हुई कारण यह था कि हमारी धरती की दो महान शातिकामी शक्तियो की सयुक्त कारवाइया शुरू हो रही थी।

अध्याय २

सहयोग के बढते सबध-सूत्र

शाति और गुट निरपेक्षता की विदेशनीतिक लाइन को, जिनका भारत बडाई से अनुसरण कर रहा है उचित ही 'नहरू लाइन' कहा जाता है। वास्तव मे स्वतत्र भारत के शिल्पी' अपने देश की विदेशनीति के स्रष्टा और निर्धारक थे। साम्राज्यवाद और नवउपनिवेशवाद तथा भारत के बीच तीक्ष्ण विरोधाभास की परिस्थितियो म देश के नेतृत्व कारी क्षेत्रो और व्यापक जनसमुदायो के भीतर यह समझ बढ रही थी कि पुराने और नये उपनिवेशको का प्रतिरोध तथा आजादी और स्वाधीनता के सभी जनगण के अधिकारो तथा विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओ वाले राज्यो क शातिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धातो की हिमायत भारत के राष्ट्रीय हितो की गारन्टी की अनिवार्य शर्त है। यही वर्तमान काल के मूलगामी प्रश्नो क प्रति इस देश क सक्रिय रुख का, विश्व मच पर उसकी बढ रही सकारात्मक भूमिका का आधार है। नेहरू लाइन' क प्रमुख घटक स्वय भारत की ही नही बल्कि बहुतेर नवजात राष्ट्रो की आकाक्षाओ से भी मेल खाते हैं—इस तथ्य की पुष्टि इस बात से होती है कि अब गुटनिरपेक्षता की नीति आधुनिक अतर्राष्ट्रीय सबधो का सार्वभौमिक कारक बन गयी है।

भारत और दूसर विकासमान राज्यो के विश्व मच पर अपनी सकारात्मक भूमिका बढाने के प्रयासो को सोवियत सघ समूचे समाज वादी राष्ट्रमडल का सतत रूप से समर्थन और सहायता प्राप्त होते हैं। व्ला० इ० लेनिन की यह भविष्यवाणी साकार हो चुकी है कि पूरब के जनगण औपनिवेशिक गुलामी से छुटकारा पाकर विश्व समुदाय के जीवन मे सक्रिय सहभागी बन जायग और मानवजाति के समक्ष मौजूद समस्याए सुलझाने मे उल्लेखनीय योगदान करेंगे। इसमे समाजवादी

और मुक्तिप्राप्त देशो, सोवियत सघ और भारत के बीच सहयोग और उनका सयुक्त कार्य बहुत अधिक सहायक हो रहे हैं। इसके आधारस्तभ हैं आज की ज्वलत समस्याओ, सर्वप्रथम विश्वव्यापी शाति की रक्षा और दृढीकरण, राष्ट्रो की आजादी तथा स्वाधीनता की गारटी के प्रति एकसमान रुख। सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस के दस्तावेजो मे युवा राष्ट्रीय राज्यो की विश्व मच पर बढती भूमिका का उच्च मूल्याकन किया गया था। "आज अतर्राष्ट्रीय मामलो मे एशिया अफ्रीका और लैटिन अमरीका के देश भी, विदेशी जुए से मुक्त हो चुके अथवा मुक्ति पा रहे देश भी बडा हिस्सा लेने लगे हैं। इन देशो को प्राय तटस्थतावादी कहा जाता है, कितु उन्हे तटस्थ तो महज इस माने मे ही समझा जाता है कि वे मौजूदा सैन्य राजनीतिक गठबधनो मे शामिल नही होते हैं। पर जब मसला आधुनिक काल के आधारभूत प्रश्न— युद्ध और शाति के प्रश्न—का होता है तो इनमे से अधिकाश देश कदापि तटस्थ नही होते। सामान्यतया वे शाति के पक्ष मे रहते हैं वे युद्ध का विरोध करते है। उपनिवेशवाद का जूआ फेककर वे शाति का महत्वपूर्ण कारक, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद विरोधी कारक बनते जा रहे हैं, अब उनके हितो का ध्यान रखे बगैर विश्व राजनीति के मूल प्रश्न तय नही किये जा सकते।"*

सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की २७वी काग्रेस ने भी युवा राष्ट्रीय राज्यों और गुटनिरपेक्ष आदोलन की भूमिका का ऊचा मूल्याकन किया। काग्रेस द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम मे बताया गया कि "सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी गुटनिरपेक्ष आदोलन के उद्देश्यो और कार्यकलाप को न्यायसगत मानते हुए विश्व राजनीति मे उसकी भूमिका बढाने के पक्ष मे है। सोवियत सघ आगे भी आक्रामक और आधिपत्यवादी शक्तियो के विरुद्ध सग्राम मे गुटनिरपेक्ष राज्यो का, झगडो और मुठभेडो का बातचीत द्वारा समाधान करने का समर्थन करता रहेगा और इन राज्यो को सैन्य-राजनीतिक गुटो मे खीचने के प्रयासो का विरोध करता रहेगा।"**

---

* सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की २२वीं काग्रेस की सामग्रिया मास्को १९६२ पृ० २६।

** सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की २७वी काग्रेस की सामग्रिया मास्को १९८६ पृ० १७५।

अत यह न्यायसगत है कि सोवियत सघ ने नवजात राज्यो, गठित हो रहे गुटनिरपेक्ष आदोलन की हिमायत के लिए बारबार अपनी प्रतिष्ठा विश्व मच पर अपनी सुदृढ स्थिति का सदुपयोग किया है। सोवियत सघ की पहल से ही सयुक्त राष्ट्र सघ की महासभा ने १६६० मे औपनिवेशिक दशो और जनगण को स्वाधीनता प्रदान करने का घोषणापत्र स्वीकृत किया था जिसने उपनिवेशवाद के अवशेषो के विरुद्ध सग्राम को सक्रिय बनाने मे प्रभावशाली भूमिका अदा की। १६६१ मे बेलग्रेड सम्मेलन मे गुटनिरपेक्ष आदोलन के आविर्भाव का सोवियत सघ ने सहर्ष स्वागत किया और सम्मेलन के इस आह्वान का समर्थन किया कि शाति की रक्षा और उपनिवेशवाद के समूल नाश के लिए फौरी कदम उठाये जाने चाहिए।

गुटनिरपेक्ष नीति का अविचल रूप से पालन करने मे भारतीय नेतागण के दृढसकल्प का भी सोवियत सघ के नेतृत्वकारी क्षेत्रो और जनसाधारण ने पूरा समर्थन किया है और उसके प्रति समझदारी का परिचय दिया है। इसने भारतीय नेतृत्व मे राजकीय दूरदर्शिता और बडे साहस का तकाजा किया क्योकि छठे दशक के अत और सातवे दशक के आरम्भ मे देश की बाह्य नीति बदलने के उद्देश्य से कुछेक अदरूनी हलको तथा बाहरी शक्तियो ने उस पर दबाव डालने का अभियान चलाया था। इस भाति के तर्क पेश किये जाते थे कि गुटनिरपेक्ष नीति से देश की सुरक्षा प्रत्याभूत नही होती, इसलिए इसमे प्रभावहीनता के आसार दिखायी देने लग गये है। एक विकल्प के रूप मे भारत को साम्राज्यवादी ताकतो के साथ सैन्य राजनीतिक साठ गाठ की ओर धकलने के यत्न भी किये गये थे।

किंतु जीवन ने साबित किया है कि गणराज्य के लिए उस दूभर काल मे गुटनिरपेक्ष नीति पर लगातार हमलो की परिस्थितियो मे देश के नेतृत्व का दृढ रुख सही था। जवाहरलाल नेहरू का यह कथन उस समय की तरह आज भी उतना ही प्रामाणिक है कि गुटनिरपेक्ष नीति से कोई भी भटकाव भारत के हितो के लिए उसकी आजादी और अखडता के लिए हानिकर होगा—दुनिया मे शाति के ध्येय की सिद्धि का प्रश्न तो दूर की बात है।*

---

* जवाहरलाल नेहरू भारत की विदेशनीति, मास्को १६६५ पृ० ४७ (रूसी सस्करण)।

यह रुख किसी क्षणिक मनमौजी निर्णय का फल नही था परतु उसमे राष्ट्र के समूचे हितो को ध्यान म रखा गया था, अडोस-पडोस मे ही नही, अपितु विश्व मच पर राजनीतिक शक्तियो के जटिल सतुलन को भी ध्यान मे रखा गया था। ऐसी सूरत मे भी जब कोई दिल्ली को आधारविहीन निहायत खतरनाक फैसले लेने के लिए उकसाने लगता था, भारतीय नेतृत्व अतर्राष्ट्रीय मामलो मे यथार्थवाद और दृढता प्रदर्शित करता था।

सोवियत भारत सबधो का इतिहास ऐसे उदाहरणो से भरपूर है जो शत्रुतापूर्ण बाहरी ताकतो के खिलाफ राष्ट्रीय सप्रभुता और प्रादेशिक अखडता की रक्षार्थ भारतीय जनता तथा नेतृत्व का सोवियत सघ द्वारा सुसगत एव स्थिर समर्थन प्रदर्शित करते हैं। सोवियत सघ ने अनेक बार व्यवहार म प्रमाणित किया कि वह भारत म एक शक्तिशाली, एकीभूत और समृद्ध राज्य देखना चाहता है, एक ऐसा राज्य, जो नवउपनिवेशको तथा साम्राज्यवादियो के षड्यत्रो को विफल बनाने मे सक्षम हो। सोवियत सघ के सिद्धातनिष्ठ रुख ने भारत की सप्रभुता तथा राष्ट्रीय एकता निर्बल बनाने के सभी प्रयासो की भर्त्सना की और आज भी करता है।

भारत के प्रति सोवियत सघ समूचे समाजवादी राष्ट्रमडल के रुख और नवउपनिवेशवादी तथा साम्राज्यवादी तबको के रुख मे यही मूल अतर है। बेशक, ऐसा सोचना स्थिति का जरूरत से ज्यादा सरलीकरण करना होगा कि नवउपनिवेशवादी तथा साम्राज्यवादी तबके अफ्रो-एशियाई जगत के महान देश, स्वतत्र विकास की राह पर अग्रसर भारत जैसे देश की स्वतत्रता को हर कीमत पर खयाली चीज म बदलने का लक्ष्य अपनाये हुए हैं। किंतु यह निर्विवाद है कि पश्चिम के कुछ क्षेत्र भारत की विदेशनीति को अवश्य इस तरह 'सुधारना-सवारना' चाहते हैं कि वह दक्षिण एशिया म और उस पार प्रदेशो मे साम्राज्यवाद के विस्तारवादी स्वार्थो की पूर्ति मे अडचन न बने। महासागर के उस पार कुछ तबको के लिए शातिप्रिय शक्तियो के विरुद्ध अपनी आक्रामक नीति चलाना कही आसान होगा यदि भारत जैसे देश शाति और जनगण के आज़ादी तथा स्वातत्र्य के अधिकारो की पैरवी मे अपनी आवाज़ धीमी कर दे, जिसे सभी महाद्वीपो के लोग ध्यान से सुनते है।

भारत के प्रति दो मूलत विरोधी रुखो की प्रख्यात राजनयन और

राजनेता के० पी० एस० मेनन ने सटीक परिभाषा दी है। एक कृति में उन्होंने लिखा कि 'अमरीका के विपरीत सोवियत संघ ने आरंभ से ही भारत की भूगोलीय राजनीति का महत्व समझा था। ५५ करोड़ (आंकड़े १९७१ के हैं) आबादी वाला यह देश, महान सभ्यता का स्वामी तथा सुसंगत विदेशनीति चलानेवाला और विपुल संपदा से भरपूर यह देश एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंचल में स्थित है। एक महान राज्य होना उसके भाग्य में लिखा है और सोवियत संघ अपने हितों को दृष्टिगत रखते हुए चाहता है कि वह एक महान शक्ति बने। दूसरी ओर संयुक्त राज्य अमरीका भारत के संभाव्य सार्वभौमिक राजनीतिक महत्व की अवहेलना करता है अथवा इसके उलट, वह इस महत्व को भली भांति समझते हुए संभावना को असलियत में बदलने से रोकने के लिए कृतसंकल्प है।' *

साम्राज्यवादी ताकतों और सोवियत संघ के रुख में अंतर, जिसकी के० पी० एस० मेनन ने चर्चा की है भारत के लिए जीवंत महत्व रखनेवाले, आधारिक प्रश्नों के प्रति रुख में अंतर देश के स्वाधीन होने के आरंभिक काल से लेकर वर्तमान काल तक प्रकट होता आया है। यह अंतर सांयोगिक नहीं है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं। सोवियत संघ तथाकथित 'कश्मीर समस्या' को भारत पर अपनी ऐसी शर्तें लादने के लिए उपयोग में लाने के साम्राज्यवादी ताकतों के सभी प्रयासों का डटकर विरोध करता आया है, जो उसके हितों के प्रतिकूल है और उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डालती है। जब अमरीका की अगुआई में पश्चिमी देशों ने १९५७ में कश्मीर में 'संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में निष्पक्ष मत-संग्रह' संबंधी प्रस्ताव को सुरक्षा परिषद में पास कराना चाहा था और इसकी तैयारी के नाम पर वहां संयुक्त राष्ट्र संघ की अस्थायी सशस्त्र टुकड़ियां तैनात करने का सुझाव रखा था, तो सोवियत संघ ने इस प्रस्ताव के स्वीकृत होने से रोकने के लिए अपने निषेधाधिकार (वीटो) का उपयोग किया। सुरक्षा परिषद में सोवियत संघ के प्रतिनिधि ने भारतीय प्रतिनिधि की इस घोषणा का समर्थन किया कि पश्चिम देशों का सुझाव कश्मीरी जनता की इच्छा तथा उस परिस्थिति को नजरदाज करना है जो

* K P S Menon *The Indo-Soviet Treaty Setting and Sequel* Delhi 1972 p 92 93

फौजी गठबधनो म पाकिस्तान की शिरकत की वजह से पैदा हुई है।

भारत के लिए एक और ज्वलत प्रश्न – याने उसकी धरती पर बचे पुर्तगाली उपनिवेश जैसे प्रश्न – के सबध मे भी सोवियत सघ ने दृढ दृष्टिकोण अपनाया था। १६५५ म ही भारत की यात्रा के दौरान सोवियत प्रधानमत्री ने ऐलान किया था कि पुर्तगाल द्वारा भारत की धरती पर अपना उपनिवेश बनाये रखना सभ्य जनगण के माथे पर कलक है। इस सिलसिले मे पुर्तगाल और अमरीका के विदेशमन्त्रियो न यहा तक कह डाला था कि गोआ "उपनिवेश नही पुर्तगाली प्रदेश ही है"।

फिर जब १६६१ के दिसबर मे जवाहरलाल नेहरू की सरकार ने पुर्तगाली कब्जे स अपनी जमीन आजाद करने के वास्ते कानूनी कार्रवाइया की, तो साम्राज्यवादी ताकतो ने उनका विरोध करने तथा भारत को आक्रामक ठहराने के लिए सभी कुछ किया था। किंतु उनके इरादे पूरे नही हो पाये थे, और इसमे भारत सरकार को उपनिवेश विरोधी साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियो सर्वोपरि सोवियत सघ की ओर से प्राप्त जबर्दस्त समर्थन का कोई कम महत्व नही था। भारत के प्रधानमत्री के नाम प्रेषित सोवियत प्रधानमत्री के सदेश मे भारत के साथ गोआ के एकीकरण का स्वागत किया गया था। इस परिघटना को 'अपमान-जनक औपनिवेशिक प्रणाली के पूर्ण तथा अविलब उन्मूलन के लिए चल रहे सग्राम के उदात्त ध्येय मे बडा योगदान" माना गया था। यह सर्वथा लाक्षणिक था कि सोवियत सघ ने ही साम्राज्यवादियो के उन मसूबो को नाकाम कर दिया था जिनके जरिये वे भारतीय कार्रवाइयो की भर्त्सना करनेवाले एक प्रस्ताव को सुरक्षा परिषद मे पास कराना चाहते थे। सुरक्षा परिषद मे सोवियत सघ के दृष्टिकोण मे उन लक्ष्यो के प्रति उसकी अडिग निष्ठा अभिपुष्ट हुई थी, जो औपनिवेशिक देशो और जनगण को स्वाधीनता प्रदान करने के घोषणापत्र मे अकित थे। यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय मुक्तिकारी उपनिवेश-विरोधी सग्राम का सदैव हितसाधन करता है। भारतीय जनता न फिर एक बार देखा कि कौन उसका सच्चा दोस्त है, कौन अवाम की राष्ट्रीय आजादी की व्यवहार मे हिमायत करता है, और कौन दोस्ती के असख्य आश्वासन देता है और कथनी मे उपनिवेशवाद की निंदा करता है, परतु वास्तव मे गुलामी की इस प्रणाली के अवशेष मिटाने मे सब तरह की बाधाए खडी करता है।

मुक्ति आदालना के माथ एकताभाव नहरू की विदेशनीति की एक अभिन्न नाभणिकता थी। १९६१ म उन्होंने कहा था कोई मम नहीं है कि उपनिवेशवाद व अशोप न केवल गंभीर गडबडी पैदा करते है बल्कि नये युद्ध को निकट भी ला सकते है। इसीलिए सारी दुनिया की दृष्टि तक म मैं इस अत्यंत महत्वपूर्ण मानता हू कि उपनिवेशवाद की प्रणाली का समूल नाश किया जाना चाहिए, कि उसकी दुखद स्मृतियां के अलावा कोई चिह्न बाकी न रहे।* भारत के नेता के इस दृष्टिकोण ने राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम की प्रगति रोकने के साम्राज्यवादियों और उनके पिछलगुओं के प्रयासों का प्रतिरोध करने के काम में सोवियत संघ के साथ फलदायी सहयोग संभव बनाया था। सोवियत संघ और भारत की सम्मिलित कार्रवाइयां नवउपनिवेशवादी साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा नवजात राज्यों की स्वाधीनता के अतिक्रमणों को निष्फल बनाने में सहायक हुईं। इस प्रसंग में निकट पूर्व में १९५६ में हुई घटनाएं बड़ी अर्थपूर्ण हैं जब सोवियत संघ और भारत ने मिस्र पर आंग्ल फ्रांसीसी इस्राइली आक्रमण के संबंध में एकसमान दृष्टिकोण अपनाया था। दोनों देशों ने तीन शक्तियों के इस आक्रमण की कटु भर्त्सना की और उसका अविलंब अंत करने की मांग की। जवाहरलाल नहरू के शब्दों में मिस्र पर हमला सब आक्रमणों में सबसे निर्लज्ज आक्रमण था। संयुक्त राष्ट्र संघ में सोवियत संघ भारत तथा अन्य शांतिकामी शक्तियों द्वारा उठाये प्रबल पगों की बदौलत आक्रमण बंद करने के लिए विश्व जनमत की एकजुटता ने हमलावरों पर अंकुश लगा दिया। संयुक्त राज्य अमरीका इंगलैंड फ्रांस और इस्राइल के प्रधानों के नाम सोवियत प्रधानमंत्री के संदेश में निश्चयपूर्वक बताया गया था कि सोवियत संघ ने संयुक्त राष्ट्र संघ में इस आशय का सुझाव रखा है कि मिस्र पर हमला समाप्त करने तथा तीसरा विश्व युद्ध न होने देने के लिए इस संगठन के अन्य सदस्यों के साथ-साथ उसकी भी सशस्त्र टुकड़ियों का इस्तेमाल किया जाये। आक्रमण बंद करने के इरादे से भारत ने भी संयुक्त राष्ट्र संघ की सेनाओं में शामिल होने का निर्णय किया था।

इस मामले में सोवियत संघ और भारत द्वारा अपनाया दृढ़ रुख वह आधार बना था, जिस पर आगे चलकर निकट पूर्व की समस्या के

* जवाहरलाल नहरू भारत की विदेशनीति मास्को १९६४ पृ० २६३ (रूसी संस्करण)।

न्यायसगत समाधान के हेतु समाजवादी राष्ट्रमडल और गुटनिरपेक्ष आदोलन की अरब अवाम के साथ मैत्री फली फूली।

सोवियत सघ और भारत की राजनीतिक अन्योन्यक्रिया ने १६६२ मे लाओस की धरती पर शाति की बहाली मे, जिसका साम्राज्यवादी भरसक विरोध कर रहे थे, १६६४ मे कागो मे सशस्त्र हस्तक्षेप बद करने मे भी बडा योग दिया था।

विश्व मच पर हमारे देशो के सम्मिलित कार्य आपस मे समझदारी और विश्वास का वातावरण पुख्ता बनाते चले गये और उन्होंने तनाव तथा टकराव की स्थिति का रास्ता रोकने के लिए समुचित उपाय ढूढने मे मदद दी।

यह कहना अत्युक्ति न होगा कि सोवियत-भारत सबधो मे आपसी समझ और विश्वास के उच्च स्तर की बदौलत ही जो दक्षिण एशिया तथा उसके बाहर स्थित प्रदेशो मे मौजूदा स्थिति के एकसमान अथवा सदृश मूल्याकन पर आधारित है, १६७१ म पूर्वी बगाल का मुक्ति सग्राम दबाने तथा सारे दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप को स्थायी कलह का अखाडा बनाने के बाह्य शक्तियो के मसूबो को नाकाम करना सभव हुआ। सोवियत सघ और भारत यह मानते थे कि पूर्वी बगाल की जनता की न्यायपूर्ण मागो और अधिकारो की पूर्ति तथा बाहर से किसी भी हस्तक्षेप का निषेध उपमहाद्वीप म स्थिति सामान्य बनाने के आधारभूत कारक का काम कर सकते है। १५ अक्तूबर, १६७१ के तास के वक्तव्य मे स्पष्टत कहा गया था "जाहिर है कि तनाव मे कमी सर्वोपरि पूर्वी पाकिस्तान की समस्या के निपटारे पर आश्रित है जिसमे उसकी जनता के अविच्छिन्न अधिकारो और कानूनी हितो का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।"

किंतु पाकिस्तान क तत्कालीन नताओ न इन अधिकारो और हितो की अवहेलना की। इतना ही नही, सकटपूर्ण स्थिति का हथियारो के जोर से निबटाने के उनके यत्नो का, जिन्हे साम्राज्यवादी ताकतो न उकसाया था, परिणाम यह हुआ कि पूर्वी पाकिस्तान मे मुक्ति आदोलन अधिक ऊचे स्तर पर पहुच गया था। अतत सग्राम की परिणति थी बगलादेश की उत्पत्ति। यह भी सुविदित है कि इस परिघटना की साम्राज्यवादी क्षेत्रो और उनके सगियो के बीच क्या प्रतिक्रिया हुई तथा उन्होंने भारत के साथ कैसा व्यवहार किया, जिसने पूर्वी बगाल

की जनता के न्यायपूर्ण संग्राम का समर्थन दिया। अमरीकी समाचारपत्रों के अनुसार हेनरी किसिंजर ने जो उस समय राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में अमरीकी राष्ट्रपति के सहायक थे, स्वीकार किया कि 'हर आध घंटे में मुझे राष्ट्रपति से इसलिए झिड़कियां मिलतीं कि भारत के साथ मैं काफी सख्ती से पेश नहीं आया था'।* किंतु साम्राज्यवादी ताकतों के व्यवहार में सख्ती, दबाव और ब्लैकमेल की कमी न थी। जिस समय हिंदुस्तानी उपमहाद्वीप में संकट चरम बिंदु पर था, अमरीका ने भारत को प्रदान की जानेवाली आर्थिक सहायता पर प्रतिबंध लगा दिया। इससे बढ़कर उसे डराने धमकाने की गरज से परमाणु चालित विमानवाहक 'एंटरप्राइज' की अगुआई में सातवें बेड़े के कई युद्धपोत बंगाल की खाड़ी में भेजे गये। परंतु बंगलादेश की स्थापना न होने देने और साथ ही भारत को डराने तथा उसे 'सजा देने' के साम्राज्यवादी प्रयास विफल हुए। इसमें पूर्वी बंगाल की जनता के मुक्ति आंदोलन और भारत के साथ समाजवादी देशों की एकजुटता ने निर्णायक भूमिका अदा की थी। संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य संस्थाओं में सोवियत संघ द्वारा अपनाया गया दृढ़ रवैया भारत के विरुद्ध साम्राज्यवादियों और उनके पिछलग्गुओं के राजनयिक तथा सैन्य राजनीतिक कुचक्रों को विफल बनाने में निर्णयकारी कारक साबित हुआ। के० पी० एस० मेनन के शब्दों में, 'समूचे बंगलादेश के संकट के दौरान सोवियत संघ एक चट्टान की तरह भारत के संग खड़ा रहा। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी सोवियत संघ द्वारा दी गयी सहायता कोई कम न थी। सोवियत संघ ने अमरीकी प्रस्ताव के खिलाफ बहिचक निषेधाधिकार का उपयोग किया था।'**

स्पष्ट है कि शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धांतों के प्रति निष्ठावान रहते हुए हिंदुस्तानी उपमहाद्वीप पर संकट के निराकरण के अपने प्रयास में न सोवियत संघ ने और न भारत ने ही कोई एकतरफा सुविधाएं हासिल करने का लक्ष्य अपने सामने रखा था। वे किन्हीं क्षणिक स्वार्थों से नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया के जनगण के बीच स्थायी शांति, न्याय और सच्चे पड़ोसियों जैसे संबंधों की अभिलाषा से निर्देशित थे। ५

---

* Bimal Prasad *Indo-Soviet Relations 1947 1972* N D p 383

** K P S Menon, *The Indo-Soviet Treaty Setting and Sequel* Delhi, 1972 p 110

अप्रैल, १९७२ को सोवियत सघ की यात्रा पर आये भारत के विदेशमत्री की वार्ता के परिणामो पर जारी सयुक्त सोवियत भारत वक्तव्य म इस पर खास जोर दिया गया था कि "सोवियत सघ और भारत को विश्वास है कि उपमहाद्वीप मे स्थिति का सामान्यीकरण, जिसमे वर्तमान राजनीतिक यथार्थताओ को अवश्य ध्यान मे रखा जाये, इस प्रदेश के जनगण क जीवत हितो के अनुकूल होगा और दीर्घकालिक शाति के बचाव तथा स्थिरीकरण मे योग देगा। वे इस बात के कायल है कि उपमहाद्वीप को शाति, मैत्री और अच्छे पडोसियो क प्रदेश मे बदलने के लिए यथाशक्ति प्रयत्नशील रहना चाहिए।"

भिन्न भिन्न क्षेत्रो म सोवियत भारत सबधो के गत्यात्मक विकास और परस्पर समझ ने दोनो देशो के बीच शाति, मैत्री और सहयोग की सधि का मार्ग प्रशस्त किया। ९ अगस्त, १९७१ को ऐसी सधि पर हस्ताक्षर हुए थे। सधि द्विपक्षीय सबधो और अतर्राष्ट्रीय मामलो मे दो देशो द्वारा सचित परस्पर लाभदायी और फलप्रद सहयोग के समृद्ध अनुभव का स्थायी राजनीतिक तथा कानूनी आधार बन गयी।

जैसा कि विदित है, सधि हिंदुस्तानी उपमहाद्वीप मे परिस्थिति के तीव्र उलझाव के समय सपन्न हुई थी। इसे देखते हुए सधि के निष्पादन न आक्रमण और विस्तारवाद की राह मे एक विश्वसनीय बाधा बनकर तथा उपमहाद्वीप के खतरनाक मुकाबलेबाजी के अड्डे मे रूपातरण को रोककर महती सकारात्मक भूमिका अदा की। किंतु १९७१ की सधि के महत्व को उस काल की ही खासियत से आकना सही नही होगा। के० पी० एस० मेनन का यह कहना सर्वथा ठीक है कि "भारत-सोवियत सधि को सोवियत सघ के सबध मे हमारी नीति का मूर्त रूप मानना चाहिए।" सधि सोवियत भारत सबधो के सपूर्ण विकास का तर्कसगत परिणाम है, सोवियत भारत मित्रता के भव्य भवन के निर्माण मे हमारे जनगण क सोद्देश्य एव दीर्घ प्रयासो का फल है। साथ ही साथ यह दस्तावेज दोनो देशो के विविध रिश्ते बढाने का एक कारगर उपकरण भी है। यह इस बात का ज्वलत प्रमाण है कि मैत्री और सहयोग के रिश्ते दोनो देशो के राष्ट्रीय हितो मे निर्धारित दीर्घकालिक कारको पर अवलबित है।

समय ने स्पष्टत यह पुष्ट किया है कि सोवियत भारत सधि अपने लिए निर्दिष्ट उच्च ध्येय के पूर्णत अनुरूप है, दोनो देशो के बीच मैत्री

और सहयोग के सुदृढीकरण के लक्ष्य का हितसाधन करती है। इसके अलावा जैसा कि घटनाओं ने प्रदर्शित किया है, यह एशिया और संपूर्ण संसार में शांति का एक प्रभावशाली कारक भी है।

संधि की एक लाक्षणिकता यह है कि इसमें दोनों राज्यों के मूलगामी सिद्धांतनिष्ठ विदेशनीतिक लक्ष्य प्रतिबिंबित हैं। ये लक्ष्य हैं एक दूसरे की स्वाधीनता, संप्रभुता और राष्ट्रीय अखंडता के समादर पर कायम अंतर्राज्यीय संपर्कों का विस्तार, भीतरी मामलों में अहस्तक्षेप, समता और परस्पर लाभ। इसके अलावा ये लक्ष्य हैं एशिया में और उसके बाहर के प्रदेशों में शांति का दृढीकरण, निरस्त्रीकरण, उपनिवेशवाद की कलंकपूर्ण प्रणाली तथा नसलवाद के समूल नाश, समता एवं न्याय के आधार पर चौमुखी अंतर्राज्यीय सहयोग।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि संधि में विश्व मंच पर परस्पर सहयोग में वृद्धि करने के दोनों राज्यों के दृढसंकल्प की अभिव्यक्ति ही नहीं हुई, अपितु इस परस्पर सहयोग की विधियां और उपाय तथा राजनीतिक सहयोग की क्रियाविधि भी सुस्पष्ट रूप से निर्धारित की गयी है। संधि की धारा ५ दोनों पक्षों को इस बात के लिए पाबंद करती है कि वे अपने प्रमुख राजनेताओं की वार्ताओं और विचार विनिमय, दो सरकारों के अधिकृत शिष्टमंडलों तथा विशेष प्रतिनिधियों की परस्पर यात्राओं तथा राजनीतिक सूत्रों के माध्यम से दोनों राज्यों के हितों से संबंध रखनेवाले प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर एक दूसरे से नियमित संपर्क कायम रखें।

दोनों देशों के मैत्रीपूर्ण संबंधों की आगे प्रगति ने फौरी अंतर्राष्ट्रीय समस्याएं सुलझाने में उनके सहयोग की बड़ी कारगरता भी दर्शायी। भारत, भारत से सोवियत संघ की यात्रा या सोवियत संघ से भारत की यात्रा के समय होनेवाली उच्चस्तरीय वार्ताओं में अथवा सरकारी प्रतिनिधियों की सभी वार्ताओं में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के बुनियादी सवालों पर विचार विमर्श होता रहता है। इन भेंटों के समय एक भी अंतर्राष्ट्रीय समस्या उनकी नजर से ओझल नहीं हुई है – चाहे यह समस्या आणविक परीक्षणों पर प्रतिबंध की आवश्यकता में अथवा सभी देशों द्वारा समुद्री कानून के अविचल पालन से संबंधित रही हो।

विश्व मंच पर द्विपक्षीय सहयोग के अनुभव का मूल्यांकन करते हुए यकीनन कहा जा सकता है कि सोवियत भारत संधि में दर्ज उदात्त

लक्ष्यो की प्राप्ति हेतु सम्मिलित गतिविधियो का समन्वयन बढ गया है।

सोवियत भारत सधि नयी-नयी शाखाओ वाले एक विराट वृक्ष की भाति सहयोग के नये-नये समझौतो से भरपूर होती जा रही है। यह प्रक्रिया पूर्णत विवेकसगत भी है क्योकि सधि व्यवहारत मानवीय कार्य-कलाप क सभी क्षत्रो म द्विपक्षीय सपर्कों म वृद्धि को आवश्यक बना रही है।

सधि एक दूसरे की राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करन के लिए दोनो पक्षो को समन्वित कदम उठाने के वास्ते कर्तव्यबद्ध करती है। सधि की इससे सबधित धारा के महत्व को पिछली कुछ घटनाओ ने पुन पुष्ट किया है। धारा ६ मे कहा गया है कि सोवियत सघ अथवा भारत पर आक्रमण या आक्रमण की धमकी की सूरत मे दोनो पक्ष "ऐसे खतरे क निवारण और शाति की बहाली तथा अपने देशो की सुरक्षा की व्यवस्था हेतु तदनुरूप कारगर पग उठाने के उद्देश्य से परस्पर परामर्श अविलब आरभ कर देगे। सधि पर हस्ताक्षर की तिथि के उपरात जितना अधिक समय बीतता जाता है, उसका शाति के दृढीकरण के उपकरण के रूप मे महत्व उसका शातिप्रिय स्वरूप अधिकाधिक उभरकर प्रकट होते जा रहे हैं।

सधि दोनो देशो क राष्ट्रीय हितो की विश्वसनीय ढग से पूर्ति करते हुए किसी तीसरे देश के खिलाफ लक्षित नही है। 'हिंदुस्तान टाइम्स न सधि पर टीका करते हुए यह विचार इस प्रकार व्यक्त किया 'भारत-सोवियत मैत्री किसी के खिलाफ नही है, न वह ऐसा कोई खतरा ही है जिसका सामना किया जाना चाहिए।'*

सधि सोवियत सघ और भारत की दूसरे देशो के साथ शातिपूर्ण सबध विस्तृत करने की स्वतत्रता को तनिक भी सीमित नही करती है। न वह इस बात पर ही पर्दा डालती है कि सोवियत सघ और भारत भिन्न भिन्न विदेशनीतिक अवधारणाओ से निदेशित होते है, परतु ये अवधारणाए ज्वलत आधुनिक समस्याओ के हल की खोज मे फलप्रद सहयोग मे कोई भी अडचन नही डालती। इस दस्तावेज मे दोनो पक्षो की विदेशनीति का उच्च मूल्याकन किया गया है। एक अलग धारा म बताया गया है कि 'सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ भारत की गुटनिरपेक्ष नीति का आदर करता है और इस बात की पुन पुष्टि करता

* *Hindustan Times* 18 December 1971

है कि यह नीति सर्वव्यापी शाति तथा अतर्राष्ट्रीय सुरक्षा बनाये रखन मे और दुनिया म तनाव कम करने म प्रमुख कारक है।" दूसरी ओर सधि म यह प्रस्थापना अतर्निहित है कि 'भारत गणराज्य सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ द्वारा अमल मे लायी जा रही और सभी जनगण के साथ मैत्री और सहयोग बढान की ओर लक्षित शातिपूर्ण नीति का आदर करता है।'

शाति मैत्री और सहयोग की सधि के अविचल अनुपालन न सोवियत भारत मित्रता के शत्रुओ की इन 'भविष्यवाणियो" की निराधारता प्रकट कर दी कि यह दस्तावेज विश्व मच पर भारत की कार्य-स्वतत्रता को सीमित करता है और एक गुटनिरपेक्ष राज्य के नाते उसकी प्रतिष्ठा का अतिक्रमण करता है। * जीवन न सिद्ध किया है कि स्थिति इसके विपरीत है। नित्य बढ रहा सोवियत भारत सहयोग भारत की शाति कामी विदेशनीति के सक्रिय होने मे तथा गुटनिरपेक्ष आदोलन के भीतर उसकी प्रतिष्ठा बढाने मे योग देता है। १९८३ मे भारत का इस आदोलन का अध्यक्ष चुना जाना इस प्रतिष्ठा का भव्य प्रमाण है। जाहिर है कि गुटनिरपेक्ष राज्यो के अदर भारत की बढी हुई प्रतिष्ठा को स्वीकार करते हुए और उसके सग सहयोग बढाते हुए गुटनिरपेक्ष आदोलन के सहभागी इस बात से पूर्णत अवगत है कि सोवियत भारत सधि ने आदोलन के सदस्य के रूप म भारत की स्थिति को तनिक भी आच नही पहुचायी है।

सोवियत भारत सधि और उसक महत्व का सटीक मूल्याकन श्रीमती इदिरा गाधी ने किया, जिन्होन इस एतिहासिक दस्तावेज की तैयारी मे भाग लिया था। २६ अगस्त १९७१ को विश्व शाति परिषद के महासचिव रमेश चन्द्र के साथ साक्षात्कार म उन्होने कहा था कि हमारी जनता सोवियत सघ म अपना मित्र देखती है। इस वजह स सधि को देश भर मे इतना व्यापक समर्थन मिला है। गुटबदी की नीति स पृथक रहत हुए हम विभिन्न रुझानो वाली सरकारो के साथ दोस्ती के लिए इच्छुक है। शातिपूर्ण सहअस्तित्व और यह दृढ विश्वास कि विवादास्पद प्रश्नो के हल के एक साधन के रूप म युद्ध वर्जित होना चाहिए, हमारी नीति के आधारभूत मार्गदर्शक सिद्धात हैं और उन्होने आगे कहा कि सोवियत सघ ने हमारी गुटनिरपेक्ष नीति का पूर्ण आदर तथा समर्थन

* K Neelkant *Partners in Peace* N D 1972 p 117

किया है। इससे सबधित धारणा को सधि मे दर्ज किया गया है सधि एक गुटनिरपेक्ष देश के रूप मे हमारी स्थिति को ठेस नही पहुचाती। गुटनिरपेक्ष देशो के राष्ट्रीय हितो की फौजी दुस्साहसवाद की धमकियो मे हिफाजत करना आवश्यक है। सुरक्षा के ध्येय की प्राप्ति इस तरह से करनी है कि उसमे दूसरे के आधिपत्य अथवा मुकाबलेबाजी के लिए कोई भी स्थान नही रहे, अत एक ऐसे उपाय से काम लेना चाहिए जो दीर्घकालिक शाति सुनिश्चित कर सके। शाति, मैत्री और सहयोग की भारत-सोवियत सधि ठीक इस दिशा मे सचेष्ट है।* ६ अक्तूबर, १९७१ को अखिल भारतीय काग्रेस समिति के अधिवेशन मे अपने उद्घाटन भाषण मे सधि की चर्चा करते हुए इदिरा गाधी ने इगित किया कि वह भारत द्वारा उन रास्तो के चयन मे उसकी स्वतत्रता को सीमित नही करती, जिन्हे वह अपने "राष्ट्रीय हितो के अनुकूल समझता है"। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत स्वतत्र रूप से निर्णय लेने और कार्य करने के अपने अधिकार का कभी त्याग नही करेगा चूकि इसका मतलब राष्ट्रीय सप्रभुता की ही बलि दे देना होगा।**

स्वय सोवियत सघ मे सधि को सार्वजनिक समर्थन प्राप्त हुआ और उसका ऊचा मूल्याकन किया गया। व० व० कुज्नेत्सोव ने, जो उस समय प्रथम उपविदेशमत्री थे, सर्वोच्च सोवियत की सघ परिषद और जातीय परिषद के विदेशी मामलो सबधी आयोगो की सयुक्त बैठक मे सोवियत सरकार की ओर से ऐलान किया "सोवियत सघ और भारत गणराज्य के बीच शाति, मैत्री और सहयोग की सधि का महत्व सर्वोपरि इसमे निहित है कि वह आधुनिक जगत के दो महानतम राज्यो–सोवियत सघ और भारत–के बीच सच्ची मित्रता, अच्छे पडोसीपन तथा फलदायी सहयोग के सबधो को विधिक रूप प्रदान कर उनकी अभिपुष्टि करती है। दोनो देशो ने स्पष्टत आश्वासन दिया कि मैत्री का आगे दृढीकरण और सहयोग का विस्तार वे किसी 'तीसरे देश की कीमत पर नही करेगे। सोवियत भारत सधि अतर्राष्ट्रीय सपर्को के नियमन का एक स्थायी कारक, युद्ध के विरुद्ध शाति का करार बन जायेगी।"

सोवियत सघ के सार्वजनिक एव राजनीतिक हलको का दृढ मत

* K Neelkant *Partners in Peace A Study of Indo-Soviet Relations* Delhi 1972 p 119 120 से उद्धृत।

** वही।

है कि संधि भारत युद्धपिपासु दुस्साहसिक कृत्यों का विरोधी होने के नाते सारी दुनिया के सम्मुख प्रदर्शित कर रही है कि परस्पर विश्वास, समानाधिकार और शांतिपूर्ण सहयोग के आधार पर अंतराष्ट्रीय संबंधों का निर्माण न्यायपूर्ण तथा एकमात्र विश्वसनीय पथ है।

परवर्ती घटनाओं ने साबित किया कि भारत और सोवियत संघ के प्रमुख राजनेताओं द्वारा संधि का मूल्यांकन व संबद्ध निष्कर्ष पूर्णतः सत्य है। अंतराष्ट्रीय रंगमंच पर – दक्षिण एशिया में अथवा उसके पार के प्रदेशों में – हर जगह घटनाओं ने चाहे कोई भी रूप धारण किया हो, चर्चित संधि अपने उद्घोषित ध्येय का विश्वसनीय ढंग से हितसाधन करती रही है। वर्तमान काल के आधारभूत प्रपत्रों में उसे उचित ही अग्रणी स्थान प्राप्त है।

अ० ग्रोमिको के कथनानुसार, जिनके सोवियत संघ के विदेशमंत्री के नाते उस पर हस्ताक्षर अंकित है, 'अब सोवियत संघ अथवा भारत के प्रति अपनी नीति निरूपित करते समय कोई भी इस संधि को नजरंदाज नहीं कर सकता ।

भारतीय नेताओं ने संधि के स्थायी मूल्य का अनेक बार उल्लेख किया है। मई १९८५ में सोवियत संघ की यात्रा पर आये प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने क्रेमलिन में अपने भाषण में कहा : 'शांति, मैत्री और सहयोग की १९७१ की संधि हमारे परस्पर प्रगाढ़ आदरभाव की प्रतिबिंबित और शांति ध्येय का हितसाधन कर रही है' ।

सोवियत संघ सोवियत-भारत संबंधों के विस्तार की ओर लक्षित सुसंगत नीति बरत रहा है। सोवियत संघ और भारत के बीच उच्चस्तरीय यात्राओं का आदान-प्रदान एक नियम-सा बन गया है। उच्चस्तरीय सोवियत प्रतिनिधिमंडल की १९७३ की भारत की यात्रा दोनों देशों के जीवन में अपरिमित महत्व की घटना सिद्ध हुई थी। इस अवसर पर हस्ताक्षरित संयुक्त विज्ञप्ति में मैत्री के संबंधों के विकास में अर्जित सफलता पर दोनों पक्षों का पूरा संतोष प्रकट किया गया और सहयोग में आगे संवृद्धि की दिशाएं तथा विधियां निश्चित की गयी थी। इस विज्ञप्ति और यात्रा के समूचे परिणाम परस्पर संबंधों के तीव्र उभार में सहायक बने। जुलाई १९७६ में श्रीमती इंदिरा गांधी की सोवियत संघ की यात्रा इस उभार का एक नया चरण सिद्ध हुई। इस दौरान श्रीमती इंदिरा गांधी और सोवियत प्रमुखों के बीच द्विपक्षीय तथा

अतर्राष्ट्रीय, दोनों प्रकार की समस्याओं पर सौहार्दपूर्ण विचार-विमर्श हुआ, फलस्वरूप परस्पर समझदारी और विश्व मच पर उनकी अन्योन्य-क्रिया को प्रबल प्रेरणा मिली। उस समय जब साम्राज्यवाद के उग्रतम आक्रमणकारी हलकों ने अतराज्यीय सबधों में तनाव शैथिल्य से खतरनाक तनाव में सक्रमण आरभ कर दिया था इस यात्रा के परिणाम खास तौर पर सार्थक सिद्ध हुए।

सोवियत भारत सबधों का विस्तार राजनीतिक परिस्थितियों पर आश्रित नहीं है, यह बात जनता पार्टी के सत्ताकाल (१९७७ १९७९) में भी प्रदर्शित हुई। यह लाक्षणिक है कि नयी सरकार का एक विदेशनीतिक काम यह था कि उसने अ० ग्रोमिको को दिल्ली निमंत्रित किया। उनकी सरकारी यात्रा के समय अप्रैल १९७७ में दोनों पक्षों ने सधि को आधार बनाकर सहयोग बढाने की तत्परता प्रकट की। इसकी पुष्टि १९७७ और १९७९ में परस्पर उच्चस्तरीय यात्राओं और द्विपक्षीय सबधों के नाना क्षेत्रों में सपन्न समझौतों से हुई थी।

साथ ही जनता पार्टी की सरकार ने देश की बाहरी नीति में कुछ परिवर्तन किये थे जिनसे, भारतीय समाचारपत्रों के अनुसार देश के प्रगतिशील सस्तरों को चिंता हुई। सरकार के एक प्रभावशाली हिस्से में प्रचलित इस तर्क के प्रति देश में प्रतिक्रिया एक जैसी नहीं थी कि गुटनिरपेक्षता की नीति के पालन में साम्राज्यवादी और समाजवादी, दोनों किस्म के देशों से 'एकसमान दूरी' के सिद्धात का अनुपालन करना आवश्यक है। सारत इसका अर्थ गुटनिरपेक्षता की नीति के साम्राज्यवाद विरोधी रुझान को कुठित करना था।

भारत के प्रगतिमना सार्वजनिक तथा राजनीतिक हलकों ने जनता पार्टी सरकार द्वारा कपूचिया लोक गणतत्र को मान्यता न दिये जाने के प्रति आलोचनात्मक रुख अपनाया था। यह भी सार्थक है कि जनता सरकार के भीतर सयुक्त मोर्चे के प्रमुख सदस्यों के बीच तीक्ष्ण टक्कर में सत्यात्मक रचनात्मक विदेशनीति का कार्यान्वयन उलझ रहा था और विदेशनीतिक गतिविधियां अस्थिर बन रही थीं।

स्वाभावतया १९८० के चुनाव-अभियान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (इ) के आधारिक प्रपत्रों एव सामग्रियों में गुटनिरपेक्षता की सक्रिय और, इससे भी बढकर सुसगत नीति बाह्य कार्यकलाप में "नेहरू की धरोहर" की रक्षा तथा विस्तार को बडा स्थान दिया गया था।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (इ) के निर्वाचन घोषणापत्र में इंगित किया गया था कि 'शुद्ध गुटनिरपेक्ष नीति ने भारत को "नवउपनिवेशवाद" और आर्थिक साम्राज्यवाद-समर्थक शक्तियों के निकट पहुंचा दिया है और साथ ही देश को उन बहुमूल्य मित्रों की सहानुभूति तथा समर्थन से वंचित कर दिया है, जो मुसीबत की घड़ी सदैव हमारे साथ रहे।' घोषणापत्र में यह भी अंकित किया गया था कि चुनाव में विजय पाने की सूरत में नवगठित सरकार जनवादी कंपूचिया के साथ राजनयिक संबंध कायम करेगी।

१९८० के चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (इ) की विजय नेहरू लाइन से अनुप्राणित सक्रिय विदेशनीति का एक महत्वपूर्ण कारक बन गयी। गुटनिरपेक्ष राज्यों की एकता के ध्येय में, गुटनिरपेक्षता आंदोलन के आधारभूत सिद्धांतों को अक्षुण्ण बनाये रखने के प्रयासों में देश के योगदान के राजनीतिक पूर्वाधारों को बहाल किया गया। जनवरी १९८० में प्रधानमंत्री का पद संभालने के शीघ्र बाद कार्यक्रम संबंधी एक वक्तव्य में श्रीमती गांधी ने गुटनिरपेक्षता की नीति के जवाहरलाल नेहरू द्वारा निरूपित सिद्धांतों के प्रति भारत की निष्ठा की अभिपुष्टि की और शांति का दृढ़ीकरण करने तथा समस्त देशों के साथ संपर्क बढ़ाने में यथाशक्ति योग देने का संकल्प व्यक्त किया।

नेहरू लाइन के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष विरोधियों की, जो 'समान दूरी' के नारे को अपनी कलाबाजी के लिए इस्तेमाल कर रहे थे, मनगढ़त बातों का खंडन करते हुए इंदिरा गांधी ने इंगित किया कि महान शक्तियों से एकसमान दूरी के रूप में गुटनिरपेक्षता की परिभाषा करने के प्रयास सरासर निराधार है। वास्तव में गुटनिरपेक्षता का अर्थ सकारात्मक अवधारणा है। इसका अर्थ प्रत्येक संभावना का इस लक्ष्य से उपयोग करना है कि शांति के ध्येय को उत्कृष्ट बनाया जा सके और उन प्रश्नों के बारे में स्पष्ट रुख अपनाया जाय, जिनके बारे में हम दृढ़ विचार अपनाये हुए है।*

इंदिरा गांधी सरकार की विदेशनीति की एक लाक्षणिकता मैत्रीपूर्ण देशों के साथ संपर्कों में अभिवृद्धि थी। कंपूचिया को राजनयिक मान्यता, 'अफगान जनता के जनवादी अधिकारों' की रक्षा की आड़ में भारत

* Speech of Smt Indira Gandhi Prime Minister at the National Convention of Friends of Soviet Union New Delhi May 27 1981

का सोवियत सघ विरोधी सैन्य राजनीतिक दाव-पेच मे घसीटने की कुचालो के दृढतर निराकरण जैसे भारत सरकार के कदमो की देश-विदेश के शातिकामी क्षेत्रो मे व्यापक सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई। गुटनिरपेक्षता आदोलन मे भारत की सहभागिता बढी, जिसका महत्व यह देखते हुए अत्यधिक था कि आदोलन के सदस्य-देशो मे फूट डालने और ज्वलत समसामयिक समस्याए हल करने के कार्य से उन्हे विमुख करने की दिशा मे सचेष्ट साम्राज्यवादी ताकतो तथा उनके साथी देशो के प्रयास सशक्त बनते जा रहे थे। फरवरी १६८१ मे दिल्ली मे आयोजित गुटनिरपेक्ष राज्यो के विदेशमत्रियो का सम्मेलन और मार्च १६८३ मे गुटनिरपेक्ष देशो के प्रधानो का सातवा सम्मेलन इन देशो मे भारत की नित्य बढती प्रतिष्ठा के भव्य द्योतक थे।

सोवियत सघ को एक सच्चे मित्र के नाते शातिप्रिय, स्वतत्र भारत की सफलताओ से हर्ष होता रहा है। उसे दृढ विश्वास है कि इस महान गुटनिरपेक्ष देश के साथ सहयोग के सूत्रो मे वृद्धि शाति, सुरक्षा और जनगण के स्वातत्र्य-सग्राम मे नयी-नयी उपलब्धियो की पक्की जमानत है।

अध्याय ३

पृथ्वी पर शांति और सुरक्षा के हितार्थ

सोवियत भारत संबंधों को समाजवादी और मुक्तिप्राप्त देशों के साथ आदर्श संबंधों की संज्ञा उचित ही दी जाती है। इन संबंधों की अभिलाक्षणिकता है स्थिरता का उच्चतम स्तर, विविधता, विस्तृत आयाम और किन्हीं भी राजनीतिक परिस्थितियों पर अनाश्रितता। अतएव यह वक्तव्य समुचित रूप से न्यायसगत है कि "शांतिप्रिय स्वाधीन भारत के संग अन्योन्यक्रिया भविष्य में भी सोवियत विदेशनीति की एक प्रमुख दिशा बनी रहेगी"।*

इसी नीति में राष्ट्रीय मुक्ति शक्तियों के साथ एकताभाव की सोवियत राज्य की सुसगत नीति मूर्तिमान होती है। पी० टी० आइ० न्यूज एजेंसी को दिये गये एक इंटरव्यू में सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव म० स० गोर्बाचोव ने इस प्रसंग में कहा "भारत के प्रति हमारा रवैया स्वाधीनता और सामाजिक पुनरुत्थान के निमित्त तथा साम्राज्यवादी उत्पीडन के विरुद्ध जनगण के संग्राम के सोवियत संघ द्वारा अविचल एवं सिद्धातनिष्ठ समर्थन को प्रतिबिंबित करता है। यह नीति हमें महान लेनिन ने वसीयत में दी और हम उसके प्रति अटल रूप से निष्ठावान हैं।"

स्वाभाविक है कि भिन्न भिन्न सामाजिक राजनीतिक व्यवस्थाओं वाले देश होने के कारण सोवियत संघ और भारत नाना समस्याओं के प्रति भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं। किंतु आपस में राजनयिक संबंधों का पूरा चालीसवर्षीय अनुभव भव्य रूप से प्रमाणित करता है कि इसमें

---

* सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २६वीं कांग्रेस की सामग्रियां, मास्को १९८१ पृ० १३ १४।

सर्वव्यापी शाति और अतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के सुदृढीकरण मे, आक्रमण, सैन्यवाद, उपनिवेशवाद व नवउपनिवेशवाद की शक्तियो का प्रतिरोध करने म बाधा नही पडती।

जैसा कि अनुभव सिद्ध करता है दो देशो के बीच मैत्री और सहयोग के विस्तार एव उन्नयन का महत्व द्विपक्षीय सबधो के दायरे से कही अधिक व्यापक है। यह विस्तृत और नित्य बढता सहयोग अतराष्ट्रीय सबधो की समूची प्रणाली को भी प्रभावित कर रहा है। इसका कारण ससार के प्रथम समाजवादी राज्य और विशालतम गुटनिरपेक्ष देश द्वारा जो गुटनिरपेक्षता आदोलन का सर्वमान्य तथा प्रतिष्ठित नेता है सचालित अविचल शातिप्रिय विदेशनीति प्रचड समस्याओ के प्रति उनका सक्रिय रवैया है। वर्तमान तनावभरी परिस्थितियो म, जो साम्राज्यवादी जगबाजो की आक्रामक नीति के कारण बडी तीक्ष्ण हो गयी है, इस सहयोग का दृढीकरण खास तौर पर अर्थगर्भित अत्यत महत्वपूर्ण है।

सोवियत सघ और भारत की राजनीतिक अन्योन्यक्रिया के रूप वास्तव मे बहुत विविध है दोनो देशो के प्रधानो के बीच निजी सदेशो का आदान-प्रदान और पारस्परिक सरकारी यात्राए विदेश मत्रालयो के बीच नियमित रूप से होनवाले परामर्श और सयुक्त राष्ट्र सघ एव अन्य अतराष्ट्रीय सस्थाओ मे कार्य के दौरान सोवियत तथा भारतीय प्रतिनिधियो का सहयोग, आदि-आदि। चाहे सयुक्त राष्ट्र सघ की महासभा का अधिवेशन हो अथवा निरस्त्रीकरण सम्मेलन हिंद महासागर पर सयुक्त राष्ट्रसघ की विशेष समिति हो अथवा आर्थिक तथा सामाजिक परिषद, नाना समितियो और सस्थाओ म सोवियत और भारतीय प्रतिनिधिमडलो के बीच गहरे और लाभप्रद सपर्क रहते हैं।

विगत दशाब्दी मे व्यवहारत एक भी ऐसा वर्ष नही बीता, जब राज्यो अथवा सरकारो के प्रधानो के स्तर पर अथवा विदेशमत्रियो के स्तर पर भेंटे न हुई हो।

८ ११ दिसबर, १९८० को सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमडल क अध्यक्ष लेओनीद ब्रेज्नेव की भारत यात्रा के दौरान एक सयुक्त विज्ञप्ति पर हस्ताक्षर हुए, जिसम विश्व मे स्थिति के बिगड जान पर चिता प्रकट की गयी और तनाव शैथिल्य को बनाये रखने एव पुख्ता बनाने ' की अनिवार्यता पर जोर दिया गया तथा ' शस्त्रास्त्रो की होड के समापन हेतु सहयोग

4

बढाने के लिए दृढ सकल्प प्रकट किया गया"।

अपने जनगण की आकाक्षा और इच्छा की अभिव्यक्ति करते हुए दो देशो के प्रधानो ने उद्घोषित किया कि आगे चलकर भी वे शाति और अतर्राष्ट्रीय सुरक्षा तथा राष्ट्रीय स्वतत्रता की खातिर साम्राज्यवाद उपनिवेशवाद नवउपनिवेशवाद नसलवाद व पृथग्वासन की हर अभिव्यजना के विरुद्ध सयुक्त राष्ट्र सघ की नियमावली मे घोषित उदार लक्ष्यो के निमित्त निरतर प्रयत्नशील रहेगे।

इस यात्राकाल म सोवियत राज्य के प्रधान ने फारस की खाडी के क्षेत्र म शातिपूर्ण सकटहीन स्थिति के सरक्षण का जो आह्वान किया था उसकी एशियाई देशो मे सकारात्मक गूज हुई थी। इस आह्वान मे ये बाते शामिल थी यहा सैन्य अड्डा की स्थापना न किया जाना नाभिकीय अथवा आम सहार के अन्य अस्त्रो के रखे जाने पर प्रतिबध, इस अचल म स्थित देशो के खिलाफ बलप्रयोग या उसकी धमकी को निषिद्ध घोषित किया जाना, भीतरी मामलो मे अहस्तक्षेप, उनके द्वारा अपनायी गयी गुटनिरपेक्ष स्थिति का समादर, नाभिकीय ताकतो के सैन्य गुटो म उनकी सदस्यता पर प्रतिबध अपने खनिजो के उपयोग के उनके सार्वभौम अधिकार का सम्मान, निर्बाध व्यापार और नौपरिवहन।

यह रुख जिसका उद्देश्य हमारी धरती के एक सर्वाधिक सकटयुक्त प्रदेश म स्थायी और न्यायपूर्ण शाति को सुनिश्चित करना था, उस रुख के सारत विपरीत था जिसे फारस की खाडी के सदर्भ मे शाति के शत्रु आक्रमण और आधिपत्य के पक्षधर अपनाये हुए थे।

भारत और दूसरे नाना शातिप्रिय देशो के लिए ऐसे रुख के घातक स्वरूप तथा फारस की खाडी के क्षेत्र म स्थिति के नियमन के लिए कारगर उपायो की आवश्यकता की ओर अतर्राष्ट्रीय मामलो के विशेषज्ञ एव जाने माने राजनयज्ञ ए० के० दामोदरन ने ध्यान दिलाया था। अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नो के बारे मे ७ ६ दिसबर, १६८१ को दिल्ली मे आयोजित भारत-सोवियत सगोष्ठी मे उन्होने बताया कि वे देश जो हमारा अनिष्ट चाहते हैं ऐसे विचारो से निर्देशित होते हैं जिनका ऊर्जा समस्या से दूर का भी वास्ता नही है। इस समस्या के बहाने वे इस प्रदेश म सर्वथा अनावश्यक सैन्यीकरण कार्यक्रम लागू करने पर तुले हुए हैं। पाकिस्तान को नवीनतम हथियारो की बडी मात्रा म सप्लाई

का दक्षिण-एशियाई उपमहाद्वीप पर भी प्रत्यक्ष प्रभाव पडा है। पश्चिमी राज्यो द्वारा इस प्रदेश के कोने-कोने मे अड्डो की उन्मादभरी तलाश सोवियत सघ के लिए खतरे का नया स्रोत है, क्योकि इसका वास्ता धरती के एसे भाग मे है, जो उसकी सीमा के बहुत निकट है। ए० के० दामोदरन इस निष्कर्ष पर पहुचे कि इन नकारात्मक परिणामो के दृष्टिगत हमारी (अर्थात भारत और सोवियत सघ की) फारस की खाडी मे लगे प्रदेश के तटस्थीकरण और यदि सभव हो तो विसैन्यीकरण तथा प्रत्याभूत सुरक्षा के हेतु राजनयिक गतिविधिया बढाने मे समान रूप से दिलचस्पी है।*

सितबर १६८२ मे हुई श्रीमती गाधी की सोवियत सघ की सरकारी मैत्रीपूर्ण यात्रा ने द्विपक्षीय सबधो के विकास म एक नया, भव्य पृष्ठ जोडा। सोवियत पक्ष न एक बार फिर इस पर जोर दिया कि दोनो देशो के सबधो की विद्यमान अवस्था इसका स्पष्ट प्रमाण है कि सद्भावना और एक दूसरे की हितचिता होने पर भिन्न सामाजिक व्यवस्थाओ वाले देशो का सहयोग कितना फलप्रद तथा टिकाऊ हो सकता है। यात्रा के दौरान जारी सयुक्त सोवियत भारत विज्ञप्ति मे दृढ इच्छा व्यक्त की गयी थी कि सोवियत सघ और भारत "आपस मे विद्यमान मैत्री सबधो को आग भी निरतर विकसित और दृढतर करते रहेगे, जिन पर दोनो देशो और सर्वव्यापी शाति के हितार्थ सपन्न शाति, मैत्री और सहयोग की सधि की मुहर लगी है"।

इस यात्रा ने पुन पुष्ट किया कि दोनो देशो के बीच राजनीतिक सहयोग के विकास और विस्तार का सैद्धातिक महत्व है।

नियमित रूप से होनेवाली सोवियत-भारत उच्चस्तरीय भेटे आपसी बहुशाखीय सबधा की अडिग प्रमुख कडी के रूप मे मैत्री और सहयोग क स्थिर तथा सतत वर्धमान स्वरूप को प्रतिबिबित करती हैं। साथ ही प्रत्येक भट इन सबधो के समूचे योग को स्थायित्व प्रदान करती है। भेटो के दौरान द्विपक्षीय सपर्को की उपलब्धियो का लेखा-जोखा लिया जाता है और परस्पर रुचि की तात्कालिक अतर्राष्ट्रीय समस्याओ तथा

---

* Indo Soviet Seminar on International Affairs The Situation in South West Asia Arab Israeli dispute and demand for energy source materials from Gulf area Indian Ocean A K Damodaran New Delhi Dec 7 9 1981 p 11 12

द्विपक्षीय सपर्कों पर विचार विनिमय होता है। प्राय वार्ताओं के समापन पर महत्वपूर्ण समझौतों और प्रपत्रों पर हस्ताक्षर किये जाते हैं जो सहयोग की भावी दिशा तथा रूपा का निर्धारण करते हैं।

भारत के प्रधानमत्री राजीव गाधी की १९८५ म २१ मई स २६ मई तक सोवियत सघ की यात्रा के दौरान एक दूसरे के प्रति हार्दिक मित्रता हमारे दो जनगण की शांतिप्रियता और मानवजाति के नियति के प्रति दायित्व की गहन समझ का भव्य प्रदर्शन हुआ था। सोवियत भूमि पर राजीव गाधी के सौहार्दपूर्ण स्वागत-सत्कार न इस बात की पुष्टि की कि सोवियत भारत सबधो की नित्य वृद्धि का कारण उनके स्थिर पारस्परिक सबध ही नही अपितु भारतीय जनता के प्रति सोवियत जनता की अतरग मित्रता एव सद्भावना है। सोवियत सघ वह प्रथम देश है जिसकी यात्रा सत्ता सभालने के पश्चात भारत सरकार के प्रधान ने की। अनक प्रेक्षको की राय म यह उस महत्व का सकेत है जिसे भारतीय नेतृत्व सोवियत सघ के साथ मैत्री सबधो को द रहा है। इन सबधो का उत्कर्ष और स्थायित्व भारत की विदेशनीति की एक आधारभूत एव प्राथमिकताप्राप्त प्रवृत्ति बनी हुई है। इनके महत्व की चर्चा करते हुए पधानमत्री राजीव गाधी न कार्यक्रम विषयक अपने पहले भाषण मे कहा कि हम सोवियत सघ के साथ विस्तृत और समय की कसौटी पर खरे उतरे सबधा का जो परस्पर सहयोग मित्रता और आवश्यकता की घडी म जीवत समर्थन पर अवस्थित है ऊचा मूल्याकन करते है।*

प्रधानमत्री राजीव गाधी की सोवियत सघ की मैत्रीपूर्ण सरकारी यात्रा के परिणामो ने पुन प्रदर्शित किया है कि मैत्री और सहयोग का सवर्द्धन एशिया मे और उसके बाहर भी शांति की रक्षा के सामान्य प्रयासो म भारी योगदान कर रहा है।

सोवियत सघ और भारत तापनाभिकीय महाविपत्ति के निवारण शस्त्रास्त्रो की होड सर्वोपरि नाभिकीय शस्त्रास्त्रो की होड को रोकने और उसका अतरिक्ष म प्रसार जिसके समूची मानव सभ्यता के लिए घातक अपरिवर्तनीय परिणाम निकलेंगे न होने देने म गहरी रुचि रखते है। प्रधानमत्री राजीव गाधी के यात्राकाल म सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव म० स० गार्बाचोव

---

* Indian and Foreign review 30 November 1984 p 13

ने नेमलिन मे अपने भाषण मे इस बात की खास तौर पर चर्चा की कि अतरिक्ष के सैन्यीकरण की रोकथाम की समस्या सभी जनगण व हितो को स्पर्श करती है। सोवियत नेता ने कहा है अभी जब देर नही हुई है अभी जब आश्वासनकारी वक्तव्यो की ओट मे अपरिवर्तनीय स्थिति कायम नही हुई है हमारे विचार मे सभी शातिकामी राज्यो को इस नये खतरे के खिलाफ अपनी आवाज बुलद करनी चाहिए।

यह उल्लेखनीय है कि शस्त्रास्त्रो की होड और अतरिक्ष के सैन्यीकरण के विरुद्ध प्रभावी कदम उठाने का आह्वान अर्जेटीना यूनान, स्वीडन, ताजानिया, भारत और मेक्सिको के प्रधानो के जनवरी १९८५ म दिल्ली मे हुए सम्मेलन ने किया था जिसके आयोजन मे प्रमुख भूमिका भारत ने अदा की। सम्मलन द्वारा स्वीकृत घोषणापत्र की आधारभूत प्रस्थापनाए सोवियत शातिकामी सुझावो से मेल खाती है। घोषणापत्र म कहा गया है हम नाभिकीय शस्त्रास्त्रो और उन्ह पहुचाने की प्रणालियो के परीक्षणो उत्पादन और तैनाती के पूर्ण प्रतिबध के लिए लक्षित अपने आह्वान की पुष्टि कर रहे हैं आजकल दो स्पष्ट पगो की अपेक्षा की जाती है अतरिक्ष मे शस्त्रास्त्रो की होड की रोकथाम और परीक्षणो व निषेध पर सर्वव्यापी सधि की सपन्नता। *

अन्य गुटनिरपक्ष देशो के साथ-साथ भारत ने सयुक्त राष्ट्र सघ की महासभा के ४० व अधिवशन द्वारा स्वीकृत अतरिक्ष म शस्त्रास्त्रो की होड के निवारण के बारे मे' प्रस्ताव की तैयारी म बडी भूमिका अदा की। हमारे देश इस बावत पूर्णत सचेत है कि अतरिक्ष के अन्वेषण तथा उपयोग को सब जनगण की प्रगति के ध्येय मानवजाति के समक्ष प्रस्तुत उन सार्वभौमिक समस्याओ के समाधान का अत्यधिक कारगर ढग स हितसाधन करना चाहिए जिनमे आर्थिक पिछडेपन को दूर करना और विकास जैसे कार्यभार भी शामिल है। अतरिक्ष की भयावह सैन्य खतरे से मुक्ति का अर्थ है जनगण व आगामी कल – शातिपूर्ण भविष्य – मे विश्वास की वृद्धि। सोवियत सघ और भारत, समस्त शातिप्रिय देशो का यही दृढ मत है।

सोवियत सघ और भारत शस्त्रास्त्रो की होड क अनम्य विरोधी है वे अतर्राष्ट्रीय परिस्थिति को तनाव-शैथिल्य की ओर मोडने के

---

* India News Embassy of India Moscow 29 1 1985 p 2 3

कट्टर समर्थक हैं—इसके अनेक प्रमाण हैं। भारत ने नाभिकीय अस्त्र का पहले उपयोग न करने सबधी सोवियत वक्तव्य का स्वागत करके उसे नाभिकीय अस्त्र के उपयोग अथवा उपयोग की धमकी के पूर्ण तथा अतिम निषेध की ओर बहुत बडा कदम बताया। यदि इस तरह का दायित्व सभी नाभिकीय शक्तियो ने भी ग्रहण किया होता, तो ससार की परिस्थिति बहुत सुधर जाती। साथ ही अतर्राष्ट्रीय जीवन की अन्य प्रचड समस्याओ का हल भी अधिक सुगम बन जाता।

अपनी ओर से सोवियत सघ भारत के इस आशय के सुझाव का समर्थन करता है कि सभी नाभिकीय शक्तियो की सहभागिता से नाभिकीय अस्त्रो के प्रयोग के निषेध के बारे में सम्मेलन की तैयारी के लिए बातचीत शुरू की जाय।

अतः सोवियत सघ और भारत द्वारा सुझाये गये कदम वास्तव में *एक सकारात्मक कार्यक्रम* हैं, जिसे अमली जामा पहनाने से आणविक विपत्ति का खतरा दूर करने का काम आसान हो जाता है। २७ मई, १९८५ को स्वीकृत सयुक्त सोवियत-भारत वक्तव्य इसी ओर लक्षित है। पहले चरण में विश्वव्यापी पैमाने पर नाभिकीय अस्त्रो की सख्या को जाम करने का और उसके पश्चात नाभिकीय भडार में उल्लेखनीय कमी करने का प्रस्ताव किया गया था। क्या नाभिकीय शस्त्रास्त्रो के समस्त परीक्षणो को अविलब रोक देने से तथा उनके सपूर्ण तथा सार्विक निषेध के बारे में सधि की अविलब सपन्नता से, जिसकी सोवियत सघ और भारत हिमायत कर रहे हैं, सर्वव्यापक शान्ति एव सुरक्षा के ध्येय पर अच्छा प्रभाव नही पड़ता? जब सोवियत सघ ने यह दायित्व ग्रहण किया कि वह उन राज्यो के खिलाफ, जो नाभिकीय शस्त्रास्त्रो का उत्पादन करने और उन्हे खरीदने से इनकार करते हैं और जिनके भूक्षेत्र पर ये जमा नही हैं, कभी भी इन शस्त्रास्त्रो का इस्तेमाल नही करेगा, तो जनगण को नाभिकीय युद्ध से बचाने की आकाक्षा के अलावा इसका और क्या कारण हो सकता था? सोवियत सघ इस दायित्व को अतर्राष्ट्रीय समझौते का रूप देने के लिए तैयार है।

आधुनिक काल की "समस्त समस्याओ में से सर्वाधिक तीव्र समस्या के *समाधान—अर्थात नाभिकीय आग न भड़कने देने* की दिशा में सोवियत सघ और भारत के अडिग एव सामजस्यपूर्ण कार्यकलाप में अपनी सर्वांग अतर्राष्ट्रीय स्थिति की समझ अभिव्यक्त होती है।

समसामयिक परिस्थितियों में, जब साम्राज्यवादी तबके अंतरिक्ष तक को नाभिकीय द्वंद्व के अखाड़े में बदल रहे हैं, शांति की रक्षा से, मानव के प्राथमिक अधिकार—जीने के अधिकार—को विश्वसनीय ढंग से सुनिश्चित करने से अधिक महत्वपूर्ण, अधिक दायित्वपूर्ण कार्य और कोई नहीं है। संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच पर श्रीमती इंदिरा गांधी ने विद्वतापूर्ण शब्दों में कहा था: 'आज शांति नहीं, तो कल जीवन भी नहीं'।* प्रश्न वर्तमान पीढ़ी के जीवन का ही नहीं, अपितु भावी पीढ़ियों के जीवन का, मानव सभ्यता के स्वयं भविष्य का है।

शांति के सुदृढ़ीकरण में और शस्त्रास्त्रों की बेखिन्न होड़ बंद करने में हमारे राज्यों की सच्ची रुचि के पीछे उनकी यह इच्छा निहित है कि इन पगों की बदौलत मुक्त होनेवाले साधनों को सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए, अकाल और बीमारियों, कंगाली और निरक्षरता की समस्याओं के निबटारे के लिए—खास तौर विकासमान देशों में—उपयोग में लाया जाये। शस्त्रास्त्रों की होड़ की भट्ठी में वास्तव में अकूत धनराशियां भस्म हो रही हैं: सैन्य आवश्यकताओं की पूर्ति पर प्रतिवर्ष १० खरब डालर से अधिक धनराशि—यानी विकासमान राज्यों के लगभग सारे बाहरी ऋणों के बराबर—व्यय होती है। इस उद्देश्य पर प्रति मिनट पंद्रह लाख डालर खर्च हो रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ में और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में दोनों देशों के बढ़ते सहयोग को सोवियत संघ में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। उदाहरण के लिए, १९८३ में सं० रा० संघ की महासभा के ३८वें अधिवेशन में भारत ने सोवियत संघ के मुख्य सुझावों तथा सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों के संयुक्त सुझावों से संबंधित प्रस्तावों के पक्ष में मत दिया। इनमें एक घोषणापत्र भी था, जिसमें नाभिकीय युद्ध को मानव अंतःकरण एवं विवेक का शत्रु, जनगण के प्रति महापराध घोषित किया गया। अपनी ओर से सोवियत संघ ने अधिवेशन द्वारा अंगीकृत निरस्त्रीकरण संबंधी उन समस्त दस प्रस्तावों की हिमायत की, जो भारत की पहलकदमी से अथवा उसकी सहभागिता से प्रतिपादित और पेश किये गये थे।

महासभा के ३९वें अधिवेशन (१९८४) में सोवियत संघ ने ऐसे

---

* India News, Embassy of India, Moscow, Dec 5, 1983

प्रस्तावो का समर्थन किया जिनका प्रणेता अथवा सहप्रणेता भारत था। इनमे ये प्रस्ताव शामिल है नाभिकीय युद्ध के जलवायु सबधी परिणाम नाभिकीय शिशिर ' नाभिकीय युद्ध का निवारण, नाभिकीय अस्त्र शस्त्रो की जामबदी नाभिकीय अस्त्र के प्रयोग पर प्रतिबध विषयक समझौता आदि। उल्लखनीय है कि भारत ने 'आम सहार के नये अस्त्रो और एसे अस्त्रो की नयी प्रणालियो के अन्वषण तथा उत्पादन का निषध जैसे अत्यत महत्वपूर्ण दस्तावजो का भी समर्थन किया।

किसी भी अन्य समय की तुलना मे बढकर आजकल शाति सग्राम मे सभी शातिप्रिय राज्यो की—उनका आकार और राजनीतिक व्यवस्थाए चाहे कुछ भी हो—एकजुटता तथा सहयोग की आवश्यकता है। इस सदी के अत तक आम नरसहार के अस्त्रो के पूर्ण उन्मूलन सबधी सपूर्ण कार्यक्रम जिसे सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति के महासचिव मिखाईल गोर्बाचोव ने १५ जनवरी १९८६ के अपने वक्तव्य म पेश किया है सभी शातिकामी शक्तियो के सग्राम मे एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ। महत्व और पैमाने की दृष्टि से इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की पूर्ति से मानवजाति के समक्ष भव्य सभावनाए खुल जाती। बेशक यह विकासमान देशो के लिए भी बहुत लाभकर होता—मात्र इसलिए ही नही कि वे शातिमय आकाश और स्थिर तथा भरोसेमद सुरक्षा मे औरो से कम दिलचस्पी नही रखते। परतु इसलिए भी कि इस सर्वव्यापी कार्यक्रम की पूर्ति से विशाल साधनो की बचत होती, जिनको विकासमान राज्यो के सम्मुख मौजूद सामाजिक-आर्थिक कार्यभार पूरे करने के हेतु उपयोग हो सकता।

सोवियत सघ इस कार्यक्रम को आगामी काल की अपनी विदेशनीति की मुख्य निर्धारक दिशा मानता है और उसके कार्यान्वयन के लिए दृढसकल्प है।

२५ फरवरी से ६ मार्च १९८६ तक हुई २७ वी पार्टी काग्रेस म इस बारे मे असदिग्ध रूप से बताया गया है।

वर्तमान और भावी पीढियो की खातिर सुदृढ तथा विश्वसनीय शाति का प्रावधान वह महान ध्येय है जिसकी पूर्ति के लिए सोवियत कम्युनिस्टो के सम्मेलन ने सभी जनगण एव राज्यो का आह्वान किया है। भारतीय सार्वजनिक हलको सहित समस्त शातिप्रिय शक्तियो ने

२७वीं पार्टी कांग्रेस द्वारा निर्दिष्ट शांति मार्ग का स्वागत किया है। केवल शांतिप्रिय शक्तियों के निर्णायक और निरंतर प्रयासों से ही तनाव शैथिल्य हासिल करना, तनाव के विद्यमान केंद्रों का खात्मा करना और नये केंद्रों की स्थापना रोकना संभव है। सोवियत संघ और भारत अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपने कार्यकलाप का आधार इस दृढ़ विश्वास को बनाते हैं कि सभी राज्य—बड़े और छोटे, समुन्नत और विकासमान—ऐसे यथार्थवादी निर्णयों की खोज में अपनी भूमिका अदा कर सकते हैं और उन्हें ऐसा करना ही चाहिए, जो अस्त्र-शस्त्रों की होड़ को रोकें, उसे मंद करें और तनाव में कमी लायें। संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के अधिवेशनों में सोवियत संघ और भारत निरस्त्रीकरण के विश्वव्यापी अभियान तथा उन दूसरे कदमों की निरंतर पैरवी करते रहे हैं, जिनका लक्ष्य शांति एवं निरस्त्रीकरण के लिए चल रहे संघर्ष को कारगर बनाना है।

सोवियत-भारत संबंधों के अंतर्राष्ट्रीय महत्व का 'रहस्य' बहुतेरे मामलों में यह है कि अपने आदर्श उदाहरण से वे अंतर्राज्यीय संपर्कों के क्षेत्र में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धांतों की जड़ जमाने, देशों के बीच परस्पर लाभदायी सहयोग के प्रसार में हाथ बटा रहे हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि हमारी पृथ्वी पर उलझी हुई तथा तनावपूर्ण परिस्थिति के बावजूद ऐसी संकटमय हालत नहीं है, जिसका वार्तालाप के माध्यम से, राजनीतिक नियमन के उपाय से, बलप्रयोग अथवा बलप्रयोग की धमकी के बिना निपटारा न हो सके। इस प्रसंग में महासभा के ३९वें अधिवेशन में भारत के प्रतिनिधिमंडल के नेता श्री रामनिवास मिर्धा का भाषण बहुत अर्थपूर्ण था। उन्होंने घोषणा की कि शांति, स्थिरता और प्रगति का निर्माण दखलदाजी और हस्तक्षेप, बलप्रयोग अथवा उसकी धमकी, जीवन-यापन के ढंग अथवा शासन प्रणाली को बाहर से जबर्दस्ती थोपे जाने जैसी सिद्धांतहीन नीति पर नहीं हो सकता है।* प्रधानमंत्री राजीव गांधी की सोवियत संघ की यात्रा के समय एक संयुक्त वक्तव्य में इस दृष्टिकोण की पुष्टि की गयी, जिसमें स्पष्ट बताया गया कि "सार्वभौम राज्यों के भीतरी मामलों में बाहर से सैन्य और किसी भी अन्य प्रकार के हस्तक्षेप पर पाबंदी, संयम का प्रदर्शन और सैन्य उपस्थिति का निराकरण, सर्वोपरि सैन्य अड्डों का निर्मूलन

---

* A/39/PV/10

र्णिया यहां समाज के दूसरे भूभाग में शांति एवं स्थिरता का सशक्त पूर्वाधार है। यह समझना भी बहुत जरूरी नहीं कि भारत उन राज्यों में एक है जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में सोवियत संघ द्वारा पेश प्रस्ताव—अन्य सार्वभौम राज्यों की सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था में दखल की और सशस्त्र राज्यीय आतंकवादी नीति और इस तरह के समस्त कार्यों को अमान्य ठहराया जाना —के पक्ष में मत दिया था।

इस दिशा में सम्मिलित समन्वित प्रयासों की सार्थकता इसलिए बढ़ जाती है कि चरम प्रतिगामी साम्राज्यवादी तबके समाजवाद के विरुद्ध जेहाद घोषित करके इस जेहाद का बारबार उग्र विस्तार मान लेने के खिलाफ सक्रिय कार्य कर रहे हैं जिनका विरामहीन साम्राज्यवादियों के मंसूबों के विपरीत है। इसकी स्पष्ट अभिव्यक्तियां हैं अफगानिस्तान और निकारागुआ विरोधी अघोषित लड़ाई, ग्रेनाडा पर और मध्य अमरीका तथा कैरीबियन सागर के क्षेत्र में स्थित देशों के अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप। निकट पूर्व और फारस की खाड़ी के क्षेत्र में राज्यीय आतंकवाद की साम्राज्यवादी नीति के कुपरिणाम सर्वविदित हैं। सामान्य अंतर्राष्ट्रीय आचरण-संहिता का उल्लंघन करते हुए यह नीति अंतर्राज्यीय संबंधों के शांतिपूर्ण स्वरूप तथा परस्पर विश्वास की संभावना तक को ही ध्वस्त कर रही है और विश्व में परिस्थिति को उग्र बना रही है। यही अनेक तनावपूर्ण स्थलों की उत्पत्ति की जड़ है, न कि कुख्यात महाशक्तियों की प्रतिस्पर्द्धा।

मई १९८५ में प्रधानमंत्री राजीव गांधी की सोवियत संघ की यात्रा के दौरान सोवियत सरकार द्वारा प्रस्तुत इस सुझाव का कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद का प्रत्येक स्थायी सदस्य एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के सभी देशों के संबंध में अहस्तक्षेप के, बल अथवा बलप्रयोग की धमकी न दिये जाने के सिद्धांतों का पालन करने तथा उन्हें सैन्य गुटों में शामिल न कराने का दायित्व ग्रहण करे, विश्व जनमत ने तनाव-शैथिल्य की ओर बहुत बड़ा कदम माना है। सोवियत संघ अपनी विदेशनीति में इन सिद्धांतों का कड़ाई के साथ अनुपालन कर रहा है और सुरक्षा परिषद के सदस्य के नाते भी ऐसा दायित्व ग्रहण करने के लिए तत्पर है।

यह सुझाव एक दूसरी पहल की अनुपूर्ति तथा उसका तर्कसंगत विकास है जो १९८२ में श्रीमती इंदिरा गांधी की सोवियत संघ की

यात्रा के दौरान की गयी थी। उस समय सोवियत सरकार ने यह सुझाव दिया था कि नाटो और वारसा संधि के नेतृत्वकारी निकाय यह जिम्मा ले कि वे अपने कार्य-क्षेत्र का एशिया अफ्रीका और लैटिन अमरीका मे प्रसार नही करेंगे। यह ध्यान देने योग्य है कि वारसा संधि के सदस्य-देशो ने जनवरी १९८३ मे प्राग मे हुई राजनीतिक परामर्श समिति की बैठक मे गभीरतापूर्वक घोषित किया था कि उनका अपने सगठन के कार्यकलाप का क्षेत्र प्रसारित करने का इरादा नही है और उन्होंने नाटो के सदस्य-देशो का आह्वान किया कि वे फारस की खाडी सहित ससार के किसी भी प्रदेश मे अपने कार्यकलाप का क्षेत्र प्रसारित न करें। जैसा कि सुविदित है, पश्चिम सैन्य-राजनीतिक गुट के नायको ने इस आह्वान के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया का परिचय नही दिया।

एशिया के एक वृहत्तम देश भारत और सोवियत सघ की जिसका बडा भाग एशियाई महाद्वीप मे स्थित है और जिसकी बहुसख्य आबादी वहा बसी हुई है, विदेशनीति मे एशियाई दिशा" को परपरानुसार प्राथमिकता प्राप्त है। स्पष्टत एशिया सबधी समस्याए सार्वभौमिक समस्याओ के सघटक अग के नाते भारत और सोवियत सघ दोनो देशो की राष्ट्रीय सुरक्षा को स्पर्श किये बिना नही रह सकती। निस्सदेह दोनो देश आधुनिक ससार मे एशिया की भूमिका के बारे मे पूर्णत सचेत है। इधर यह भूमिका विशेष रूप से बढी है जब एशिया शाति, अच्छे पडोसीपन और सहयोग का समर्थन करनेवाली शक्तियो तथा साम्राज्यवाद के सर्वाधिक प्रतिगामी क्षेत्रो तथा उनके सगी-साथियो के बीच तीक्ष्ण टकराव का अखाडा बन गया है। यहा इतना कहना काफी होगा कि दूसरे विश्व युद्ध के बाद दुनिया मे लगभग २४० फौजी मुठभेडे हुईं जिनमे से २०० मुठभेडे अकेले एशिया म हुईं। इनमे से अधिकाश मे साम्राज्यवादी ताकतो का हाथ रहा है।

यह समझना कठिन नही है कि समूची धरती की परिस्थिति बडी हद तक एशिया मे मूर्त रूप ग्रहण करनेवाली परिस्थिति पर निर्भर करती है, जहा पृथ्वी की बहुसख्य आबादी बसी हुई है।

साम्राज्यवादियो के समर्थन पर अवलबित इस्राइल की विस्तारवादी आक्रामक नीति के फलस्वरूप निकट पूर्व मे जो तनाव बना हुआ है, उससे सोवियत सघ और भारत बहुत चितित हैं। जब से निकट पूर्व सबधी समस्या बनी हुई है भारत सदैव अरब जनगण का अडिग समर्थन

करता आया है। नेशनल हेराल्ड के अनुसार "भारत द्वारा अरब जनता का समर्थन इस गहरे विश्वास का परिणाम है कि साम्राज्यवादियों और नवसाम्राज्यवादियों के दावपेच के खिलाफ उसका संग्राम पूर्णतः न्यायपूर्ण है। * भारत लेबनान और दूसरे अरब राज्यों पर इस्राइली हमलों की भर्त्सना करता रहा है और कैम्प डेविड सांठगांठ** की यह मानते हुए निंदा करता है कि वह निकट पूर्व में स्थायी शांति बनाने की ओर नहीं अपितु अरब जनता को केवल अपने अधिकारों एवं हितों के लिए संग्राम से विमुख करने उसमें फूट डालने की ओर लक्षित है। गुटनिरपेक्ष देशों के समन्वय ब्यूरो की १९८२ में हुई बैठक में भारत ने इस इलाके में स्थिति सामान्य बनाने के उद्देश्य से अनेक दूरगामी सुझाव दिये थे। उसने लेबनान में फौजी कारवाइयों को अविलंब बंद करने तथा वहां से इस्राइली फौजों को हटाने की मांग की। श्रीमती इन्दिरा गांधी की सरकार द्वारा २५ मार्च १९८० को अर्थात संसदीय चुनावों के शीघ्र ही बाद फिलिस्तीन मुक्ति संगठन को दी गयी राजनयिक मान्यता तथा दिल्ली में इस संगठन के राजनयिक प्रतिनिधि के कार्यालय के खोले जाने का समस्त शांतिप्रिय लोगों ने सोत्साह स्वागत किया था।

सोवियत संघ और भारत दोनों सारे अधिकृत अरब प्रदेशों से इस्राइली फौजों के अविलंब हटाये जाने पर जोर देते आये है। निकट पूर्व में स्थिति के न्यायपूर्ण एवं स्थायी नियमन की आवश्यकता के बारे में हमारे देशों में मतैक्य है। इस स्थिति के नियमन की अनिवार्य शर्तें ये हैं इस्राइली फौजों का अरब धरती से पूर्ण और बिना शर्त हटाया जाना अपने पृथक राज्य की स्थापना के अधिकार समेत फिलिस्तीनी जनता को कानूनी तथा न्यायपूर्ण अधिकार प्रदान किया जाना समस्त

---

* *National Herald 7 6 1985*

** १९७९ में वाशिंगटन में मिस्र के राष्ट्रपति सादात और इस्राइली प्रधानमंत्री बेगिन के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इससे पहले संयुक्त राज्य अमरीका की सहभागिता के साथ कैम्प डेविड में राष्ट्रपति सादात तथा प्रधानमंत्री बेगिन के बीच वार्तालाप हुआ था। उनके बीच समझौता सारत एक सांठगांठ ही है जिसका लक्ष्य निकट पूर्व की समस्या से अरब राज्यों के हित में निपटारे को खटाई में डालना और वस्तुत उनके विरुद्ध इस्राइली आक्रमण के परिणामों को सुदृढ़ बनाना है। कैम्प डेविड समझौता और बातों के अलावा फिलिस्तीनी जनता के अपना स्वाधीन राज्य बनाने के अधिकार की अवहेलना करता है।

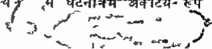
राज्यों के लिए सुरक्षापूर्ण तथा स्वतंत्र विकास के अधिकार की गारंटी।

सोवियत संघ और भारत के विचार में, निकट पूर्व में स्थिति के नियमन का एकमात्र वास्तविक मार्ग पृथकतावादी समझौते नहीं वरन प्रतिनिधिमूलक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन है जिसमें फिलिस्तीन मुक्ति संगठन—फिलिस्तीनी जनता के एकमात्र कानूनी प्रतिनिधि—समेत सभी संबद्ध पक्ष उपस्थित होंगे। सम्मेलन के संचालन में संयुक्त राष्ट्र संघ को बड़ी भूमिका निभानी चाहिए और वह इसके लिए कर्तव्यबद्ध है।

निकट पूर्व संबंधी समस्या के प्रति ऐसे रुख की रचनात्मकता स्थिति के नियमन की सुविचारित, यथार्थवादी शर्तों, सुझाये गये उपायों के क्रियाशील स्वरूप में निहित है। उनका सार सर्वोपरि यह है कि यहां तनाव में कमी लाकर कलह दूर करने के वास्ते ऐसी अधिक से अधिक अनुकूल परिस्थितियां कायम की जायें जो इस इलाके के सभी राज्यों की स्वाधीनता, सुरक्षा एवं क्षेत्रीय अखंडता का हितसाधन करें। यही वह एकमात्र माध्यम है, जिससे यहां न्यायपूर्ण तथा स्थायी शांति की दिशा में क्षणिक नहीं अपितु मूलगामी मोड़ लाना संभव है।

सोवियत संघ और भारत ईरान और इराक के बीच सशस्त्र मुठभेड़ों को जिनके कारण दोनों देशों को अनगिनत बलियां देनी पड़ रही हैं और बड़ी तबाही झेलनी पड़ रही है यथाशीघ्र समाप्त कराने के पक्के समर्थक हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच से तथा विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत ने निरंतर इस भ्रातृघातक लड़ाई के घोर अनर्थकारी स्वरूप की ओर ध्यान दिलाया, जो दोनों देशों को निःशक्त बनाते हुए फारस की खाड़ी से लगे प्रदेशों को खतरे में डाल रही है। बातचीत का स्थिति के शांतिपूर्ण नियमन का रास्ता ईरान इराक लड़ाई का एकमात्र विवेकपूर्ण विकल्प है—हमारे दोनों देश अविचल रूप से यह रुख अपनाये हुए हैं। सोवियत संघ के राजनीतिक और सार्वजनिक क्षेत्रों में गुटनिरपेक्षता आंदोलन के अध्यक्ष देश के नाते भारत के इन प्रयासों का ऊंचा मूल्यांकन किया गया है, जो दोनों युद्धरत देशों के लिए स्वीकार्य उपायों की खोज की ओर लक्षित हैं।

दक्षिण पश्चिमी एशिया में तनाव-स्थलों का बने रहना भी सोवियत संघ और भारत के लिए समान रूप से चिंता का विषय है। पृथ्वी के इस एक सर्वाधिक गरम स्थल में घटनाक्रम अकाट्य रूप से



दर्शाता है कि यहा विद्यमान समस्याए शांतिपूर्ण राजनीतिक समाधान की अपेक्षा कर रही है जिसमे यहा स्थित देशो की स्वतत्रता, सप्रभुता, क्षेत्रीय अखडता तथा गुटनिरपेक्षता की स्थिति का पूर्ण समादर किया जाये।

यह अफगानिस्तान के आतरिक मामलो म सशस्त्र और सभी प्रकार के अन्य विदेशी हस्तक्षेप के पूरी तरह खत्म किये जान और ऐसे हस्तक्षेप के न दुहराये जाने की विश्वसनीय अतर्राष्ट्रीय गारटी की पूर्वापेक्षा करता है। यहा यह कहना उचित होगा कि अफगानिस्तान जनवादी गणतत्र मे प्रगतिशील सामाजिक-आर्थिक तथा राजनीतिक पुनर्गठन की प्रक्रिया के चक्र को पीछे घुमान, नये जीवन के निर्माण मे बाधा डालने के सभी प्रयासो का विफल होना आवश्यभावी है। इसकी जमानत है राष्ट्रीय जनवादी क्राति की उपलब्धियो की समस्त अतिक्रमणो से रक्षा करने का अफगान जनता का दृढसकल्प और सोवियत सघ सहित सच्चे मित्रो का इस दश के साथ एक्ताभाव। इस सजीदे कारक की उपेक्षा करन तथाकथित अफगानी समस्या ' को ' अघोपित युद्ध ' क माध्यम से हल करने के प्रयत्न का अर्थ है वस्तुपरक यथार्थ की ओर से आखे मूद लेना।

सोवियत सघ और भारत अफगानिस्तान के गिर्द स्थिति के राजनीतिक नियमन का सुसगत ढग से समर्थन करते हैं। सोवियत सघ यह मानकर चलता है कि प्रभुसत्तासपन्न अफगानिस्तान के भीतरी मामला मे सशस्त्र और सब प्रकार के दूसरे हस्तक्षेप का खात्मा स्थिति के नियमन की सर्वप्रमुख शर्त है। भारत के विचार मे, बाहरी हस्तक्षेप की समाप्ति स्थिति के नियमन का मूल कारक है। सयुक्त राष्ट्र सघ की महासभा के अधिवेशनो मे भारत तथाकथित 'अफगान प्रश्न ' के, जिसके पीछे पश्चिमी ताकतो का हाथ रहता है प्रस्ताव पर मत देने मे इसलिए तटस्थ रहता है कि ऐसे प्रस्तावो की स्वीकृति प्रश्न के हल मे योग नहीं देती।

मई १९८५ मे प्रधानमत्री राजीव गाधी की सोवियत सघ की यात्रा क समापन पर जारी सयुक्त सोवियत भारत वक्तव्य म इस पर जोर दिया गया कि "सोवियत सघ और भारत इस भूभाग (दक्षिण-पश्चिमी एशिया — स० ग०) के देशो के अदरूनी मामलो मे सब प्रकार के बाहरी हस्तक्षेप का पुन विरोध करते हैं। उन्ह दृढ विश्वास है कि वार्ता द्वारा

स्थिति का राजनीतिक नियमन ही यहा विद्यमान समस्याओ के समाधान की गारटी कर सकेगा।'

जनवादी अफगानिस्तान के साथ भारत के सबधो का सफल विकास जो समूचे दक्षिण-पश्चिमी एशिया की परिस्थिति पर हितकर प्रभाव डालता है, दो गुटनिरपेक्ष देशो के बीच लाभदायी सहयोग सहअस्तित्व समानता और न्याय के सिद्धातो के प्रति निष्ठा का भव्य प्रदर्शन है। यदि एशिया के समस्त देशो के बीच ऐसे ही सबध कायम हो तो बाहरी शक्तिया हस्तक्षेप की सभावनाओ तक से वचित हो जायगी। एशिया स्थायी शाति एव स्थिरता का मूर्त रूप बन सकता है। स्वभावत इस और अन्य एशियाई प्रदेशो मे तनावपूर्ण स्थिति से चिंतित भारतीय सार्वजनिक व राजनीतिक क्षेत्र स्थिर शाति तथा सुरक्षा के अधिक कारगर उपाय ढूढने और इस क्षेत्र को शाति विरोधी शक्तियो की कुचालो से बचाने के लिए प्रयत्नशील है। अपनी ओर से सोवियत सघ इन लक्ष्यो की सिद्धि के लिए प्रयत्न करता रहा है और करता रहेगा। वह एशियाई देशो के साथ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय आधार पर सहयोग के लिए तत्पर है।

दक्षिण एशिया म अच्छे पडोसियो जैसे सपर्को और सहयोग शाति और सुरक्षा के दृढीकरण की ओर लक्षित भारत के जबर्दस्त योगदान का शातिकामी क्षेत्रो ने ऊचा मूल्याकन किया है। इस दिशा म किय जानेवाले प्रयासो का इस कारण भी और अधिक महत्व है कि साम्राज्यवादी तबके और उनके साथी दश उपमहाद्वीप की स्थिति बिगाडने, उसे एक और तनाव-क्षेत्र म बदलने के लिए पूर्ववत एडी चोटी का ज़ोर लगाते रहते हैं। शातिप्रिय शब्दाडबर की ओट मे वे इन देशो को एक दूसरे से भिडाने तथा दक्षिण एशिया व तटवर्ती इलाको के समीप सैन्य उपस्थिति बढान की नीति का अनुसरण कर रहे है। दूसरी ओर, उपमहाद्वीप की शातिकामी ताकते इस नीति का सामना सच्चे मैत्रीपूर्ण सहजीवन की नीति से कर रही हैं। इस प्रसग मे कुछ आशाए दक्षिण एशियाई प्रादेशिक सहयोग सगठन (SAARC) की, जिसके अतर्गत इस प्रदेश के सात राज्य है, गतिविधियो स की जाती है। यह सर्वविदित है कि दक्षिण एशिया म परस्पर लाभदायक और बहु पक्षीय सपर्क जितन स्थायी तथा विस्तृत होगे, उपमहाद्वीप म शाति उतनी ही टिकाऊ होगी।

एशिया का राजनीतिक वातावरण दक्षिण-पूर्वी एशिया की यथास्थिति से सदैव प्रभावित रहा है जहा अनवरत बाह्य हस्तक्षेपो के कारण परिस्थिति बडी अशात एव तनावमय रही है। कुख्यात "कपूचियाई समस्या' को उछालते हुए तथा मैत्री एव सहयोग के रास्ते म राडे अटकाते हुए साम्राज्यवादी इस भूभाग को अपनी अधिनायकत्ववादी आकाक्षाओ के क्षेत्र मे परिवर्तित करने पर तुल हुए हैं। इन सब का लक्ष्य हिदचीन के जनगण की उपलब्धियो, स्वातत्र्य तथा सप्रभुता को नष्ट करना है। अत साम्राज्यवादी क्षेत्रो का मूल उद्देश्य है दक्षिण-पूर्वी एशिया को निकट पूर्व और प्रशात महासागर के पश्चिमी भाग मे स्थित सैन्य अड्डो एव सधियो की समूची प्रणाली की एक कडी बना देना।

यह स्वत सिद्ध है कि इस भूभाग मे तनाव की स्थिति के इस इलाके के लिए ही नही बल्कि उसके बाहर अन्य देशो के लिए भी गभीर परिणाम निकल सकते हैं। सोवियत सघ और भारत इस बारे म पूर्णत सचेत है कि सबद्ध देशो के बीच वार्ता और विद्यमान समस्याए सुलझाने हेतु शातिपूर्ण एव परस्पर स्वीकार्य उपायो की खोज ही दक्षिण-पूर्वी एशिया मे स्थिति के नियमन का एकमात्र विवेकसगत रास्ता है। इसका विकल्प जिस असेआन* और हिदचीन के देशो पर जबर्दस्ती लादने की कोशिश की जाती है मुकाबलेबाजी, राजनीतिक आर्थिक और सैन्य दबाव का रास्ता है। ऐसी नीति के जो राजनीतिक यथार्थता से दूर है और फलत अदूरदर्शितापूर्ण तथा भविष्यहीन भी है वाछनीय परिणाम प्राप्त नही हो सकते। स्थिति सामान्य बनाने और इस इलाके को शाति स्थायित्व, अच्छे पडोसीपन तथा सहयोग के क्षेत्र मे परिवर्तित करने की दक्षिण-पूर्वी एशिया के राज्यो की आकाक्षा के प्रति सोवियत सघ और भारत पूरी समझदारी का परिचय देते है। वियतनाम कपूचिया और लाओस के साथ भारत के सौहार्दपूर्ण सपर्क तथा सहयोग इस

---

*असेआन – दक्षिण-पूर्वी एशिया वाले देशो का उपप्रादेशिक राजनीतिक-आर्थिक सगठन जिसम ब्रुनेई इडोनेशिया मलेशिया सिगापुर थाईलैंड और फिलीपीन शामिल हैं। इसकी स्थापना १९६७ मे हुई। उसके उद्घोषित लक्ष्यो मे आर्थिक राजनीतिक सामाजिक और अन्य प्रकार के सहयोग म सवृद्धि इस इलाके म शाति एव स्थिरता लाने म सहायता करना शामिल है। असेआन के कार्यकलाप पर साम्राज्यवादी क्षेत्रो का अत्यधिक प्रभाव रहता है जो इसे सैन्य राजनीतिक गुट म बदलने का प्रयास कर रहे हैं।

लक्ष्य सिद्धि मे बहुत सहायक हैं। भारतीय और वियतनामी नेताओ के बीच नियमित राजनीतिक संपर्क और दोनो देशो का विविधतापूर्ण सहयोग इस भूभाग के घटनाक्रम पर असंदिग्ध रूप से सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं।

सोवियत संघ और हिंदचीन के देशो के बीच नानारूपी फलप्रद सहयोग दक्षिण-पूर्वी एशिया मे शांति और स्वाधीनता के ध्येय का एक प्रभावी कारक है। यह साम्राज्यवादी शक्तियो और उनके साथियो की साजिशो का विश्वसनीय ढग से रास्ता रोकता है।

सोवियत संघ सुरक्षा परिषद के दूसरे स्थायी सदस्यो के साथ मिलकर उन समझौतो की गारंटी का दायित्व ग्रहण करने के लिए तैयार है, जो हिंदचीन के देशो तथा असेआन के सदस्य-देशो की राजनीतिक वार्ता के फलस्वरूप संपन्न हो सकते हैं। इसमे कोई संदेह नही है कि यह वार्ता जितनी ही जल्दी आरंभ होगी, दक्षिण-पूर्वी एशिया मे स्थिति सामान्य बनाने का मसला हल करना उतना ही आसान होगा। भारत के अनेक दूरदर्शी राजनेता, सार्वजनिक कार्यकर्ता तथा वैज्ञानिक भली भांति समझते हैं कि इस भूभाग के प्रसंग मे सोवियत संघ और भारत के लक्ष्य तथा हित एकसमान हैं। अंतर्राष्ट्रीय प्रश्नो पर बुलायी गयी भारत-सोवियत संगोष्ठी (दिल्ली दिसंबर १९८१) मे दक्षिण-पूर्वी एशिया और सुदूर पूर्व विषयक प्रश्नो के जाने-माने विशेषज्ञ वी० पी० दत्त का भाषण इसका एक लाक्षणिक उदाहरण है। उन्होंने कहा कि परस्पर समझ और प्रश्नो के राजनीतिक हल मे खास तौर पर दक्षिण-पूर्वी एशिया मे, सहायता देना भारत अपना एक उत्तरदायी काम मानता है। इसका समान रूप से वास्ता गतिरोध से बाहर निकलने, स्थिति को सामान्य बनाने तनाव शैथिल्य लाने के हेतु इस इलाके में स्थित देशो को एक दूसरे के समीप लाने जैसे प्रश्न से भी है। स्वभावत, सोवियत संघ के कंधो पर भी बड़ा दायित्व है जो इस पक्ष मे है कि इस प्रदेश के राज्य परस्पर संबंधो मे संयम बरते, परस्पर स्वीकार्य हल खोजे और तनाव शैथिल्य के ध्येय को आगे बढ़ाये। भारतीय विद्वान का यह निष्कर्ष न्यायसंगत था कि भारत और सोवियत संघ, भारत और वियतनाम, सोवियत संघ और वियतनाम के बीच मैत्री ऐसे सकारात्मक कारको का द्योतक है, जिन्हें सदैव ध्यान मे रखना चाहिए और जिनसे इस प्रदेश मे सैनिक मुठभेड़ो की रोकथाम वार्ताओ तथा समस्याए

मुनाफा कमाने के लिए लाभ उठाना चाहिए।*

गत दशाब्दी में हिंद महासागर क्षेत्र में सैन्य-राजनीतिक स्थिति बिगड़ी है। साम्राज्यवादी ताकतें इस क्षेत्र का जोर-शोर से सैन्यीकरण कर रही हैं। यहां नाभिकीय अस्त्रयुक्त पनडुब्बियां, विमानवाहक पोत तथा आम सहारे के दूसरे अस्त्र भी तैनात हैं। पश्चिमी देशों के, सर्वप्रथम संयुक्त राज्य अमरीका के बमवर्षक विमान नाभिकीय अस्त्रों से लैस होकर महासागर के ऊपर उड़ान भरा करते हैं। अमरीकी अड्डों और अन्य सैन्य ठिकानों की संख्या ३० तक पहुंच गयी है। लेकिन सबसे बड़ा खतरा यह है कि साम्राज्यवादी हिंद महासागर का अंतरिक्ष के सैन्यीकरण की अपनी योजनाओं में भी शामिल करने के लिए लालायित हैं। उदाहरण के लिए डियगो गार्सिया द्वीप पर अवस्थित सैन्य अड्डे पर कृत्रिम उपग्रह विरोधी प्रणालियां भी तैनात हैं। अनुमान है कि उपग्रह विरोधी साधनों की प्रणाली १९८७ में पूर्णतः तैयार हो जायेगी जबकि १९९० तक एक ऐसी प्रणाली बनाने की योजना है, जो पृथ्वी से २४ हजार किलोमीटर ऊपर उपग्रह गिराने में सक्षम होगी।

अंतरिक्ष स्थित नाभिकीय अस्त्रों के प्रयोग सहित साम्राज्यवादी सैन्य-सागरीय विस्तार के दो लक्ष्य हैं: पहला, दक्षिणी दिशा में सोवियत संघ की सुरक्षा को रणनीतिक खतरे में डालना और दूसरा, राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन दबाने के लिए आवश्यक परिस्थितियां सुनिश्चित करना तथा विस्तृत हिंद महासागर क्षेत्र को साम्राज्यवादी स्वार्थों की पूर्ति के क्षेत्र में परिवर्तित करना। यह लाक्षणिक है कि यहां तैनात अमरीकी साधनों में ऐसी फौजी टुकड़ियां और युद्ध साज-सामान भी शामिल हैं जो तटवर्ती राज्यों के विरुद्ध सैन्य कार्रवाइयों के लिए लक्षित हैं। अमरीकी अड्डों में यातायात परिवहन का जाल बिछा हुआ है, वहां हथियारों, गोलाबारूद और रसद के काफी भंडार रखे हुए हैं, ताकि जरूरत पड़ने पर द्रुत कार्रवाई सेना को, जो स्थानीय परिस्थितियों में युद्ध चलाने के लिए प्रशिक्षित है, इस क्षेत्र के किसी भी स्थान में अविलंब भेजा जा सके।

एक और बात बड़ी खतरनाक प्रतीत होती है। जब साम्राज्यवाद

---

* *Indo Soviet Seminar on International Affairs The Situation in East Asia South East Asia and the Pacific V P Datt New Delhi Dec 7 9 1981 p 7*

क घोर प्रतिगामी तत्वे जनगण को नाभिकीय युद्ध के औचित्य व विचार का आदी बनाने का प्रयत्न करते है और हिंद महासागर क्षेत्र को सभाव्य रणक्षेत्र मानते है तब विदित हो जाता है कि उन्होंने इस क्षेत्र के जनगण के लिए नाभिकीय वधक की भूमिका निश्चित कर रखी है। यदि नाभिकीय प्रक्षेपास्त्र इस क्षेत्र के किसी स्थान से छोडे जाय, तो, साम्राज्यवादी जगबाजो के अनुमानानुसार जवाबी प्रहार भी इस क्षेत्र पर ही किया जायेगा। ऐसा ही उन लोगो का मानव-विरोधी तर्क है, जिन्हे साम्राज्यवादी महत्वाकाक्षाओ ने अधा बना दिया है और जो नाभिकीय युद्ध मे विजय की प्राप्ति की भ्रातिजनक आशा मे करोडो जानो की बलि देने के लिए तत्पर है।

यह सर्वथा स्पष्ट है कि साम्राज्यवादी शक्तियो की हिंद महासागर क्षेत्र मे बडे पैमाने की सैन्य उपस्थिति को देखते हुए, जिससे तटवर्ती देशो की सुरक्षा और आजादी धरती पर स्वय शाति के लिए खतरा पैदा होता है, इस क्षेत्र का विसैन्यीकरण एक प्रमुख अतर्राष्ट्रीय प्रश्न बन गया है।

इन बातो के दृष्टिगत वे सारी दलीले पूर्णत निराधार सिद्ध होती हैं, जिनके अनुसार अन्य क्षेत्रो की ही भाति हिंद महासागर क्षेत्र मे भी बढते तनाव का कारण तथाकथित 'महाशक्तियो की मुकाबलेबाजी" है। ऐसी दलील बढते अतर्राष्ट्रीय तनाव के वास्तविक दोषियो पर पर्दा डालती है। यदि दो-टूक ढग से कहा जाये, तो हिंद महासागर क्षेत्र मे सोवियत सघ द्वारा नौसैनिक शक्ति की वृद्धि अथवा सकेद्रण का कोई सवाल ही नही उठता। यहा सीमित सोवियत युद्धपोतो की सख्या मे कई वर्षो से तनिक भी वृद्धि नही हुई यही नही, वे स्थलीय क्षेत्रो के खिलाफ कार्रवाई करने मे सक्षम नही है। यह भी ध्यान मे रखना जरूरी है कि सोवियत सघ के ये डग निरे जवाबी उपाय ही थे जिनका उद्देश्य अमरीका की बढती नौसैनिक उपस्थिति मे अपनी रक्षा की व्यवस्था करना है। यह उल्लखनीय है कि भारत के अधिसख्य राज-नीतिक एव सार्वजनिक कार्यकर्ता तथा विद्वान हिंद महासागर क्षेत्र मे सयुक्त राज्य अमरीका और सोवियत सघ द्वारा अपनायी जा रही नीति को एकसमान कतई नही मानते। जैसा कि श्री ए० के० दामोदरन ने कहा इस क्षेत्र मे सोवियत सघ की नीति सर्वविदित है। हम इस बारे मे पूर्णत सचेत हैं कि इस महान देश के लिए एकमात्र हिमरहित मार्ग

का स्थायी आधार पर उपयोग कितना महत्वपूर्ण है। उसकी स्पष्ट शममकारी नीति हिंद महासागर का शांति-क्षेत्र में रूपांतरित करने व तटवर्ती राज्यों के संपर्क में सहायक है। चूंकि सोवियत संघ के लिए हिंद महासागर समुद्री मार्ग ही नहीं अपितु उसकी सीमाओं के समीप राकेटों की तैनाती का क्षेत्र भी है, अतएव उन तटवर्ती राज्यों के संग, जो शांति-क्षेत्र संबंधी प्रश्न के हल के लिए प्रयत्नशील हैं, सहयोग उसके लिए पूर्णत हितकर है।*

एक और तथ्य है जो दर्शाता है कि कौन इस क्षेत्र के विसैन्यीकरण के विपक्ष में और कौन पक्ष में है। सोवियत संघ ने अनेक बार एलान किया कि वह हिंद महासागर क्षेत्र में सैन्य सक्रियता सीमित और कम करने के मसले पर संयुक्त राज्य अमरीका के साथ बातचीत पुन आरंभ करने के वास्ते तैयार है जिसे वाशिंगटन ने ही बंद किया था। किंतु अमरीकी पक्ष बातचीत से मुकर जाता है।

वे शब्द आज भी पूर्ववत प्रासंगिक हैं, जो मई १९८५ में भारत के प्रधानमंत्री राजीव गांधी की सोवियत संघ की यात्रा के समय जारी संयुक्त विज्ञप्ति में कहे गये थे 'दोनों पक्ष हिंद महासागर को शांति-क्षेत्र में परिणत करने के बारे में संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणापत्र की यथाशीघ्र पूर्ति का आग्रह करते हैं और इस ध्येय से हिंद महासागर के बारे में अविलंब सम्मेलन बुलाने संबंधी महासभा के निर्णय का समर्थन करते हैं। सोवियत संघ इस लक्ष्य के लिए प्रयत्नशील भारत तथा अन्य गुटनिरपेक्ष देशों का दृढ़तापूर्वक समर्थन करता है।'

सागरीय और महासागरीय क्षेत्रों तथा सुदूर पूर्व में पारस्परिक विश्वास की गारंटी करने संबंधी सोवियत सुझावों की पूर्ति संसार की संकटग्रस्त स्थितियों के उन्मूलन और निवारण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। ये सुझाव भारत और दूसरे गुटनिरपेक्ष राज्यों की हिंद महासागर विषयक पहलकदमी के साथ मेल खाते हैं। यही बात एक और सोवियत सुझाव के बारे में भी कही जा सकती है। सुझाव का अतर्य यह है कि हिंद महासागर के बारे में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए अनुकूल परिस्थिति कायम करने हेतु यह आवश्यक है कि उसे जहाजरानी

---

* *Indo-Soviet Seminar on International Affairs The Situation in South West Asia.* A K Damodaran p 14

के लिए इस्तेमाल करनेवाले सभी राज्य सम्मेलन बुलाने तक ऐसे कदम उठाने से दूर रहे, जिनसे इस क्षेत्र की स्थिति बिगडे। सोवियत सघ के विचार मे ये कदम इस प्रकार हैं बडी सैन्य टुकडियो को यहा न भेजा जाये, युद्धाभ्यास न हो तथा अतटवर्ती देशो के सैन्य अड्डो का विस्तार एव नवीनीकरण न किया जाय। इन पगो की बदौलत इस प्रदेश मे जहा मानवजाति का न्यूनाधिक एक-तिहाई भाग रहता है, तनाव घटाना सभव होगा।

जीवन इसका साक्षी है कि स्थायी शाति और विश्वसनीय सुरक्षा सुनिश्चित करने की समस्या अलग-अलग प्रदेशो की नही बल्कि समस्त एशिया की भी है। गत वर्षों मे विभिन्न देशो ने एशिया और उसके अलग-अलग भागो की सुरक्षा हेतु अनेक शातिपूर्ण कदम उठाये हैं। उनमे हिद महासागर को शाति-क्षेत्र बनाने के लिए विकासमान देशो का उल्लिखित प्रस्ताव तथा सुदूर पूर्व मे विश्वास एव सुरक्षा सबधी सोवियत प्रस्ताव भी शामिल हैं। सोवियत सघ और चीन लोक जनतत्र ने नाभिकीय अस्त्र का प्रथमत प्रयोग न करने का अपने ऊपर दायित्व ग्रहण किया है। इससे कुछ समय पहले भी मगोलियाई लोक जनतत्र ने एक प्रभावी पहलकदमी की थी, जिसके अतर्गत एशिया और प्रशात महासागर तटवर्ती राज्यो के बीच अनाक्रमण एव बलप्रयोग न करने के बारे मे एक समझौता सपन्न करने का प्रावधान था। जैसा कि ऊपर इगित किया गया है, हिदचीन के देशो ने दक्षिण-पूर्वी एशिया को शाति, स्थिरता और अच्छे पडोसीपन का क्षेत्र बनाने के लिए पहल की।

दक्षिण एशिया मे शाति ध्येय की प्रगति और परस्पर लाभदायी सहयोग के प्रश्नो पर इस क्षेत्र मे व्यावहारिक स्तर पर विचार-विमर्श हो रहा है। शातिकामी शक्तिया, सर्वप्रथम भारत इस दिशा मे सचेष्ट हैं कि इस प्रदेश विशेष क सहयोग का सगठन सबद्ध देशो के सामाजिक-आर्थिक उत्कर्ष मे ही नही, अपितु शाति परस्पर विश्वास तथा अच्छे पडोसीपन के वातावरण की रक्षा मे, जिनके बिना जनगण की सच्ची सुरक्षा अकल्पनीय है, भी सहायक बने।

ये मसले एशियाई देशो के सार्वजनिक क्षेत्रो को भी चितित कर रहे हैं। इसका एक उदाहरण भारत के जाने माने सार्वजनिक एव राजनीतिक नेता टी० एन० कौल द्वारा प्रस्तुत यह विचार है कि गुटनिरपेक्ष देशो के बीच प्रादेशिक अथवा उपप्रादेशिक स्तर पर ऐसे समझौते सपन्न

हो, जो अनाक्रमण सहयोग और शांति के लिए तथा संबद्ध देशों में से किसी एक की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा होने की सूरत में पारस्परिक परामर्श की व्यवस्था सुनिश्चित कर सके। उनके शब्दानुसार, "भारत इसकी पहल का जिम्मा ले सकता है क्योंकि उसकी सहभागिता से ऐसे समझौते वजनदार तथा सशक्त बन जायेंगे।' यह लाक्षणिक है कि इस विचार के समर्थक सोवियत भारत शांति मैत्री और सहयोग की संधि के सकारात्मक अनुभव का हवाला देते हैं जिसने जैसा कि श्री टी० एन० कौल ने उचित ही कहा है, इस प्रदेश में शांति और सुरक्षा की शक्तियों को सबल बनाया और जिसका महत्व गत दशक की तुलना में आज अधिक बढ़ गया है।*

एशिया के जनगण स्थायी शांति और इस बात की अपेक्षा करते हैं कि उनकी संपदा और प्रयास झगड़े-झंझटों में बिखरने के बजाय ऐसे सामाजिक तथा आर्थिक प्रश्नों के हल की ओर प्रवृत्त हों, जिन पर सर्वोपरि जीवन-स्तर, अर्थव्यवस्था और संस्कृति का उत्थान आश्रित है।

यह स्वाभाविक है कि जब आठवें दशक के मध्य में यूरोप में तनाव शैथिल्य की प्राणदायी लहर दौड़ रही थी, तो प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी समेत एशिया के प्रतिष्ठित राजनेताओं ने तनाव शैथिल्य को अन्य महाद्वीपों सर्वप्रथम एशिया महाद्वीप में प्रसार करने का विवेकसम्मत सुझाव रखा। आधुनिक परिस्थितियों के अंतर्गत विश्वव्यापी शांति का दृढ़ीकरण अपेक्षा करता है कि एशिया भी आगे बढ़कर इस अभियान में पुरजोर हिस्सा ले।

निस्संदेह यहां शांति और सुरक्षा के बचाव का काम स्वयं एशियाई राज्यों का ही मामला है। समन्वित कार्य, एशियाई सुरक्षा संबंधी समस्या के प्रति सर्वांगीण रुख का प्रतिपादन इस लक्ष्य की प्राप्ति में महती भूमिका अदा कर सकते हैं। यहां आशय एशिया के राज्यों के सामान्य हितों की रक्षा से है।

बेशक यह कार्यभार आसान नहीं है। इन देशों के बीच विद्यमान नाना प्रकार के गंभीर राजनीतिक सामाजिक-आर्थिक और राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक अंतर बाधक हो सकते हैं। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि यूरोप के मुकाबले में एशिया में आर्थिक क्षमता के स्तर

---

* Indo-Soviet Seminar on International Affairs Developments in South Asia T N Kaul New Delhi Dec 7 9 1981 p 10

और सामाजिक-आर्थिक पद्धतियो की किस्मो म लेकर राजनीतिक मतभदो तक का आयाम अतुलनीय रूप से बडा है। इससे बढकर एशियाई वास्तविकता की बहुत-सी जटिलताओ और कठिनाइयो की जड औपनिवेशिक अतीत म पहुची हुई है जिससे यूरोप बचा रहा। उपनिवशको से विरासत मे मिली समस्याए आज साम्राज्यवादियो द्वारा बरती जा रही नीति के कारण अधिक उलझ गयी है, जो नयी परिस्थितियो म भिन्न भिन्न विधियो—सैन्य दबाव स लेकर आर्थिक उधारो की मदद से जोड-तोड तक—से काम लेते हुए 'फूट डालो और राज करो' जैसे पुराने सिद्धात को अमल म लाने की कोशिश कर रहे है।

इसके बावजूद एशिया मे एसे उदाहरण भी कम नही हैं, जब समन्वित कार्रवाई की बदौलत शाति और सुरक्षा का मार्ग प्रशस्त करने इस हेतु प्रयासो को एक कम्न म सफलता मिली। इस प्रसग मे उल्लेखनीय है एशियाई देशो क बीच सबधो पर १९४७ म प्रथम दिल्ली सम्मेलन और १९५४ तथा १९६२ के जेनेवा सम्मेलन। इसी तरह १९५५ मे हुए बाडूग सम्मेलन के निर्णयो ने भी शाति और सुरक्षा के हितार्थ सयुक्त प्रयत्नो की आवश्यकता पर बल दिया।

वर्तमान चरण मे इन लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए विविध उपाय सभव हैं—द्विपक्षीय वार्तालाप स लेकर बहुपक्षीय परामर्शो और अतत विचार विनिमय तथा रचनात्मक निर्णयो की सम्मिलित खोजो की खातिर आम एशियाई सम्मेलन तक। यह वास्तव मे एक आधारभूत प्रश्न है, जिसके लिए सबद्ध देशो के बीच चौमुखी, गहन विचार मनन की अपेक्षा की जाती है।

आधुनिक अतराष्ट्रीय सबधो म इस बात का अपरिमित महत्व है कि उपनिवेशवाद और पृथग्वासन प्रणाली के निर्मूलन के प्रति भारत और सोवियत सघ के रुख एकसमान है। एक वक्तव्य मे श्रीमती इदिरा गाधी ने बहुत सटीक ढग से कहा था "पृथग्वासन का रूपातरण करना असभव है, इसका तो अत करने की आवश्यकता है।" अतर्राष्ट्रीय सम्मेलनो मे जब कभी दक्षिण अफ्रीका मे स्थिति की चर्चा होती है, भारतीय राजनयिक नीति ऐसा ही रुख अपनाती है। सोवियत सघ और भारत नामीबिया पर दक्षिण अफ्रीका के गैरकानूनी कब्जे को खत्म कराने तथा आक्रामक फौजो के बिना शर्त निष्कासन पर जोर देते हैं। नामीबिया की स्वतत्रताप्रेमी जनता को, सयुक्त राष्ट्र सघ की सुरक्षा

परिषद के प्रस्ताव न० ४३५ और ५३६ के अनुसार, अविलब स्वाधीनता प्रदान की जानी चाहिए–यह है सोवियत सघ और भारत, जनगण की आजादी और प्रगति हेतु सभी सेनानियो की माग।

अप्रैल १९८५ म दिल्ली मे आयोजित गुटनिरपेक्षता आदोलन के समन्वय ब्यूरो की बैठक ने नामीबियाई जनता के न्यायपूर्ण सग्राम के लिए अतर्राष्ट्रीय समर्थन बढाने मे भी सहायता की। बैठक के आयोजन उसके स्पष्टत उपनिवेशवाद विरोधी अतर्य से युक्त आधारिक प्रपत्रो की तैयारी मे भारत की भूमिका अतुलनीय रही है। यह घटना बडी लाक्षणिक है कि बैठक की कार्यावधि मे ही दिल्ली ने स्वापो* को राजनयिक प्रतिनिधित्व का दर्जा देने की घोषणा की।

भारत की ही भाति सोवियत सघ भी स्वापो का नामीबियाई जनता के एकमात्र और सच्चे प्रतिनिधि के नाते अविरल समर्थन करता आया है। दोनो देश दक्षिण अफ्रीका की अपने पडोसियो के विरुद्ध तोड फोड और आक्रमण की कार्रवाइयो को बद कराने का दृढतापूर्वक आग्रह और यह माग करते आये है कि प्रिटोरिया अडोस-पडोस के राज्यो की सप्रभुता स्वाधीनता और क्षेत्रीय अखडता का अविचल रूप से समादर करे।

सोवियत सघ साम्राज्यवादियो द्वारा समर्थित दक्षिण-अफ्रीकी शासको के षडयत्रो का सामना करने मे अगोला मोजाबीक तथा अन्य "अग्रिम सीमात राज्यो का सब तरह से समर्थन करता है। जहा तक भारत का सवाल है वह सयुक्त राष्ट्र सघ और दूसरे अतर्राष्ट्रीय मचो से आवाज बुलद करके विश्व समुदाय की ओर से अग्रिम सीमात" राज्यो के लिए सहायता तथा समर्थन बढाने की लगातार अपील करता रहा है ताकि ये राज्य, जैसा कि महासभा के एक अधिवेशन मे भारतीय प्रतिनिधिमडल के नेता ने कहा, प्रिटोरिया की ओर से अनवरत आक्रमणो, अस्थिरता लानेवाले प्रयत्नो और धमकियो का डटकर प्रतिरोध कर सके।

जनगण की आजादी व स्वाधीनता के लिए भारत और सोवियत सघ का समर्थन केद्रीय अमरीका और कैरीबियन सागर के इलाके मे

*स्वापो – १९६० मे स्थापित दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीकी लोक सगठन दक्षिण अफ्रीकी उपनिवेशको के विरुद्ध नामीबियाई जनता के राष्ट्रीय-मुक्ति सघर्ष का नेतृत्व कर रहा है।

घटित घटनाओ के प्रति उनके रुख मे भी स्पष्टत प्रकट होता है। हर जनता को बाहरी हस्तक्षेप के बिना अपने विकास-पथ का स्वतत्र रूप से चयन करने का अधिकार है, इस दृष्टिकोण से निर्देशित होते हुए सोवियत सघ और भारत इस इलाके मे स्थित समस्त राज्यो के विरुद्ध हर किस्म के दबाव एव आक्रमण की निदा करते हैं। क्यूबा के विरुद्ध अमरीकी साम्राज्यवाद की साजिशो और धमकियो का एक पूरा अभियान, निकारागुआ के खिलाफ अघोषित अमरीकी युद्ध, सलवाडोर के भीतरी मामलो मे दखलदाजी और ग्रेनाडा के प्रति घोर अपराध—यह सब अतर्राष्ट्रीय सबधो के सर्वमान्य मानको का ही नही, बल्कि जनगण के सप्रभु अधिकारो का भी अक्षम्य उल्लघन है, जिनका "समूचा दोष' महज यह है कि वे अपनी मर्जी से ही जीना चाहते हैं।

आधुनिक युग की एक लाक्षणिकता है गुटनिरपेक्षता आदोलन की, जो वर्तमान काल की प्रभावी शक्ति बन गया है, भूमिका और महत्व मे सतत वृद्धि। और बात इतनी ही नही है कि इसमे डेढ अरब से अधिक आबादी वाले एक सौ से भी ज्यादा राज्य सम्मिलित हैं, हालाकि यह अपने आप मे एक अत्यत महत्वपूर्ण परिघटना है। गुटनिरपेक्ष देशो का शाति के बचाव और दृढीकरण मे, शस्त्रास्त्रो की दौड पर लगाम लगाने के सग्राम मे योगदान नित्य बढता जा रहा है। वे आधुनिक युग की एक वृहत्तम शातिकामी ताकत बन गये हैं। इसमे भारत की सेवा कोई कम नही है, जो प्रचड समस्याए सुलझाने हेतु गुटनिरपेक्ष देशो को ऐक्यबद्ध करने का अविराम प्रयत्न करता रहा है।

गुटनिरपेक्ष देशो के राज्यो और सरकारो के प्रमुखो का दिल्ली सम्मेलन (मार्च १९८३) इस आदोलन के विकास मे शातिप्रेमी शक्तियो के सामान्य प्रयासो मे उसकी भूमिका बढाने मे एक बहुत बडा चरण सिद्ध हुआ। उसने मुख्य ध्यान युद्ध और शाति के प्रश्नो पर ही सकेद्रित करके उन्हे उन प्रचड सामाजिक-आर्थिक समस्याओ के साथ जोडा जो गुटनिरपेक्ष और समग्र रूप से विकासमान राज्यो के समक्ष खडी हैं। श्रीमती इदिरा गाधी के सुझाव पर स्वीकृत सम्मेलन की अपील मे कहा गया है 'हमारे युग के आधारभूत विषय हैं शाति और शातिपूर्ण सहअस्तित्व, निरस्त्रीकरण और प्रगति। किंतु ससार को न्याय तथा समानता पर ही अवस्थित होना चाहिए क्योकि उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद द्वारा थोपी गयी असह्य असमानता तथा

"गापण नि^त म तनाव थ^रहो और हिंसा के प्रमुख स्रोत बन हुए हैं।" सम्मेलन के राजनीतिक घोषणापत्र म इंगित किया गया कि विश्वव्यापी शांति और सुरक्षा स्थान आम तथा संपूर्ण निरस्त्रीकरण, विशेषकर नाभिकीय निरस्त्रीकरण के जरिये ही और कारगर अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण के अधीन ही सुनिश्चित की जा सकती हैं।

गुटनिरपेक्ष देशों न एक अपील जारी कर नाभिकीय राज्यों का आह्वान किया कि वे अनाभिकीय राज्यों को ऐसा आश्वासन दें कि उन्हें नाभिकीय अस्त्रों के प्रयोग अथवा प्रयोग की धमकियों का निशाना नहीं बनाया जायेगा। साथ ही रासायनिक अस्त्रों के प्रयोग पर प्रतिबंध संबंधी संधि अविलंब संपन्न करने के कार्य को आवश्यक बताया गया। सम्मेलन के विचार म अंतरिक्ष का उपयोग विशुद्धत शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए होना चाहिए।

गुटनिरपेक्षता आंदोलन की सैन्यवाद विरोधी, साम्राज्यवाद विरोधी और उपनिवेशवाद विरोधी प्रवृत्ति बनाये रखने और उसे पुख्ता बनाने में भारत समेत व शक्तियां प्रमुख भूमिका अदा करती हैं, जो गुटनिरपेक्षता के उन मूल सिद्धांतों के प्रति निष्ठावान है जो उसके प्रणेताओं, सर्वोपरि रूप से, जवाहरलाल नेहरू द्वारा सूत्रबद्ध किये गये थे। यह आंदोलन सैन्य-राजनीतिक गठबंधनों से पृथक रहने की, यानि उनमें भाग न लेने की पूर्वकल्पना करता है, परंतु उसका अर्थ तटस्थता अर्थात आक्रमण, अधिनायकत्व और विस्तारवाद की ताकतों का सक्रिय तापूर्वक प्रतिरोध करने से अलग रहना कदापि नहीं है युद्ध और शांति के प्रश्न उपनिवेशवाद और नवउपनिवेशवाद विरोधी जन-संघर्ष के प्रति निष्पक्ष रुख अपनाना उसके लिए विजातीय है।

विश्व रंगमंच पर गुटनिरपेक्ष देशों की बढती हुई सकारात्मक भूमिका से सोवियत संघ समस्त शांतिकामी शक्तियों को गहन संतोष प्राप्त होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि गुटनिरपेक्षता आंदोलन की सफलताएं अंतर्राष्ट्रीय स्थिति पर उसका बढता प्रभाव विकासमान देशों के सम्मुख विद्यमान अत्यावश्यक समस्याओं के हल को सुगम बना रहे हैं। यह स्वतःस्पष्ट है कि शांति का ध्येय जितना अधिक विश्वसनीय और सुदृढ होगा वे राष्ट्रीय पुनरुत्थान, आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति के जटिल कार्यभार उतनी ही सफलतापूर्वक हल कर सकेंगे। यह सुविदित है कि समाजवादी देश सोवियत संघ विकासमान देशों द्वारा औ

पनिवेशिक अतीत की विरासत पर सफलतापूर्वक काबू पाये जाने में भी गहरी रुचि रखते हैं।

गुटनिरपेक्ष देशों और समाजवादी देशों के बीच सहयोग में वृद्धि गुटनिरपेक्षता आन्दोलन की बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का एक कारक है। साम्राज्यवाद के गले में यह बात नीचे नहीं उतरती कि वह जगत जहां वह बड़े लंबे अर्से से हुक्म चलाता और रौब जमाता रहा, अब उसकी आज्ञा का पालन करना नहीं चाहता। वह विकासमान देशों को अपने साथ हज़ारों सूत्रों में बांधने का यत्न कर रहा है ताकि उनकी खनिज संपदा तथा प्रदेश का रणनीतिक उद्देश्यों के लिए निर्बाध रूप में उपयोग कर सके।

साम्राज्यवादी और नवउपनिवेशवादी तत्वों की राय में इस लक्ष्य की प्राप्ति का एक बुनियादी साधन गुटनिरपेक्षता आंदोलन के सहभागियों में फूट डालना, एक देश-समूह को दूसरे के मुकाबले में खड़ा करना है। क्यूबा की राजकीय परिषद और मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष फिडेल कास्त्रो ने साधिकार ही यह कहा है कि "गुटनिरपेक्षता आंदोलन पर बाहर से इतना सशक्त दबाव आज से कभी नहीं डाला गया था, न उसे पहले कभी इतनी मजीदा भीतरी समस्याओं का सामना करना पड़ा था, जिनसे हमारी एकता तक के कमज़ोर बनने का खतरा पैदा हो गया है।"

गुटनिरपेक्ष देशों की स्वाधीनता को निःशक्त बनाने और उन द्वारा साम्राज्यवादी ज़ोर-ज़बरदस्ती की नीति का प्रतिरोध निर्बल बनाने के प्रयासों में अग्रणी पश्चिमी राज्य, प्रथमतः, संयुक्त राज्य अमरीका आंदोलन के सदस्य-देशों के समाजवादी राज्यों, सर्वोपरि सोवियत संघ के साथ सहयोग को निस्सत्व बनाने पर दांव लगा रहे हैं। बिना अतिशयोक्ति के कहा जा सकता है कि यह लाइन साम्राज्यवाद की कार्यनीति और रणनीति के आधारिक, निर्णयकारी अवयवों में से एक है। आधुनिक परिस्थितियों में तो साम्राज्यवाद की विश्वव्यापी स्थिति के निर्बल होने और समाजवाद की बढ़ती क्षमता तथा नवजात राज्यों की अंतर्राष्ट्रीय मामलों में प्रतिष्ठा एवं भूमिका में वृद्धि के कारण यह लाइन स्पष्टतः सबल हुई है। मुक्तिप्राप्त और समाजवादी राज्यों के लिए अहितकर नीति को अमली जामा पहनाने के लिए तरह-तरह की विधियों से काम लिया जाता है। साम्राज्यवादी शक्तियां विकासमान और गुटनिर

पदा देना की 'सोवियत सैन्य खतरे' जैसी मनगढ़त कपोल-कल्पना तथा 'कम्युनिस्ट घुसपैठ के खतरे" जैसे हौवे से डराने के भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। अपने मनसूबों की खातिर वे अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समस्या तक से लाभ उठाने से बाज नहीं आते। सोवियत संघ के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों के साथ एकताभाव एवं सहयोग को भी आतंकवाद की हिमायत की बराबरी दी जाती है। साथ ही फिलिस्तीन मुक्ति संगठन के सदस्यों का, जो फिलिस्तीनी जनता के न्यायसंगत अधिकार की पूर्ति यानि अपने राज्य की स्थापना हेतु संघर्षरत हैं नामीबिया के स्वातन्त्र्य-सेनानियों का और सैन्य-आतंकपूर्ण तानाशाही के विरुद्ध संघर्षरत सलवाडोर के देशभक्तों का नाम भी आतंकवादियों में दर्ज किया जाता है '। इधर तथाकथित सिख राज्य "खालिस्तान' की स्थापना के लिए चल रहे पृथकतावादियों के दंगे फसादों को साम्राज्यवाद के घोरतम प्रतिगामी तबके खुलेआम राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का दर्जा देते हैं। इसका उद्देश्य साफ है—मुक्तिप्राप्त राज्यों की प्रभावशील सामाजिक राजनीतिक शक्तियों को भ्रम में डालना, उनमें यह विचार संचारित करना कि अंतर्राष्ट्रीय तनाव का स्रोत मानो सोवियत नीति ही है और अंततोगत्वा युवा राज्यों के सोवियत संघ के साथ सहयोग के तले से जमीन खिसका देना।

गुटनिरपेक्षता आंदोलन की विश्व अखाड़े में किसी स्वतन्त्र भूमिका का अस्तित्व न होने के विषय में साम्राज्यवादी क्षेत्रों की इस आशय की मनगढ़त बातों का लक्ष्य ऊपर लिखी चीजों के अलावा यह है कि तरुण राष्ट्रीय राज्यों की स्वाधीनता तथा उनकी दृढ़ बनती जा रही अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को हानि पहुंचायी जाये। अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि महाशक्तियों से 'समान दूरी' और 'सच्ची गुटनिरपेक्षता' जैसी दलीलें पश्चिम में खूब उछाली जा रही हैं और उनका समर्थन किया जा रहा है।

असल में बात यह है कि वर्तमान काल की दो सर्वाधिक प्रभावकारी शांतिकामी शक्तियों—समाजवादी राष्ट्रमंडल और गुटनिरपेक्षता आंदोलन—के बीच सहयोग का विकास तथा दृढ़ीकरण नवउपनिवेशकों और साम्राज्यवादियों की साजिशों के विरुद्ध मुक्तिप्राप्त राज्यों की दृढ़ता को नयी शक्ति देते हैं। यह सहयोग अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार में समानाधिकार और न्याय तथा अंतर्राज्यीय संबंधों में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धांतों

की अभिपुष्टि के हेतु एक आवश्यक पूर्वशर्त है। इस सहयोग की बदौलत सयुक्त राष्ट्र सघ मे अनेक ऐसे ऐतिहासिक दस्तावेजो को स्वीकृत करना सभव हुआ, जिन्होने विश्व के राजनीतिक वातावरण पर सकारात्मक असर डाल दिया था। इनमे कुछ इस प्रकार हैं औपनिवेशिक देशो और जनगण को स्वाधीनता प्रदान करने का घोषणापत्र, राज्यो के भीतरी मामलो मे दखलदाजी और हस्तक्षेप को अमान्य ठहराने विषयक घोषणा-पत्र आदि। अधिसख्य गुटनिरपेक्ष देशो ने महासभा द्वारा अनुमोदित सोवियत पगो – नाभिकीय महाविपत्ति के निवारण अन्य सप्रभु राज्यो की सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्थाओ म तोड-फोड की ओर लक्षित राजकीय आतकवाद तथा अन्य प्रकार की कार्रवाइयो को अमान्य ठहरान सबधी घोपणापत्रो – का साथ दिया।

गत वर्षो के सबसे महत्वपूर्ण सोवियत-भारतीय दस्तावेजो मे विद्यमान एक पहलू अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सबधो का समानाधिकार, न्याय एव जनवाद के सिद्धातो के आधार पर पुनर्गठन करने के प्रश्न से सबधित है। यदि इस तात्कालिक कार्यभार की पूर्ति हो जाये, तो उससे सारी मानवजाति विकासमान और समाजवादी देशो की जनसख्या का हितसाधन होगा।

किंतु अग्रणी साम्राज्यवादी देश, सर्वप्रथम सयुक्त राज्य अमरीका आर्थिक क्षेत्र मे अतर्राष्ट्रीय साहचर्य के आधारभूत सिद्धातो का घोर उल्लघन कर रहे हैं। विकासमान देशो के विरुद्ध उठाये जानेवाले हानि कर आर्थिक पग और अलग-अलग समाजवादी राज्यो के विरुद्ध तथा कथित दडात्मक कार्रवाइयो की घोषणा इसके प्रमाण है।

नयी अतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था – जिस रूप मे विकासमान देश उसे देख रहे हैं – आर्थिक स्वावलबन की उपलब्धि, तीक्ष्ण सामाजिक समस्याओ के समाधान तथा वास्तव मे समानाधिकारपूर्ण और न्यायपूर्ण बाहरी आर्थिक सबधो की स्थापना मे निहित है। किंतु इस पथ पर उन्हे साम्राज्यवादी राज्यो की नीति, शस्त्रास्त्रो की होड तेज़ करने की उनकी लाइन का सामना करना पडता है। पश्चिमी देशो मे शस्त्रास्त्रो की होड पर जो राशि व्यय होती है, वह सभी विकासमान देशो की समग्र राष्ट्रीय आय के आधे से अधिक है। सैन्य व्यय मे वृद्धि मुद्रास्फीति की ओर, विकासमान देशो के व्यापार के अवरोध की ओर ले जा रही है। इससे बढकर, युद्धोन्माद और शस्त्रास्त्रो की होड बढाने की साम्राज्यवादी क्षेत्रो की नीति जिसका भ्रामक लक्ष्य समाजवादी जगत

पर श्रेष्ठता पाना है आर्थिक प्रगति के मुख्य आधार—शांति—को ध्वस्त करती है।

इस प्रकार के शस्त्रास्त्रों की कटौती नाभिकीय महाविपत्ति के खतरे के निवारण की दिशा में सचेष्ट कई दूरगामी पहलकदमियों की साम्राज्यवादियों के कारण ही पूर्ति नहीं हो पायी है। उनकी अंतर्ध्वंसकारी हरकतों के कारण संयुक्त राष्ट्र संघ के दायरे में विश्व मुद्रा वित्त सम्मेलन बुलाने का काम नहीं हो पा रहा है तीक्ष्णतम आर्थिक प्रश्नों पर विश्वस्तरीय वार्ता का आयोजन वर्ष प्रतिवर्ष स्थगित किया जा रहा है। पश्चिम विकासमान देशों की आर्थिक दशा सुधारने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्णयों के कार्यान्वयन में बाधा डाल रहा है। इनमें नये दौर में अंतर्राष्ट्रीय विकास नीति, राज्यों के आर्थिक अधिकारों और दायित्वों का घोषणापत्र नयी विश्व आर्थिक व्यवस्था की स्थापना विषयक घोषणापत्र आदि जैसे निर्णय शामिल हैं।

साम्राज्यवादी ताकतों का अप्रच्छन्न विघ्नकारी रुख विकासमान दुनिया का शोषण जारी रखने तथा तेज करने की उनकी लालसा से संबद्ध है। प्रतिवर्ष ऋण-ब्याज की बुकौती पारराष्ट्रीय निगमों के मुनाफों व लाभों और ऋण-परिशोधन के रूप में बीसियों अरब डालर पश्चिम भेजे जाते हैं। औपनिवेशिक प्रणाली के विघटन के उपरांत विकासमान देशों से इतना धन निचोड़ा जा चुका है, जितना उपनिवेश स्वामी देशों ने अपने आधिपत्य की पूर्ववर्ती सदियों में नहीं हड़पा था। जैसा कि व्यवहार से सिद्ध होता है विकासमान देशों के पास अपनी स्वाधीनता और आर्थिक आत्मनिर्भरता की रक्षार्थ नवउपनिवेशवादी शोषण हुकमशाही और भय-आतंक के विरुद्ध इजारेदारियों के कार्यकलाप के परिसीमन के लिए निर्णयकारी तथा सुसंगत संघर्ष के अलावा और कोई कारगर उपाय नहीं है।

सोवियत संघ और समग्र समाजवादी राष्ट्रमंडल मुक्तिप्राप्त राज्यों की न्यायपूर्ण मांगों की पूर्ति में स्वाधीनता के दृढ़ीकरण में उनकी सदैव हिमायत करते रहे और आगे भी करते रहेंगे। १ जनवरी, १९६५ से सोवियत संघ ने विकासमान देशों से आयातित माल पर शुल्क मंसूख करके उसे एकतरफा ढंग से वरीयता दी।

जून १९८४ में परस्पर आर्थिक सहायता परिषद की बैठक में सोवियत संघ और अन्य समाजवादी राज्यों ने अंतर्राष्ट्रीय संबंध सुधारने

का एक रचनात्मक कार्यक्रम पेश किया। उसके मूल मे निर्बाध अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग की माग निहित थी। यह कार्यक्रम विकासमान देशो के निर्यात मालो की न्यायसगत कीमतो के निर्धारण, कृत्रिम वाणिज्यिक बाधाओ के उन्मूलन और पारराष्ट्रीय इजारेदारियो की गतिविधियो पर नियत्रण की पूर्वकल्पना करता है। सैद्धातिक महत्व के मुद्दो म मुद्रा वित्त सबधो का नियमन, ब्याज की ऊची दर की नीति का परित्याग तथा ऋणदान एव परिशोधन की शर्तो का नियमन शामिल थे।

जून (१६८४) की मास्को मे हुई बैठक के दस्तावेजो मे बताया गया "आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य-देश आर्थिक विउपनिवेशीकरण अपने खनिजो व अन्य सपदा के सबध मे पूरी सप्रभुता, स्वतत्र आर्थिक गतिविधियो अतर्राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओ के समाधान म व्यापक एव समानाधिकारपूर्ण सहभागिता पूजी और श्रमकुशल कर्मचारीगण के निकास के अत, आम तरजीह प्रणाली के बिना शर्त कार्यान्वयन की विकासमान देशो की प्रगतिशील मागो का समर्थन करते है। इस सबका उद्देश्य विकासमान देशो की आर्थिक दशा बिगडने से रोकना, उनकी प्रगति मे योग देना है।

सोवियत सघ और दूसरे समाजवादी देश यह मानकर चलत है कि मुक्तिप्राप्त राज्यो की कठिनाइयो के लिए दोषी भूतपूर्व उपनिवेश स्वामियो साम्राज्यवादी ताकतो और अतर्राष्ट्रीय इजारेदारियो का कर्तव्य यह है कि वे औपनिवेशिक लूट और नवउपनिवेशवादी शोषण के फलस्वरूप क्षति के एवज मे 'तीसरी दुनिया' को साधनो की सप्लाई मे विस्तार करे और युवा राज्यो को अतर्राष्ट्रीय ऋण के स्रोत अनुकूल शर्तों पर सुलभ बनाये।

ऐसी परिस्थितियो मे, जब नयी अतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के शत्रु तात्कालिक आर्थिक समस्याओ के हल मे सयुक्त राष्ट्र सघ और दूसरे प्रतिनिधिमूलक सगठनो की भूमिका को यथासभव घटाने के लिए उतारू हैं, सोवियत सघ और उसके साथी देशो की यह माग विशेष अर्थपूर्ण बन जाती है कि सयुक्त राष्ट्र सघ के तत्वावधान मे सर्वाधिक गभीर आर्थिक समस्याओ पर विश्वव्यापी स्तर पर वार्ताए आरभ की जाये।

सोवियत सघ द्वारा प्रस्तावित पग भारत और अन्य मुक्तिप्राप्त राज्यो के मूल एव जीवत हितो के पूर्णत अनुरूप है, क्योकि वे पिछडेपन

के निर्मूलन तथा विविध क्षेत्रो म अतर्राष्ट्रीय सबधो क सामजस्यपूर्ण विकास के लिए यथोचित परिस्थितिया कायम करने की ओर लक्षित है। यह सब आर्थिक स्थिरता और विश्व राजनीतिक वातावरण के सामान्यीकरण का एक आधारभूत कारक है। तथ्य अकाटय रूप से प्रमाणित करते है कि कौन नवजात राज्यो की समस्याओ का तीक्ष्णतर बना रहा है और कौन उनके हल म पूरा योग दे रहा है, कौनसी शक्तिया भूतपूर्व उपनिवेशो को शोषण की खातिर बनाये रखना चाहती है और कौनसी शक्तिया उनकी प्रभुसत्ता के दृढीकरण मे, आर्थिक आत्मनिर्भरता एव प्रगति के पथ पर उनकी अडिग अग्रगति म हाथ बटाना चाहती हैं। ऐसी हालत मे 'उत्तर–दक्षिण' जैसे प्रवर्गो का सहारा लेते हुए आधुनिक अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सबधो की समस्याओ के प्रति 'भौगोलिक मानदड' अपनाने का अर्थ है इन सबधो मे समाजवादी देशो की भूमिका और साम्राज्यवादी देशो की भूमिका को एक ही पैमाने से नापना और फलत नयी अतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के प्रश्नो के प्रति दो विपरीत सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओ के रवैये म मूलगामी अतर की ओर से आखे मूद लेना।

सोवियत सघ और भारत के बीच परस्पर लाभदायक सहयोग का सतत विकास सच्चे अर्थ मे न्यायपूर्ण एव समानतापूर्ण अतर्राष्ट्रीय सबधो के मूर्त रूप का एक ठोस उदाहरण है। इन प्रश्नो के प्रति दोनो देशो के साझे रवैये की चर्चा करते हुए प्रख्यात टीकाकार गिरीश मिश्र ने लिखा "सोवियत सघ और भारत के हित एकसमान हैं क्योकि दोनो देश नवउपनिवेशवाद, साम्राज्यवादी शोषण तथा सब प्रकार के उत्पीडन का विरोध करते हैं। सोवियत सघ का उद्देश्य पिछडेपन को दूर करने, साम्राज्यवाद पर आश्रितता घटाने म भारत की सहायता करना है। भारत का उद्देश्य भी यही है।"*

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति के महासचिव मिखाईल गोर्बाचोव की गत वर्ष २१ से २८ नवबर तक भारत की सरकारी मैत्रीपूर्ण यात्रा एक ऐतिहासिक महत्व की घटना सिद्ध हुई है। इसका महत्व सर्वप्रथम इससे स्पष्ट होता है कि दो महान देशो की परस्पर समझ और सहयोग विश्व राजनीति का एक महान कारक

---

* *Patriot* New Delhi 23 05 1985

है। दोनो देशो के नेताओ ने वार्तालाप और भेंटो के दौरान ऐसे अनेक प्रश्नों पर विचार-विमर्श किया जिनका वास्ता द्विपक्षीय सबधो से ही नही, वरन सार्वभौमिक समस्याओ से भी था। इसका सारतत्व दिल्ली घोषणापत्र और सयुक्त विज्ञप्ति म प्रतिबिम्बित हुआ। ये दस्तावेज प्रमुख राजनीतिक समस्याओ क समाधान क प्रति नये चिन्तन, सृजनात्मक तथा साहसिक दृष्टिकोण के फल है।

दोनो पक्षो को दृढ विश्वास है कि आज शाति की सुरक्षा और नाभिकीय सर्वनाश के खतर का निवारण मानवजाति के समक्ष एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यभार है। इस विश्वास से निदेशित होकर सोवियत सघ और भारत न सभी देशो व राष्ट्रो के नाम घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किये। इसम शामिल दस सूत्र शाति का एक वास्तविक चार्टर हैं। इसका लक्ष्य शाति को सार्वभौम मूल्य का महत्व प्रदान करना है। सारी मानवजाति का इस प्रकार का आह्वान करन का सोवियत सघ और भारत को नैतिक अधिकार है। घोषणापत्र की प्रस्थापनाए, उसक सिद्धात कोरी सद्भावनापूर्ण कामनाए नही है। सोवियत सघ और भारत अपनी विदेशनीति मे उनसे पहले स निर्देशित होते चले आ रहे है। जैसे कि घोषणापत्र मे बताया गया है शातिपूर्ण सहअस्तित्व को अत र्राष्ट्रीय सबधो मे एक सार्विक मानक बन जाना चाहिए ताकि हमारे इस आणविक युग म मुकाबलेबाजी का स्थान सहयोग ले सके और सकटपूर्ण स्थितियो पर सैनिक बल से नही, बल्कि राजनीतिक साधनो से काबू पाया जा सके। नाभिकीय अस्त्रो से मुक्त अहिसात्मक विश्व सबधी सिद्धातो का यह घोषणापत्र नये राजनीतिक चितन का प्रपत्र है जो वर्तमान नाभिकीय एव अतरिक्षीय युग की परिस्थितियो के अनुकूल है। इसम निरूपित सिद्धात और विचार समस्त राष्ट्रो के हितो, सारे जनगण की आशा-आकाक्षाओ की अभिव्यक्ति करते है और ये मानवजाति क शातिमय भविष्य की ओर लक्षित हैं।

भारतीय पक्ष न वर्तमान शती के अत तक नाभिकीय और आम सहार के अन्य प्रकार के अस्त्रो के क्रमगत पूण उन्मूलन के विषय मे सोवियत सघ द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम का स्वागत किया। दोनो पक्षो ने नाभिकीय अस्त्रो के प्रयोग पर अतर्राष्ट्रीय प्रतिबध लगाने के लिए सधि शीघ्रातिशीघ्र सपन्न करने की अपील की और उनक परीक्षणो को अविलब बद करना आवश्यक घोषित किया।

यह सुविदित है कि प्रत्येक जनता के लिए सर्वव्यापी शांति उसके अपने घर के द्वार से शुरू होती है। इसी कारण एशिया मे स्थायित्व तथा सुरक्षा सोवियत सघ और भारत, दोनो के लिए हितकर है। स्वभावत वार्ता मे एशिया महाद्वीप और निकटवर्ती इलाको मे राजनीतिक स्थिति सुधारने वहा शाति तथा स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए उपाय खोजने की ओर बहुत ध्यान दिया गया। श्री राजीव गाधी ने इगित किया कि मिखाईल गोर्बाचोव द्वारा व्लादीवोस्तोक मे पेश सुझावो से धरती के इस अचल मे शान्ति और स्थायित्व सुनिश्चित करने के चालू प्रयासो को जबर्दस्त प्रेरणा मिली है। श्री राजीव गाधी ने एशियाई और प्रशात महासागरीय देशो के बीच सहयोग के सिद्धान्त निरूपित करने हेतु राज्यो के बीच पारस्परिक विचार विनिमय बढाने पर जोर दिया। इस प्रदेश म स्थिति सामान्य बनाने के बारे मे सोवियत और भारतीय दृष्टिकोणो का सादृश्य इस महत्वपूर्ण कार्य मे दोनो देशो के सहयोग के आधार का निर्माण करता है। उभय देश हिंद महासागर को शाति प्रदेश मे परिवर्तित करने के पक्ष मे है। भारत यात्रा के समय सोवियत नेता ने अनेक ठोस प्रस्ताव पेश किये, जिनका उद्देश्य हिंद महासागर के क्षेत्र मे सैन्य व राजनीतिक स्थिरता को सुदृढ और स्थिति सामान्य बनाना है। उन्होंने सयुक्त राज्य अमरीका और अन्य देशो के साथ जिनके सैन्य पोत हिंद महासागर मे स्थायी आधार पर तैनात हैं इनकी सख्या तथा कार्यवाही सीमित करने के बारे किसी भी समय वार्ता आरभ करने की तत्परता जाहिर की। सैन्य क्षेत्र मे परस्पर विश्वास की बाबत सयुक्त राज्य अमरीका और सम्बधित एशियाई देशो के साथ वार्ता चलाने के सोवियत सुझाव को मूर्त रूप देना इस इलाके मे तनाव शैथिल्य के लिए महत्वपूर्ण पग सिद्ध होगा।

हिंद महासागरीय क्षेत्र मे परिस्थिति के अधिक उग्र होने से चितित होकर सोवियत सघ और भारत ने यहा कायम सैनिक अड्डो के खात्मे और नये अड्डे न बनने देने का आह्वान किया। उन्होने इस इलाके म विदेशी सैनिक उपस्थिति बढाने के प्रयत्नो की भी निंदा की।

उभय पक्षो न धरती पर विद्यमान तनाव-स्थलो के यथाशीघ्र अत और नये के निवारण की आवश्यकता पर सहमति प्रकट की। इसका वास्ता निकट पूर्व, दक्षिण-पश्चिमी दक्षिण-पूर्वी एशिया और मध्य अमरीका से है। सोवियत सघ और भारत न दक्षिण अफ्रीका

गणराज्य की नसलवादी सरकार की पृथग्वासन की नीति और व्यवहार की, दूसरे अफ्रीकी राज्यो के खिलाफ उसके राजकीय आतकवाद की सख्त भर्त्सना की और नमीबिया से कब्जावर सेनाए हटाने तथा उसे स्वाधीनता प्रदान करने सबधी सयुक्त राष्ट्र सघ के सभी सम्बधित निर्णयो की पूर्ति की माग की।

दिल्ली-वार्ता के समय श्री राजीव गाधी ने इस बात पर जोर दिया कि भारत अतरिक्ष के सैन्यीकरण का अनन्य विरोधी है। सोवियत सघ और भारत "तारा-युद्ध" के नही, बल्कि 'तारा शाति' के हिमायती हैं। भारत ससद मे अपने भाषण मे मिखाईल गोर्बाचोव ने विकासमान देशो को अतरिक्ष के व्यापक अध्ययन की ओर आकर्षित करने और इस हेतु भारत मे अतर्राष्ट्रीय अतरिक्ष-अध्ययन केंद्र स्थापित करने का सुझाव दिया। उभय पक्षो ने अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सबधो का न्यायपूर्ण तथा समानाधिकारपूर्ण आधार पर पुनर्गठन करने और नयी विश्वव्यापी आर्थिक व्यवस्था कायम करने की अपील की। इस अत्यत महत्वपूर्ण समस्या का समाधान समस्त मानवजाति, खास तौर से विकासमान देशो के लिए हितकर होगा।

दिल्ली मे हुई वार्ताओ ने द्विपक्षी सोवियत-भारत सबधो को अभूतपूर्व रूप मे सक्रिय बना दिया है। इसके फलस्वरूप दो देशो के बीच आर्थिक और तकनीकी सहयोग का जो समझौता सपन्न हुआ, वह अद्वितीय है। इसके अनुसार सोवियत सघ कोयला और तेल उद्योग, बोकारो इस्पात कारखाने के आधुनिकीकरण जैसी परियोजनाओ समेत अनेक नये उद्योग धधो के निर्माण मे भारत को सहायता प्रदान करेगा। १९८६-१९९० के वर्षों के लिए सपन्न दीर्घकालिक वाणिज्य समझौते के फलस्वरूप, जिसमे व्यापार के रूप और उसकी सरचना को परिष्कृत करने तथा उसे अधिक गतिशील बनाने की व्यवस्था की गयी है परस्पर लाभदायक व्यापार आगे बढता जायेगा। सन् १९९२ तक पारस्परिक कुल व्यापार ढाई गुना बनाने की योजना है। वैज्ञानिक-तकनीकी सम्बध, सस्कृति, स्वास्थ्य-रक्षा शिक्षा, आम सूचना सेवा और खेलकूद जैसे क्षेत्रो मे भी सहयोग पर्याप्त रूप से बढेगा। दोनो देशो मे राष्ट्रीय उत्सवो के परस्पर आयोजन सबधी विज्ञप्ति पर हस्ताक्षर किये गये। ये उत्सव साल भर जारी रहेगे, जो अक्तूबर क्राति की ७०वी जयती और भारत की स्वाधीनता की ४०वी जयती को समर्पित होगे।

दिल्ली मे आयोजित सयुक्त पत्रकार सम्मेलन मे भारत यात्रा के परिणामो की चर्चा करते हुए मिखाईल गोर्बाचोव न कहा, "इस यात्रा के दौरान हमने इस समय फिर एक बार सोवियत भारत सबधो के महत्व का और साथ ही हमारे जनगण तथा समूचे ससार के प्रति अपने दायित्व का अनुभव किया है। उनका महत्व सर्वोपरि इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि इसका सम्बध ऐसे राज्यो से है, जिनकी भिन्न भिन्न सामाजिक व्यवस्थाए हैं, उनका इतिहास भी भिन्न भिन्न है और राष्ट्रीय तथा आत्मिक परपराए अत्यत विशिष्ट हैं। कई दशाब्दियो से चले आ रहे परस्पर लाभकर और ईमानदारी भरे सहयोग के फल स्वरूप आधुनिक काल की इस विशाल एव अद्भुत परिघटना ने मूर्त रूप ग्रहण किया और वह विश्व राजनीति का शक्तिशाली कारक बन गयी है।'

अत मिखाईल गोर्बाचोव की भारत यात्रा सोवियत भारत सबधो का युगान्तरकारी घटना ही सिद्ध नही हुई, अपितु उसके परिणाम विश्व घटना प्रवाह के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्नो पर भी प्रभाव डालते हैं।

आर्थिक और तकनीकी सहयोग

समाजवादी देश अतर्राष्ट्रीय आर्थिक मपर्को को विशप स्थान देते हैं क्योकि इमी क्षेत्र मे वे दीर्घकालिक कारक गठित होत हैं, जो विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं वाले देशा क बीच स्थायी शातिपूर्ण महयोग का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

समाजवादी राष्ट्रमडल के बाहरी आर्थिक सपर्को मे विकासमान देशो के साथ व्यापारिक एव आर्थिक सपर्को को बडा स्थान प्राप्त है। इन सपर्को म जो समानाधिकार तथा परस्पर लाभ के सिद्धातो पर अवस्थित हैं यह मार्क्सवादी-लेनिनवादी प्रस्थापना व्यवहार म मूर्त रुप ग्रहण करती है कि विश्व समाजवाद और राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन की शक्ति अविभाज्य है। समाजवादी देशो के साथ आर्थिक महयोग मुक्तिप्राप्त तरुण राज्यो की समस्त अतर्राष्ट्रीय सबध प्रणाली पर अनुकूल प्रभाव डालता है विश्व पूजीवादी अर्थव्यवस्था मे असमान स्थिति मिटाने म उनके प्रयत्नो को मबल बनाता है।

मोवियत सघ न दूसरे विश्वयुद्ध के उपरात अपने अर्थतत्र के पुनरुत्थान की दूभर कठिनाइयो के बावजूद तथा अतर्राष्ट्रीयतावादी सिद्धातो के प्रति निष्ठावान रहते हुए नवजात राज्यो को राजनीतिक और भौतिक सहायता देन का यत्न किया और छठे दशक के मध्य स उनक साथ सक्रिय सहयोग करने का पथ अपनाया। ऐसा पहला राज्य भारत था।

उपनिवेशो और अर्ध उपनिवेशो के सबध मे सोवियत राज्य की नीति के मूलतत्वो का निर्धारण करते हुए व्ला० इ० लेनिन ने लिखा "हम मगोलियाइयो ईरानियो, हिंदुस्तानियो तथा मिस्रियो के समीप होने और उनके साथ एकजुट होने के लिए पूरी पूरी कोशिश करगे। हमारा विश्वास है कि ऐसा करना हमारा कर्तव्य है और

यह हमारे हित मे है हम इन पिछडे हुए और उत्पीडित जनगण को निस्स्वार्थ रूप से साम्कृतिक सहायता देने, याने उन्हे मशीनो का उपयोग करने तथा श्रम भार को हल्का करने, जनवाद तथा समाजवाद मे सक्रमण करने मे सहायता देने का प्रयास करेगे।"*

विकासमान देशो के साथ सोवियत सघ के सहयोग का ऐतिहासिक महत्व सर्वोपरि यह है कि इसकी बदौलत नयी किस्म के अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सबधो विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओ वाले देशो के बीच ऐसे श्रम विभाजन का जन्म हुआ है जिसके मूल सिद्धात परस्पर लाभ, समता और प्रभुसत्ता का सम्मान हैं।

सोवियत सघ इस या उस पदार्थ के उत्पादन मे इस उद्देश्य से योग देता है कि विकासमान राज्य अपनी भीतरी सपदा बढाकर ऐसी स्वाव लबी तथा सुनियोजित अर्थव्यवस्था का विकास कर सके, जो एक समाना धिकारपूर्ण साझेदार के रूप मे विश्व श्रम विभाजन मे भाग लेने म सक्षम हो।

सोवियत भारत आर्थिक और तकनीकी सहयोग का इसी व्यापक सदर्भ मे मूल्याकन करना चाहिए।

दोनो देशो के आर्थिक सपर्क तीन दशाब्दियो से भी ज्यादा समय से सफलतापूर्वक विकसित होते चले आ रहे है। इस दौरान सहयोग के पैमाने बहुत बढे हैं। आज इसकी परिधि मे अर्थतत्र विज्ञान तथा तकनीक के नाना क्षेत्र आ गये है। यह सहयोग दोनो के लिए हितकर है और वह, सर्वप्रथम भारत के राष्ट्रीय अर्थतत्र के निर्माण, राजकीय क्षेत्र के विस्तार एव सुदृढीकरण की ओर उन्मुख है।

जैसा कि 'नशनल हेरारड ने अक्तूबर १६७१ म लिखा था, "सोवियत सघ और परस्पर आर्थिक सहायता परिषद के अन्य सदस्य देशो की बाह्य आर्थिक सबधो म साझेदारी बहुत मूल्यवान है, क्योंकि यह भारत के आर्थिक उत्कर्ष मे योग देती है। इसके बिना भारत की विकास दरे उपलब्ध स्तर से काफी नीची रही होती।'

सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो के साथ भारत के व्यापा रिक व आर्थिक सपर्कों का आधार द्विपक्षीय प्रपत्रो (सधियो) के

---

* व्ला० इ० लेनिन मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा साम्राज्यवादी अर्थवाद', १६१६।

निरूपण के साथ गठित होने लगा था, जिनमें माल की सप्लाई परि-वहन, आदि सेवाओं तथा परस्पर भुगतान का नियमन किया गया था।

छठे दशक के आरंभ में भारत के साथ वाणिज्यिक-आर्थिक संपर्कों म सोवियत संघ न दोनो सरकारो के बीच समझौत संपन्न शुरू किये जो इन संपर्कों के नियमन का एकमात्र रूप बन गये। समूचे व्यापार का नियमन करनेवाला ऐसा प्रथम समझौता १९५३ म संपन्न हुआ।

आर्थिक और तकनीकी सहयोग का विकास, जिसके संगठनात्मक विधिक आधार का निर्माण दो सरकारो क बीच संबद्ध समझौता न किया, इन संबंधों का एक उल्लेखनीय चरण था। २ फरवरी १९५५ को हस्ताक्षरित इस तरह के पहले समझौते के अनुसार सोवियत संघ ने रिआयती शर्तों पर उधार देन के साथ १० लाख टन इस्पात की वार्षिक क्षमता वाले भिलाई धातु कारखाने के प्रथम चरण के निर्माण म भारत को तकनीकी-आर्थिक सहायता प्रदान करने का दायित्व ग्रहण किया था।

दो देशो के सहयोग की संपूर्ण अवधि मे भारत मे विभिन्न प्रतिष्ठानो के निर्माण पर ऐसे १६ समझौत संपन्न हो चुके हैं।

दो देशो के बीच समझौतो के कार्यान्वयन की प्रक्रिया मे सहयोग के मुख्य रूप निखरे। उदाहरण के लिए ये नये रूप हैं औद्योगिक प्रतिष्ठानो और पूरे समुच्चयो का रूपाकन तथा निर्माण संयत्रो, पुर्जों और सामग्रियो की सप्लाई, संयत्रो की जुडाई और समजन मे सहायता, भूवैज्ञानिक खोजों का कार्य, श्रमकुशल कर्मियो का प्रशिक्षण।

सोवियत संघ की सहायता मे भारत म कच्चे लोहे इस्पात और एलुमिनियम की गलाई तेल की निकासी और संसाधन, लौह धातु और कोयले के उत्पादन, विद्युत ऊर्जा के उत्पादन नाना प्रकार के साज़-सामान तथा उपकरणो, औषधियो एव उद्योग और कृषि के उत्पादो क उत्पादन हेतु अनक सशक्त उद्यम खडे किये गये।

दो सरकारो के बीच समझौतो के अनुसार, सोवियत सहयोग से भारत मे ११० से अधिक औद्योगिक और अन्य प्रतिष्ठानो का रूपाकन अथवा निर्माण हो रहा है जिनमे से ६० चालू हो चुके हैं।

१९७१ की शांति मैत्री और सहयोग की संधि तथा संपन्न किये गये अन्य सामान्य द्विपक्षीय समझौतो का, जो सहयोग की प्रमुख दिशाओ तथा रूपो को आम तौर पर दीघकाल के लिए निश्चित करते है,

सोवियत भारत आर्थिक सहयोग की चौमुखी और द्रुत प्रगति के लिए अद्वितीय महत्व है। इन समझौतो म से कुछ निम्नांकित हैं २६ नवंबर १९७३ को हस्ताक्षरित व्यापारिक तथा आर्थिक सहयोग के आगे विकास के बारे मे करार मार्च १९७९ का अगले १० १५ वर्षों की अवधि के लिए आर्थिक, व्यापारिक और वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग का दीर्घकालिक कार्यक्रम और अत मे सन् २००० तक के लिए आर्थिक, व्यापारिक तथा वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग की मुख्य दिशाओ के बारे मे समझौता जिस पर मई १९८५ मे भारत के प्रधानमंत्री राजीव गाधी की सोवियत सघ की यात्रा के समय हस्ताक्षर किये गय। साथ ही इस अवसर पर दोनो पक्ष निकट भविष्य म सहयोग के नये दीर्घकालिक कार्यक्रम (चालू सदी के अत तक और आगे के लिए) के बारे म सहमत हुए। ये दस्तावेज सहयोग को स्थायित्व एव दीर्घकालिक स्वरूप प्रदान करते हैं।

१० १५ वर्षों की अवधि के लिए आर्थिक, व्यापारिक तथा वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग का दीर्घकालिक कार्यक्रम खास तौर से उल्लेखनीय है। यह द्विपक्षीय बहुप्रयोजनीय दस्तावेज जिसकी परिधि मे भारतीय अर्थतंत्र की विविध शाखाए आ जाती हैं दोनो देशो की बढ चुकी क्षमता को ध्यान म रखते हुए आर्थिक सहयोग की ठोस दिशाओ और रूपो को तय करता है।

दीर्घकालिक कार्यक्रम मे निर्दिष्ट कार्यभारो म प्राथमिक है विभिन्न शाखाओ म नये औद्योगिक प्रतिष्ठानो तथा ऊर्जा, कृषि आदि से सबधित उद्यमो के निर्माण म सहयोग का विस्तार।

ईंधन-ऊर्जा शाखाओ और धातुकर्म तथा मशीन निर्माण के द्रुत विकास की ओर मुख्य ध्यान दिया जा रहा है, जहा सोवियत भारत सहयोग परपरागत और विशेष रूप से सफल रहा है। कार्यक्रम मे सैल्यूलोज कागज खाद्य, हलके और चिकित्सा उद्योग जैसी नयी शाखाओ मे तथा निर्माण-सामग्री भूविज्ञान सिंचाई, नदियो-जलाशयो मे मत्स्य पालन, आदि क्षेत्रो मे निर्माण-सभावनाओ के अध्ययन का भी प्रावधान है।

सोवियत सहयोग से पहले निर्मित हो चुके औद्योगिक और दूसरे प्रतिष्ठानो के काम मे सुधार लाना उत्पादकता का स्तर ऊपर उठाना, उनमे नयी किस्म की उपजो का उत्पादन आरभ करना और आर्थिक कारगरता बढ़ाना भी कार्यक्रम द्वारा निर्दिष्ट सहयोग का प्रमुख अश

है। इस लक्ष्य प्राप्ति के उपाय हैं विद्यमान टेक्नोलाजी का परिष्कार और नयी टेक्नोलाजी को काम में लाना क्रियाशील उपकरणों का नवीनीकरण, सुदक्ष कर्मीवृद का प्रशिक्षण और विज्ञान एव तकनीक की उपलब्धियों का व्यापक रूप से उत्पादन म लगाया जाना। दोनों पक्ष यह काम भिलाई और बोकारो इस्पात कारखानो, राची दुर्गापुर और हरिद्वार स्थित मशीन निर्माण कारखानो, ऋषिकेश और हैदराबाद के औषधीय प्रतिष्ठानो तथा अन्य उद्यमो म पहल स चला रहे है।

चूंकि अतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन प्रत्येक देश की खनिज सपदा टेक्नोलाजिकल और पूजी निवेश सबधी क्षमता के अधिक विवेकसगत प्रयोग के लिए अनुकूल परिस्थितिया पैदा करता है इसलिए सोवियत और भारतीय प्रतिष्ठानो के उत्पादन-सहयोग और विशेषीकरण की प्रगति उत्पादन कारगरता बढाने तथा दोनो देशो के आर्थिक सपर्कों के आगे वैविध्यपूर्ण विस्तार म सहायक होगी। उत्पादन-सहयोग के विकास के हेतु सर्वाधिक उपयोगी क्षेत्र हैं लौह एव अलौह धातुकर्म, मशीन-निर्माण, कोयला उद्योग, इलेक्ट्रानिकी, औषधि-उत्पादन वस्त्र चर्म शोधन आदि।

कार्यक्रम मे दोनो देशो की अर्थव्यवस्थाओ की क्षमता तथा आवश्यकताओ को दृष्टिगत रखते हुए दीर्घकालिक व्यापार सधियो के आधार पर व्यापार के व्यापक विस्तार की व्यवस्था है। इस उद्देश्य से पण्यावर्त मे परस्पर हितकर माल शामिल करने और व्यापार के नये रूपो का विकास करने पर विचार किया जायेगा।

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र मे सहयोग की उपलब्धियों को ध्यान म रखते हुए कार्यक्रम दीर्घकालिक आधार पर परमावश्यक वैज्ञानिक और तकनीकी समस्याए सुलझाने के निमित्त और दोनो देशो की वैज्ञानिक एव तकनीकी सभावनाओ के अधिक कारगर उपयोग की खातिर उसके आगे विस्तार को श्रेयस्कर मानता है। वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग में निम्नाकित रूपो को प्राथमिकता दी जायेगी सूचना और प्रलेखन का विनिमय वैज्ञानिको और विशेषज्ञो के शिष्टमडलो का विनिमय, सम्मिलित खोजो और प्रायोगिक-रूपाकनीय कामो की पूर्ति, वैज्ञानिक उपकरणो और तकनीकी जानकारी ("नोहाउ) का विनिमय, वैज्ञानिक-तकनीकी कर्मीवृद की योग्यता मे वृद्धि सम्मेलनो सेमिनारो सगोष्ठियो का आयोजन आदि।

आर्थिक पूर्वानुमानो मे उपलब्ध अनुभव और ज्ञान के आदान प्रदान समेत नियोजन-कार्य मे, प्रणाली विधान मे, अल्पकालिक (वा र्षिक), मध्यकालिक और दीर्घकालिक योजनाओ की तैयारी करने, विभिन्न प्रायोजनाए तथा कार्यक्रम बनाने मे भी सहयोग जारी रहेगा।

दोतरफा सबधो के विकास म महत्वपूर्ण स्थान आर्थिक और वैज्ञानिक तकनीकी सहयोग हेतु १६ सितबर, १६७२ की सधि के अनुसार स्था पित अतर्सरकारी सोवियत भारत आयोग को प्राप्त है। उसकी स्थापना का वस्तुगत आधार परस्पर आर्थिक सपर्कों द्वारा विविध स्वरूप ग्रहण किया जाना था जिनके नियमन के लिए एक अतिरिक्त कार्य-यत्र की आवश्यकता अनुभव हुई थी।

सोवियत भारत आयोग न सहयोग सबधी चालू और दीर्घकालिक प्रश्नो के हल, नये-नये रुझानो की खोज, नये रूपो को व्यवहार म लाने और आर्थिक सबधो की सुसगत व्यवस्था करने जैसे क्षेत्रो मे बहुत काम किया है। सहयोग के अलग-अलग रूपो के अधिक ब्योरेवार प्रतिपादन के उद्देश्य से आयाग के अतर्गत अनक कार्यकारी ग्रुप स्थापित किये गये जा लौह और अलौह धातुकर्म, कोयला और तेल उद्योग, मशीन निर्माण ऊर्जा तथा नियोजन, वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग एव व्यापार से सबधित है।

सोवियत भारत सहयोग की शर्तें भारत की राष्ट्रीय प्रभुसत्ता के पूर्णत अनुरूप है क्योकि इन प्रतिष्ठानो पर स्वामित्व का अधिकार तथा सचालन-सूत्र भारतीय प्रशासको के हाथो मे सकेंद्रित है।

बाह्य वित्तीय साधनो का उपयोग, सामान्यत, ऋणी देश के आर्थिक उत्थान की दरा एव रुझानो पर नानारूपी प्रभाव डालता है। इस सिलसिले म निर्णायक भूमिका इस बात की होती है कि विदेश से प्राप्त आर्थिक सहायता का कैसे और किन उद्देश्यो मे प्रयोग होता है। सोवियत भारत सहयोग को इस दृष्टि से देखते हुए कहा जा सकता है कि यह भारत के सुनियोजित आर्थिक विकास के कार्यक्रम से पूरी तरह मेल खाता है और यथासभव अल्पकाल म ही पिछडेपन को दूर करन तथा आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की ओर लक्षित है। सोवियत पक्ष द्वारा दिये जानेवाले ऋणो को भारत मे विकास की तत्सबधित पच वर्षीय योजनाओ से समन्वित किया जाता है जिसकी बदौलत भारतीय

पक्ष दीर्घकालिक आधार पर प्राप्त सोवियत कर्जो का सबद्ध प्रतिष्ठानो के निर्माणार्थ उपयोग कर सकता है।

सोवियत सहायता से निर्मित अधिकाश औद्योगिक उद्यम अपनी अपनी शाखाओ मे विशालतम होने के साथ ही राष्ट्रीय महत्व के भी है। वे औद्योगिक उत्पादन मे काफी द्रुत वृद्धि सुनिश्चित करते है और इस प्रकार उद्योग की सहयोगी शाखाओ के विकास मे सबद्ध शाखा मे मध्यम और लघु सहायक धधो की बनावट मे, पहले के पिछडे हुए इलाको के उत्थान मे एव रोजगार बढाने मे योग देते है।

१९८६ के आरभ तक सोवियत-भारत सहयोग से बने प्रतिष्ठानो मे लगभग ६ करोड २० लाख टन इस्पात ८ ६० ००० टन धातुकर्म, खनाई, खनिक, पिसाई, आदि भारी सयत्रो, २१० मेगावाट एकलित क्षमता के ४५ टर्बोजनरेटरो, १० करोड टन से ज्यादा तेल, सैकडो अरब किलोवाट घटे बिजली, आदि का उत्पादन हुआ है। गत दो दशाब्दियो के भीतर प्राय ८० प्रतिशत इस्पात उत्पादन, कोई ६० प्रतिशत वेल्लित वस्तुओ, ४५ प्रतिशत तेल निकासी और परिशोधन, ६० प्रतिशत भारी उद्योग उपकरणो तथा ७० प्रतिशत विद्युत उपकरणो के उत्पादन मे वृद्धि इनकी बदौलत ही हुई है।

मुख्य दिशाओ मे आर्थिक सहायता के सकेद्रण तथा सतुलित बहुशाखीय समुच्चयो के निर्माण के फलस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था म सरचनात्मक परिवर्तन तक लाना सभव हो गया है। भारत मे दो ऐसे समुच्चय सोवियत सहायता से बने है। पहले की परिधि म कोयला लौह धातु उद्योग, लौह और अलौह धातुकर्म, विद्युत ऊर्जा और उपकरण निर्माण उद्योग राष्ट्रीय कर्मीवृद के प्रशिक्षण तथा रूपाकन सस्थान जैसे क्षेत्रो मे विविध प्रतिष्ठानो की स्थापना शामिल है। दूसरे की परिधि म तेल उत्पादक और तेल शोधक उद्यम आते है।

सोवियत सघ के साथ आर्थिक सहयोग की भारत के लिए उपयोगिता का एक प्रमुख सूचक यह है कि निर्मित उद्यम राष्ट्रीय आय और आतरिक सचय की सवृद्धि म सहायक होते है। आकडो के अनुसार, परस्पर सहयोग से बने प्रतिष्ठानो का शुद्ध सचयो मे अश केद्रीय सरकार के राजकीय निगमो के समग्र उत्पादो म उनके अश से ऊचा है। इसका कारण है श्रम की अपेक्षाकृत ऊची उत्पादनशीलता एव लाभकारिता।

उद्योग धधो की आर्थिक कारगरता का सामान्यीकृत सूचक उनकी

लाभकारिता होती है। सोवियत भारत सहयोग के अधिकांश प्रतिष्ठान राजकीय क्षेत्र के सर्वाधिक लाभकारी उद्यमो मे गिने जाते हैं। यहा यह कहना उपयुक्त होगा कि उद्यमो की सामान्य आर्थिक कारगरता उनके प्रत्यक्ष वित्तीय परिणामो तक ही सीमित नही है। इसका पता लगाने के लिए उस अप्रत्यक्ष प्रभाव को भी ध्यान मे रखना चाहिए जिसे सबद्ध उद्यम व्यापार लघु उद्योग की सहयोगी शाखाओ और पिछडे हुए इलाको के विकास पर तथा अन्य सामाजिक-आर्थिक प्रश्नो के हल पर डालते है।

इस सहयोग के फलस्वरूप निर्मित अधिकतर प्रतिष्ठान आयात का प्रतिस्थापन करनेवाली शाखाए हैं। इनकी विशेषता है स्थानीय सपदा का अधिकतम उपयोग करना, जिसकी बदौलत उनके पूजी निवेश मे आयात का भाग निरतर घटता जाता है। इसके अलावा, उत्पादन क्षमता बढाने के साथ-साथ उच्च कोटि के अपरम्परागत मालो के निर्यात योग्य श्रेणी भाग को बढाने मे मदद मिलती है। सोवियत ऋणो के परिशोधन के हेतु भुगतानो का भारतीय वस्तुओ की खरीद के लिए जो उपयोग किया जाता है उससे सोवियत सघ मे इन वस्तुओ की जिनमे तैयार वस्तुए तथा कई प्रकार के सयत्र भी है स्थायी माग बढती जाती है।

सोवियत भारत सहयोग की उपरिनिर्दिष्ट विशेषताए आर्थिक प्रगति की दरो और अनुपात पर उसके प्रत्यक्ष प्रभाव को उजागर करती हैं। साथ ही यह भारतीय अर्थतत्र पर खास तौर पर छोटे उद्यमो के विकास तथा उद्योग के बेहतर ढग से स्थान निर्धारण पर भी परोक्ष प्रभाव डाल रहा है। मुख्य प्रतिष्ठानो के आधार पर लघु उद्योग के ८०० सहयोगी तथा सहायक उद्यम भी चालू हो चुके है अथवा उनका निर्माण या रूपाकन हो रहा है जिनमे से ३०० बोकारो और १२० भिलाई इस्पात कारखानो के अतर्गत है।

सामान्यतया, इस सहयोग के अतर्गत निमित प्रतिष्ठान भारत के अपेक्षाकृत कम विकसित इलाको मे लगाये गये है जिससे अलग-अलग प्रदेशो के विकास-स्तरो को एकसमान करने और औद्योगिक उत्पादन के विवेकसगत वितरण मे सहायता मिलती है। नये प्रतिष्ठानो के निर्माण से छोटानागपुर (बोकारो और राची) उत्तराखड (हरिद्वार और ऋषिकेश) महाकौशल (भिलाई) जैसे पहले पिछडे हुए इलाको का औद्योगीकरण आरभ हुआ।

आर्थिक सहयोग ने दो देशो के बीच पण्यावर्त की वृद्धि को सशक्त प्रेरणा प्रदान की जो १९५५ की १ करोड ६० लाख रूबल की राशि से बढकर १९८५ मे ३ अरब रूबल तक पहुच गया। भारत मे आयातित सोवियत मशीनो और सयत्रो के एवज म अदायगी की जो राशि सचित होती है, उससे बडे पैमाने पर भारतीय मालो की खरीद होती है। भारत से सोवियत सघ चाय, काजू पटसन, चमडा अभ्रक, चपडा और मसाले जैसे परपरागत मालो का आयात करता है। गत वर्षों मे भारत से सोवियत आयात की बनावट मे बडे-बडे परिवर्तन आये है, खास तौर पर आयातित मशीनो और साज-सामान की मात्रा म।

* * *

जैसा कि ऊपर बताया गया है, आर्थिक सहयोग मुख्यत भारत को रिआयती शर्तो पर प्रदत्त दीर्घकालिक ऋणो क आधार पर होता है। १९७७ मे लेकर सोवियत सघ न भारत को प्रदत्त ऋणा की शर्तो को और भी नरम बनाना श्रेयस्कर समझा, जो अब ढाई प्रतिशत वार्षिक ब्याज के हिसाब से २० वर्षो के लिए प्रदान किये जाते है। इनमे तीन वर्ष रिआयती, याने अदायगी से मुक्त है। पूर्ववर्ती समझौतो मे अदायगी की अवधि १२ वर्ष ही की थी। पूजीवादी देशो द्वारा प्रदत्त ऋणो से भिन्न सोवियत ऋणो का भुगतान सबधित प्रतिष्ठान के लिए साज-सामान की सप्लाई पूरी होन पर ही आरभ होता है। वास्तव मे परिशोधन की अवधि २५ वर्षो से अधिक की होनी है, जो ऋण दिये जाने के दिन से आरभ होती है और जिसमे औसतन १० रिआयती वर्ष भी शामिल है।

जबकि पूजीवादी देशो के ऋणो का भुगतान स्वतत्र रूप से विनिमेय मुद्रा मे ही होता है, सोवियत ऋणो का भुगतान रुपयो म होता है जिनसे सोवियत सघ भारतीय माल खरीद लेता है। एक ओर, इसस भारत मे स्वतत्र रूप से विनिमेय मुद्रा की बचत होती है और दूसरी ओर, सोवियत सघ मे भारतीय मालो की मडी विस्तृत होती जाती है।

सोवियत सघ ससार मे प्रथम देश था, जिसने भारत को रिआयती शर्तो पर दीर्घकालिक ऋण प्रदान किय, इसमे अग्रणी पूजीवादी देश ऋण की शर्तो को धीरे धीरे नरम बनाने के लिए विवश हुए।

ऋणो की वित्तीय शर्तो पर उनके उपयोग के वित्तीय परिणाम से



पृथक करके विचार नही किया जा सकता। सोवियत-भारत सहयोग से बने प्रतिष्ठानो से अर्जित लाभ सोवियत ऋणो की समूची भुगतान राशि से कई गुना अधिक है। सोवियत ऋणो का उपयोग परिशोधन राशि की पर्याप्त बचत ही नही करता, बल्कि भारतीय अर्थतत्र को पूजी निवेश करने मे भी सक्षम बनाता है।

आर्थिक सहयोग की मुख्य शाखाए और प्रतिष्ठान

भारत के साथ सोवियत सघ के आर्थिक सपर्कों ने जबर्दस्त आकार ग्रहण कर लिया है और भारतीय अर्थव्यवस्था की व्यवहारत सभी शाखाए उनकी परिधि मे आ गयी है। आठवे दशक के मध्य तक आर्थिक सबधो के विस्तार का चरण प्रधानत पूरा हो चुका था और फिर उनके गहनीकरण का चरण आरभ हुआ। इस चरण के दौरान आर्थिक सहयोग का उभार अधिकाधिक नये तत्वो से निर्धारित होता जायेगा, जैसे उत्पादन सहयोग के नये रूपो का प्रचलन, द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सबधो का सामजस्य समाजवादी आर्थिक एकीकरण के अनुभव और परिणामो का विस्तृत उपयोग जिसमे भारत समानाधिकारप्राप्त कामकाजी साझेदार की तरह भाग ले सकेगा।

लौह धातुकर्म

लौह धातुकर्म वही शाखा है, जिसमे सोवियत भारत आर्थिक तथा तकनीकी सहयोग का सूत्रपात हुआ था और जहा उसका पैमाना सर्वाधिक विस्तृत है। सोवियत सहायता से भारत के भिलाई और बोकारो जैसे विशालतम धातु कारखाने निर्मित हुए, जिनमे से प्रत्येक प्रतिवर्ष लगभग ४० लाख टन इस्पात तैयार करने मे सक्षम है। १९८२ से विशाखापत्तनम मे तीसरे कारखाने का निर्माण हो रहा है (वार्षिक उत्पादन ३४ लाख टन)।

इसके बावजूद कि भारत सब आवश्यक खनिजो (लौह और मैगनीज धातु कोयला चूना-पत्थर, आदि) मे सपन्न है स्वाधीनता प्राप्त करने के पूर्व उसका धातु उद्योग भ्रूणावस्था मे ही था। इसका कारण सर्वप्रथम यह था कि औपनिवेशिक शासक उद्योग की इस शाखा को

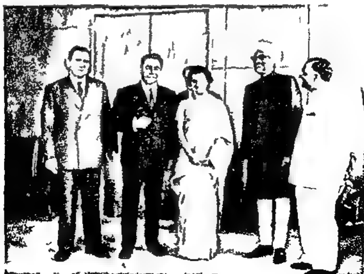


जवाहरलाल नेहरू व्ला० इ० लेनिन की समाधि पर फूल चढ़ाने के बाद क्रेमलिन जाते हुए। १९६१



जवाहरलाल नेहरू जार्जिया के रुस्तावी धातु कारखाने में

सोवियत बच्चे अर्तेक पायोनियर शिविर मे आये जवाहरलाल नेहरू को पुष्प भेंट करते हुए। १९५५



श्रीमती इंदिरा गांधी सोवियत संघ की यात्रा के समय। १९६६

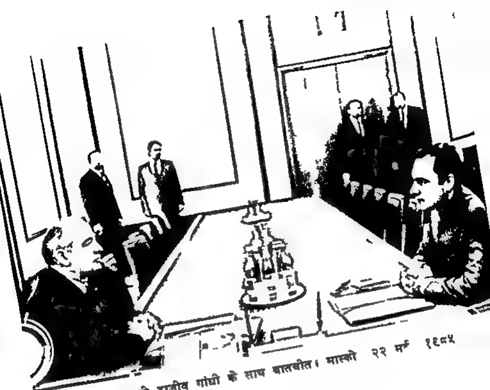




मास्को के एक चौक को इंदिरा गांधी का नाम दिये जाने के उपलक्ष्य में एक समारोही सभा। २२ मई १९८५

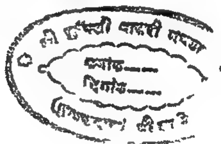
भारत के प्रधानमंत्री राजीव गांधी की सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव म० म० गार्बाचोव के साथ भेंट। मास्को मार्च १९८५

मास्को मे सोवियत भारत वार्तालाप। २१ मई १९८५



म स० गोर्बाचोव की राजीव गांधी के साथ बातचीत। मास्को २२ मई १९८५

सोवियत और भारतीय विशेषज्ञ कोरबा ऐलुमिनियम कारखाने में





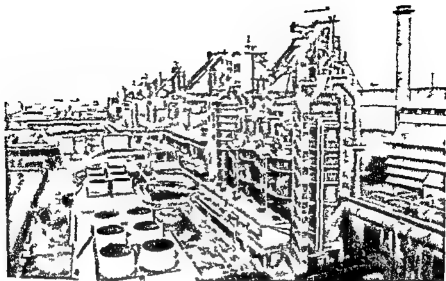
सोवियत भारत प्रपत्रों पर हस्ताक्षर किये जाने के पश्चात। मास्को मई १९८५



प्रधानमंत्री राजीव गांधी व्ला० इ० लेनिन की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए।
२२ मई १९८५



प्रधानमंत्री राजीव गांधी फ्रूंजे नगर में। मई १९८५



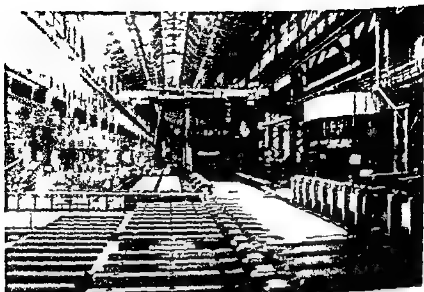
भिलाई इस्पात कारखाना

जवाहरलाल नेहरू भिलाई कारखाने में। मार्च १९६३



भिलाई कारखाने मे अपने भारतीय सहकर्मियो के साथ सोवियत कारीगर

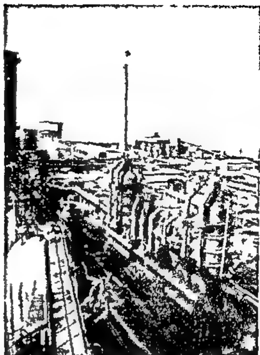
भिलाई मे प्रशिक्षणार्थ आये अफ्रीकी विशेषज्ञ



भिलाई इस्पात कारखाने के उत्पाद

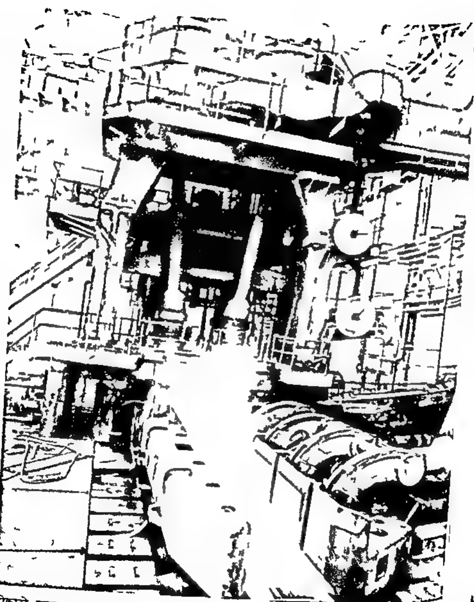
सोवियत विशेषज्ञ कोक-रसायनज्ञ य० कुज्मीन भारतीय सहकर्मियों के साथ

बोकारो इस्पात कारखाना



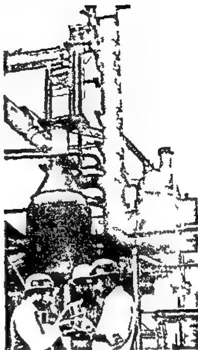


श्रीमती इंदिरा गांधी बोकारो कारखाने में हॉट रोलिंग संयत्र के चालू किये जाने के अवसर पर आयोजित समारोह में भाषण करते समय। १ मई १९७५



…कारो इस्पात कारखाना

बोकारो। सोवियत प्रशिक्षक भट्ठी कारीगर प० इ० येमेल्यानेन्को भारतीय सहकर्मियो के साथ

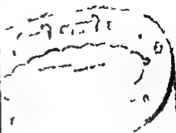




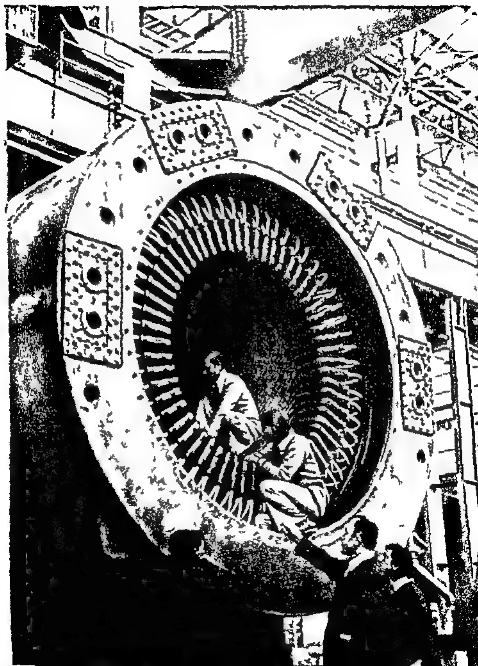
बोकारो। सोवियत चिकित्सक जेलेन्कोव नन्हे भारतीय रोगी के साथ



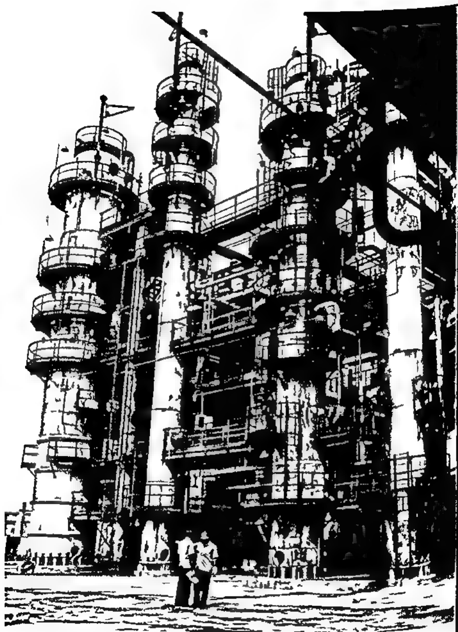
बोकारो कारखाने के निर्माण स्थल पर



सोवियत और भारतीय विशेषज्ञ रांची कारखाने में

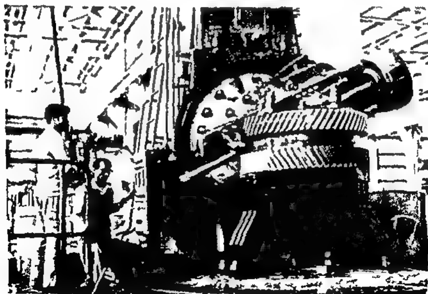


हरिद्वार स्थित भारी विद्युत संयत्र कारखान

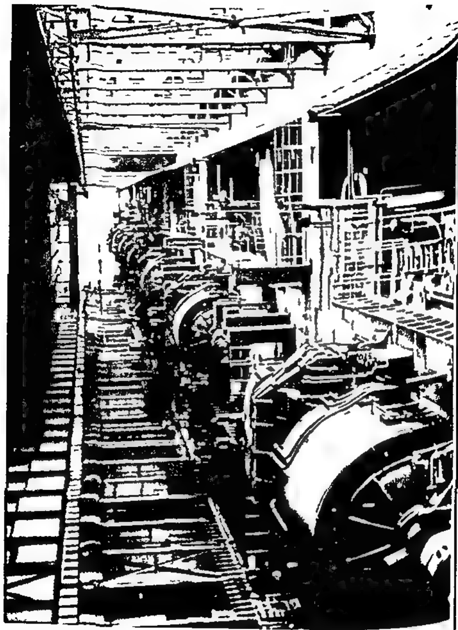


बरौनी का तेल शोधक कारखाना

कोयाली का तैल-शोधक कारखाना



दुर्गापुर के खनन सयंत्र कारखाने मे



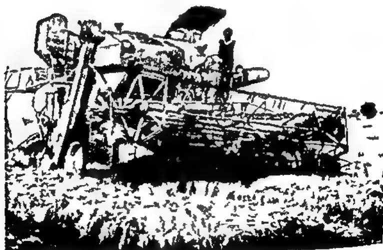
मेवेमा तारविमनापर

सोवियत और भारतीय विशेषज्ञ कलकत्ता में भूमिगत रेलवे की निर्माण-स्थली में

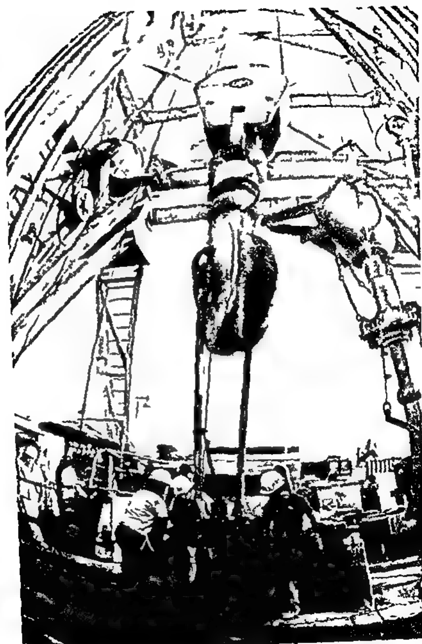
नेवेली तापबिजलीघर। केंद्रीय नियंत्रण फलक पर भारतीय कर्मी



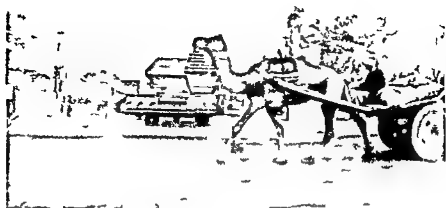
भाखड़ा पनबिजलीघर



सूरतगढ़ फार्म के खेत में सोवियत हार्वेस्टिंग कम्बाइन



कलकत्ता के समीप सोवियत कामगारों द्वारा गहरे कुए (५५०० मीटर) की बरमाई।



हिसार में सोवियत सहायता से स्थापित एक राजकीय फार्म

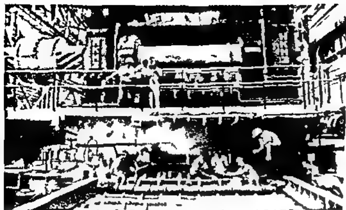


हिसार फार्म के पास



सोवियत अध्यापक के साथ भारतीय विद्यार्थी

सोवियत और भारतीय युवाजन मैत्री-सप्ताह के दौरान अल्मा-अता (कज़ाख़स्तान) के पायोनियर प्रासाद में



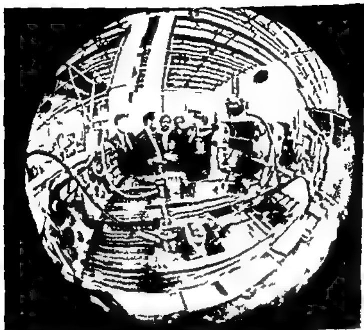
भिलाई कारखाने की वर्कशाप में

भारतीय अंतरिक्ष-नाविक पहली बार अंतरिक्ष-पोशाकें पहनते समय



राची भारी सयत्र कारखाना

राकेश शर्मा और रवीश मल्होत्रा सोवियत सघ मे



सोवियत और भारतीय विशेषज्ञ हरिद्वार कारखाने मे

विकसित करने के लिए अनिच्छुक थे और भारत के पास साज-सामान तथा टेक्नोलाजी की प्राप्ति के स्रोतो का अभाव था। १६५०-१६५१ मे वहा इस्पात का उत्पादन महज १५ लाख टन था। उस समय तक भारत के आर्थिक विकास की पहली पचवर्षीय योजना तैयार हो गयी थी। यद्यपि इसमे मुख्य ध्यान कृषि और सिचाई की ओर ही दिया गया था, तथापि इसमे राजकीय क्षेत्र मे लगभग ८ लाख टन कच्चे लोह और साढे तीन लाख टन इस्पात की उत्पादन-क्षमता के एक नये इस्पात कारखाने के निर्माण के हेतु ३० करोड रुपये का आवटन किया गया था।

किंतु योजना-पूर्ति के प्रथम वर्षो ने यह प्रकट कर दिया कि देश म इस्पात की माग अनुमानित दरो की अपेक्षा अधिक तेजी मे बढ रही है, इस चीज न कई कारखाने बनाने का कार्यभार प्रस्तुत किया। परतु पश्चिमी देशो ने इस सिलसिले म जो शर्तें पेश की, वे अस्वीकार्य थी। उदाहरणार्थ, पश्चिम जर्मन फर्में 'डेमाग' और 'क्रुप' रूरकेला मे नया कारखाना बनाने के लिए ऋण देने को तो राजी हो गयी, लेकिन उन्होने वार्षिक १२ प्रतिशत ब्याज और शेयर पूजी मे हिस्सेदारी की माग की।

इन परिस्थितियो के दृष्टिगत भारत सरकार ने सोवियत सघ से सहायता मागी, जो १० लाख टन इस्पात वार्षिक क्षमता का सपूर्ण कारखाना बनाने मे आर्थिक और तकनीकी योगदान के लिए सहमत हो गया। २ फरवरी, १६५५ को इन लक्ष्यो के लिए राजकीय ऋण प्रदान करने के बारे मे सोवियत सघ और भारत के बीच अतर्सरकारी समझौते पर हस्ताक्षर हुए। ऋण-परिशोधन का काल काफी लबा नियत किया गया और सूद की वार्षिक दर २ प्रतिशत निश्चित की गयी।

समझौते पर हस्ताक्षर ने पश्चिमी जर्मनी और इगलैड को भी रूरकेला तथा दुर्गापुर मे कारखानो के निर्माण हेतु अधिक रिआयती शर्तों पर ऋण देने के लिए विवश किया।

मई १६५७ मे भिलाई कारखाने की भट्ठी का शिलान्यास किया गया, और फरवरी १६५६ मे इस्पात की पहली गलाई शुरू हुई। अक्तूबर १६६० मे जवाहरलाल नेहरू ने कारखाने के रेल और बीम मिल के उद्घाटन-समारोह मे भाग लिया, जो एशिया भर में सबसे बडी थी। और फरवरी १६६१ म कारखाने के बाकी सारे खाते भी चालू हो गये।

भिलाई कारखाने के निर्माण मे सोवियत सघ का सहयोग चौमुखी

स्वरूप का था सोवियत सगठनो न सब तकनीकी प्रपत्र तैयार किये, आवश्यक साज-सामान और सामग्री तैयार करके उनकी सप्लाई की कारखाने के निर्माण, सयोजन एव उसे चालू करने मे तथा नियोजित क्षमता की शीघ्रतम प्राप्ति म सहायता की। सोवियत पक्ष न भारतीय धातुकर्मी निर्माण-स्थल पर ही और विशेष प्रशिक्षण-केंद्र म तैयार करने मे हाथ बटाया। बहुत-स भारतीय विशेषज्ञो न सोवियत मिल-कारखानो म शिक्षा पायी। भिलाई के निर्माण म सोवियत सघ के उत्कृष्ट तकनीकी कर्मियो ने हिस्सा लिया। आजकल भी सोवियत भारत सहयोग से निर्मित प्रतिष्ठानो म बडी सख्या मे सोवियत विशेषज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ आर्थिक प्रबधक तथा सुदक्ष श्रमिक काम कर रहे हैं।

गत वर्षो मे कारखान न नियोजित क्षमता प्राप्त करन मे बडी सफलता प्राप्त की। आज यह देश भर मे इस्पात का सबसे बडा उत्पादक है। प्रति वर्ष कारखाने मे देश की आवश्यकताओ की पूर्ति के विविध उत्पाद तैयार होकर निकलते है, जैस निर्यात योग्य कच्चा लोहा, वेल्लित पदार्थ रेल आदि। देश म उत्पादित इस्पात की कुल मात्रा म भिलाई का अश २३ प्रतिशत है। १९८७ के आरभ तक यहा कारखान के चालू होने के दिन से ४८० लाख टन इस्पात और ३६० लाख टन वेल्लित वस्तुओ का उत्पादन हुआ।

वर्तमान काल मे भिलाई भारत का सर्वाधिक लाभदायक इस्पात कारखाना है, इस्पात की उत्पादन लागत यहा सबसे नीची है। यह आधुनिक टेक्नोलाजी के उपयोग सयत्रो के विश्वसनीय कार्य और भारतीय श्रमिको एव इजीनियरो के व्यावसायिक प्रशिक्षण के उच्च स्तर का परिणाम है।

भिलाई कारखाना देश के निर्यातयोग्य लौह उत्पादो का मुख्य सप्लायर है। कारखाने के उत्पादो की माग अनेक विकासमान देशो मे ही नही बल्कि सोवियत सघ जापान, सयुक्त राज्य अमरीका, आदि म भी है। कारखाने का आगे भी विस्तार करने की योजना है। सोवियत रूपाकन निकायो न चद टेक्नोलाजिकल प्रक्रियाओ के परिष्कार की बदौलत कारखाने की उत्पादनक्षमता प्रतिवर्ष ५० लाख टन इस्पात तक बढाने के लिए सभी मुख्य रूपाकनीय-तकनीकी एव आर्थिक आकलन पूरे किय हैं।

सोवियत भारत सहयोग की पहली देन – भिलाई इस्पात कारखाने – को दो देशो के मैत्रीपूर्ण सबधो का प्रतीक उचित ही माना जाता है।

१९७८ में इस शाखा में सहयोग के द्वितीय वृहत प्रतिष्ठान—बोकारो धातु कारखाने—के प्रथम चरण को समारोही ढंग से चालू किया गया था। उसकी वार्षिक उत्पादन-क्षमता १० लाख टन इस्पात की है। इस अवसर पर आयोजित आम सभा में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए भारत के राष्ट्रपति ने कहा कि बोकारो सोवियत भारत आर्थिक सहयोग के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पृष्ठ है।

कारखाने के इतिहास के संबंध में इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि आरंभ में संयुक्त राज्य अमरीका की सहभागिता में उसका निर्माण करने की योजना थी, जो कई वर्षों में इस प्रश्न के अंतिम निर्णय को टालता रहा। अंततः अमरीकी सरकार ने भारतीय पक्ष को जो ठोस सुझाव दिये, उनके भेदभावपूर्ण स्वरूप के कारण देश में साधार रोष उत्पन्न हुआ।

इस हालत में और भिलाई कारखाने के निर्माण-कार्य में प्राप्त सहयोग के सफल अनुभव को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने सोवियत संघ से सहायता मांगी थी।

सोवियत पक्ष ने संपूर्ण तकनीकी सहायता मुहैया की। इसमें रूपांकन के काम और साज-सामान की सप्लाई से लेकर अपने विशेषज्ञ भारत भेजने और अपने यहां भारतीय विशेषज्ञों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करने का कार्य तक शामिल था। साथ ही रूपांकन-कार्य की पूर्ति और साज सामान, उपकरणों तथा सामग्रियों के उत्पादन एवं सप्लाई में भारत की अपनी क्षमता का पूरा ध्यान रखा गया था।

कारखाने के प्रथम चरण के निर्माण में ६० हजार से भी ज्यादा मजदूर और इंजीनियर लगे हुए थे। देश के समस्त भागों में लाखों श्रमिक कारखाने के आर्डर पूरे करने में जुट गये। बोकारो धातुकर्म सोवियत धातु कारखानों के अनुभव की कसौटी पर खूब जांचे परखे गये आधुनिकतम साज-सामान से लैस है। कारखाने के आकार की कल्पना अकेले इससे ही की जा सकती है कि सिर्फ एक गरम बेल्लन विभाग की लंबाई डेढ़ किलोमीटर है, जबकि चादर को बेल्लित करने की रफ्तार रेलगाड़ी की रफ्तार के समान यानी ६५-७० किलोमीटर प्रतिघंटा है।

१७ लाख टन इस्पात की क्षमता वाले प्रथम चरण के चालू हो जाने के फलस्वरूप भारत को प्रतिवर्ष लगभग १४ लाख टन बेल्लित उत्पाद उपलब्ध होने लगा, जो देश के लिए अत्यावश्यक है।

१९८५ में कारखाने की वार्षिक उत्पादन-क्षमता को ४० लाख टन इस्पात तक बढाने के लिए आवश्यक निर्माण और संयोजन के सभी काम पूरे हो गये।

सोवियत संघ और भारत इस बारे में सहमत हुए कि नयी टक्नालाजिकल प्रक्रियाओं को व्यवहार में लाकर तथा उत्पादन के संगठन के परिष्करण के जरिये कारखाने की क्षमता बढाने पर विचार किया जाये। उसके उत्पाद विश्व मानकों के अनुरूप हैं, अत भीतरी मंडी में उनकी मांग को ध्यान में रखने के बाद उनका एक अंश विदेशों को निर्यात किया जा सकता है।

कारखाने के चालू होने के बाद यहां १५० लाख टन इस्पात और १२० लाख टन बेल्लित पदार्थ का उत्पादन हुआ है।

* * *

लौह धातु कारखाना के निर्माण में भारत और सोवियत संघ के सहयोग की विशेषता यह है कि इसमें भारतीय साज-सामान धात्विक ढांचों एवं सामग्रियों का अंश निरंतर बढता जा रहा है। मसलन जहां भिलाई इस्पात कारखाने के प्रथम चरण के निर्माण हेतु ९० प्रतिशत साज सामान और ७७ प्रतिशत धात्विक ढांचे सोवियत संघ से लाये गये थे वहां बोकारो कारखाने के निर्माण में उक्त मदों में सोवियत संघ का अंश घटकर क्रमश ३५ और ८ प्रतिशत रह गया। अब साज-सामान का मुख्य भाग भारत खुद अपने कारखानों में सर्वोपरि सोवियत सहायता से बने रांची, हरिद्वार, दुर्गापुर और कोटा स्थित मशीन निर्माण प्रतिष्ठानों में तैयार कर रहा है।

भारत के धातु उद्योग की उन्नति में 'मेकोन' की भूमिका सचमुच मूल्यवान है जो इस समय उद्योग के क्षेत्र में प्रमुख रूपांकन संस्था है तथा लौह और अलौह उद्योग धंधों का स्वतंत्रतापूर्वक रूपांकन करती है। गत वर्षों में 'मेकोन' ने अल्जीरिया, नाइजीरिया, आदि देशों में अनेक प्रतिष्ठानों के निर्माण में अपनी तकनीकी सेवाओं के बारे में करार किये।

लौह उद्योग में आधुनिक टेक्नोलाजिकल स्तर बनाये रखने और विज्ञान एवं तकनीक की उपलब्धियों का ठीक समय पर व्यवहार में लाने के लिए १९७८ में स्थापित वैज्ञानिक-अनुसंधान संगठन—'सेल'—का विशेष स्थान है।

दोनो देशो के बीच आर्थिक, व्यापारिक और वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग का दीर्घकालिक कार्यक्रम तैयार करते समय भारतीय अर्थव्यवस्था का द्रुततर विकास सुनिश्चित करने के लिए लौह उद्योग के महत्व का खयाल रखते हुए इस क्षेत्र म महयोग के विस्तार की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। सोवियत सहायता से विशाखापत्तनम मे ३४ लाख टन इस्पात की क्षमता वाला देश का तीसरा कारखाना बन रहा है।

इस तरह, आगामी वर्षो मे आर्थिक महयोग की कुल मात्रा में प्राथमिकता लौह उद्योग को ही दी जायगी।

अलौह धातुकर्म

औद्योगिक उत्पादन म वृद्धि के फलस्वरूप अलौह धातुओ की माग भी तेजी से बढ रही है विशेषकर मशीन निर्माण विद्युत इजीनियरी और इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र मे।

अतएव भारत मे अलौह उद्योग के विकास के निमित्त पर्याप्त प्रयत्न किये जा रहे है। विगत वर्षो मे देश मे बाक्साइटो ताबा जस्ता, निकल, फ्लूअरिट, आदि खनिजो के समृद्ध निक्षेपो का पता चला और इस शाखा मे कई उद्यमो का निर्माण भी आरभ हुआ। सबसे बडी सफलता ऐलुमिनियम उद्योग मे प्राप्त हुई है जिसका स्तर भीतरी मडी की माग पूरी कर सकता है।

इस समस्या के समाधान मे प्रमुख स्थान राजकीय कपनी 'भारत ऐलुमिनियम कपनी को प्राप्त है जिसके अतर्गत १९८२ मे सोवियत सहायता से बना १ लाख टन वार्षिक क्षमता का भारत मे विशालतम कारखाना भी शामिल है। कारखाने मे विद्युत-अपघटन, गलाई, बेल्लन और एगेल बार विभाग है, जहा नाना प्रकार के पदार्थ तैयार होते है जैसे पिड, चादरे, गड्डिया, पाइप और विभिन्न एगल बार। इस समय कारखाने मे ऐलुमिना उत्पादन की सहधातु गैलियम निकालन पर शोध हो रहा है।

अलौह धातुकर्म मे भी सहयोग प्रगति कर रहा है, उसके नये-नये रुझान और रूप खोजे जा रह है। सोवियत सस्थानो न आध्र प्रदश मे बननवाले बडे आकार क बाक्साइट ऐलुमिना समुच्चय के लिए सारे तकनीकी प्रपत्र तैयार करके भारतीय पक्ष के हवाल कर दिय। इसके

एवज मे भारतीय पक्ष समुच्चय के उत्पाद सोवियत संघ को निर्यात करेगा।

सोवियत संघ ऐलुमिनियम उद्योग के वैज्ञानिक-अनुसंधान केंद्र की स्थापना मे सक्रियतापूर्वक भाग ले रहा है, जो देश की अलौह धातुओ सर्वप्रथम, ऐलुमिनियम की आवश्यकता की अधिकतम पूर्ति की ओर लक्षित कार्य का संचालन करेगा। इस समय अलौह धातुकर्म के क्षेत्र मे वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग का एक विस्तृत कार्यक्रम तैयार हो रहा है।

तेल उद्योग

राष्ट्रीय तेल उद्योग ने कठिन परिस्थितियो मे जन्म लिया। तेल पूर्वेक्षण-कार्य को बडे पैमाने पर चलाने के लिए देश की संभावनाए सीमित थी।

पूंजीवादी देशो से सहायता प्राप्त करने के भारत के सभी प्रयत्न नाकाम साबित हुए। अपने अथाह मुनाफे बरकरार रखने की इच्छा के कारण तेल कंपनियो के प्रतिनिधियो ने कहा कि भारत मे तेल निक्षेप नही है और उन्होंने सरकार को सतर्क किया कि वह तेल की निकासी और परिशोधन का कार्य अपनी शक्ति के सहारे करने का यत्न न करे।

सोवियत संघ ने आत्मनिर्भर अर्थतंत्र स्थापित करने के भारत के प्रयासो के प्रति पूरी समझदारी का परिचय देते हुए राजकीय तेल उद्योग के निर्माण मे भी सहायता प्रदान करने की तत्परता प्रकट की।

इस क्षेत्र मे सहयोग का आरंभ १६५५ मे हुआ, जब पहला सोवियत तेल अन्वेषण दल भारत पहुचा था। भारतीय भूवैज्ञानिको के साथ मिलकर अध्ययन करने के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि भारत मे तेल और गैस के काफी समृद्ध भंडार हैं। सोवियत भूवैज्ञानिको के सटीक अनुमानो के अनुसार अवसादी निक्षेप का क्षेत्र जहा खनिज तेल और गैस के भंडार संभाव्य है कोई १० लाख वर्ग किलोमीटर अथात भारत के समस्त भूक्षेत्र का लगभग एक तिहाई है।

१६५६ मे स्थापित तेल और प्राकृतिक गैस राजकीय आयोग ने सोवियत विशेषज्ञो की सिफारिश तथा सोवियत निर्मित उपकरणो की मदद से निर्दिष्ट योजनाओ को कार्यरूप मे परिणत करना आरंभ किया।

जून १९५८ मे खभात में तेल का पहला फव्वारा फूट निकला। आगामी ड्रिलिंग मे पता चला कि यह क्षेत्र प्राकृतिक गैस से भी पर्याप्त रूप मे समृद्ध है। मई १९६० मे अक्लेश्वर मे सोवियत और भारतीय तेल कर्मीदल द्वारा 'उरालमाश ५ द' से बरमाये गये पहले ही कूप से तेल बह निकला। जवाहरलाल नेहरू ने, जो राष्ट्रीय तेल उद्योग के विकास को बडा महत्व देते थे, इस कूप को 'वसुधारा' की सज्ञा दी।

बाद मे गुजरात, असम, आदि मे भी नये तेल निक्षेपो का पता लगाया गया।

भारत मे तेल पूर्वेक्षण का कार्य स्थल पर ही नही चलता। भारत सरकार के अनुरोध पर अगस्त १९६४ मे 'अकादेमिक अर्खागेल्स्की' नामक सोवियत पोत भारतीय तट पहुचा। उसके आगमन का उद्देश्य देश के दक्षिण और पश्चिमी समुद्रतट के समानातर क्षेत्र मे भूकपी सर्वेक्षण करना था। खोजो से पता चला कि भारत के तटवर्ती जल मे तेल और गैस से युक्त नये सभाव्य भडार है।

१५ अगस्त, १९६१ का दिवस भारत के तेल उद्योग के विकास मे अविस्मरणीय सिद्ध हुआ था। उस दिन अक्लेश्वर के राजकीय तेल क्षेत्र मे, जो सोवियत सहयोग से स्थापित और चालू किया गया था, तेल का परीक्षणमूलक उत्पादन शुरू हुआ। उत्पादन निरतर बढता गया और १९६६ मे नियोजित लक्ष्य, याने प्रतिदिन ७,५०० टन तक पहुच गया।

भारत मे हर टन तेल की निकासी से विदेशी मुद्रा की बडी बचत होती है। आज तेल की बिक्री से जो लाभ हुआ है, वह उसके सर्वेक्षण एव सचालन पर किये गये सारे व्यय से कई गुना अधिक है।

तेल और प्राकृतिक गैस आयोग सोवियत सघ की शिरकत मे ऐसे पूर्वेक्षण तथा उत्पादन निकाय मे रूपातरित हो गया, जो तकनीकी दृष्टि से सुसज्जित और उच्च कार्यक्षम है। अपनी कार्यावधि मे उसने स्थल पर १,६०० से अधिक कूप बरमाये और ३८ तेल व गैस निक्षेपो का पता लगाया, १० करोड टन से ज्यादा तेल और १५ अरब घन मीटर गैस उत्पादित किया। इस दौरान सोवियत सघ से भारत को विपुल मात्रा मे भूवैज्ञानिक ड्रिलिंग साज सामान और सामग्री सप्लाई किये गये, वहा १,५०० से अधिक विशेषज्ञ भेजे गये और लगभग ४०० भारतीय इजीनियरो तथा श्रमिको ने सोवियत सघ मे व्यावसायिक शिक्षा

पायी। इसके अलावा, कोई ५,००० भारतीय विशेषज्ञो को कायस्थल पर ही प्रशिक्षण मिला। आयोग न पश्चिमी समुद्रतट के शल्फ मे भी तेल निकासी मे भारी सफलता अर्जित की। भारतीय तेल का काफी बडा भाग यही से प्राप्त होता है। १९८४ म कुल उत्पादित ३ करोड टन म स लगभग ढाई करोड टन समुद्र मे से हासिल हुआ। गत वर्षो मे यह आयोग राजकीय क्षेत्र का एक सबसे लाभकर प्रतिष्ठान बन गया है। सचित अनुभव बढिया तकनीकी सज्जा, जटिल प्रकार की खोज भूवैज्ञानिक ड्रिलिंग और उत्पादन-कार्य स्वतत्र रूप से सपन्न करने की अपनी योग्यता की बदौलत आयोग ये सारे काम विदेशा म भी (ईरान इराक ताजानिया) ठेके पर पूर्ण करने म सक्षम रहा। तेल-उत्पादक उद्योग म सहयोग जारी है।

तेल-शोधन उद्योग

तेल निक्षेपो की खोज एव उन्ह व्यवहार मे लाने के फलस्वरूप भारत मे राष्ट्रीय तेल शोधन उद्योग का निर्माण करना सभव हुआ। छठी दशाब्दी तक यह उद्योग पूर्णत विदेशी कपनिया के हाथो मे था। ब्रिटिश बर्मा शेल और अमरीकी 'एस्सो कपनियो का बबई स्थित तेल शोधक कारखानो पर तथा विशाखापत्तनम मे काल्टेक्स' कारखाने पर अमरीकी कपनी का अधिकार था।

अपने उत्पादो पर इजारेदाराना भाव निश्चित करके भारी मुनाफे बटोरनेवाली विदेशी कपनिया तेल उत्पादो की भारतीय मडी मे पूर्णाधिकारी स्वामी बनी हुई थी। राजकीय तेल शोधक कारखानो के निर्माण म उनसे सहायता पाने की कोई आशा ही नही की जा सकती थी। उनकी बाध्यमूलक शर्तो म ये भी शामिल थी कि प्रतिष्ठाना के अधिकतर अश उनके हवाले कर दिये जाय और खनिज तेल अपने स्रोता से सप्लाई किया जाये।

इस बार भी सोवियत सघ ने सहायता का हाथ बढाया। उसके सहयोग से तीन तल शोधक कारखाने बनाये गये थे बरौनी (बिहार) और कोयाली (गुजरात) मे ३० ३० लाख टन क्षमता वाले कारखान तथा मथुरा म भारत का विशालतम कारखाना, जिसकी वार्षिक क्षमता ६० लाख टन है।

१९६३ तक तेल-शोधक कारखाने का निर्माण आरभ होने के पहले तक कोयाली एक साधारण, खोया-खोया-सा गाव ही था। इसे निर्माण-स्थली के रूप मे इसलिए चुना गया कि तेल और गैस आयोग द्वारा खोजे गये अक्लेश्वर और कलोल तेल निक्षेप समीप ही थे। आजकल कोयाली एक बडा औद्योगिक केंद्र है। कारखाने से प्राप्त तेल पदार्थो के आधार पर पास ही देश भर का वृहत्तम राजकीय तेल रसायन समुच्चय उदित हुआ है।

कोयाली कारखाना भारत का वह प्रथम तेल शोधक कारखाना भी है जिसके रूपाकन और निर्माण मे भारतीय सगठनो का अश लगभग ६५ प्रतिशत तक बढा। सोवियत पक्ष ने केवल जटिलतम उपकरण ही सप्लाई किये थे। कोयाली कारखाने की उत्पादक क्षमता ४० ४५ लाख टन, अर्थात नियोजित क्षमता से बहुत ज्यादा है। नियत क्षमता बढाने से सबधित समस्त कार्य भारतीय कर्मियो ने स्वतत्रतापूर्वक पूरे किये जो उनके ऊचे श्रमकौशल का भव्य प्रमाण है।

बरौनी कोयाली और मथुरा तेल-शोधक कारखानो मे अर्थव्यवस्था के लिए अत्यावश्यक तेल पदार्थ बनते हैं जैसे विमानो के लिए पेट्रोल घरेलू उपयोग की गैस, मिट्टी का तल, आदि-आदि। इन कारखानो मे लगे टेक्नोलाजिकल यत्र तेल पदार्थो की खपत को देखते हुए उनके वैविध्य का नियमन करना सभव बनाते हैं।

कारखानो की टेक्नोलाजिकल सज्जा और डिज़ाइन ऐसे है कि उनका आसानी मे विस्तार हो सकता है। उदाहरण के लिए कोयाली कारखाने की क्षमता को भारतीय पक्ष ने अपनी पहल से ही ७३ लाख टन तक बढाया है। यहा बबई के तट के पास समुद्री निक्षेप से प्राप्त होनेवाले तेल के एक भाग का शोधन होता है। इसी उद्देश्य स तटवर्ती इलाको स कारखाने तक तेल-पाइपलाइन बिछायी गयी।

तीनो कारखाने बडे लाभकर एव फलप्रद सिद्ध हुए है।

तेल उद्योग के क्षेत्र म सहयोग सर्वागीण स्वरूप धारण करता जाता है। प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था के लिए इस अत्यत महत्वपूर्ण शाखा के उन्नयन से सबधित विविध प्रश्न इसकी परिधि मे आते हैं जैसे तेल का पूर्वेक्षण और उत्पादन तथा शोधन खोज और रूपाकन कार्यो का निष्पादन, आवश्यक टेक्नोलाजी तकनीकी जानकारी साज-सामान सामग्रियो की सप्लाई विशेषज्ञो का भेजा जाना और राष्ट्रीय कर्मीवृद

का प्रशिक्षण।

साथ ही सोवियत संघ भारत का तेल और तेल पदार्थ की सप्लाई करनेवाले प्रमुख स्रोतों में से एक है।

ऊर्जा उद्योग

देश की आर्थिक प्रगति की एक अनिवार्य शर्त उसके ऊर्जा आधार का अपेक्षाकृत द्रुततर विकास है। इस सिलसिले में सोवियत संघ का अनुभव बहुत उल्लेखनीय है जिसका औद्योगीकरण देश के बिजलीकरण की दसवर्षीय योजना की तैयारी और पूर्ति में ही हुआ था।

जैसा कि विदित है भारत को औपनिवेशिक युग से विरासत में छोटे छोटे चंद बिजलीघर ही मिले थे जिनकी कुल क्षमता महज १७ लाख किलोवाट थी। देश के सम्मुख व्यवहारतः विद्युत ऊर्जा उद्योग को नये सिरे से खड़ा करने का प्रश्न आ खड़ा हुआ था। इसे अति महत्वपूर्ण मानते हुए भारत सरकार ने ऊर्जा उद्योग को विकसित करने के लिए बड़े कदम उठाये। जवाहरलाल नेहरू ने इस संदर्भ में कहा था कि राष्ट्रों की प्रगति के दो ही मानदंड हैं धात्विक उद्योग का स्तर और विद्युत ऊर्जा के विकास का स्तर। इस सिलसिले में भारत के ऊर्जा आधार की प्रगति सोवियत भारत सहयोग की एक प्रमुखतम दिशा बन गयी।

भारत का प्रथम बड़ा बिजली उत्पादक प्रतिष्ठान जिसका निर्माण सोवियत संघ की तकनीकी सहायता से हुआ था, नेवेली (तमिलनाडु) स्थित ६०० मेगावाट क्षमता का तापबिजलीघर है। इसका निर्माण १९५९ में आरंभ हुआ और यह कार्य २५० ४०० तथा ६०० मेगावाट के तीन चरणों में आगे बढ़ता गया। बिजलीघर में ५० और १०० मेगावाट एकल क्षमता के यूनिट लगाये गये। तापबिजलीघर की एक विशेषता यह है कि निम्न कोटि का स्थानीय भूरा कोयला ईंधन के काम आता है। भूरे कोयले के निम्न ऊष्मोत्पादन और बड़ी आर्द्रता के कारण सोवियत तथा भारतीय रूपाकनकारों और विशेषज्ञों को उसका किफायती ढंग से दोहन करने से संबंधित कई तकनीकी समस्याएं निबटानी पड़ी थीं। अगस्त १९६२ में जाकर बिजलीघर ने विद्युत का उत्पादन प्रारंभ किया। इस समय यह पूरे भारत का एक विशालतम बिजलीघर

है, जो एक बडे औद्योगिक क्षेत्र की बिजली की आवश्यकता की आपूर्ति करता है। भारत सरकार न उसका विस्तार करने का निर्णय किया है – २१० मेगावाट एकल क्षमता क तीन यूनिट लगाय जाने से उसकी कुल क्षमता ६३० मेगावाट तक पहुच जायगी।

नवेली मे बिजलीघर बनाने के सकारात्मक अनुभव को देखते हुए १९६१ और १९६२ मे २५० मगावाट के ओवरा (उत्तर प्रदेश) और कोरबा (मध्य प्रदेश) तापबिजलीघर बनाने के बारे में भी समझौते हुए। इस समय दोनो बिजलीघर कारगर रूप मे चालू है। इसके पश्चात कई और समझौते मपन्न हुए। भारत मे सोवियत सहायता म कुल मिलाकर ३,००० मेगावाट से अधिक क्षमता के ११ बिजलीघर बन चुके है।

पनबिजलीघरो के निमाण में भी सहयोग कम सफल नही रहा। इसका एक उदाहरण सतलज नदी के दाये तट पर बना भाखडा नगल पनबिजलीघर है। इस स्थान पर बिजलीघर बनाने का विचार १९०८ म पैदा हुआ था, किंतु वह भारत द्वारा आजादी जीतने के बाद ही साकार हो सका। १७ नवबर, १९५५ को जवाहरलाल नेहरू बिजलीघर की आधारशिला मे पहली कक्रीट बिछाने के अवसर पर आयोजित समारोह मे उपस्थित थे। इसके शीघ्र बाद इस स्थान पर कक्रीट का २२५ मीटर ऊचा गुरुत्वीय बाध खडा हुआ, जिसके ढाचे म दो पनबिजलीघर प्रतिष्ठापित किये गये बाया तटवर्ती और दाया तटवर्ती, जिनकी क्षमताए क्रमश ४५० मेगावाट और ६०० मेगावाट हैं (१२० मेगावाट वाले पाच यूनिट)। इन पनबिजलीघरो के दृश्य स प्रभावित होकर जवाहरलाल नहरू न लिखा कि भाखडा-नगल परियोजना एक विराटकाय, चमत्कारिक दृश्य है, यह एक ऐसी चीज है, जिसे देखकर आप दग रह जाते है। भाखडा पुनर्जन्म ले रहे भारत का एक नया मदिर, उसकी प्रगति का द्योतक है।

भाखडा-नगल परियोजना का अर्थ भारत का वहत्तम पनबिजलीघर ही नही वरन समूचा जल-तकनीकी समुच्चय भी है, जो अनेक कार्यभार हल करने मे सक्षम है। भाखडा-नगल ७ ३०० गावो और १२८ बस्तियो तथा नगरो को बिजली सप्लाई करता है। बाध ६५ लाख एकड जमीन को सिंचित करता है। यही नही नहरो की व्यवस्था की बदौलत ३७ लाख एकड और भूमि की सिंचाई सुधारना भी सभव हुआ। भारतीय विशेषज्ञो के आकलन के अनुसार नहरो की प्रणाली सुधारने और

पम्पिंग यूनिटों के बिजलीकरण के कारण अनाज, कपास, गन्ने और दूसरी फसलों की उपज में वृद्धि मात्र से प्रति वर्ष २०० करोड से अधिक रुपयों के मूल्य की आय मिलती है।

इसके अतिरिक्त भिलाई और बोकारो कारखानों और बरौनी तथा कोयाली तेल-शोधक कारखाना समेत अनेक बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों मे शक्तिशाली बिजलीघर बनाये गये, जो उनकी बिजली की आवश्यकताएं पूरी करते हैं। समग्र रूप से सोवियत संघ के सहयोग से बने बिजलीघरों की क्षमता लगभग ३,२०० मेगावाट अथवा देश की कुल विद्युत क्षमता के १० प्रतिशत से अधिक है।

इस समय सभी बिजलीघरों का संचालन भारतीय कर्मीवृंद ही करते हैं।

१० दिसंबर १९८० को हस्ताक्षरित सोवियत भारत समझौते से विद्युत ऊर्जा उद्योग में सहयोग का नया चरण आरम्भ हुआ। इसमें निर्दिष्ट प्रमुख प्रतिष्ठानों में एक विंध्याचल मे निर्मित होनेवाले १,२६० मेगावाट का विशाल तापबिजलीघर शामिल है, जिसकी क्षमता ३,०००

भारत मे सोवियत संघ की सहायता से बने बिजलीघर

बिजलीघर	यूनिटों की संख्या	क्षमता (मेगावाट)
नेवेली तापबिजलीघर	६–५० मेगावाट	६००
	३–१०० –"–	
भाखड़ा	५–१२० –"–	६००
कोरबा तापबिजलीघर	४–५० –"–	२००
ओबरा –"–	५–५० –"–	२५०
लोअर सिलेरु पनबिजलीघर	२–११५ –"–	२३०
मेत्तुर –"–	४–४६ –"–	२२४
पतरातु तापबिजलीघर	६–५० –"–	४००
	२–१० –"–	
हरद्वागंज –"–	२–५० –"–	१००
हीराकुड पनबिजलीघर	१–२५ –"–	२५
बालिमेला –"–	६–६० –"–	३६०
निगनमकी –"–	२–२६ –"–	५०
कुल		३०४४

मगावाट तक विस्तारित की जा सकती है।

साथ ही समझौते मे लगभग ६०० किलोमीटर लबी बिजली ट्रामसिशन-लाइन बिछाने की भी व्यवस्था है जो उत्तर प्रदश क दुर्गम्य स्थानो क लिए बिजली की सप्लाई सभव बनायेगी।

निर्दिष्ट सारणी के अनुसार विध्याचल बिजलीघर १९८७ मे पहली विद्युत धारा का उत्पादन करना शुरू करगा जिससे देश की ऊर्जा क्षमता और बढ़ जायेगी।

मई १९८५ म भारत के प्रधानमत्री राजीव गाधी की सोवियत सघ की यात्रा क समय सपन्न दस्तावेजो म सहयोग के इसी क्षेत्र पर मुख्य रूप मे जोर दिया गया था। आर्थिक सहयोग सबधी नय समझौते म एक और विद्युत ऊर्जा प्रतिष्ठान—उत्तर प्रदश म ८४० मेगावाट का कहलगाव तापबिजलीघर—बनाने का प्रावधान है।

मशीन निर्माण

सुदृढ औद्योगिक आधार के, विशेषकर धातुकर्म खनन, तेल उद्योग, विद्युत ऊर्जा उद्योग और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की अन्य आधारभूत शाखाओ के निमाण म भारत की सफलताए मुख्यतया विशाल मशीन निर्माण प्रतिष्ठानो, सर्वप्रथम भारी मशीन-निर्माण उद्यमो की स्थापना स सबद्ध है।

१९५६ म भारत सरकार के निमत्रण पर पहला सोवियत कर्मीवृद भारी मशीन निर्माण उद्योग के क्षेत्र म सहयोग के प्रश्न के अध्ययन हेतु भारत पहुचा था। फलस्वरूप सोवियत सघ की सहभागिता से दो बडे मशीन निर्माण कारखानो—राची म भारी मशीन निर्माण और दुर्गापुर म खनन सयत्र—की स्थापना के बारे मे समझौता हुआ। बाद म हरिद्वार म भारी बिजली सयत्र और कोटा मे सूक्ष्म यत्र-निर्माण कारखाना बनाने के बारे मे भी निर्णय हुआ।

उच्च उत्पादनशील आधुनिकतम साज-सामान से लैस विशाल राजकीय मशीन निर्माण कारखाने अल्पकाल मे खडे हो गये, जो देश के मशीन निर्माण के मूल केद्र बन गये।

इन उद्यम धधो की स्थापना के फलस्वरूप भारत के लिए अल्पकाल मे ही आथिक दृष्टि से स्वावलबी बनने की राह म आगे बढना सभव

हुआ। उपरोक्त कारखाना ने भिन्न भिन्न जटिल उपकरण बनाने में विशेषज्ञता प्राप्त की और आज वे भिलाई, बोकारो तथा विशाखापत्तनम के कारखानों, बिजलीघरों, खानों व खुली खानों, बंदरगाहों आदि बंदरों के लिए साज सामान मुहैया करने में अग्रणी भूमिका अदा कर रहे हैं।

* * *

रांची भारी मशीन निर्माण कारखाने में, जो राजकीय निगम 'हैवी इंजीनियरिंग कार्पोरेशन' के अंतर्गत है, धातुकर्म, तेल, सीमेंट और उद्योग की दूसरी शाखाओं के लिए प्रतिवर्ष ८० हजार टन भारी संयत्र बनते हैं। इसका निर्माण १९६१ में आरंभ हुआ और नवंबर १९६३ में उसका समारोही उद्घाटन हुआ, जिसमें प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू भी उपस्थित थे।

अंतर्सरकारी समझौते के अनुसार सोवियत संगठनों ने समस्त सर्वेक्षण एवं स्थापन कार्य संपन्न किये, लगभग ४५ हजार टन तकनीकी साज-सामान और सामग्रियों की सप्लाई की और विशेषज्ञ भेजे। ३०० से अधिक भारतीय कर्मियों ने संबद्ध सोवियत कारखानों में व्यावसायिक शिक्षा पायी।

अपने आकार और निर्मित मालों के वैविध्य की दृष्टि से रांची कारखाने की संसार भर में इस किस्म के विशालतम कारखानों – सोवियत संघ के 'उरालमाश', चेकोस्लोवाकिया के 'स्कोदा' और पश्चिमी जर्मनी के 'दमाग' – से तुलना की जा सकती है। कारखाने की उत्पादन क्षमता इतनी है कि यहां प्रतिवर्ष बननेवाले संयत्र १० लाख टन इस्पात उत्पादित करने में सक्षम धातुकर्म कारखाने को लैस करने के लिए पर्याप्त है।

कारखाने ने धातुकर्म संबंधी और अन्य जटिलतम यंत्रों के उत्पादन में विशेषज्ञता पायी। उसने १९८५ के अंत तक सिर्फ भिलाई, बोकारो और विशाखापत्तनम के कारखानों के निर्माण तथा विस्तार के वास्ते ३ लाख टन से भी ज्यादा यंत्र भेजे, जिसकी बदौलत आयातित माल में बड़ी कटौती करना संभव हुआ। कारखाने के समूचे कार्यकाल में यहां उद्योग की भिन्न भिन्न शाखाओं के लिए ५ लाख टन से अधिक सामान तैयार किया जा चुका है।

रांची स्थित कारखाने के सिलसिले में चौमुखी सहयोग का नया

लक्षण प्रकट हुआ है यह है सयुक्त उत्पादन। आर्थिक और वैज्ञानिक तकनीकी सहयोग सबधी सोवियत भारत अतर्सरकारी आयोग की तीसरी बैठक के निर्णयानुसार १६७६ मे सोवियत सगठनो ने राची कारखाने को उन उद्यमो के लिए साज-सामान बनाने के आर्डर दिये जिनका सोवियत सघ तीसरे देशो में निर्माण करता है। यहा सोवियत आर्डरो पर यूगोस्लाविया के एलुमिना कारखान के लिए विद्युत-अपघटन उपकरण क्यूबा के निकल कारखाने के लिए चल भागेत्तोलक बुल्गारिया मिस्र और तुर्की के धातुकर्म कारखानो के लिए कोक सयत्र आदि उपकरण तुर्की के धातुकर्म के लिए अविराम ढलाई उपकरण हगरी के लिए क्रेन सामान आदि साज-सामान—कुल भार २० हजार टन—तैयार किये गये हैं। राची कारखाने और सोवियत सगठनो के बीच उत्पादन-सहयोग नित्य बढता जा रहा है। १६८० म सोवियत सघ को १०४०० टन यत्र सप्लाई करने के बारे म एक अनुबध पर हस्ताक्षर हुए। आर्डर की सफल पूर्ति हो रही है।

सयुक्त उत्पादन आर्थिक सहयोग का एक नया रूप है जिसका सूत्रपात सहयोग के अग्रणी प्रतिष्ठान—राची के भारी मशीन निर्माण कारखाने—म हुआ था। इसका कार्यान्वयन प्रथमत भारतीय मशीन निर्माण उद्योग की सभावनाओ की वृद्धि का सूचक है जिनकी बदौलत उसके उत्पादो का विश्व मडी मे प्रवेश सभव हुआ है। सहयोग के इस रूप मे भारतीय पक्ष के लिए अनेक असदिग्ध सुविधाए निहित है। इसकी पूर्ति का सर्वोपरि अर्थ है औद्योगिक मालो के निर्यात मे वद्धि जोकि इस क्षेत्र मे सरकार की नीति के अनुकूल है विश्व मडी म प्रतिष्ठा की प्राप्ति और कारखाने की उत्पादन-क्षमता मे पूर्ण लाभ उठाना।

* * *

दुर्गापुर स्थित खनन सयत्र कारखाने की जो 'माइनिंग एड ऐलाइड मशीनरी राजकीय निगम के अतर्गत आता है, वार्षिक उत्पादन क्षमता ४५ हजार टन सयत्र है। सोवियत सहायता से बनाये गये इस प्रतिष्ठान को जवाहरलाल नेहरू ने समारोही वातावरण मे नवबर १६६३ म चालू किया था। भारत मे यह माना गया कि कोयला खनन सयत्र बनानेवाले कारखाने का अभाव खनन इजीनियरो के लिए सबसे बडी

कठिनाई पैदा करता था किन्तु आज तक विदेश से बने साज-सामान पर आश्रित होना और कोयला खनन मे ऐसे उपायो से काम लेना पड रहा था जो स्थानीय परिस्थितियो के सर्वेव अनुकूल नही हुआ करते थे। लबे अर्से तक मौजूद इस समस्या के हल के लिए दुर्गापुर मे खनन सयत्र कारखाना बनाने का निर्णय किया गया था।

कारखाने के उत्पादो मे खनन सबधी सभी आवश्यक सयत्र हैं, जैसे कोयले की कटाई, लदाई और भूमिगत ढुलाई के यत्र तथा उत्तोलन, वायुसचार उद्वाहक पप, आदि यत्र। सब साज-सामान सर्वोत्तम सोवियत मानको के अनुसार बनाये गये है, किंतु भारतीय परिस्थितियो को देखते हुए उन्हे यथासभव रूपातरित भी किया गया है।

इस समय दुर्गापुर कारखाना खनन उपकरणो का देश का प्रमुख उत्पादक है।

दुर्गापुर कारखाना कोयला और खनन उद्योगो के लिए ही नही अपितु भिलाई और बोकारो इस्पात कारखानो को सयत्र, बदरगाहो को लदाई-उतराई के उपकरण तथा दूसरे उद्यमो को सामान मुहैया करता है। वह अपने कार्यकाल मे ३ लाख टन सामान तैयार कर चुका है। कारखाना सोवियत सगठनो के साथ सहयोग मे सक्रिय भाग ले रहा है। सोवियत सघ द्वारा दिये जानेवाले आर्डरो पर यहा १६ हजार टन उपकरण बनाये गये है।

* * *

भारत के ताप और पनबिजलीघरो को आवश्यक यत्रो की सप्लाई मे प्रमुख स्थान १९७० मे सोवियत सहायता से बने हरिद्वार भारी विद्युत यत्र कारखाने को प्राप्त है। 'भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्ज' राजकीय निगम का यह कारखाना भारत मे ही नही, बल्कि समस्त दक्षिण एशिया मे भी अपने ढग का विशालतम कारखाना है। तुलना के लिए यहा यह बता दे कि ऐसे कारखाने जिनमे द्रव एव तापचालित टर्बाइनो और जेनरेटरो मध्यम और बडी क्षमता वाले विद्युत मोटरो विभिन्न विद्युत तकनीकी उपकरणो आदि वस्तुओ का उत्पादन सकेद्रित हो बडे-बडे समुन्नत देशो तक मे भी नही हैं। टर्बो एव द्रवचालित

यूनिटो के उत्पादन म देश की कुल क्षमता का ५७
इस कारखान का है। समग्रत कारखाने की अभि
प्रकार है

—भापचालित टर्बाइना और जनरेटरा का उ
मेगावाट/वर्ष

—द्रवचालित टर्बाइना और जनरेटरा का उत्पादन-
वाट/वर्ष

—विद्युत मोटरो का उत्पादन—५१५ मेगावाट/वर्ष

सोवियत सघ न कारखान के निर्माण के लिए सभी आव
डाकुमेट तैयार किय साज-सामान की सप्लाई की और श्रम
वृद भेजा। इसके अलावा सोवियत सगठन साज-सामान
और अतिरिक्त पुर्जे भी नियमित रूप म भेजते रह हैं।
बदौलत कारखाना जल्द ही सर्वाधिक जटिल विद्युत ऊर्जा
की उत्पादन-क्षमता का उपयोग करन म सक्षम बना तथा
लाभकारी स्तर पर पहुचा।

कारखान ने भारत म २०० मेगावाट क्षमता के टर्बोजेनरेट
सर्वप्रथम उत्पादन करना आरभ किया जिनका आज देश के
भिन्न बिजलीघरो म सयोजन हो रहा है। सोवियत विशेषज्ञ इन यू
के सयोजन समजन तथा चालू करन म कारखाने की व्यापक सहा
करते हैं। अगस्त १९७८ म ओबरा तापबिजलीघर म जिसका प
चरण सोवियत सघ की शिरकत स बना था हरिद्वार भारी वि
यत्र कारखान द्वारा निर्मित और सयोजित भारत के प्रथम २१० मेगावा
टर्बाइन को समारोहपूर्ण वातावरण म चालू किया गया था।

१९८५ के अत तक कारखान म २०० और २१० मेगावाट के ४५
टर्बाइन तैयार हो चुके हैं। राची और दुर्गापुर कारखानो की तरह हरिद्वार
कारखाना भी सोवियत सगठनो के साथ सयुक्त उत्पादन म भाग लेन
लगा।

इस तरह स्वतन्त्रता की प्राप्ति के उपरात भारत ने मशीन निर्माण
उद्योग म बडी प्रगति की है। आर्थिक विकास की छठी पचवर्षीय योजना
म इस बात का उल्लेख किया गया कि मशीन निर्माण उद्योग यत्रो की
भीतरी आवश्यकताओ की प्राय पूर्णत आपूर्ति करता है और निर्यात-
योग्य अपरपरागत वस्तुओ म मुख्य स्थान यत्रो का है।

तथा उद्योग की दूसरी शाखाओं का विकास, कृषि उत्पादन का गहनीकरण और आधारिक संरचना का तदनुसार विकास अधिकाधिक मशीनों एवं साज-सामान की तकाजा कर रहे हैं। इस कारण छठी योजना की ही भांति सातवीं पंचवर्षीय योजना के निर्देशों में भी राजकीय क्षेत्र के अंतर्गत अधिकतर पूंजी निवेश अस्तित्वमान मशीन निर्माण कारखानों का आगे विस्तार करने और नवीनीकरण करने, उनके उत्पादन का वैविध्य बढ़ाने तथा कार्य के आर्थिक सूचकों को ऊंचा उठाने के लिए निर्दिष्ट है।

इन निर्दिष्ट लक्ष्यों की पूर्ति में मशीन निर्माण के क्षेत्र में सोवियत संघ के साथ बढ़ता सहयोग बहुत अधिक सहायता देता है। १० दिसंबर, १९८० के समझौते के अनुसार रांची, दुर्गापुर और हरिद्वार मशीन निर्माण कारखानों के साथ सोवियत संगठनों के सहयोग को अधिक गहन बनाने की व्यवस्था की गयी थी। प्रसंगत इन कारखानों के साथ उत्पादन संपर्क बहुत पहले से कायम है। फलस्वरूप कारखानों ने भीतरी मंडी और निर्यात के लिए भी विविध प्रकार के साज-सामान के उत्पादन में विशेषज्ञता प्राप्त की। इस प्रक्रिया में भारतीय पक्ष को आधुनिक टक्नोलाजी तथा तकनीकी डाकुमेंटों और आवश्यक उपकरणों की सप्लाई, सुदक्ष कर्मियों के प्रशिक्षण में योग और सोवियत संघ में तथा तीसरे देशों में सोवियत संघ के सहयोग से बननेवाले प्रतिष्ठानों के लिए आवश्यक साज सामान हेतु आर्डर यह महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

१९७८ में रांची, दुर्गापुर और हरिद्वार मशीन निर्माण कारखाने सोवियत आर्डरों पर लगभग ३० हजार टन यंत्र बना चुके हैं। आगामी वर्षों में आर्डरों के पैमाने और भी बढ़ जायेंगे जिससे भारतीय कारखानों की उत्पादनशीलता और कार्य के आर्थिक सूचक बढ़ाना संभव होगा।

कोयला उद्योग

भारत के पास कोयले के बहुत बड़े-बड़े जखीरे हैं। देश के ईंधन संतुलन में प्रमुख अंश कोयले का है। ईंधन के स्थान के रूप में उसका महत्व नित्य बढ़ रहा है।

सोवियत संघ भारत के कोयला खनन उद्योग की उन्नति में बहुत योगदान कर रहा है। उसकी सहायता से देश में अनेक आधुनिक खान

चालू हुई जिनमे ये शामिल है—बाकी मे ६ लाख टन की वार्षिक क्षमता की खान सुराकछार मे खान (११ लाख टन) माणिकपुर मे खुली खान (१० लाख टन) और ३० लाख टन संसाधित करने मे सक्षम कठार कोयला साद्रण मिल। खनन उपकरणो की औसत और संपूर्ण मरम्मत के वास्ते कोरबा मे केंद्रीय विद्युत यांत्रिक मरम्मतशाला का निर्माण हुआ (प्रतिवर्ष साढे ७ हजार टन उपकरण)।

कोयला खनन उद्योग मे सहयोग जारी है। १९७५ मे सोवियत विशेषज्ञो ने सिंगरौली कोयला क्षेत्र (मध्य प्रदेश) के सर्वागीण उपयोग के हेतु तकनीकी एव आर्थिक डाकुमेंट तैयार किये। यहा खुली खदानो मे प्रतिवर्ष लगभग ८ करोड टन कोयला प्राप्त करने की संभावना है। सोवियत और भारतीय कर्मीदल ने इस कोयला क्षेत्र मे जयंत खुली खान (प्रतिवर्ष १ करोड टन), रानीगंज मे झझरा १ खान (२८ लाख टन) रामगढ मे कोक कोयला खान (३० लाख टन) और सिंगरौली मे यान्त्रिक वर्कशाप (२१ हजार टन यंत्र) के निर्माण के लिए तकनीकी डाकुमेंट तैयार किये। इन सब प्रतिष्ठानो का भारतीय पक्ष अपने आप निर्माण कर रहा है। मार्च १९७९ मे हस्ताक्षरित दीर्घकालिक सहयोग-कार्यक्रम तैयार करते समय विश्व ऊर्जा संकट की वृद्धि को ध्यान मे रखते हुए कोयला खनन उद्योग मे उभय पक्षो के सहयोग पर विशेष बल दिया गया था। देश के लौह धातुकर्म की आवश्यक विकास दरो को सुनिश्चित करने के लिए कोक कोयला उत्पादन के गहनीकरण को प्राथमिकता दी गयी थी।

इस उद्देश्य से दीर्घकालिक कार्यक्रम मे कोक और ईंधन रूपी कोयले की विशाल खुली खदानो को तैयार करने नये और क्रियाशील साद्रण उद्यमो का निर्माण और पुनर्निर्माण करने कोयला उत्पादन मे नयी उच्च कारगर टैक्नोलाजी सर्वोपरि, जल शक्ति का सर्वाधिक उपयोग करने की टैक्नोलाजी को व्यवहार मे लाने के क्षेत्र मे सहयोग निर्दिष्ट किया गया है। इसके अलावा कार्यक्रम मे कर्णपुर और मार्कूम कोयला क्षेत्र मे नयी खानो के निर्माण, चालू खानो तथा सांद्रण मिलो के नवीनीकरण मे सहयोग का भी प्रावधान है।

तीक्ष्ण तेलाभाव की परिस्थितियो मे भारत सरकार ने कोयला खनन उद्योग के तीव्र विकास को औद्योगिक उत्पादन के क्षेत्र मे एक प्रमुख कार्यभार निर्धारित किया है। सातवी पचवर्षीय योजना के निर्देशो

मे १६८४/८५ वित्तीय वर्ष के १६ ५ करोड टन के मुकाबले १६८६/६० वित्तीय वष म कोयला उत्पादन को २३ ६ करोड तक पहुचाने और नये कोयला क्षत्रो क लिए भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के द्रुत विस्तार की भी व्यवस्था की गयी है।

इस क्षेत्र मे और दीर्घकालिक कार्यक्रम द्वारा तथा १० दिसबर, १६८० क आर्थिक और तकनीकी महयोग सबधी समझौते द्वारा निर्धारित दिशाओ मे आर्थिक सहयोग को इम समस्या के समाधान म वडी भूमिका निभानी है।

आगामी वर्षो म कोयला खनन उद्योग म सहयोग के कार्य निम्नाकित है निगाही और मुदुद म क्रमश १४० और १२० लाख टन वार्षिक उत्पादन की विशाल खान झझरा की २८ लाख टन वार्षिक उत्पादन की खान (दो ऊर्ध्वाधर और एक क्षैतिज खदाने) नयी खानो का निर्माण तथा चालू कोयला-सान्द्रण मिलो का पुनर्निर्माण उत्तरी कर्णपुर कोयला भडारो की साध्यता सबधी तकनीकी और आर्थिक डाकुमेटो की तैयारी तथा कायने के लिए भूवैज्ञानिक पूर्वेक्षण, आदि।

इसक अतिरिक्त सोवियत पक्ष न तिपोग खदान के डाकुमेट तैयार किये, साज सज्जा मुहैया की और कर्मीदल भी भेजे है। कठार तथा पाथरडीह स्थित कोयला-सान्द्रण मिलो के आधुनिकीकरण विषयक तकनीकी प्रारूप पूरे हो चुके है 'सिगारनी कोलरीज'– कोयला कपनी आदि के साथ सहयोग ज़ोर पकड रहा है।

सोवियत पक्ष चिनाकुरी खान के एक प्रायोगिक भाग का कार्यकारी तकनीकी खाका भी तैयार कर रहा है, जहा कोयला परतो की खुदाई आधुनिकतम यन्त्रीकृत समुच्चय से की जायेगी।

इस प्रकार दोनो पक्षो द्वारा स्वीकृत दायित्वो की सफलतापूर्वक पूर्ति हो रही है, इस क्षेत्र म भावी सहयोग की सभावनाए और अधिक उज्ज्वल है।

सहयोग की लक्षित योजनाए पूरी होन पर सोवियत शिरका स निर्मित नये कोयला उत्पादक उद्यमो की कुल क्षमता प्रतिवर्ष ३ करोड टन से ज्यादा होगी। सोवियत सगठनो के योगदान से पहले से निर्मित और रूपाकनाधीन कोयला खानो की समग्र उत्पादन-क्षमता प्रतिवर्ष ४५ करोड टन से अधिक होगी जोकि देश की ईंधन समस्या हल करन म बहुत महायक होगी।

औषधि निर्माण उद्योग

स्वाधीनता की प्राप्ति के उपरात भारत ने औषधि उद्योग तथा स्वास्थ्य रक्षा के क्षेत्र मे उल्लेखनीय प्रगति की है जिससे औसत जीवन-काल काफी बढा और मृत्यु-दर घट गयी है। इस समय औषधि निर्माण उद्योग ऐसे स्तर पर पहुच चुका है कि भारत को अनेक समुन्नत पूजीवादी देशों की कतारो मे रखा जा सकता है।

इसमे सोवियत सहयोग का अपना विशेष स्थान है। तीन विशाल प्रतिष्ठान – हैदराबाद का रासायनिक-औषधीय पदार्थ कारखाना ऋषिकेश का एटीबायोटिक कारखाना और मद्रास का शल्य उपकरण कारखाना – इस शाखा मे राजकीय क्षेत्र के आधार-स्तभ हैं। ये तीनो राजकीय निगम 'इडियन ड्रग्ज एड फार्मस्यूटिकल्ज' के अतर्गत हैं।

स्वतत्रता से पूर्व देश की औषधियो की आवश्यकताए मुख्यत आयात से पूरी होती थी। दवाए बहुत महगी अधिकाश आबादी की पहुच के बाहर थी। स्वतत्र भारत की सरकार ने ऐसी हालत बदलने का निश्चय किया। किंतु जनता को सस्ती दवाए उपलब्ध कराना कोई आसान काम नही था। यह केवल अपने औषधि निर्माण उद्योग स्थापित करके ही किया जा सकता था, जिसके लिए आर्थिक और तकनीकी सहायता आवश्यक थी।

इस उद्देश्य से १९४८ मे भारत सरकार ने अपने विशेषज्ञ चद पश्चिमी देशो को भेजे। लेकिन परिणाम बडे निराशाजनक निकले पश्चिमी कपनियो ने महायता प्रदान करने मे या तो कोई दिलचस्पी नही ली, या ऐसी शर्तें पेश की, जो अग्राह्य थी।

१९५० मे भारत को छोटे आकार का एक पेनिसिलिन निर्माण कारखाना बनाने के लिए अतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य रक्षा सगठन और सयुक्त राष्ट्र बाल सहायता कोष (यूनिसेफ) से अनुदान मिला था। इस तरह पूना के निकट पिम्परी मे राजकीय क्षेत्र के अतर्गत प्रथम एटीबायोटिक कारखाना बना। किंतु देश की आवश्यकताए पूरी करने म वह अक्षम था।

१९५३ मे भारतीय विशेषज्ञो और वैज्ञानिको का एक दल सोवियत सघ पहुचा। वे यह देखकर बहुत प्रभावित हुए कि सोवियत वैज्ञानिक और चिकित्सीय निकाय अपनी उपलब्धियो को व्यावसायिक रहस्य न मानकर उनसे औरो को अवगत कराने के लिए तत्पर है। वैज्ञानिको

व औपचारिक सपर्कों व बाद औपचारिक सपर्क भी स्थापित हुए। १९/५ म भिलाई कारखान क निर्माण सबधी अनुबध सपन्न हान क शीघ्र बाद भारत सरकार न औषधिया बनान क उद्योग म राजकीय क्षत्र की स्थापना क लिए सोवियत विशेषज्ञा को निमत्रित किया।

अगने साल भारत आकर उन्हाने जो सुझाव पश किय, उनम पिम्परी कारखान क विस्तार और दूसरी किस्म की एटीबायोटिक सश्लेपित दवाए विटामिन, आदि बनान क लिए अनक नय प्रतिष्ठाना क निमाण स सबधित सुझाव भी शामिल थे।

विशाल भारतीय मडी स वचित होन की आशका क कारण पश्चिमी कपनिया न अपनी नीति बदली और औषधि निर्माण करनवाली निजी भारतीय फर्मों क साथ उत्पादन म हाथ बटाने क लिए राजी हो गयी। इस प्रकार क सहयोग क वास्त सरकार न अनुमति-पत्र भी दिय। परतु समस्या इससे हल नही हुई, कारण यह था कि पश्चिमी कपनिया पहल की ही तरह भारत म मूल औषधिया नही बनाना चाहती थी और उन्होने भारतीय फर्मों क साथ जो कुछ समझौत किये भी थे वे प्रधानत अपने यहा बनायी जानवाली मूल औषधिया से आनुषगिक रूपा से सबद्ध थे।

दो साल बाद यानि १९५८ म देश म औषधि निर्माण उद्योग के उत्कर्षार्थ नयी योजना बनान के उद्देश्य से पुन सोवियत विशपज्ञो को निमत्रित किया गया। इस योजनानुसार विभिन्न प्रकार की एटीबायोटिक, सश्लिष्ट औषधिया विटामिन रासायनिक अर्ध निर्मित उत्पाद जडी बूटियो पर आधारित दवाइया और शल्य उपकरण बनानेवाले कई प्रतिष्ठानो का निर्माण करन का निर्णय किया गया। सोवियत सघ द्वारा प्रस्तावित सहायता से सबद्ध डाकुमेट मुहैया करना उपकरणा की सप्लाई करना और कर्मीवृद के प्रशिक्षण मे योग दना ही नही, अपितु आवश्यक टेक्नॉलाजी और तकनीकी जानकारी प्रदान करना भी शामिल था। एवज म सोवियत पक्ष ने लाभ म हिस्सेदारी की माग नही की जैसे कि पश्चिमी कपनिया अपने समझौतो म किया करती थी। २९ मई १९५९ क अनुबधानुसार उसने इन प्रतिष्ठानो के निर्माण से सबधित आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए ऋण दिया।

इसक शीघ्र बाद ऋषिकेश म एटीबायोटिक कारखाना हैदराबाद म रासायनिक-औषधीय पदार्थ तथा मद्रास म शल्य उपकरण कारखाना

वनाने का निर्णय हुआ। इस सबका सचालन करने के वास्ते भारत सरकार ने 'इडियन ड्रग्ज एड फार्मस्यूटिकल्ज लिमिटेड' नामक राजकीय निगम स्थापित किया।

हैदराबाद स्थित रासायनिक-औषधीय पदार्थ कारखाना (प्रतिवर्ष ८५० टन औषधिया और अर्ध पदार्थ) १९६८ मे चालू किया गया था। यह भारत मे ही नही, अपितु समस्त दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी एशिया म भी विशालतम है। वर्तमान काल म कारखाने म सात ग्रुपो (ज्वरहर शामक और तपेदिकरोधी, नीद लानेवाली औपधिया विटामिन इत्यादि) की ३० से अधिक मूल औपधिया बन रही है और नयी औपधियो के उत्पादन की तैयारी हो रही है। कारखाने की क्षमता २००० टन तक बढायी गयी है।

ऋषिकेश एटीबायोटिक कारखाना (२९० टन प्रतिवर्ष) १९६७ मे चालू किया गया था। यहा आठ नाम के सभी आधारिक एटीबायोटिक बनते है जैसे पेनिसिलिन स्ट्रेप्टोमाइसिन, टेट्रासाइक्लिन आक्सी-टेटासाइक्लिन, ग्रिजेओफुलविन, आदि। उत्पादो को कैपस्यूलो टिकियो चूर्णो और इजेक्शन के घोलो की तैयारी के लिए इस्तेमाल किया जाता है। कारखाने मे टेक्नोलाजी बेहतर बनाने उत्पादन बढाने और नये उत्पाद निकालने के लिए खोज-कार्य लगातार चल रहा है। फलस्वरूप पेनिसिलिन आक्सीटेट्रासाइक्लिन और टेट्रासाइक्लिन के उत्पादन मे नियोजित लक्ष्य से कही अधिक वृद्धि हुई है। भविष्य मे अर्ध-सश्लिष्ट एटीबायटिको का उत्पादन बढाने की योजना है।

मद्रास कारखाने की वार्षिक क्षमता २५ लाख अदद शल्य उपकरण है। इस समय यह कारखाना भारत के अधिकतर चिकित्सीय निकायो मे इन उपकरणो की आवश्यकताए पूरी करता है।

मानव कार्यकलाप के एक सर्वाधिक मानवीय क्षेत्र – औपधि निर्माण उद्यम – मे सहयोग ने बडी सफलताए अर्जित की, जिसकी बदौलत देश की बहुत-सी औपधियो की माग पूरी करना सभव हुआ।

कृषि

खाद्य समस्या भारत की एक सबसे तीक्ष्ण समस्या है और भारत सरकार का ध्यान सदैव इसके समाधान पर केंद्रित रहा है।

यह भली भांति समझते हुए कि कृषि उत्पादन में द्रुत वृद्धि आधुनिकतम उन्नत यंत्रीकृत फार्मों की स्थापना पर अवलंबित होती है, छठे दशक के आरम्भ में भारत ने बड़े राजकीय कृषि फार्म कायम करने में सोवियत सहायता मांगी थी। १९५६ में सूरतगढ़ में (राजस्थान) एसा प्रथम फार्म बना था। सोवियत संघ द्वारा उपहार के रूप में दिये गये कृषि औजारों और मशीनों से सज्जित सूरतगढ़ फार्म बड़े आकार के यंत्रीकृत कृषि उद्यम में रूपांतरित हो गया और उसने कृषि के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। इस सिलसिले में जवाहरलाल नेहरू ने एक बार कहा था कि अगर भारत के पास ऐसे १०० फार्म हों, तो खाद्य समस्या हल हो जायेगी।

इसके बाद हिसार, रायचूर, लुधियाना, कण्णानूर और जैतसार में पांच और फार्म स्थापित हुए, जो अब कामयाबी के साथ काम कर रहे हैं।

१९६९ में इन फार्मों के काम के संचालन और नये कृषि प्रतिष्ठानों के गठन के ध्येय से राजकीय कृषि निगम की स्थापना हुई। इस समय निगम के तहत १४ फार्म हैं और देश के भिन्न-भिन्न राज्यों में कई नये फार्म बनाने की योजना है। निगम के अस्तित्वकाल में उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त हुई हैं, फलस्वरूप पैदावार तथा निगम की आय में काफी वृद्धि हुई।

अनाज के उत्पादन के अलावा कुछ फार्म भेड़, सूअर, मत्स्य पालन तथा बागवानी भी करते हैं। निगम और सोवियत सहायता से बने फार्मों की लाभकारिता निरंतर बढ़ती जा रही है और देश की कृषि पदार्थों की सप्लाई में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

जुलाई १९७१ में कृषि के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच वैज्ञानिक तकनीकी सहयोग पर हुए समझौते से सहयोग को सबल प्रेरणा मिली। समझौते में अन्य बातों के अलावा वैज्ञानिक-तकनीकी सूचनाओं के व्यापक आदान-प्रदान तथा कृषि विज्ञान विषयक समस्याएं सुलझाने में वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थानों के सहयोग का भी प्रावधान है।

दीर्घकालिक कार्यक्रम में भी कृषि में सहयोग को समुचित स्थान दिया गया है। उभय पक्षों में वनस्पतियों के जीन-कोष और अनाज की ऊंची फसलें देनेवाले बीजों के विनिमय, पशु-सुधार, अनाज और तिलहन उत्पादन की टेक्नोलाजी के अध्ययन, मरुभूमि और खारी जमीन

के पुनरुत्थान समेत खेती तथा पशु-पालन और भूउपयोग में व्यापक सहयोग के बारे में समझौता हुआ।

मार्च १९७९ में हस्ताक्षरित प्रोटोकोल के अनुसार सोवियत पक्ष ने सूरतगढ़ फार्म के लिए फसल-कटाई मशीनें, बीजारोपण मशीनें, ट्रैक्टर, बुल्डोज़र आदि कृषि औज़ार उपहारस्वरूप सप्लाई किये।

भारत की परिस्थितियों में कृषि पैदावार बढ़ाने के कार्यक्रम में प्रमुख स्थान सिंचाई को प्राप्त है। इसे ध्यान में रखते हुए उभय पक्ष सिंचाई के कार्य में सहयोग का विस्तार करने पर भी सहमत हुए। इस उद्देश्य से सोवियत विशेषज्ञों का एक दल भारत गया था, जहां उसने भारतीय कर्मियों के साथ मिलकर इस क्षेत्र में सहयोग की कार्यकारी योजना निर्धारित की। इसमें नहरों के निर्माण में प्रयुक्त पट्टियां और ढांचे बनानेवाले चंद कारखानों की स्थापना, बांध और तटबंध के निर्माण में पूर्वनिर्दिष्ट विस्फोटों के प्रयोग, नदियों और भूगर्भीय जल के उपयोग की उत्कृष्ट विधियों के अध्ययन, तीसरे देशों में सम्मिलित सहयोग आदि का प्रावधान है।

राष्ट्रीय कर्मियों की तैयारी

कुशल कर्मीवृंद का प्रशिक्षण आर्थिक सहयोग की एक प्रमुख दिशा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के फौरन बाद भारत सरकार ने अपने समक्ष जो तात्कालिक कार्यभार रखे थे, उनमें उद्योग के उत्कर्ष के साथ अपने राष्ट्रीय कर्मीवृंद का प्रशिक्षण भी शामिल था, जो अर्थव्यवस्था का सभी स्तरों पर संचालन करने में योग्य हों। इस ध्येय के महत्व पर जोर देते हुए जवाहरलाल नेहरू ने मार्च १९५९ में कहा था कि जहां एक कारखाना बनाना अपेक्षाकृत आसान है, वहां इस कारखाने का प्रबंध करने अथवा दूसरे कारखाने बनाने में समर्थ लोगों का प्रशिक्षण करना कहीं अधिक कठिन है।

इस समस्या का महत्व इस कारण भी अधिक था कि संसार में और स्वयं भारत में तकनीकी प्रगति को देखते हुए निर्मित हो चुके प्रतिष्ठानों की उत्पादन-क्षमता के उत्कृष्ट उपयोग, देश के भीतर अनुसंधान-कार्य के तीव्र उत्थान और औद्योगिक उद्यमों का अपनी शक्ति के सहारे रूपांकन करने के लिए सुयोग्य कर्मियों की तीक्ष्ण

आवश्यकता अनुभव हुई।

राष्ट्रीय कर्मीवृद की तैयारी में सोवियत सहायता समूचे सहयोग के कार्यभारो से यानि भारतीय अर्थतंत्र की निर्णायक शाखाओ, सर्वप्रथम भारी उद्योग में जो अर्थतंत्र के आगे विकास का आधार है आर्थिक तथा तकनीकी सहायता से अभिन्न रूप से जुडी हुई है।

उभय पक्षो के बीच सपन्न सभी समझौतो मे यह व्यवस्था की गयी है कि सोवियत सघ औद्योगिक प्रतिष्ठानो और परियोजनाओ के निर्माण म ही नहीं अपितु भारतीय विशेषज्ञो की शिक्षा-दीक्षा मे भी हाथ बटायेगा।

सहयोग की ३० वर्षो से अधिक की अवधि मे १ लाख ३० हजार से ऊपर कर्मियो को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जा चुकी है। यह काम निम्नांकित मुख्य दिशाओ मे चल रहा है

१ नये कारखानो के निर्माण सयोजन और समजन की प्रक्रिया म इजीनियरो तकनीशियनो और हुनरमद श्रमिको का प्रशिक्षण।

इस क्षेत्र मे अर्जित उपलब्धियो का अकाट्य प्रमाण यह तथ्य है कि पिछले कुछ वर्षो म सोवियत भारत सहयोग के प्रतिष्ठानो के निर्माण मे लगे सोवियत विशेषज्ञो की सख्या छठे और सातवे दशक के मुकाबले म कही कम है। यह इस बात का साक्षी है कि भारतीय इजीनियर और तकनीशियन श्रमिक और सयोजक सोवियत सहकर्मियो की सहायता से लाभ उठाकर अपनी योग्यता बढा रहे है ताकि निकट भविष्य म नये कारखाने बनाने मे पूर्णत स्वावलबी बनें।

२ सोवियत सहयोग म बने उद्यमो की उत्पादन प्रक्रिया म इजीनियरो तकनीशियनो फोरमैनो और सुदक्ष श्रमिको का प्रशिक्षण तथा उनकी योग्यता का स्तर ऊपर उठाया जाना।

सोवियत भारत सहयोग से बने प्राय सभी प्रतिष्ठानो का सफल कार्य इस सहायता के परिणामो का द्योतक है। इनका सचालन पूर्णत भारतीय विशेषज्ञो द्वारा किया जाता है।

सहयोग की अवधि म निर्माणाधीन और चालू उद्यमो म ६० हजार से अधिक श्रमिको और तकनीशियनो ने श्रम की योग्यता बढायी है। इन उद्यमो मे स्थापित प्रशिक्षण केद्रो म प्रतिवर्ष कई हजार लोग शिक्षा पाते हैं।

३ भारत म सोवियत योगदान से स्थापित विद्यालयो म प्रशिक्षण।

इस दिशा मे सोवियत सहायता का पहला पग था बबई टेक्नोलाजिकल इस्टीट्यूट की स्थापना मे उसकी शिरकत। १६५८ मे यहा विद्यार्थियो की सख्या मात्र १०० थी, आजकल लगभग २,५०० विद्यार्थी और स्नातकोत्तर विद्यार्थी यहा पढते या शोध-कार्य करते हैं। प्रतिवर्ष ८ व्यवसायो के कोई ३०० विशेषज्ञ शिक्षा पूरी करके इस्टीट्यूट से निकलते हैं।

१० दिसबर, १६६६ को सपन्न समझौते म इस क्षेत्र मे सहयोग को उच्चतर गुणात्मक स्तर पर पहुचाने का, अथात विद्यमान उच्च शिक्षा सस्थानो के अतर्गत ऐसे विशेषज्ञो की शिक्षा के लिए अलग-अलग विभागो की स्थापना मे सहायता करने का प्रावधान किया गया, जिनकी भारतीय अर्थव्यवस्था मे खास आवश्यकता है। फलस्वरूप हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय मे भूभौतिकी विभाग, खडगपुर टेक्नोलाजिकल इस्टीट्यूट म धातुकर्म विभाग, बबई टेक्नोलाजिकल इस्टीट्यूट मे विमान-निमाण विभाग और बगलूर विज्ञान सस्थान मे स्वचलन तथा गणन-यत्र विभाग खोले गये।

उत्पादन प्रबध के मध्यमस्तरीय कर्मियो – तकनीशियनो – के प्रशिक्षण म धातुकर्म (भिलाई), मशीन निर्माण (राची), तेल और गैस उद्योग (बडौदा), इलेक्ट्रानिकी और ऊर्जा (हैदराबाद) जैसी शाखाओ मे सोवियत सहायता से खोले गये व्यावसायिक स्कूल महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रह है। अधिकतर स्कूलो मे पढाई सोवियत अध्यापको की सहायता से तैयार पाठ्य योजनाओ और कार्यक्रमो के अनुसार होती है।

सहयोग के वर्षो म चर्चित उच्च और मध्यम विद्यालयो म ३५ हजार से अधिक लोगो ने शिक्षा पायी है।

४ सोवियत सघ स्थित औद्योगिक प्रतिष्ठानो और उच्च शिक्षा सस्थानो मे भारतीय विशेषज्ञो का प्रशिक्षण। अब तक यहा शिक्षाप्राप्त लोगो की सख्या साढे चार हजार से भी ऊपर पहुच गयी है।

वैज्ञानिक तकनीकी सहयोग

मुक्तिप्राप्त देशो द्वारा जटिल सामाजिक-आर्थिक समस्याओ के समाधान ने उनके सामने अपना एसा वैज्ञानिक-तकनीकी आधार खडा करने

की आवश्यकता पैदा की, जिसके आकार और गुणात्मक स्तर पर आर्थिक सरचना का सफल विकास बडी हद तक निर्भर करता है।

सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो के साथ समानाधिकार और परस्पर लाभ पर आधारित द्विपक्षीय आर्थिक और वैज्ञानिक तकनीकी सहयोग विकासमान देशो को प्राप्त होनेवाली टेक्नोलाजी और वैज्ञानिक एव तकनीकी क्षमता म वृद्धि का एक प्रमुख स्रोत बना हुआ है।

अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सबधो के व्यवहार मे टेक्नोलाजी प्रदान करने की अवधारणा मे ऐसे कार्यो का व्यापक क्षेत्र आ जाता है, जैसे आधुनिक मशीनो और साज-सामान का व्यापार, पेटेटो, लाइसेसो का क्रय विक्रय और तकनीकी जानकारी का आदान प्रदान परामर्श, अन्य प्रकार की तकनीकी सहायता तथा राष्ट्रीय कर्मियो के प्रशिक्षण म सहयोग अर्थात उसमे वे सारे प्रश्न आ जाते हैं, जिनकी विकासमान देशो को औद्योगिक और दूसरे प्रतिष्ठानो के निर्माण मे दी जानेवाली सोवियत सहायता के सदर्भ मे सपन्न अतर्सरकारी सधियो मे पूर्वकल्पना की जाती है। द्विपक्षीय सहयोग के आधार पर औद्योगिक और अन्य प्रतिष्ठानो का निर्माण और उनका पूर्ण स्वामित्व तरुण राज्यो को सौपा जाना उन्ह प्रयोगशालाओ रूपाकन-कार्यालयो तथा राष्ट्रीय कर्मियो के प्रशिक्षण केद्रो से युक्त किया जाना और निर्माण-कार्य एव उत्पादन प्रक्रिया म स्थानीय सपदा का अधिकतम उपयोग, आदि -- ये ऐसे कारक है जो आर्थिक और तकनीकी सहयोग के क्षेत्र मे विकासमान देशो के साथ सोवियत सघ क सबधो की लाक्षणिकताए है और इन देशा के तकनीकी पिछडेपन को दूर करने मे सहायक होते है।

विकासमान देशो को सोवियत सघ द्वारा टेक्नोलाजी सौप जाने की प्रक्रिया कई चरणो से गुजरी है। यदि आरभिक अवस्था म टक्नोलाजी सौप जाने के कार्य का केवल आनुषगिक महत्व ही था तो बाद मे इन प्रश्नो के एक अश को आर्थिक सपर्कों को पृथक क्षेत्र म सम्मिलित करने की वस्तुगत आवश्यकता पैदा हुई। इस क्षेत्र के अतर्गत वैज्ञानिक समस्याओ का सयुक्त प्रतिपादन खनिज सपदा का चहुमुखी उपयोग, पेटटो और लाइसेसो का विनिमय अनुसधानकर्ताओ का प्रशिक्षण, प्रायोगिक और आधारिक विज्ञानो मे तथा नियोजन म सहयोग आदि प्रश्न आते हैं।

इस प्रकार वर्तमान अवस्था मे वैज्ञानिक-तकनीकी ज्ञान विकासमान देशों को दो दिशाओ मे सौपा जाता है औद्योगिक और दूसरे प्रतिष्ठानो के निर्माण मे सहायता के साथ-साथ और अंतर्सरकारी डाकुमेंटो के अनुसार प्रत्यक्ष वैज्ञानिक-तकनीकी सपर्को के जरिये।

देश म कारगर वैज्ञानिक-तकनीकी सरचना के विकास पर द्विपक्षीय सहयोग क फलदायी प्रभाव का आदर्श उदाहरण सोवियत भारत आर्थिक और वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग है जिसकी ३०वी जयती २ फरवरी, १९८५ को मनायी गयी थी।

इस अवधि म सोवियत भारत सहयोग ने विशाल आकार ग्रहण किया है वह अर्थतत्र विज्ञान और तकनीक के विविध क्षेत्रो म फैलकर देश के औद्योगीकरण म बहुत बडी भूमिका अदा कर रहा है। इस ध्येय मे प्राप्त सफलताए काफी हद तक इस बात का फल है कि सोवियत सघ द्वारा दी जानेवाली आर्थिक और वैज्ञानिक-तकनीकी सहायता आधुनिकतम तकनीकी उपलब्धियो के अधिकतम उपयोग पर आधारित है।

जैसा कि ऊपर बतलाया गया है, सोवियत भारत सहयोग का लक्षण उसका सर्वांगीण स्वरूप है जिसके अतर्गत औद्योगिक प्रतिष्ठानो के निर्माण के साथ-साथ उनमे कच्चे माल और आधारिक सरचनाओ से सबधित उद्यमो तथा वैज्ञानिक शोध सस्थाओ का भी निर्माण किया जाता है। इन उल्लिखित सगठनो के अलावा सोवियत पक्ष ने ड्रिलिंग टेक्नोलाजी अनुसधान सस्थान (देहरादून) और तेल क्षेत्र दोहन सस्थान (अहमदाबाद) की स्थापना मे सक्रिय भाग लिया। बहुत-से उत्पादन और अनुसधान सस्थान अग्रणी केंद्र बन गये हैं जो सबद्ध शाखाओ का आधुनिक वैज्ञानिक-तकनीकी स्तर पर विकास सुनिश्चित करते है।

बाहरी आर्थिक सपर्को के एक अलग क्षेत्र के रूप म सोवियत भारत वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग आठवे दशक के आरभ मे गठित हुआ था और वह १९७२ मे विज्ञान तथा तकनीक क क्षेत्र मे पहला अतसरकारी समझौता सपन्न होन के उपरात खास तेजी से बढने लगा।

१९७२ म स्थापित अंतर्सरकारी आर्थिक और वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग आयोग के अतर्गत विज्ञान और तकनीक तथा नियोजन ग्रुप कायम हुए जो सबद्ध वैज्ञानिक सगठनो द्वारा निर्धारित कार्यक्रमो पर अमल करने लगे। उनकी पूर्ति पर ग्रुपो म विचार होता है और सुझावो को आयोग के विचारार्थ पेश किया जाता है।

इधर कुछ समय से दो पक्षों के बीच वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग संबंधी अन्य कतिपय समझौते भी हुए जिनमें सम्मिलित भूकंपीय अनुसंधान से लेकर परमाणु ऊर्जा के शांतिमय उपयोग तथा अंतरिक्ष खोज तक विविध क्षेत्रों में सहयोग का प्रावधान किया गया है।

उदाहरण के लिए अक्तूबर १९७२ में संपन्न अनुबंध के अनुसार जिन समस्याओं पर संयुक्त रूप से कार्य करना आवश्यक माना गया, उनमें मशीनों और मापन उपकरणों को उष्ण जलवायु के अनुकूल बनाना, उद्योग चुंबकीय द्रव गतिकी जल व्यवस्था महीन ऊन वाले पशुओं का पालन सूरजमुखी की खेती नयी सकर की भेडों का प्रजनन, आदि शामिल है।

किंतु सहयोग के सबसे प्रभावकारी परिणाम अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में उपलब्ध हुए है। दोनों देशों के वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों के कार्य की बदौलत तीन भारतीय उपग्रह छोडे गये और सम्मिलित अंतरिक्ष उडान भी भरी गयी है। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में सहयोग दीर्घकालिक अंतर्सरकारी संधियों के अनुसार होता है।

विज्ञानसम्मत नियोजन प्रणाली की स्थापना का भारतीय अर्थ व्यवस्था के सफल विकास के लिए विशेष महत्व रहा है। नियोजन क्षेत्र में सहयोग जो सोवियत संघ की राजकीय योजना समिति और भारत के योजना आयोग के बीच संपन्न अनुबंधों के अनुसार हो रहा है समस्या के सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक हल में बहुत योगदान कर रहा है।

दीर्घकालिक कार्यक्रम में वैज्ञानिक-तकनीकी संपर्कों के विस्तार को विशेष स्थान दिया गया है।

सोवियत संघ की आर्थिक सहायता भारतीय अर्थव्यवस्था के अंतर्गत राजकीय क्षेत्र की स्थापना और प्रगति का एक महत्वपूर्ण कारक है

राजनीतिक स्वाधीनताप्राप्त विकासमान देश आर्थिक विकास के पथ चुनने के जटिल कार्यभारों का सामना कर रहे है क्योंकि अपना उन्नत अर्थतंत्र खडा करके ही वे सच्ची स्वतंत्रता उपलब्ध कर सकेंगे।

आर्थिक विकास के स्वतंत्र पथ के चयन का एक आदर्श उदाहरण भारत है। आजादी के आरंभिक काल में ही उसने अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन तथा औद्योगीकरण का सूत्रपात कर दिया था।

औद्योगीकरण का मूल उद्देश्य है नव तकनीकी आधार पर उत्पादन की नवीनतम विधियों विज्ञान व तकनीक की उत्कृष्ट उपलब्धियों के प्रयोग के आधार पर समस्त आर्थिक संरचना का पुनर्गठन करना।

स्वभावतः औद्योगीकरण जो आर्थिक आत्मनिर्भरता की प्राप्ति का प्रमुखतम साधन है एक पेचीदा तथा दीर्घकालिक प्रक्रिया है। यह समस्त भीतरी संपदा को अधिकतम मात्रा में जुटाने की अपेक्षा करता है।

व्यापक पैमाने पर औद्योगिक निर्माण राजकीय क्षेत्र में भारी उद्योग की नयी शाखाओं का अभ्युदय उत्पादन साधनों का उत्पादन तथा कृषि पैदावार में संवृद्धि—ये भारत में इस प्रक्रिया की ज्वलंत अभिव्यक्तियां हैं।

चूंकि औद्योगीकरण बड़े भारी प्रतिष्ठानों तथा परियोजनाओं से संबद्ध होता है इसलिए वह विपुल पूंजी निवेश की अपेक्षा करता है जिन्हें केवल भीतरी स्रोतों से उपलब्ध करना प्राय असंभव होता है। तब ऐसा विदेशी साझेदार ढूंढने का प्रश्न उठता है, जो एक विकासमान देश में आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था खड़ी करने में रुचि रखता हो।

भारत और कालांतर में अन्य बहुत-से युवा राज्यों के जिन्होंने स्वतंत्र विकास का पथ अपनाया, ऐसे साझेदार सोवियत संघ और दूसरे समाजवादी देश बने। छठे दशक के मध्य से सोवियत संघ अर्थतंत्र की मूल शाखाओं में अनेक आधुनिक औद्योगिक और दूसरी किस्म के प्रतिष्ठान स्थापित करने में भारत की आर्थिक तथा तकनीकी सहायता करता आ रहा है।

कई भारतीय जननेताओं, राजनेताओं तथा अर्थशास्त्रियों की राय में देश के राजकीय क्षेत्र की स्थापना और दृढ़ीकरण बड़ी हद तक सोवियत भारत आर्थिक सहयोग की देन है।

सोवियत भारत आर्थिक सहयोग— नयी अतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना विषयक समस्या के हल मे वास्तविक योगदान

विश्वव्यापी आर्थिक सबधो की वर्तमान परिस्थितियो मे नयी विश्व आर्थिक व्यवस्था की स्थापना के लिए किये जानेवाले प्रयास अतर्राष्ट्रीय जीवन का एक प्रमुखतम कारक है।

सयुक्त राष्ट्र सघ की महासभा ने मई १९७४ मे नयी विश्व आर्थिक व्यवस्था की स्थापना विषयक जो घोषणापत्र स्वीकृत किया था, वह अतर्राज्यीय सबधो की विद्यमान प्रणाली के स्थान पर जो असमानता उन्नत पूजीवादी देशो के प्रभुत्व और विकासमान देशो की उन पर आश्रितता पर कायम है, न्याय सप्रभुता सपन्न समानता एकसमान हितो तथा सभी देशो के सहयोग पर—उनकी सामाजिक-आर्थिक प्रणालियो मे भेद किये बगैर—आधारित नयी व्यवस्था की प्रतिस्थापना की पूर्वकल्पना करता है। उसका ध्येय न्याय और सहयोगी देशो के पारस्परिक आदरभाव पर आधारित आर्थिक सहयोग का विस्तार सुनिश्चित करना है ताकि पृथ्वी की सपदा का सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए चौमुखी उपयोग किया जा सके।

सोवियत सघ और दूसरे समाजवादी देश नयी आर्थिक व्यवस्था लागू करने की विकासमान राज्यो की माग का समर्थन करते हैं और इससे सबद्ध प्रश्नो के हल मे अपने व्यवहार के जरिये योग देते है।

समाजवादी देशो के बीच आर्थिक सहयोग का अनुभव इस बात का साक्षी है कि आर्थिक सबधो का समानाधिकार और परस्पर लाभकर सहयोग के आधार पर पुनर्गठन सभव है तथा यह परस्पर सहयोग करनेवाले देशो के लिए बहुत कल्याणकारी सिद्ध हुआ है।

समाजवादी देशो का आर्थिक सहयोग विश्व आर्थिक सबधो की समूची प्रणाली को प्रभावित कर रहा है। बहुत-से मुक्तिप्राप्त देश अपनी विदेश आर्थिक नीति निर्धारित करते समय इस समृद्ध अनुभव का सदुपयोग करते है।

दूसरी ओर, विकासमान दुनिया के साथ परस्पर आर्थिक सहयोग बढाने की सोवियत सघ और दूसरे समाजवादी देशो की नीति नयी

विश्व आर्थिक व्यवस्था के सिद्धातो को मूर्त रूप देने मे उनक दृष्टिकोणो म सामीप्य लाती है। विकासमान देशो को दी जानेवाली सोवियत आर्थिक तथा तकनीकी सहायता में उनके आर्थिक आधार की विशिष्टताओ तथा आवश्यकताओ का समुचित ध्यान रखा जाता है। इस सहायता मे मुख्य ध्यान सदैव अर्थतत्र के उत्पादक क्षेत्र राष्ट्रीय कर्मीवृद के प्रशिक्षण की ओर दिया जाता है। इस तरह नयी विश्व आर्थिक व्यवस्था के कार्यक्रम की प्रगतिशील, साम्राज्यवाद विरोधी स्थापनाओ का समर्थन करते हुए समाजवादी देश विकासमान देशो के साथ द्विपक्षीय आर्थिक सबध स्थापित करते हुए उन्हे व्यावहारिक रूप देने के लिए दीर्घकाल से काम करते आ रहे है। विकासमान जगत के एक अग्रणी दश – भारत – के साथ सोवियत सघ का आर्थिक और तकनीकी सहयोग इसका ज्वलत उदाहरण है।

सहयोग की जो बढते-बढते इन दिनो असख्य शाखाओ मे व्याप्त हो चुका है, सपूर्ण अवधि मे सोवियत सघ भारत का अपने खनिज निक्षेपो तथा समस्त आर्थिक कायकलाप पर अपनी सप्रभुसत्ता को सुदृढ बनाने म व्यावहारिक रूप से अत्यत सक्रिय ढग से सहायता देता रहा है। भारतीय अर्थतत्र मे सोवियत सघ कोई सीधा पूजी निवेश नही करता। समस्त निर्मित कल कारखानो पर भारत का ही पूर्ण स्वामित्व है, जबकि सोवियत सगठन केवल रूपाकन निर्माण और सचालन म आवश्यक तकनीकी सहायता प्रदान करते है, जबकि साज-सामान और सामग्री की सप्लाई और तकनीकी डाकुमेटो की तैयारी म भारतीय पक्ष की अधिकतम सभावनाओ का उपयोग किया जाता है।

भारत को रिआयती दरो पर दिये जानवाले ऋणो के भुगतान के एवज मे सोवियत सघ भारत से पारपरिक कृपि उत्पाद एव कच्चे माल खरीदा करता है। सोवियत भारत आर्थिक सहयोग दीर्घकालिक अतर्सरकारी समझौतो के आधार पर होता है और पण्यावर्त का पचवर्षीय व्यापार समझौता से नियमन किया जाता है इस कारण सोवियत सघ को अपने परपरागत मालो का एक विश्वसनीय तथा स्थिर उपभोक्ता के रूप मे देखते हुए भारत अपने निर्यात का लबे अर्से के लिए नियोजन कर सकता है। स्मरण रहे कि सोवियत सघ अनेक भारतीय मालो (मसलन चाय काफी काजू, जूट आदि) का मुख्य आयातक बना हुआ है।

नयी विश्व आर्थिक व्यवस्था की एक मुख्य प्रस्थापना विकासमान देशों के औद्योगीकरण को प्रोत्साहित करने से सबद्ध है। इसके कार्यान्वयन के साधनों में बाहरी सहायता और समुन्नत देशों की मंडी में उनके तैयार माल के आयात में वृद्धि भी शामिल है। साथ ही, "सामान्य तरजीही प्रणाली के विस्तार का और इस आयात पर प्रशुल्केतर बाधाओं को हटाने का प्रश्न भी प्रस्तुत किया गया है। इस बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि सोवियत भारत आर्थिक सहयोग चर्चित समस्या के हल का आदर्श प्रतिमान है।

आर्थिक और तकनीकी सहयोग की भावी दिशाएं तथा रूप

सोवियत भारत आर्थिक और तकनीकी सहयोग के ३० वर्ष से अधिक का इतिहास अनेक विलक्षण परिघटनाओं तथ्यों और तिथियों से भरपूर है।

मई १९८५ में प्रधानमंत्री राजीव गांधी की सोवियत संघ की यात्रा एक ऐसी ही घटना थी जिसके दौरान सन् २००० तक आर्थिक, व्यापारिक और वैज्ञानिक-तकनीकी सहयोग की मुख्य दिशाओं के बारे में समझौते तथा कुछ ठोस प्रतिष्ठानों के संबंध में आर्थिक तथा तकनीकी सहयोग के समझौते पर हस्ताक्षर किये गये थे।

पहला समझौता आधारभूत स्वरूप का है जिसमें दीर्घकालिक और परस्पर लाभदायक सहयोग की दिशाएं एवं रूप निर्दिष्ट किये गये। अर्थव्यवस्था की नाना शाखाओं में नये-नये प्रतिष्ठानों के निर्माण के साथ साथ अत्याधुनिक टेक्नोलाजी के उपयोग उत्पादन और श्रम उत्पादकता में उच्चतर स्तर की प्राप्ति परस्पर स्वीकार्य क्षेत्रों में प्रतिष्ठानों के आधुनिकीकरण और पुनर्निर्माण, राष्ट्रीय तकनीकी अमले के प्रशिक्षण नयी किस्म के उपकरणों और सामग्री के निर्माण टेक्नोलाजिकल प्रक्रियाओं और औद्योगिक अनुसंधान कार्यक्रमों की ओर विशेष ध्यान दिया गया।

यह समझौता ईंधन-ऊर्जा शाखा समेत अर्थव्यवस्था के तात्कालिक कार्यभारों के समाधान की ओर लक्षित है।

अन्य बातों के अलावा उसमें यह प्रावधान किया गया है कि सोवियत

सहायता से निर्मित अथवा उसके डिजायन के साज सामान का उत्पादन करनेवाले भारतीय कारखानो मे, सर्वप्रथम हरिद्वार भारी विद्युत सयन्त्र कारखाने मे निर्मित टर्बाइनो का उपयोग करनेवाले तापबिजलीघरो की कारगरता बढायी जाये उनके लिए आवश्यक पुर्जो की – भारतीय और सोवियत बनावट के – सप्लाई मे वृद्धि की जाये विद्युत सयन्त्रो के रख रखाव और मरम्मत हेतु विशेषीकृत वर्कशाप तथा सगठन कायम किये जाये बिजलीघरो के सचालन और मरम्मत के वास्ते कर्मियो की अधिक व्यापक तैयारी सगठित की जाये और निस्सदेह नयी ऊर्जा परियोजनाओ के निर्माण मे सहयोग बढाया जाये।

इसके अनुसार दोनो देशो के सगठन नयी खानो, खदानो और कोयला सान्द्रण मिलो के निर्माण के साथ-साथ चालू खानो के विस्तार और आधुनिकीकरण मे कोयला क्षेत्रो के उत्खनन हेतु नयी टेक्नोलाजी तथा साज-सामान को व्यवहार मे लाने, कोयले की खुदाई व सान्द्रण के क्षेत्र मे रूपाकन तथा अनुसधान-कार्य बढाने कोयले के लिए भूवैज्ञानिक पूर्वेक्षण, उसके भूगर्भीय गैसीकरण और उसके रासायनिक उद्देश्यो से प्रयोग की नवीनतम विधिया तैयार करने मे भी सयुक्त रूप से कार्य करते रहेगे।

तेल और गैस का साझा सर्वेक्षण विस्तृत पैमाने पर किया जायगा। खाली पडते और कम उत्पादक तेल व गैस कूपो का उत्पादन बढाने के ध्येय से मरम्मत का काम विस्तारित होगा, जिसकी बदौलत कम व्यय से ही निकासी मे वृद्धि कर पाना सभव होगा। तेल भूविज्ञान भूभौतिकी ड्रिलिग और तेल क्षेत्रो को चालू करने मे सोवियत तथा भारतीय वैज्ञानिक और रूपाकन सगठनो का सहयोग अधिक व्यापक होगा।

लौह धातुकर्म के क्षेत्र मे समझौता अत्याधुनिक उपकरणो और विज्ञान एव तकनीक की नवीनतम उपलब्धियो के उपयोग पर आधारित नयी टेक्नोलाजिकल प्रक्रियाओ को व्यवहार मे लाने धातु कारखानो का आधुनिकीकरण और पुनर्निर्माण करने, भिलाई और बोकारो इस्पात कारखानो की कारगरता बढाने तथा उनका विस्तार करने और विशाखापत्तनम मे कारखाने का निर्माण जारी करने की पूर्वकल्पना करता है।

मशीन निर्माण मे सहयोग बढाने की भी योजना है। सोवियत सहायता से निर्मित कारखानो के उत्पादन की मात्रा बढायी जायेगी

नये उत्पादो को तैयार करने मे पारगति पाने, आधुनिकीकरण के जरिये श्रम उत्पादकता एव उपज की गुणवत्ता बढाने, समग्र रूप से कारगरता तथा लाभकारिता बढाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

उपरोक्त पारपरिक क्षेत्रो के साथ-साथ सहयोग के नये रूपो और दिशाओ के विकास को प्रोत्साहन मिलेगा। उनमे सर्वोपरि रूप से उल्लेखनीय *मशीनो और सज्जा के उत्पादन म सहकारिता म वृद्धि*, जिसके लिए परस्पर लाभ उभय पक्षो की सभावनाओ और विज्ञान एव तकनीक की नवीनतम सिद्धियो को ध्यान मे रखा जायगा। समझौते की दूसरी मदो मे शामिल हैं आध्र-प्रदेश मे बाक्साइट ऐलुमिना समुच्चय का निर्माण जिसके उत्पाद प्रतिपूर्ति के तौर पर सोवियत सघ भेजे जायेगे, भारतीय सगठनो की सोवियत सघ म नागरिक तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानो के निर्माण मे शिरकत, जो सहयोग का नया और रोचक रूप है, तथा उभय पक्षो की सहमति से अन्य क्षेत्रो मे भी सहयोग।

समझौते मे आगामी वर्षो मे अर्थव्यवस्था की अलग-अलग शाखाओ म सहयोग के दीर्घकालिक कार्यक्रम निरूपित करने का प्रावधान है जिनके आधार पर आगे चलकर आर्थिक, व्यापारिक और वैज्ञानिक तकनीकी सहयोग का एकीभूत दीर्घकालिक कार्यक्रम तैयार किया जायेगा।

दूसरा समझौता भारत मे कुछ नये विशाल प्रतिष्ठानो के निर्माण की पूर्वकल्पना करता है। इनम आर्थिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण एक परियोजना बिहार क कहलगाव मे बननेवाला ८४० मेगावाट तापबिजलीघर है।

तेल उद्योग के विकास के क्षेत्र म यह समझौता भारत मे हाइड्रोकार्बनिक खनिज भडारो की खोज की गति त्वरित करने के ध्येय से भूवैज्ञानिक और सर्वेक्षण एव ड्रिलिग कार्य के प्रति नया रुख निर्धारित करता है। इस ध्येय की पूर्ति के लिए समझौता दो क्षेत्रो म – उत्तरी खभात (गुजरात) और कावेरी (तमिलनाडु) – सर्वतोमुखी कार्यो की पूर्वकल्पना करता है, यानि सोवियत सगठन इन क्षेत्रो म समस्त आवश्यक भूवैज्ञानिक तथा भूभौतिक कार्य करेगे उपलब्ध तथ्य-आकडो का अध्ययन करेगे और उन्हे ससाधित करेगे, पूर्वेक्षण ड्रिलिग करेगे और तेल क्षेत्रो का पता लगने की सूरत मे उनका रूपाकन एव उनका निर्माण करेगे। तेल उद्योग म यह सहयोग का मूलत नया रूप होगा।

कोयला उद्योग के विकास की योजना मे समझौते में झरिया कोयला क्षेत्र के सेक्शन ५ मे साद्रण मिलो समेत १ करोड टन वार्षिक उत्पादन की खदान सिगरौली की एक-एक करोड की मोहर और खडिया कोयला खदाने झरिया म साद्रण मिलो सहित २५ लाख टन कोक कोयले की मीतानाल खान के निर्माण तथा पाथरडीह कोयला साद्रण मिल के पुनर्निर्माण म सहयोग का प्रावधान किया गया है। देश की अपनी प्रोजेक्ट-रूपाकन सेवा तथा अनुभव के विस्तार के उद्देश्य म कोयला साद्रण मिल रूपाकन सस्थान और राची स्थित कोयला उद्यम नियोजन एव रूपाकन कद्रीय सस्थान के अतर्गत रूपाकन विभाग की स्थापनार्थ सयुक्त कार्य जारी रहेगा।

समझौते म पूर्वनिर्दिष्ट प्रतिष्ठानो की यह सूची कोई अतिम नही है— भारतीय पक्ष की इच्छा और आवश्यकताओ को ध्यान म रखकर इसमे परिवर्तन किये जा सकते है।

समझौते के अनुसार उपरोक्त प्रतिष्ठानो के निर्माण हेतु सोवियत पक्ष भारत को ऋण प्रदान करेगा। यह ध्यान देने योग्य है कि ऋण का भुगतान दुर्लभ मुद्रा मे नही अपितु चालू सोवियत भारत व्यापार अनुबध म तय की गयी शर्तों पर भारतीय माल के जरिये किया जायेगा जोकि परस्पर पण्यावर्त के आगे विकास को उत्प्रेरित करने मे सहायक होगा।

प्रधानमत्री राजीव गाधी के सम्मान म आयोजित प्रीतिभोज मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति के महासचिव मिखाईल गोर्बाचोव ने कहा 'वर्ष और दशाब्दिया बीतती जा रही है हमारे देशो मे पीढिया बदलती जा रही है किंतु सोवियत सघ और भारत के बीच मैत्री एवं सहयोग के सबध ऊर्ध्वोमुख दिशा म विकसित होते जा रहे है। इसका कारण यह है कि वे समानाधिकार और परस्पर आदरभाव पर अवस्थित हैं और वर्तमान काल की मूलगामी समस्याओ के प्रति उनके दृष्टिकोण एकसमान या एक दूसरे के समीप है।'

सोवियत सघ की मत्रिपरिषद के अध्यक्ष न० इ० रिज्कोव ने सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की २७ वी काग्रेस के सम्मुख प्रस्तुत रिपोर्ट मे कहा "सोवियत सघ एशिया, अफीका और लैटिन अमरीका के देशो के साथ आगे भी सहयोग करता रहेगा। इन राज्यो के साथ हमारा बहुमुखी सहयोग उनकी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के निर्माण और विकास औपनिवेशिक विरासत को पार पाने तथा आर्थिक व सामाजिक प्रगति

के मार्ग पर अग्रसरण म सहायक है। भारत सहित अनेक दूसरे राज्यो के साथ सोवियत सघ के टिकाऊ और दीर्घकालिक सबध कायम हैं, जो अधिकाधिक परस्पर लाभकारी बनते जा रहे हैं। विकासमान देशो क समर्थन की इस नीति को जो अतराष्ट्रीय आर्थिक सबधो के न्यायी, जनवादी आधार पर पुनर्गठन का एक महती कारक बन गयी है हम आगे भी जारी रखेगे '

अतरिक्ष के अध्ययन मे सहयोग

नवबर १९६१ मे धरती के प्रथम अतरिक्ष-नाविक यूरी गगारिन अतिथि क नाते भारत गय थे। दिल्ली मे आयोजित सभा मे उन्होंने कहा ' मुझे विशेष रूप स बच्चो, नूतन भारत के भावी निर्माताओ का अभिनदन करन उनके लिए पढाई लिखाई मे सफलता, सुस्वास्थ्य, उन्नति और सुख चैन की कामना करन की अनुमति दीजिये। उनम शायद एसे लडके-लडकिया कम नही है, जो अतरिक्ष उडान के सपने देख रहे हो। मुझे इसका पूरा विश्वास है कि वह दिन आयगा, जब अतरिक्ष नाविको का परिवार भारत गणराज्य के नागरिक से अनुपूरित होगा।'

वह दिन आया। ३ अप्रैल १९८४ को सोवियत यान 'सोयूज न दो सोवियत नागरिको और भारतीय नागरिक राकेश शर्मा को लकर अतरिक्ष की ओर उडान भरी। 'सल्यूत' स्टेशन स जुडन पर व सप्ताह भर पृथ्वी के कक्ष की परिक्रमा करते रहे और उडान-कार्यक्रम पूरा करके धरती पर सकुशल लौट आये।

उस सभा म गगारिन द्वारा की गयी भविष्यवाणी साकार हुई। आलकारिक भाषा म नानारूपी सोवियत भारत सहयोग वह प्रक्षेपण स्थल सिद्ध हुआ, जिसने भारतीय नागरिक को अतरिक्ष म पहुचा दिया।

सितबर १९८२ मे भारत के दूत राकेश शर्मा और रवीश मल्होत्रा मास्को के निकट स्थित ज्वेज्द्नीय् गोरोदोक (तारा नगरी) पहुचे थे और उनकी उडान की तैयारी शुरू हो गयी--परिश्रमपूर्ण, कठिन परतु रोचक।

प्रतीत होता है कि कुछ अन्य देशो के प्रतिनिधियो की अपेक्षा, जो नगरी म इस तरह के काम को पहले पूरा कर चुके थ, भारतीयो को यह काम जरा आसान लगा। बात महज यह नही थी कि सैनिक

विमान-चालक राकेश शर्मा और रवीश मल्होत्रा भारस्थिति और उत्तम ऊचाई के आदी थे, या तब तक अतरिक्ष-नाविक प्रशिक्षण केंद्र म दूसरे देशवासियो के साथ उडाना की तैयारी का विपुल अनुभव सचित कर चुके थे बल्कि बात यह भी थी कि इन भारतीय प्रशिक्षार्थियो ने यह काम शून्य से आरभ नही किया था – उनके आगमन तक अतरिक्ष खोज मे सोवियत भारत सहयोग की जड गहरी जम चुकी थी।

इसका समारभ १९६३ म अतर्राष्ट्रीय प्रक्षेपण-स्थल थुम्बा (केरल) म हुआ था जहा राकेटीय टोह विधि म धरती के वायुमडल की ऊपरी परतो का सयुक्त रूप से अन्वेषण किया गया। भारत और दूसरे देशो के वैज्ञानिको के साथ सोवियत विशेषज्ञो ने इस प्रयोग म भाग लिया। प्रयोग के समय सोवियत सघ म बने म १०० से अधिक नाना प्रकार के मौसमी राकेट छोडे गये। इस विधि म ऊपरी वायुमडल की ताप और वायु सबधी अवस्था का अध्ययन किया जाता है। सोवियत राकेटो ने हिंद महासागर के ऊपर वायुमडल तथा मानसूनो के आवर्तन सबधी बड़े उपयोगी और रोचक तथ्य इकट्ठे करना सभव बनाया। सोवियत और भारतीय विशेषज्ञ सयुक्त अवलोकन के परिणामो का अनुसधान कार्य और व्यवहार म तथा मौसम के अधिक यथा-तथ्य पूर्वानुमान के लिए उपयोग कर रहे हैं।

दोनो देशो के वैज्ञानिक अन्य अतर्राष्ट्रीय प्रयोगो म भी हिस्सा लिया करते थे। भारत-सोवियत प्रयोग 'इस्मेक्स ७३' मानसूनो के अध्ययन मे बहुत प्रभावी साबित हुआ। १९७९ म दक्षिण एशिया म मानसून के अध्ययन हेतु प्रवर्तित 'मोनेक्स ७९' अतर्राष्ट्रीय अनुसधान कार्यक्रम की पूर्ति के फलस्वरूप महत्वपूर्ण सूचनाए उपलब्ध हुई।

१९७६ मे सोवियत सघ की पहल से अतर्राष्ट्रीय समुद्री स्पुतनिक सचार समझौता – 'इनमैरसाट' – लागू किया गया। भारत और सोवियत सघ इसके सदस्य बने। १९७७ से १९८१ तक भारतीय उत्तुग गुब्बारो म लगे सोवियत गामा-टेलीस्कोपो के जरिये, जो भारत के भूचुबकीय विषुवत्वृत्त के क्षेत्र मे छोडे जाते थे गामाखगोलविज्ञान म सयुक्त अनुसधान किया जाता रहा। सर्वेक्षण से दिलचस्प वैज्ञानिक परिणाम मिले।

कवालुलु स्थित सर्वेक्षण स्टेशन के स्थलीय प्रकाशिक यत्रो की सहायता से कृत्रिम उपग्रहो का प्रेक्षण करने के कार्यक्रम १९७५ मे नियमित रूप

से पूरे किये जाते रहे है। इस प्रयोजन से सोवियत सघ ने स्वचालित फोटो कैमरे और लेसर दूरी मापक यत्र और भारत ने इमारत तथा सहायक उपकरण सप्लाई किये।

प्रसगत, १९७२ मे सोवियत सघ ने 'लुना १६' और 'लुना २० स्वचालित स्टेशनो द्वारा लायी गयी चद्रमा की मिट्टी का एक अश भारत के हवाले किया था।

यह था अतरिक्ष खोज म हमारे सपर्को का पूर्व इतिहास, जबकि उनका इतिहास सोवियत प्रक्षेपण-स्थल पर सोवियत राकेटो स भारतीय कृत्रिम उपग्रहो के छोडे जाने के साथ आरभ हुआ।

भारतीय अतरिक्ष कार्यक्रम के प्रणता विक्रम साराभाई ने कहा था कि हम चद्रमा अथवा ग्रहो के उपयोग या समानव अतरिक्ष उडाना के मामले मे आर्थिक दृष्टि से अग्रणी देशो के साथ प्रतियोगिता के काल्पनिक लक्ष्य अपने सामने नही रख रहे है। किंतु हमे पूरा विश्वास है कि यदि सयुक्त राष्ट्र सघ मे हम एक सशक्त राष्ट्र की भूमिका निभानी है, तो हमे अपन देश म मानव और समाज की मौजूदा समस्याए निबटाने के हेतु अत्याधुनिक टेक्नोलाजी के प्रयोग म किसी से भी पीछे नही रहना चाहिए।

साराभाई की प्रखर बुद्धि, ऊर्जस्विता और कर्मठता ही वह शक्ति बनी, जिसने भारत मे अतरिक्ष अध्ययन को व्यावहारिक रूप दिया। यह शक्ति जनता की वह रचनात्मक प्रतिभा है, जिसने सभ्यता की नाना आश्चर्यजनक उपलब्धिया ससार को अर्पित कर मानव सज्ञान भडार मे अमूल्य योग दिया पुराणो महाकाव्यो के नायको को अतरिक्ष जगत म बसाया। किंतु साराभाई को और भी पराक्रम की आवश्यकता पडी, ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि भारत खुद उपग्रह बना सकता है।

– क्या अमरीकी सहायता पर भरोसा है? – उनसे पूछा जाता था।

– नही हम सोवियत सघ स अनुरोध करगे – वह उत्तर देते थे – हम निरा उपग्रह नही, अपितु अतरिक्ष राकेटो पर काम के अनुभव की उस अनुभव की आवश्यकता है जो अपन उपग्रह बनान मे सहायक हो। ऐसे काम के परिणामस्वरूप भारत को अतरिक्ष के अनुसधान करने और उसमे पारगति पान के क्षेत्र म अपने विशेषज्ञ उपलब्ध होग। इस तरह की सहायता हम केवल रूसी ? सकते है

उनका कहना सच निकला है। अमरीकियो ने तो बने-बनाये उपकरणो का प्रयोग करने का सुभाव दिया। ऐसे रवैये म व्यापार ज्यादा और विज्ञान कम था। इस सूरत मे भारत अतरिक्ष अध्ययन मे निरतर पिछडा ही नही रहता, बल्कि इस क्षेत्र मे आत्मनिर्भरता पाने से भी वचित रह जाता।

आज जब देश अपन अतरिक्ष अड्डे से ही अपन बनाये उपग्रहो को अपने ही राकेटो से छोडने लगा है, हम स्पष्टत देखते हैं कि सारा भाई और वे सब सहकर्मी कितने सही थे, जिन्होंने उनके साथ ही भारत के अतरिक्ष कार्यक्रम का समारभ किया था।

भारत का अतरिक्षीय अग्रदूत 'आर्यभट्ट सोवियत अड्डे स सोवियत वाहक राकेट के सहारे १९ अप्रैल, १९७५ को याने इस विषय मे समझौता सपन्न किये जान के तीन साल बाद प्रक्षेपित किया गया था। आजकल, जब उपग्रहो का छोडा जाना रोजमर्रा की बात हो गयी है, तीन साल की अवधि बडी लबी लग सकती है। परन्तु भारतीय वैज्ञानिको, रूपाकनकारो, तकनीशियनो और श्रमिको के लिए उपग्रह पर प्रत्यक्ष कार्य के ये तीन वर्ष आधुनिक टेक्नोलाजी के स्तर पर पहुचने मे तीनवर्षीय क्रातिकारी छलाग के वर्ष थे।

आर्यभट्ट' की श्रेष्ठता आशातीत सिद्ध हुई। वह पूर्वनियत काल से अधिक समय तक परिक्रमा करता रहा और उसने वैज्ञानिको को आवश्यक जानकारी सौपी। पर मुख्य बात केवल यही न थी।

उपग्रह के डिजाइनर प्रोफेसर यू० आर० राव ने 'आर्यभट्ट'' के प्रयोग के परिणामो की व्याख्या करते हुए कहा कि 'आर्यभट्ट' का प्रक्षेपण एव सफल उडान अतरिक्ष खोज म भारत-सोवियत सहयोग की प्रगति म एक लबा डग सिद्ध हुआ है। इससे भावी सम्मिलित खोजो की नयी व्यापक सभावनाए प्रकट हो गयी। हमारे लिए उपग्रह का अपरिमित महत्व रहा है। यह अतरिक्षीय टेक्नोलाजी मे भारत की भव्य उपलब्धि है। अब हम स्वय ही अतरिक्ष प्रणालियो का रूपाकन एव परीक्षण करने मे समर्थ है। यही नही, मुख्य बात यह है कि वैज्ञानिको का युवा ध्येय के प्रति निष्ठावान दल जन्मा है, जो अब कोई भी कार्यभार पूरा कर सकता है।

सचमुच, 'आर्यभट्ट' के जो सोवियत सघ से आयातित कतिपय प्रणालियो को छोडकर भारतीय वैज्ञानिको तथा विशेषज्ञो के हाथो

से ही बना था छोडे जाने के फलस्वरूप एक महत्वपूर्ण काम – नवीनतम अतरिक्षीय तकनीक एव टेक्नोलाजी मे पारगति की प्राप्ति का काम – पूरा हो गया। पर यह तो अभी श्रीगणेश ही था। कार्य-सूची म मुख्य कार्यभार निर्दिष्ट किया गया था और यह था अतरिक्षीय तकनीक का तात्कालिक व्यावहारिक कार्यो को हल करन के लिए उपयोग में लाना। यह कार्य 'भास्कर-१' को पूरा करना था।

वह भी सोवियत धरती से ७ जून, १९७९ को अतरिक्ष मे छोडा गया। वह 'आर्यभट्ट' से काफी ज्यादा भारी ही नही, वरन पूर्णत एक नये प्रकार का अतरिक्षीय उपस्कर भी था। सर्वप्रथम उसका प्रायोगिक महत्व था। दो टेलीविजन कैमरो और तीन सूक्ष्मतरगीय रेडियोमीटरो से सज्जित यह उपग्रह एक प्रेक्षक अनुसधानकर्ता उपग्रह ही था। उसने देश की खनिज सपदा का पता लगान म मदद दी। टेली कैमरो ने पर्वतमालाओ नदी-झीलो, खेतो, वनो तथा रेगिस्तानो के चित्र प्रेषित किये। इसकी बदौलत मानसूनो की उत्पत्ति का पता लगाना और चक्रवातो एव आधियो के शुरू होने क बारे मे पूर्वानुमान लगाना अधिक सुगम बन गया। उदाहरण के लिए, हिमनदो के अतरिक्ष से खीचे जानेवाले चित्रो की सहायता से उनकी क्षमता को निर्धारित करना और इस बात का पहले से पता लगाना सभव हो सकता है कि बर्फ पिघलने पर कितना पानी मिलेगा। दूसरी ओर, शिलाश्रेणियो याने भूपपटी के विघटित स्थलो के प्रेषित चित्र खनिज निक्षेपो की अधिक सही-सही खोज करने म सहायक होते है, कारण यह है कि, वैज्ञानिको के मतानुसार यही खनिज भडारो के सर्वाधिक सभाव्य स्थल हुआ करते हैं।

इस उपग्रह के लिए सोवियत सघ ने कई महत्वपूर्ण अवयव सप्लाई किये जैसे सौर फलक रासायनिक बैटरिया स्थिरीकरण क तत्व और चुबकीय टेप रिकार्डर।

२० नवबर १९८१ को सोवियत सघ की शिरकत के साथ तीसरा उपग्रह भास्कर-२ छोडा गया।

उपग्रहो स प्राप्त फोटो और अन्य वैज्ञानिक सूचनाओ ने प्राकृतिक प्रक्रियाओं को उपमहाद्वीप क मौसम वनस्पति मिट्टी की बनावट, जन वितरण आदि से सबधित असख्य बातो को बेहतर ढग स जानने समझने म भारतीय वैज्ञानिको और विशेषज्ञो की मदद की।

यह जानकारी भी कम महत्वपूर्ण नही थी कि इन उपग्रहो के महत्वपूर्ण कार्य ने भारत द्वारा अतरिक्ष अध्ययन की उपयोगिता और आवश्यकता को स्पष्टत प्रमाणित कर दिया।

किंतु दूसरे उदाहरण भी थे। 'इनसैट उपग्रह जो भारत द्वारा रूपांकित और राष्ट्रीय सचार प्रणाली को उत्कृष्ट बनाने के लिए परिलक्षित सर्वाधिक महगा तथा सजटिल उपकरण था, फोर्ड एयरस्पेस' नामक अमरीकी फर्म मे तैयार किया गया था। उसे १० अप्रैल १६८२ को पृथ्वी के कक्ष मे पहुचाया गया, किंतु चद माह बाद ही उसके साथ सचार-सपर्क टूट गया और अतरिक्ष के माध्यम से टेलीविजन पुन प्रसारण क लिए उसे उपयोग म लाने का काम ठप्प हो गया।

उन दिनो भारतीय अखबारो ने लिखा था कि उपग्रह की जुडाई मे भूलो या तोड फोड की सभावना तक से इनकार नही किया जा सकता। उस समय भारत के साप्ताहिक 'ब्लिट्स' ने प्रश्न उठाया था क्या 'इनसैट' मर गया अथवा मारा गया? जैसा कि प्रेस एशिया इटरनेशनल न विश्वसनीय स्रोतो का हवाला देते हुए सूचित किया, भारत वाशिगटन की उस प्रच्छन्न नीति का शिकार हुआ है, जिसका लक्ष्य दूसरे देशो को अतरिक्षीय सचार साधनो से वचित करना है। एजेसी के अनुसार, ह्वाइट हाउस और पेटागन सचार साधनो, विशेषकर अतरिक्षीय सचार साधनो को एक ऐमा प्रमुखतम क्षेत्र मानते हैं, जहा सयुक्त राज्य अमरीका का "अधिकतम एकाधिकार वाछनीय है'। नाटो गुट मे अपने साझेदारो द्वारा अपने पास अतरिक्षीय सचार साधन रखे जाने तथा उनका आधुनिकीकरण किये जाने की राह मे भी अमरीका विभिन्न बाधाए खडा करता है।

जहा तक भारत का सबध है, उसे उन देशो की सूची मे दर्ज किया गया है, जिनके साथ इस क्षेत्र मे सहयोग करना "अवाछनीय' है। इसी एजेसी न इस पर जोर दिया कि इनसैट के असफल प्रयोग का दोष उसका सचालन करनेवाले भारतीय वैज्ञानिको के ही मत्थे मढने का प्रयास औचित्यहीन है। उपग्रह मे जिसके लिए भारी राशि चुकायी गयी थी, कई दोष थे।

भारतीय सूचना और प्रसारण विभाग न 'इनसैट के ठप्प होने पर सोवियत सचार उपग्रह 'स्तात्सिओनार' को किराये पर लेने का निर्णय किया।

भारत द्वारा अंतरिक्ष खोज में भिन्न भिन्न देशों के संचित अनुभव और सहायता से लाभ उठाने की आकांक्षा पूर्णत स्वाभाविक है। निस्संदेह अंतरिक्ष विजय जैसे विकट कार्य में विफलताएं अपरिहार्य हैं पर बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि सहयोग को किस तरह समझा जाता है और उसके प्रति क्या रुख अपनाया जाता है। यह सुविदित है कि पश्चिम में ऐसे लोग कम नहीं हैं, जो अंतरिक्ष के प्रति भारत के झुकाव को नहीं समझना चाहते। रायटर एजेंसी ने तो एक बार व्यंग्यपूर्वक लिखा कि 'भारत ने जिसके परिवहन का मुख्य साधन बैलगाडी है अंतरिक्ष क्लब में अपना नाम लिखवा लिया है।' किंतु न क्षणिक विफलताएं और न संशयवाद ही भारत को अपने चुने पथ से भटका सकते हैं। देश में अधिकाधिक लोग समझने लगे हैं कि अंतरिक्ष कार्यक्रम देश की समस्त प्रगति का एक प्रमुख साधन है। अपने उपग्रहों का निर्माण करते हुए और अंतरिक्ष तकनीक में पारंगत होते हुए देश विज्ञान और तकनीक की नाना शाखाओं का स्तर आधुनिक विश्व स्तर पर पहुंचाता जा रहा है। ऐसे प्रयास किये बिना पिछड़ेपन का खात्मा कभी नहीं होगा। अंतरिक्ष कार्यक्रम को कार्यरूप देनेवाले भारतीय वैज्ञानिकों की इस मान्यता को उनके सोवियत सहयोगी भली भांति समझते हैं। यह भी जनगण की भलाई के वास्ते अंतरिक्ष के उपयोग में दो देशों के कारगर सहयोग का एक कारण है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के तत्कालीन संचालक प्रोफेसर सतीश धवन के शब्दों में, 'अंतरिक्ष अनुसंधान में भारत-सोवियत सहयोग भारत के लिए अत्यंत फलप्रद है। सोवियत संघ से प्राप्त सहायता ने आत्मनिर्भरता पाने में भारत के प्रयासों को सबल बनाया और अंतरिक्षीय तकनीक का प्रगति के हेतु सदुपयोग करने के राष्ट्रीय ध्येय की प्राप्ति की ओर लक्षित भारतीय कार्यक्रम पूरा करने में योग दिया है।"

श्रीमती इंदिरा गांधी ने उन सब आलोचकों को, जिनके विचार में भारत अंतरिक्ष अनुसंधान पर धन व्यय करने की स्थिति में नहीं है दो टूक और सुंदर ढंग से उत्तर लक्षित किया कि मर्म की बात व्यय नहीं है। इसीलिए कि ऐसे अनुसंधान का उद्देश्य देश की सर्वाधिक तात्कालिक समस्याओं को हल करने में सहायता देना है। उनके शब्दों में इस भांति के कार्यक्रमों पर व्यय की बच्चों की शिक्षा पर व्यय से

तुलना की जा सकती है जिसकी कई गुना अधिक मात्रा मे प्रतिपूर्ति होती है। भारत की महान पुत्री का नाम अतरिक्ष मे उनकी मातृभूमि के प्रथम डगो से अभिन्न रूप से जुडा हुआ है। प्रथम उपग्रह और एक भारतीय द्वारा अतरिक्ष की प्रथम उडान उनके यशस्वी नाम के भव्य स्मारक है।

पहली सयुक्त सोवियत भारत समानव अतरिक्ष उडान की चर्चा १९८० के आरभ मे शुरू हुई थी। अनेक देशो मे इस सूचना को सनसनीखेज माना गया। लेकिन उन लोगो के लिए जिन्होंने 'आर्यभट्ट और 'भास्कर' के निर्माण तथा प्रक्षेपण मे भाग लिया था, यह सनसनीखेज नही, अपितु अतरिक्ष खोज में दो देशों का सहयोग बढाने की दिशा मे एक तर्कसगत एव नियमसगत डग ही था।

उस समय ससद को सबोधित करते हुए श्रीमती इदिरा गाधी ने कहा था कि भारत न सोवियत सघ के प्रस्ताव को उसके वैज्ञानिक मूल्य के कारण ही नही, अपितु इसलिए भी अगीकार किया कि भारतीय नागरिक की अतरिक्ष मे उडान देश की भावी पीढी के लिए एक प्रेरणादायी दृष्टात बनकर रहेगी। भारत की प्रधानमत्री इस तरह भविष्य का अवलोकन कर रही थी।

सोवियत सघ मे, जहा भारत के प्रति अगाध प्रेमभाव है, राकेश शर्मा और रवीश मल्होत्रा का दो आकर्षक तथा साहसी युवको नय भारत के सुयोग्य प्रतिनिधियो, स्वतत्र भारत की हमउम्र पीढी के प्रतिनिधियो के रूप मे स्वागत हुआ। ठीक इस स्वतत्रता न ही राकेश शर्मा और रवीश मल्होत्रा को पख दिये, उन्ह आकाश मे पहुचाया, अतरिक्ष का पथ प्रशस्त किया। अत यह बतान की कोई विशेष आवश्यकता नही है कि भारत के इन अग्रदूतो का सोवियत देश मे, जहा भारत के साथ मैत्री न सही अर्थो मे सर्वजनीन स्वरूप ग्रहण कर लिया है, हर्षोल्लास तथा सदभावना के साथ स्वागत किया गया था।

और यह अत्यत महत्वपूण बात थी। इन भारतीय हवाबाजो को विराट और सजटिल कार्यक्रम अपनाने मे पारगत बनना था। उनके सोवियत मित्रो ने इस बात का पूर्ण ध्यान रखा कि भारत के ये अग्रदूत विशेषकर आरभिक दिनो मे अपने को अजनबी महसूस न करे।

सामान्यतया, तारा नगरी मे प्रशिक्षण की अवधि एक से लेकर दो वर्ष तक की होती है। फासीसी अतरिक्ष-नाविको के मामले मे वह

दो माल जारी रही। इसमे बहुत कुछ भावी अतरिक्ष-नाविको व वैय क्तिक गुणा पर ही नही अपितु उन प्रयोगो एव कार्य के वैविध्य तथा सजटिलता पर भी निर्भर करता है, जो परिश्रमा म पूरे करन पडते हैं। परन्तु अतरिक्ष म काम करने क ध्येय स ही उडाने भरी जाती हैं।

इस प्रसग म सयुक्त सोवियत भारत उडान की तैयारी म बहुत-से लोगो न भाग लिया। बशक उनम दोनो देशो के वे वैज्ञानिक और विशषज्ञ भी अवश्य शामिल थे, जिन्होंने वैज्ञानिक प्रयोगों का कार्यक्रम तैयार किया था। अनेक सयुक्त वार्ताए हुईं और भारत मे इस विषय पर एक सगोष्ठी का आयोजन हुआ। उडान क कायक्रम मे विविध कार्य शामिल थे जैसे एक्स रे खगोलविज्ञान, अतरिक्ष स पृथ्वी की टोह, अतरिक्षीय धातुविज्ञान तथा जीवविज्ञान एव चिकित्सा से सबधित प्रयोग।

उडान के लिए भारतीय हवाबाजो का प्रशिक्षण दो चरणो म हुआ। पहले चरण मे यह सभी अतरिक्ष-नाविको के सामान्य कार्यक्रम के अनुसार था। शिक्षार्थी अतरिक्षविज्ञान के सैद्धातिक मूलतत्वो का ज्ञानार्जन, मुख्य नमूनो के अतरिक्ष यानो और स्टेशनो की बनावट का अध्ययन करते रहे। आम शारीरिक, विशेषीकृत और चिकित्सीय व जीववैज्ञानिक तैयारी होती रही। अतरिक्ष-नाविको की सयुक्त उडान की तैयारी का काम दूसरे चरण म हुआ।

सैद्धातिक पढाई म आधा साल लगा था। राकेश और रवीश ने अतरिक्ष उडानो की गतिकी यान चालन और विकिरण रक्षा तथा यान सचालन प्रणाली के मूलतत्वो का अध्ययन किया। स्वभावत, प्रशिक्षण के इस दौर को विशुद्धत सैद्धातिक दौर केवल शर्ती तौर पर ही कहा जा सकता है। उन्हे शारीरिक व्यायाम और खेलकूद के साथ साथ अभ्यास के लिए उडान भी करनी पडती थी। भारतीय हवाबाज विशेष विमान प्रयोगशालाओ म जिनम थोडे समय के लिए गुरुत्वहीनता कायम की जा सकती है इस परिघटना से परिचय लेकर इसके आदी बनते जा रहे थे।

पढाई बहुत परिश्रमपूर्ण थी। प्रत्येक दिन मिनट मिनट म बटा था। अतिथियो को कोई छूट नही दी जाती थी अपवाद था बस उनके अनुरोध पर एक प्रकार के शारीरिक अभ्यासो के स्थान पर दूसरे प्रकार के अभ्यास लागू करना। उन्हे केवल उडान के लिए ही नही बल्कि उनके अपने देश क प्रति अत्यावश्यक उत्तरदायी एव

कठिन कार्य के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता था।

वर्तमान काल मे अतरिक्षविज्ञान और तक्नीक के क्षेत्र मे प्राप्त उपलब्धिया तथा अतरिक्ष-मडल मे पूरे किये जानेवाले तथा अधिकाधिक सजटिल होते कार्यभार अतरिक्ष-नाविको के उत्कृष्टतम प्रशिक्षण, यान और स्टेशन के बारे मे गहन और ब्योरेवार ज्ञान तथा बहुमुखी, विशिष्ट वैज्ञानिक जानकारी की अपेक्षा कर रहे है। इसका अर्थ यह है कि प्रशिक्षण अधिक कठिन श्रमसाध्य उत्तरदायित्वपूर्ण और रोचक भी बनता जा रहा है।

इस अर्थ मे मल्होत्रा और शर्मा को सम्मान और मान्यता की प्राप्ति स पूर्व अक्षरश कठोर अग्नि-परीक्षाओ से गुजरना पडा।

प्रशिक्षण के दूसरे चरण से पहले प्रत्याशियो को मातृभूमि जाने की छुट्टी मिली थी। हमवतनो ने उनके ध्येय मे गहरी रुचि दिखायी। परतु राकेश और रवीश महज आराम ही नही करते थे, उन्होंने बगलूर स्थित अतरिक्ष अध्ययन केद्र मे उन कतिपय प्रयोगो के कार्यक्रम से गहन परिचय प्राप्त किया था जो उन्हे कक्षीय स्टेशन के परिक्रमा पथ पर पूरे करने थे।

भारतीय समाचारपत्रो ने उनकी स्वदश यात्रा के बारे मे विस्तारपूर्वक लिखा। वे लोकप्रिय बन गय। बहुतो की नजर मे वे साकार होते सपनो के प्रतीक थे। अत उडान के लिए स्वय प्रशिक्षण ही देश की युवा पीढी के लिए प्रेरणादायी उदाहरण बन गया, जिसके समक्ष जनता की भलाई क हेतु अतरिक्ष अनुसधान का भगीरथ काम उपस्थित है।

निस्सदेह, स्वय उडान भारतीय अतरिक्ष कायक्रम के आगे विकास के लिए एक जबर्दस्त प्रेरणादायी शक्ति सिद्ध हुई। आज शर्मा और मल्होत्रा उनके अतरिक्षीय बधुओ यू० मालिशेव और ग० स्त्रेकालोव तथा अतरिक्ष मे उनसे मिलनेवाले कक्षीय यान क कर्मीदल के सदस्यो ल० किज़ीम व० सोलोव्योव और ओ० अत्कोव के नाम सोवियत भारत मैत्री के इतिहास मे सर्वदा के लिए स्वर्णाक्षरो मे अंकित हो गये हैं। सोयूज' के कर्मी सदस्य – मालिशेव शर्मा और स्त्रेकालोव – सोवियत सघ और भारत के उच्चतम पदको से विभूपित किये गये।

उडान का व्यावहारिक महत्व व्यवहारत अपरिमित है। उडान

की समाप्ति पर एक पत्रकार-सम्मेलन में राकेश शर्मा ने 'टेरा' प्रयोग के संबंध में कहा कि इसके दौरान भारत के भूक्षेत्र और हिंद महासागर के अलग अलग भागों का प्रेक्षण किया गया और फोटो खींचे गये। ठीक उसी समय विमानों में भी इन इलाकों के फोटो खींचे जा रहे थे। उपलब्ध सूचना का भिन्न भिन्न कार्यों में उपयोग हो सकेगा, जैसे कृष्य भूमि के मानचित्र तैयार करने में, तटवर्ती क्षेत्र की दशा के निरीक्षण और समुद्रविज्ञान में, वनों, भीतरी जलाशयों तथा खेतों की अवस्था के अध्ययन में। इस कार्य के दौरान हिमालय पर्वतमाला, मरुस्थलों और अर्ध मरुस्थलों जैसे दुर्गम क्षेत्रों के अध्ययन को बहुत महत्व दिया गया, पर्वतों में जल भंडारों का आकलन किया गया और रेगिस्तानों में कृषियोग्य भूखंड निश्चित किये गये।

यह तो मात्र एक मिसाल है। कक्ष की परिक्रमा के दौरान अनेक विविध अनुसंधान-कार्य भी पूरे हुए। यदि उड़ान के व्यावहारिक परिणामों के बारे में कहा जाय, तो भारतीय विद्वानों के अनुमानानुसार अकेले उन प्रयोगों से, जिनमें राकेश शर्मा ने भाग लिया है, देश को ७ अरब रुपये का लाभ हुआ है। इसके अलावा, भारत को उड़ान के समय खींचे गये चित्र भी प्राप्त हुए, जिनका बहुत ज्यादा महत्व है। और वैज्ञानिक प्रयोगों का मूल्य!

निस्संदेह, उड़ान का मूल्य रुपये अथवा रूबल में नहीं कूता जा सकता। सोवियत भारत कर्मीदल की संयुक्त उड़ान के बाद भारत ने अंतरिक्ष क्लब में एक समानाधिकारपूर्ण एवं सम्मानित सदस्य की हैसियत से प्रवेश किया। उड़ान ने अंतरिक्ष के सम्मिलित अनुसंधान को नयी प्रेरणा प्रदान की है। 'लित्सेन्जइन्तोर्ग' नामक सोवियत संगठन और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के बीच संपन्न अनुबंध के अनुसार सोवियत राकेट से भारतीय दूर प्रेक्षण उपग्रह छोड़ा जायेगा। खनिज भंडारों के पूर्वेक्षण तथा उपयोग संबंधी भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के मुख्य भाग की पूर्ति इस प्रकार के ही उपग्रहों से जुड़ी हुई है। उनके जरिये प्राप्त होनेवाली सूचनाओं का कृषि और वन व्यवस्था, मौसम विज्ञान, जलविज्ञान, मानचित्रकारी में, भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, मत्स्य उद्योग तथा विज्ञान एवं अर्थतंत्र की दूसरी शाखाओं में व्यापक उपयोग किया जायगा। इस किस्म के कार्य में उपग्रहों की कारगरता और व्यावहारिक उपयोगिता अत्यधिक है। उदाहरण के लिए, खनिज निक्षेपों

का पता लगाने के लिए 'म० क० फ०-६' बहुउद्देश्यीय कैमरे की मदद से केवल ४ मिनट के दौरान अतरिक्ष मे की जानेवाली फोटोग्राफी भूवैज्ञानिको के लिए इतना काम कर सकती है, जिसे विमानो की सहायता से पूरा करने मे दो साल लगते हैं। आज केवल भारत की ही अर्थव्यवस्था उपग्रहो का निर्माण नही करती, बल्कि स्वय उपग्रह उसकी अर्थव्यवस्था का "निमाण" कर रहे हैं।

भारतीय अतरिक्ष अनुसधान सगठन और सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी के बीच आगामी दशक के लिए निर्धारित सहयोग सबधी समझौते के अनुसार सयुक्त अनुसधान-कार्य भिन्न भिन्न क्षेत्रो मे जारी रहेगा, जैसे खगोलविज्ञान, खगोलभौतिकी मौसमविज्ञान भूभौतिकी अतरिक्ष यान निर्माण टेक्नोलाजी, भू-अध्ययन की विधियो का निरूपण आदि। भविष्य मे अत्यत रोचक कार्य सयुक्त रूप से सपन्न किये जाने हैं, जो नयी पीढी के बहुत-से प्रतिभासपन्न अनुसधानकर्ताओ को अतरिक्ष अध्ययन की ओर आकर्षित करेंगे। यह ज्ञान ऊर्जस्विता एव प्रतिभा के उपयोग के लिए नया विशाल क्षेत्र है। इसी पथ पर अग्रसर होते भारत २१वी सदी मे प्रवेश करेगा।

एक और बात यह है कि भारतीय अतरिक्ष-नाविक की सहभागिता से सपन्न उडान उसके करोडो देशभाइयो के सपनो की पूर्ति थी, अतरिक्ष पथ मे नये डग भरने के लिए, नयी साहसमय कल्पनाओ को साकार बनाने के लिए सशक्त प्रेरणा सिद्ध हुई।

ऐसी योजनाए और सपने वस्तुत विद्यमान है। कई वर्ष पहले, जब आर्यभट्ट' छोडे जाने की तैयारिया हो रही थी, बगलूर अतरिक्ष केद्र म हुई बातचीत बरबस याद आती है। विक्रम साराभाई के शिष्य भी अपने ध्येय के प्रति निष्ठावान ही नही थे, वे स्वय साराभाई की भाति दूर भविष्य मे झाकने उसे निकट लाने के लिए प्रयत्नशील थे। उन दिनो एक युवा सयोजन इजीनियर ने कहा २००० ई० तक अतरिक्ष की खोज विश्वव्यापी स्वरूप ग्रहण कर लेगी और अतरिक्षीय शक्तियो मे हमारा देश उचित स्थान ग्रहण कर लेगा। तब तक अतरिक्षीय टेक्नोलाजी मे हम जबर्दस्त प्रगति कर चुके होंगे हमारे पास अवश्य ही अपने सपर्क-उपग्रह भी होंगे। कौन जाने २००० ई० के आने तक भारत अपने अतरिक्ष-नाविको को चद्रमा पर ही नही अपितु अन्य ग्रहो पर भी उतारने मे समर्थ हो जायेगा।

उन्होने तब जो कुछ कहा था, उसमे से बहुत कुछ वास्तविकता बन चुका है। और कुछ अब तक सपना ही है। लेकिन जब अप्रैन १९७५ मे आर्यभट्ट ने अतरिक्ष की यात्रा शुरू की तो क्या भारतीय नागरिक का अतरिक्ष म प्रवेश ऐसा ही दूर का सपना प्रतीत नही होता था? सयुक्त सोवियत भारतीय अतरिक्ष अभियान की भाति 'आर्यभट्ट' ने कई अन्य योजनाओ की पूर्ति का निकट लाने मे योग दिया था। अतरिक्ष मडल को मानव की सेवा मे लाने की हमारे जनगण की आकाक्षा और परीक्षा की कसौटी पर खरी उतरी मैत्री अतरिक्ष खोज मे नयी सिद्धियो एव सफलताओ की गारटी हैं।

जब प्रथम पृथ्वीवासी, सोवियत नागरिक यूरी गगारिन ने अतरिक्ष मे प्रवेश किया था तो जवाहरलाल नेहरू ने इस परिघटना के महत्व का सार इस तरह प्रस्तुत किया था सोवियत वैज्ञानिको की महानतम उपलब्धि प्राकृतिक शक्तियो के ऊपर मानव की विराट विजय है। जब मानवीय क्षितिज ऐसी सीमाओ तक विस्तारित हो जाते है, तब पृथ्वी नाम के हमारे नन्हे ग्रह पर युद्धो के मसूबे बाधना मूर्खता और सरासर अदूरदर्शिता है। इसलिए इस महान विजय का शाति ध्येय की अपूर्व विजय माना जाना चाहिए।

अतरिक्ष विजय का पथप्रदर्शक सोवियत सघ पहले भी शातिमय अतरिक्ष का अडिग समर्थक, अतरिक्ष मडल के शातिपूर्ण उपयोग के क्षेत्र मे अतर्राष्ट्रीय सहयोग का ध्वजवाहक था और अब भी है। सोवियत सघ की सक्रिय सहभागिता से सपन्न समस्त अतरिक्ष कार्यक्रम इसी ध्येय को समर्पित थे। इनमे 'सोयूज' और 'अपालो' की सयुक्त उडान, इटरकास्मोस कार्यक्रम के अतर्गत समाजवादी देशो के अतरिक्ष नाविको की उडाने और सोवियत फासीसी कर्मीदल की उडान, आदि उल्लेखनीय है।

अतरिक्ष विजय का सपूर्ण सोवियत भारत कार्यक्रम भी शाति-सेवा को अर्पित है। हमारे दोनो देश शातिमय अतरिक्ष के लिए प्रयत्नशील हैं और अतरिक्ष-मडल को कथित 'तारा युद्ध' के अखाडे मे परिवर्तित करने के साम्राज्यवादी शक्तियो के प्रयत्नो के खिलाफ आवाज बुलद कर रहे हैं। अतरिक्ष को शस्त्रास्त्रो का परीक्षण केद्र नही, अपितु प्रगति की प्रयोगशाला, मानवजाति की भलाई हेतु कार्यकलाप का नया असीम क्षेत्र बन जाना चाहिए। सयुक्त सोवियत भारत अतरिक्ष उडान

इसी उदात्त लक्ष्य को अर्पित थी। दो देशो के सपूतो न मैत्री के ध्वज को अतरिक्षीय विस्तार मे फहराया है। उन्होंने मानव के कल्याण शाति ध्येय के हेतु काम किया। अतरिक्षीय मैत्री के दूतो न अतरिक्ष क अग्रदूत यूरी गगारिन के सपने को साकार बना दिया है। प्रथम अतरिक्ष नाविक ने कहा था 'जी चाहता है कि एक दिन मै भिन्न भिन्न जातियो के युवा अतरिक्ष-नाविको के साथ रूसी, भारतीय अमरीकी युवा अतरिक्ष-नाविको के साथ एक अतरिक्ष यान मे उडान भरू। यह शाति पूर्ण, वैज्ञानिक अतरिक्ष यान ही होगा। लेकिन आप भली भाति समझते है कि अभी यह केवल कल्पना भर है। आइय, इसकी मिलकर चेष्टा करते रहे कि यह कल्पना मूर्त रूप धारण करे। वास्तव म क्या हमारी पृथ्वी वह अतरिक्ष यान सदृश नही है जो ब्रह्माड के असीम विस्तार मे उडता चला आ रहा है? यह यान हम सब का ससार क सभी जनगण का है, और इसलिए उसके कर्मीदल को शाति तथा मैत्री क वातावरण मे जीना चाहिए।"

अध्याय ५

दो महान जनगण के आत्मिक सामीप्य के ध्वजवाहक

सोवियत-भारत संबंधों की लाक्षणिकता यह है कि मैत्री और सहयोग दोनों देशों में ऐसी जन-परम्परा बन गये हैं, जिसकी जड़ बहुत गहराई तक पहुंच गयी है। यही उनके संबंधों के अडिग और सतत विकास को काफी हद तक निर्धारित करती है। सचमुच, अंतरंग मैत्री एवं पारस्परिक सहानुभूति की भावनाएं भारतीय और सोवियत जनता की चेतना में गहरे पैठी हुई हैं। यह उस अभिरुचि का भी कारण है जिसे दोनों जनगण एक दूसरे के जीवन, संस्कृति और कला में प्रदर्शित करते हैं। भारत और सोवियत संघ के राजनीतिक संबंधों के ६० वर्षों की अवधि को उचित ही संस्कृति, विज्ञान, कला और शिक्षा के क्षेत्र में परस्पर लाभकारी संपर्कों के द्रुत प्रसार की अवधि कहा जा सकता है।

इन संपर्कों के महत्व का घटाकर आंकना असंभव है, क्योंकि वे दोनों जनगण को एक दूसरे के समीप लाने, परस्पर समझ बढ़ाने, उनका जीवन समृद्धतर बनाने में योग देते हैं।

सांस्कृतिक संपर्कों के विस्तार में सिनेमा बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। करोड़ों सोवियत दर्शकों ने भारतीय सिनकला के नक्षत्रों—विमल राय, राज कपूर, मृणाल सेन, श्याम बेनगल—की फिल्मों से परिचय प्राप्त किया। देश की यथार्थता, उसकी पेचीदगियों तथा समस्याओं का सच्चा वर्णन, साधारण जनों के जीवन-यापन के प्रति सहानुभूति अर्थात भारतीय सिनेकला के उच्च आदर्शों ने उन्हें सोवियत जनों के लिए बोधगम्य बनाया है। १९५४ में सोवियत संघ में आयोजित प्रथम भारतीय फिल्मोत्सव उनमें से बहुतों के लिए 'भारत की खोज' के समान ही था। 'आवारा', 'दो बीघा जमीन', 'राही' और 'बैजू बावरा' जैसी फिल्में अत्यंत लोकप्रिय हुईं और उनका सोत्साह स्वागत

किया गया। तब से भारतीय फिल्मों का सोवियत चित्रपट पर प्रदर्शन एक आम बात हो गयी है। इसमें सोवियत संघ में नियमित रूप से आयोजित फिल्म-समारोहों तथा फिल्म-सप्ताहों की भूमिका कम नहीं है।

दूसरी ओर भारत के स्वतंत्र विकास और सोवियत भारत मैत्रीपूर्ण संबंधों के प्रसार के फलस्वरूप भारतीय दर्शकों को सोवियत सिनेकला की उपलब्धियों तथा विश्व सिनेकला में उसके महत्वपूर्ण योगदान से परिचित होने का भी सुअवसर मिला। भारत में पहले सोवियत फिल्मोत्सव १९५० में बंबई और कलकत्ता में आयोजित हुए थे। उसी साल दिसंबर में लब्धप्रतिष्ठ फिल्म-डाइरेक्टर व० पुदोव्किन और प्रख्यात अभिनेता न० चेकासोव सहित सिनेकलाकारों के एक शिष्टमंडल ने भारत की यात्रा की थी। भारतीय फिल्म उद्योग जनता की संस्कृति एवं कला से सोवियत कलाकारों का यह प्रथम परिचय था। यात्रा के दौरान भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधियों से हुए उनके बहुसंख्य मिलनों ने भारतीय जनता को सोवियत सिनेकला के विकास की मुख्य प्रवृत्तियों को समझने की संभावना प्रदान की।

आगे चलकर भारत में सोवियत फिल्में दिखायी जाने लगीं। उनमें जो सर्वाधिक लोकप्रिय सिद्ध हुईं वे हैं उड़ते हैं सारस' सैनिक की कथा मैनिक का पिता युद्ध और शांति मुक्ति आदि। करोड़ों भारतीय दर्शकगण ने एक सूर समास फिल्म में गहरी रुचि दिखायी। इस फिल्म को १९८५ के दिल्ली विश्व फिल्म-महोत्सव में 'स्वर्ण मयूर' पुरस्कार मिला।

सोवियत और भारतीय सिनेकारों का सहयोग जो दोनों देशों के बीच विविध प्रकार के सांस्कृतिक संपर्कों का अविच्छिन्न भाग बन गया है फलप्रद रूप से विकसित हो रहा है। इसका समारंभ परदेसी (तीन समुद्र पार की यात्रा) फिल्म पर संयुक्त कार्य से हुआ, जिसमें नरगिस और बलराज साहनी जैसे लब्धप्रतिष्ठ कलाकारों तथा सोवियत अभिनेता ओ० स्त्रिजेनोव ने मुख्य भूमिकाएं अदा कीं। इस फिल्म को तैयार करने में प्राप्त सकारात्मक अनुभव दोनों देशों में मेरा नाम जोकर' अली बाबा चालीस चोर' सोहनी महीवाल जैसी लोकप्रिय फिल्मों के संयुक्त निर्माण के फलस्वरूप और विकसित हुआ। प्रतिष्ठित निर्देशक यू० अल्दोखिन और श्याम बेनेगल द्वारा तैयार

की गयी सयुक्त सोवियत भारत डाकुमेटरी फिल्म 'नेहरू' का १९८४ मे प्रदर्शन दोनो देशो के सास्कृतिक जीवन मे एक उल्लेखनीय घटना थी। करोडो दर्शको ने भारतीय जनता के महान सपूत, स्वतत्र भारत के प्रधानमत्री के तूफानी घटनाओ से परिपूर्ण जीवन-पथ को चित्रपट पर पहली बार देखा।

सोवियत सिनेकलाकार अपने भारतीय सहकर्मियो के प्रयासो का ऊचा मूल्याकन करते हैं। उज्बेक निर्देशक लतीफ फैजीयेव ने, जिन्हें भारत के साथ सयुक्त फिल्म बनाने मे हिस्सा लेने का अवसर मिला, 'सोवियत लैंड' को एक भेटवार्ता मे कहा 'हमारे दो देशो के सिने कार्यकर्ताओ के बीच सहयोग बहुत सफलतापूर्वक विकसित हो रहा है। भारतीय सिनेमा मौलिक है, उसका सगीत, मानवता मे भरपूर अतर्य और कलाकारो का प्रभावशाली अभिनय दर्शको को मोहित करते हैं। हमारे सृजनात्मक सूत्र मेरी दृष्टि मे स्वाभाविक और आवश्यक, दोनो हैं।"*

भारतीय लेखको और नाटककारो की रचनाओ का रगमच पर प्रस्तुतीकरण जो जनता के जीवन, विविधताओ से भरपूर भारत के रीति रिवाजो अतीत और वर्तमान का निकट से परिचय प्राप्त करने मे सहायक होता है, बहुसख्य सोवियत दर्शको एव नाटयकलाप्रेमियो को अपनी ओर आकर्षित करता है।

सोवियत सघ म भारतीय सस्कृति के सृजनात्मक स्वरूप से व्यापक परिचय छठे दशक के मध्य मे आरभ हुआ। यह तर्कसगत है, क्योकि भौतिक और आत्मिक जीवन क विभिन्न क्षेत्रो मे मैत्री और सहयोग को इन्ही वर्षो मे सबल प्रेरणा मिलनी शुरू हुई थी। यह कोई सयोग की बात नही थी कि दो सोवियत थियेटरो—बाकू के अजीज्बेकोव और मास्को के पुश्किन थियेटर—मे शूद्रक रचित 'मृच्छकटिक' पर आधारित नाटय एक ही समय प्रस्तुत किया गया था। उसी समय ताशकन्द के हमजा थियेटर मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर के उपन्यास नौका डूबी' और ताजिक थियेटर मे उनकी दूसरी रचना 'विसर्जन के नाटय रूपातर प्रस्तुत हुए थे।

सातवे और आठवे दशको मे सोवियत सगीतकारो ने भारतीय

---

* *Soviet Land* February 1984 N 4 p 46

नाट्य-साहित्य के आधार पर कई बेजोड़ बैले और दूसरे संगीत-खंड रचे थे।

इनमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'चित्रा' नाटक पर नियाज़ी और म० अशरफ़ी द्वारा रचे बैले ख़ास तौर पर लोकप्रिय हुए। परंतु ख्यातिप्राप्त संगीतकार स० बालासन्यान के 'शकुंतला' बैले को सचमुच अद्वितीय सफलता मिली। यह बैले सबसे पहले रीगा ऑपेरा और बैले थियेटर में प्रस्तुत किया गया था, उसके बाद सोवियत संघ के मास्को स्थित अग्रणी संगीत थियेटर स्तानिस्लाव्स्की और नमिरोविच दान्चेन्को थियेटर—में उसका 'दूसरा' और फिर 'तीसरा' जन्म हुआ। प्रस्तुतकर्ताओं ने क्लासिकल भारतीय थियेटर की परंपराओं का पूरा-पूरा ध्यान रखा और उनका बैले कला की लाक्षणिकता के साथ नमनीयता तथा अभिव्यंजना के साथ दक्षतापूर्वक समन्वय किया। यह सब दर्शकों की इस सांगीतिक नाटक में अथाह रुचि का स्रोत बन गया। इस सफलता का श्रेय बैले के प्रस्तुतीकरण में भाग लेनेवाले विख्यात नर्तक-नर्तकियों—उदय शंकर, शांतिवर्द्धन, मृणालिनी साराभाई और पद्मा सुब्रह्मण्यम—को भी प्राप्त है।

भारत की उत्कृष्ट कृतियों पर रचे जानेवाले संगीत की बढ़ती लोकप्रियता का एक उदाहरण यू० मुसायव रचित और १९८१ में बोल्शोई थियेटर में मंचित 'भारतीय काव्य' भी है। बैले के रचनाकारों को इस बात का श्रेय प्राप्त है कि वे भारतीय संस्कृति के उच्च आत्मिक मूल्यों तथा समृद्ध परंपराओं से, नेकी, शांति और न्याय के आदर्शों के प्रति भारतीय जनता की अगाध निष्ठा से सोवियत दर्शकों को परिचित कराने में सफल रहे। कला-समीक्षक न० अलीकोवा ने अपने एक लेख में उचित ही कहा है कि "बैले के सृजनकारों का मुख्य ध्येय भारत के इतिहास और जनता का नृत्य के माध्यम से परिचय देना था।"* दर्शक भारत के यथार्थ जीवन की अधिक से अधिक गहरी झलक पा सकें, इस ध्येय की पूर्ति के लिए इस बैले में मुख्य भूमिका अदा करनेवाली कलाकार ने सुविख्यात नर्तकी रुक्मिणी देवी से भरतनाट्यम सीखा।

मास्को स्थित केंद्रीय बाल थियेटर में 'रामायण' का बीस वर्ष

---

* Soviet Land, October 1982, N. 20, p.43

म अधिक समय से नियमित रूप से मचन होता आ रहा है। थियेटर की बदौलत लाखो बच्चे इस अमूल्य भारतीय महाकाव्य पर मोहित हो जाते हैं और पौरुष, पतिव्रता और निष्ठा के प्रतीक राम, सीता तथा लक्ष्मण से प्रेम करते हैं। १९६१ मे थियेटर की नाटक मडली ने भारत मे इसका अभिनय किया था। एक दिन दर्शकों के बीच जवाहरलाल नेहरू भी उपस्थित थे। उन्होंने भारतीय सस्कृति से लगाव तथा कला पूर्ण अभिनय के लिए सोवियत कलाकारो के प्रति आभार प्रकट किया तथा उन्हे हार्दिक धन्यवाद दिया।

सोवियत सघ मे भारतीय सगीतकारो, नर्तक-नर्तकियो और सगीत एव नाटक-मडलियो के कार्यक्रमो का सदैव हार्दिक स्वागत होता है। १९८४ म विश्वविख्यात सितारवादी रवि शकर पुन सोवियत सघ आये और उनके कार्यक्रम को अपरिमित सफलता मिली। भारतीय क्लासिकी नृत्य के सोवियत प्रेमी सितारा देवी इद्राणी रहमान, वैजयती माला रानी कर्ण आदि नामो से भली भाति परिचित है, जो इस जटिल तथा अभिव्यजनामय कला मे चोटी की नर्तकिया है। उन्होने इन नक्षत्रो की कला को स्वय देखा है। अनेक सस्कृति प्रासादो और युवा क्लबो मे भारतीय क्लासिकी नृत्य की विभिन्न शैलिया के अध्ययन हेतु शौकिया मडलिया कार्यरत रहती हैं। भारतीय सगीत का अध्ययन मास्को ग्नेसिन नामक सगीत अध्यापन सस्थान समेत अन्य सगीत विद्यालयो के पाठ्य-कार्यक्रमो म शामिल है।

क्लासिकी बैले के भारतीय प्रेमी सोवियत बैले कला की उत्कृष्ट मडलियो से अपने यहा भी परिचय पाते है। १९७७ और १९८४ म बोल्शोई थियेटर की बैल मडली ने भारत के बडे नगरो के रगमच पर अपनी कला का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया था। गत वर्षो मे कई बैल मडलिया ने भारत म अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इनम कीयेव स्थित त० ग० शेव्चेन्को आपरा और बैले थियेटर, स्तानिस्लाव्स्की और नेमिरोविच-दान्चेन्का नामक मास्को थियेटर और लेनिनग्राद स्थित 'खारेओग्राफीचेस्किय मिनिअत्यूरि' की मडलिया भी थीं।

भारतीय नाट्य कलाप्रेमी रूसी और सोवियत नाटक रचना म गहरी दिलचस्पी ले रहे हैं। भारत की प्रतिष्ठित मडलिया न० गोगोल ल० तोलस्तोय, अ० चेखोव और म० गोर्की रचित नाटको को प्रस्तुत किया करते है। अ० चेखोव कृत नाटको का मचन अग्रजी हिन्दी

बगाली और उर्दू मे होता है। वे 'भारतीय नाट्य सघ' यात्रिक और 'नेशनल स्कूल आफ ड्रामा' जैसी नाटक-मडलियो के कार्यक्रमो मे शामिल हैं।

थियेटर के सुविदित कार्यकर्ता मनोहर सिह ने भारत मे अ० चेखोव की नाटक रचनाओ की लोकप्रियता का कारण इन शब्दो मे स्पष्ट किया "उनकी रचनाओ का सार्विक रूप सभी तीव्र अनुभूतिक्षम लोगो को अपनी ओर आकर्षित करता है, जो सदैव यह अनुभव करते है कि वर्णित स्थिति भारतीय परिस्थितियो के सदृश है उनके पात्र विजातीय नही लगते जबकि नाटको मे अतर्निहित कोमलता व्यग्यात्मकता गहनता एव उदासी स्वय चखाव और उनकी रचनाओ के बारे मे दर्शको पर अमिट छाप छोडती है।'*

भारतीय, रूसी और सोवियत कलाकार जो दो महान जनगण के आत्मिक सूत्रो को और दृढ बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं, उचित ही 'सस्कृति के अग्रदूत' कहे जा सकते है।

इस प्रसग मे भारत और सोवियत सघ की सस्कृतियो को समृद्ध बनाने मे, जनता की पारस्परिक समझ के विकास मे रेरिख परिवार का योगदान अमूल्य है।

इस परिवार के प्रमुख निकोलाई रेरिख एक लब्धप्रतिष्ठ रूसी चित्रकार, विद्वान और लेखक थे, उनका अधिकाश जीवन भारत मे व्यतीत हुआ। उन्हे कला की, उनकी अपनी उक्ति के अनुसार, इस 'पवित्र अग्रदूत' की महान शक्ति मे अथाह विश्वास था जिसका ध्येय ससार का पुनर्गठन तथा जनगण का सामीप्य बढाना है। राष्ट्रीय रूसी कला के उत्कट उपासक के नाते उन्होंने उसके सरक्षण तथा विकास के लिए बहुत कुछ किया। उन्हे यकीन था कि उसकी प्रगति एक पृथक प्रक्रिया नही, बल्कि सार्वभौमिक प्रक्रिया का ही अग है। रूस और भारत, दोनो जगह काम करते हुए वह अपने कृतित्व से प्रमाणित करते रहे कि प्रत्येक जनता की कला के अपने विशिष्ट लक्षण होने के बावजूद उनमे बहुत कुछ एकसमान भी होता है, कि उसके परम लक्ष्य के लिए अर्थात सत्य और भलाई की उसकी कामना के लिए राष्ट्रीय विभेद एव अवरोधक विजातीय है।

---

* *Soviet Land* January 1985 N 2 p 39

इस विश्वास के ही फलस्वरूप निकोलाई रेरिख भारत की संस्कृति और दर्शन का मर्म पाने में सफल रहे। उनकी चित्रकारिता से भारतीय सभ्यता, राष्ट्रीय कला के मौलिक स्वरूप की गहरी समझ प्रकट होती है। जवाहरलाल नेहरू ने, जिनका निकोलाई रेरिख के साथ निकट का परिचय था, यह चीज सटीक ढंग से लक्षित की थी। उन्होंने कहा कि निकोलाई रेरिख की तस्वीरें "हमें अपने इतिहास, अपने चिंतन, अपनी सांस्कृतिक तथा आत्मिक धरोहर में से बहुत-सी बातों की याद दिलाती हैं।' *

न० रेरिख के चित्रों में वास्तव में, भारत की प्रकृति, विशेष तौर से हिमालय के अद्वितीय सौंदर्य का गुणगान ही नहीं है, अपितु वे भारत की स्वयं आत्मा का बोध कराते हैं।

न० रेरिख के चित्र इस बात का एकमात्र उदाहरण कतई नहीं हैं कि महान कलाकार का सृजनात्मक कार्यकलाप रूसी और भारतीय संस्कृति के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। न० रेरिख की प्रारंभिक काव्य-रचना का अन्वेषण करते हुए सोवियत जानकार स० कार्पोवा ने उसमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर की काव्य-शैली के साथ सादृश्यता पायी है। वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि "रेरिख और रवि ठाकुर की सृजन-विधियों और विश्वानुभूति में बहुत कुछ एकसमान है रूस और भारत के ऐतिहासिक विकास के अपने-अपने विशिष्ट स्वरूप ने रेरिख तथा रवि ठाकुर की समस्वरात्मक साहित्यिक कृतियों की सर्जना में बाधा नहीं डाली। **

भारत की राष्ट्रीय आत्मा की नानारूपी अभिव्यंजनाओं में गहरी रुचि और उनके प्रति सचेत रुख ने न० रेरिख को भारत के इतिहास, संस्कृति एवं दर्शन पर मर्मग्राही अनुसंधान करने में सहायता दी। उनकी कृतियों में सुविख्यात नीतिशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र पर भारतीय दृष्टिकोण रामकृष्ण, विवेकानंद, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के बारे में लेखमाला उल्लेखनीय हैं।

निकोलाई रेरिख का नाम सोवियत और भारतीय जनता का एक प्रमुख तपस्वी के रूप में प्रिय है, जिसने विश्व संस्कृति के स्मारकों के

---

* प० म० बेलेनाव निकोलाई कोन्स्तान्तीनोविच रेरिख। जीवन और कृतित्व मास्को १६७८ पृ० २० से उद्धृत।

* *Soviet Land* August 1985 N 15 p 15

संरक्षण हेतु अपनी आवाज बुलंद की। १९२९ में न० रेरिख ने विश्व जनमत का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि सशस्त्र मुठभेड़ों के समय सांस्कृतिक धरोहर को कोई क्षति नहीं पहुंचायी जानी चाहिए। इस लक्ष्य प्राप्ति के लिए उनके द्वारा निरूपित अंतर्राष्ट्रीय विधि-संहिता विश्व भर में 'रेरिख की संहिता' के नाम से सुविदित हो गयी। यद्यपि उस समय अपना सिर उठानेवाले जर्मन फासिज्म और "पश्चिमी जनवाद" की मौन सहमति से शीघ्र ही उनके द्वारा छेड़े गये दूसरे विश्व युद्ध के कारण इस संहिता का पालन नहीं हो पाया था, फिर भी उसके विचार सजीव बने रहे और युद्धोत्तर काल में उनका आगे विकास किया जाने लगा। युद्ध की समाप्ति पर न० रेरिख ने संहिता के कार्य को, जो युद्ध के कारण अधूरा रह गया था, आगे बढ़ाया और विश्व जनमत के व्यापकतम जन-समूह का ध्यान उन खंडहरों की ओर, जिनसे अब भी धुआं निकल रहा था, आकृष्ट करने का आह्वान किया ताकि इतिहास का रक्तरंजित पाठ व्यर्थ न जाय"।*

भारत और सोवियत संघ के सांस्कृतिक कार्यकर्ता उन लोगों में थे, जिन्होंने आरम्भ से ही महान मानवतावादी के प्रयासों का पुर्जोर और सच्चे हृदय से समर्थन किया। ख्यातिप्राप्त सोवियत मूर्तिकार सर्गेई कोनेन्कोव ने सांस्कृतिक धरोहर की रक्षार्थ न० रेरिख के कार्यकलाप का मूल्यांकन करते हुए कहा "संस्कृति की रक्षा, मातृभूमि की रक्षा, मान-मर्यादा की रक्षा कलापूर्ण स्मारकों की [illegible] यह बहुत अर्थपूर्ण है कि रूसी में 'मीर' [illegible] के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक ही ध्वनिसाम्यमूलक [illegible] है। [illegible] साम्य का कारण भाषा की [illegible] है। [illegible] ध्वनिसाम्य [illegible] शांतिपूर्ण सृजन अभिन्न [illegible]" [illegible] तिब्बत रूसी [illegible] रेरिख [illegible] किया था। आयाती हासिल [illegible] का समर्थन किया। [illegible]

---

* [illegible]
न० क० रेरिख। [illegible]
वही पृ० [illegible]

का कार्य रूप देने के लिए विश्व जनमत को एकजुट करने हेतु सामान्य प्रयासों में बहुत बड़ा योग दिया। यह विचार 'सशस्त्र मुठभेड़ की सूरत में सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा संबंधी हेग समझौता' १९५४ में पास हुआ।

पूरब भारत में रेरिख परिवार की गहरी रुचि ने ही निकोलाई रेरिख के पुत्र यूरी का जीवन पथ प्रशस्त किया — वह विख्यात प्राच्यविद बने। उन्हें भारत और अन्य एशियाई देशों की संस्कृति का विस्तृत ज्ञान था। यूरी रेरिख हिंदी और मंगोलियाई भाषाएं बोलते थे, संस्कृत, पाली, चीनी, फारसी और तिब्बती भाषाएं जानते थे।

तिब्बतविद्या पर शोध-कार्य और सर्वोपरि 'नीला वर्षवृत्तांत' ग्रंथ के कारण, जो १५ वीं सदी में रची तिब्बत विषयक मौलिक ऐतिहासिक रचना का रूपांतर एवं उसका भाष्य है, उन्होंने विश्व भर में कीर्ति अर्जित की। यूरी रेरिख ऐसे पहले अन्वेषक थे, जिन्होंने ७-९ वीं सदियों के तिब्बत के इतिहास तथा कालक्रमविज्ञान की सजटिल, उलझी समस्याओं पर प्रकाश डाला था।

अपने बहुविध और परिश्रमपूर्ण वैज्ञानिक कार्यकलाप में यूरी रेरिख भारत और रूस के सांस्कृतिक संबंधों के अध्ययन की ओर सदा बहुत ध्यान देते रहे। अपने प्रिय विषय से वह आजीवन संलग्न रहे। १९४८ में उन्होंने अपनी विख्यात रचना 'रूस में भारतविद्या' प्रकाशित करायी, जो भारत के अध्ययन के क्षेत्र में रूसी वैज्ञानिक चिंतन के विकास को अर्पित थी। लगभग तीस वर्ष तक भारत में अपने प्रवास के दौरान उन्होंने प्रसिद्ध सोवियत प्राच्यविदों ब० अलेक्सेयेव, ब० व्लादीमिर्त्सोव, फ० श्चेर्बात्स्की व० गोलुबेव और ग० बेर्नादस्की के साथ घनिष्ठ वैज्ञानिक संपर्क बनाये रखे, सोवियत संघ के जीवन में गहरी दिलचस्पी लेते रहे और नवजीवन के सफल निर्माण के समाचार पाकर प्रसन्न होते थे। सोवियत संघ पर फासिस्ट जर्मनी के आक्रमण को अपने लिए निजी त्रासदी मानते हुए वह बर्बरता का सामना करनेवाले देश-बंधुओं की सहायता करने के लिए लालायित रहते थे। १९४१ की गरमियों में यूरी रेरिख ने इंगलैंड में सोवियत दूत को एक तार भेजा, जिसमें उन्होंने अनुरोध किया कि उनका नाम लाल सेना की कतारों में स्वयंसेवक के रूप में लिखा जाय।

अपने जीवन के अंतिम ढाई साल यूरी रेरिख ने मातृभूमि में,

सोवियत संघ में वितायं। सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के प्राच्य विद्या संस्थान में संलग्न रहते हुए उन्होंने तिब्बतविद्या और प्राचीन भारतीय सभ्यता के अध्ययन सहित सोवियत प्राच्यविद्या के विकास में बहुत बड़ा योग दिया था। उन्होंने देश में सर्वप्रथम वैदिक भाषा का अध्यापन-कार्य शुरू किया था। उनके संपादन और उत्साहपूर्ण योगदान के फलस्वरूप उन उक्तियों का संग्रह—'धम्मपद'—प्रकाशित हुआ था जो महात्मा बुद्ध की बतायी जाती है। इसमें आद्य बौद्ध धर्म के मूल नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों की संक्षिप्त व्याख्या की हुई है। बहुविध सृजनात्मक कार्यकलाप में लगे रहने के बावजूद यूरी रेरिख विभिन्न देशों, सर्वोपरि सोवियत संघ और भारत के विद्वानों के बीच सहयोग बढ़ाने, पूरब की सभ्यताओं के विषय में ज्ञान विस्तृत करने में हाथ बटाते थे—वह इसे जनगण को एक दूसरे के निकट लाने, अंतर्राष्ट्रीय पारस्परिक समझ एवं विश्वास को दृढ़ बनाने का एक साधन मानते थे। मास्को में आयोजित प्राच्यविदों के २५ वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने सोत्साह कहा: 'नवजीवन में पदार्पण कर रहे एशियाई जनगण अपनी सांस्कृतिक धरोहर की बड़ी लगन से रक्षा कर रहे हैं और उससे नयी-नयी सिद्धियों के लिए सशक्त प्रेरणा पा रहे हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम इस ध्येय में उनकी सर्वाधिक सहायता करें। कारण यह है कि ऐसी सहायता, जो शांति को सुदृढ़ बनाती है, समस्त देशों के विद्वानों के शांतिपूर्ण सहयोग तथा विज्ञान की सेवा करती है।'*

रेरिख परिवार के एक और विलक्षण प्रतिनिधि, निकोलाई कोन्स्तान्तीनोविच के दूसरे पुत्र स्व्यातोस्लाव रेरिख है। वह दो महान सभ्यताओं—रूसी और भारतीय—के पारस्परिक लाभप्रद प्रभाव के प्रतीक बन गये हैं। यह महान चित्रकार आधी सदी से भी अधिक समय से भारत में बसे हुए हैं, इस देश का सांगोपांग अध्ययन करने में जुटे हैं। वह अपने अनुपम चित्रों में भारतीय संस्कृति के अभिलाक्षणिक पहलू—"वैविध्य में एकता"—को प्रतिबिंबित करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। चित्रकला की नाना शैलियों में पारंगत यह कलाकार बड़े

* स० इ० त्युल्यायेव। स्व्यातोस्लाव निकोलायेविच रेरिख।—न० क० रेरिख। जीवन और कृतित्व, मास्को १९७८ पृ० २४०।

अध्यवसाय के साथ काम करते रहते हैं, किंतु उनका मुख्य उद्देश्य सदा भारतीय यथार्थता का, अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य के व्यापक वर्णक्रम का चित्रण करना बना रहता है। भारत के सांस्कृतिक ऐतिहासिक विकास की पीढ़ी-दर-पीढ़ी निरंतरता का विचार स० रेरिख के समस्त कृतित्व मे स्पष्टत दिखाई देता है।

१९६० मे सोवियत सघ की यात्रा के दौरान एक सभा मे उन्होंने कहा था ' भारत की कलात्मक धरोहर के अध्ययन की प्रक्रिया अनत है किंतु एक ऐसी बात है, एक ऐसा सामान्य तत्व है, जो भारतीय कला को एक सूत्र मे पिरोता है उसका एकीभूत स्वरूप प्रकट करता है – यह तत्व है अखड चिंतन कलाचार्यों की बदलती पीढ़ियों की कृतियो मे पूर्ण क्रमबद्धता रहती है, उनमे कोई असायोगिकता नही होती, सदियो के काल-प्रवाह मे चितन की पूर्ण निरतरता बनी रहती है। '*

स० रेरिख भारतीय जनता की अद्‌भुत जीवन-शक्ति, अतीत की धरोहर के प्रति सहृदय दृष्टिकोण तथा दार्शनिक विवेक पर मुग्ध हैं। भारत तक मेरी पहुच केवल कला के माध्यम से ही नही, बल्कि भारत के जीवन, चितन के माध्यम से भी हुई। यह शताब्दियो क्या, सहस्राब्दियो मे निखरता रहा है। उसने विलक्षण दार्शनिक प्रणालियो को जन्म दिया है यही, मेरे विचार से, भारत के जीवन की सच्ची कुजी है। इस सबका अर्थ है प्राचीन सस्कृति, जो सारी कला को अनुप्राणित करती है। यह सस्कृति अनन्य रूप से उच्च स्तर की है, जो भारत को इतना महान बनाती है।"**

अपने सृजन-कार्य के उद्‌गम-स्रोतो के बारे मे बताते हुए स० रेरिख बारबार इस बात का उल्लेख करते हैं कि रूसी यथार्थवाद, समग्र रूसी कला का उनके लिए कितना महत्व है। इससे, निस्सदेह, उन्हे अपने चित्रो मे भारत की "आत्मा', उसकी प्रतिभाशाली जनता को बेहतर ढग से समझने और प्रतिबिंबित करने मे सहायता मिलती है। सोवियत जन चित्रकार ये० बेलाशोवा ने उनके, उनके पिता और भाई के सृजन-कार्यों की विशेषता की चर्चा करते हुए मई १९६० मे मास्को

---

* वही।
वही।

मे स० रेरिग के चित्रो की प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर
कहा था "हमे यह जानकर गर्व होता है कि स्व्यातोस्लाव रेरिख रूसी
गहराई मे जो रूसी आत्मा की लाक्षणिकता है इस महान देश के
जन-जीवन को समझ सके हैं और उसके आत्मिक गुणो सस्कृति और
बेजोड प्रकृति को कलात्मक साधनो मे प्रतिबिंबित कर सके है।" *

स० रेरिग का सारा सृजन-कार्य भारत और रूस की सस्कृति को
सूत्रबद्ध करनेवाले बौद्धिक सपर्को का मूर्त रूप मानववाद भलाई
और न्याय के विचारो के प्रति दोनो देशो की निष्ठा का प्रतीक है।
सोवियत सघ मे भारत के तत्कालीन राजदूत के० पी० एस० मेनन ने
स० रेरिग की प्रतिभा के इन्ही पहलुओ की ही चर्चा की थी। चित्र
प्रदर्शनी के उद्घाटन भाषण मे उन्होने कहा "रेरिग के चित्र स्पष्टत
दर्शाते हैं कि कला राष्ट्रीय सीमाओ के परे है। उनकी कला मे दो
जगतो–भारतीय जगत और रूसी जगत–का समावेश है। इसमे
आश्चर्य की कोई बात नही है क्योकि वह स्वय इन दो जगतो के पुत्र
हैं। जन्म से वह रूसी और परिवेश मे भारतीय हैं। उनकी कला मे
आनुवंशिकता और परिवेश का रूस और भारत के प्रेरक विचारो का
पूर्ण तालमेल है। यह मेरे इस चिरपोषित विचार की पुष्टि है कि भारत
और रूस की आत्मिक उपलब्धियो मे बहुत कुछ सामान्य है।" **

स्व्यातोस्लाव और उनके पिता निकोलाई रेरिख की चित्र प्रदर्श
निया सदा ही सोवियत सघ के सास्कृतिक जीवन की बडी घटनाए
रही हैं। सोवियत सघ के उत्कृष्ट सग्रहालयो–जैसे लेनिनग्राद के
हर्मिताज मास्को की त्रेत्याकोव कला-वीथी और प्राच्य सस्कृति सग्रहालय,
नोवोसिबीर्स्क चित्रशाला, आदि–को इस बात पर गर्व है कि उनके
सग्रहो मे निकोलाई और स्व्यातोस्लाव के बनाये हुए चित्र विद्यमान
हैं। उनके सम्मुख हमेशा ही दर्शको की भीड लगी रहती है भिन्न-
भिन्न आयु और पेशे के लोग स्व्यातोस्लाव तथा उनके पिता की कृतियो
से और उनके माध्यम से मित्र देश भारत की सस्कृति तथा जीवन से
परिचय पाना चाहते हैं।

१९८५ मे भारतीय और सोवियत जनगण के बीच परस्पर समझ

---

* वही पृ० २४६।

** K P S Menon *A Diplomat Speaks* New Delhi 1974 p 75

गव मैत्री बढ़ाने में अत्यधिक योगदान करने के उपलक्ष्य में स्व्यातोस्लाव रेरिख जन मैत्री पदक से आभूषित किये गये और कला अकादमी के सम्मानित सदस्य चुने गये।

भारत में भी स० रेरिख के सृजन को बड़ी मान्यता प्राप्त है। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण पदक से अलंकृत किया है। कलाकार के लिए यह सम्मान और गौरव की बात है कि उन्होंने जवाहरलाल नेहरू के देहावसान के उपरांत उनका जो चित्र बनाया था वह संसद हाल में मेधावी राजनेताओं की दीर्घा में रखा हुआ है।

भारतीय यथार्थता के सम्मान की अभिलाषा, जन-जीवन में गहरी रुचि बहुत-से जाने माने सोवियत चित्रकारों की लाक्षणिकता हैं। जन कलाकार चुइकोव और नल्बान्दयान की सृजनात्मक कृतियों में भारतीय विषय का बड़ा स्थान प्राप्त है। उनके बनाये हुए बहुतेरे चित्रों के नायक भारत के साधारण जन – किसान, दस्तकार और छोटे कर्मचारी – हैं। नगर और ग्राम के रोजमर्रा के दृश्य स्मृति-पटल पर वैसे ही अंकित हो जाते हैं, जैसे कि नानारूपी प्रकृति के कलात्मक, मनोहर दृश्य।

पिछले कुछ समय में कला प्रदर्शनियों का आदान प्रदान सांस्कृतिक संपर्कों के विस्तार का अधिकाधिक प्रचलित रूप बनता जा रहा है। भारत के चित्रकलाप्रेमी लेनिनग्राद के राजकीय हर्मिताज और रूसी संग्रहालय, मास्को के पुश्किन ललित कला संग्रहालय तथा त्रेत्याकोव कला वीथी के श्रेष्ठ नमूनों से परिचित हैं। उधर सोवियत जन भारत की क्लासिकी एवं समसामयिक चित्रकारिता की कृतियों, शिल्पकारों – हाथी दांत और कांसे की चीजें बनानेवाले कारीगरों – की अद्भुत कृतियों से, जिनकी प्रदर्शनियां मास्को समेत अनेक नगरों में आयोजित होती हैं परिचय पाते हैं। उदाहरण के लिए १९८४ में सोवियत संघ के राजकीय हर्मिताज और भारत के राष्ट्रीय संग्रहालय के बीच १६-१९ वीं सदियों की उत्कृष्ट सजावटी एवं अनुप्रयुक्त कृतियों की प्रदर्शनियों का विनिमय हुआ था। मास्को स्थित प्राच्य संस्कृति संग्रहालय में आयोजित स्थायी भारतीय कला प्रदर्शनी में प्रतिदिन सैकड़ों दर्शक आया करते हैं।

सोवियत संघ दिल्ली में आयोजित होनेवाली त्रैवार्षिक विश्व ललित कला प्रदर्शनियों में पारम्परिक रूप से भाग लेता है। १९८२ की प्रदर्शनी में सोवियत कलाकार की कृति को मुख्य पुरस्कार मिला था।

मितु भारत मे सोवियत लोगो की रुचि का एक सर्वाधिक प्रभावोत्पादक सूचक सोवियत सघ म प्रकाशित भारतीय लेखको की पुस्तक-सख्या है। देश की विभिन्न भाषाओ मे अनूदित कोई एक हजार पुस्तको की प्रतियो की कुल सख्या चार करोड से भी अधिक है। यदि महज दस साल पहले प्रतिवर्ष १२-१४ नयी पुस्तक प्रकाशित होती थी तो इस समय यह सख्या बढकर ३० तक पहुच गयी है। नये प्रकाशन इतन बडे पैमाने पर प्रकाशित होने के बावजूद उनकी प्रतिया हाथो-हाथ बिक जाती है। इनमे राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन के नेताओ और स्वतत्र भारत के राजनताओ द्वारा रचित कृतिया विशेष तौर मे लोकप्रिय है। महात्मा गाधी की विलक्षण कृति 'आत्मकथा रूसी मे तीन बार प्रकाशित हुई। अनकानेक सोवियत लोगा के लिए भारत म प्रथम परिचय जवाहरलाल नहरू रचित 'हिदुस्तान की कहानी और मरी कहानी से आरभ हुआ जिनका रूसी रूपातर छठ दशक के मध्य म ही किया गया था। १९७८ म जवाहरलाल नेहरू के मुख्यात ग्रथ 'विश्व इतिहास की एक झलक' का तीन खडा मे प्रकाशन हुआ। श्रीमती इदिरा गाधी ने सोवियत पाठको के नाम सदश मे, जो विशेष रूप से इस प्रकाशन के लिए लिखा गया, कहा 'मै आधुनिक भारतीय चितन की इस क्लासिकी कृति के रूसी रूपानर का स्वागत करती हू। विज्ञान के क्षेत्र मे भारत-सोवियत सहयोग का यह एक आदर्श उदाहरण है। *

करोडा सोवियत पाठकगण को स्वय श्रीमती इदिरा गाधी के जो देश की प्रगति के एक कठिन एव उत्तरदायित्वपूर्ण दौर मे प्रधानमत्री का पद सभाले रही भाषणो के सग्रहो का रूसी रूपातर प्राप्त हुआ जिनम उन्हे भारत की विदेशनीति तथा सोवियत भारत सबधो से परिचित होने का सुअवसर मिला था।

क्लासिकी और आधुनिक पद्य एव गद्य के भारतीय भाषाओ के रूसी रूपातर निरतर लोकप्रिय बनत जा रहे है। उदाहरणार्थ रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओ का सोवियत सघ के सभी पद्रह जनतत्रो की भाषाओ म अनुवाद हो चुका है। अभी हाल म उनकी रचनाओ का चार खडो

---

* जवाहरलाल नहरू विश्व इतिहास की एक झलक खड १ मास्को १९७५ पृ० ३१।

मे नया प्रकाशन निकला है (प्रतियो की संख्या ३ लाख है)। सोवियत पाठकों में प्रेमचंद, मोहम्मद इकबाल, वल्लथोल, अली सरदार जाफरी, मुल्क राज आनंद, कृष्ण चन्दर, ख्वाजा अहमद अब्बास और अमृता प्रीतम आदि लेखको की रचनाओं की सदैव बड़ी माग रहती है। भारतीय महाकाव्य के प्रेमी अनुपम 'महाभारत' का अकादमीशियन व० स्मिर्नोव द्वारा भव्य रूसी रूपातर पढ़ सकते है। जाने माने जार्जियाई कवि, जवाहरलाल नेहरू के पुरस्कार विजेता इराक्ली अबाशीदजे के शब्दों में, जार्जिया में शायद ही कोई ऐसा परिवार हो, जिसके निजी पुस्तकालय में 'रामायण' का जार्जियाई रूपातर न हो। यह लाक्षणिक है कि जार्जिया में इस महाकाव्य पर आधारित रेडियो रूपक सत्तादिस साल से प्रसारित होता आया है।

क्लासिकी तमिल कविता के रूसी अनुवाद ने बहुजातीय भारतीय साहित्य तथा उसकी समृद्धतम निधि के बारे में सोवियत पाठकों के ज्ञान में अपार वृद्धि की है। १९७४ में महान तीरुवल्लुवर रचित 'तीरुकुरल' का प्रथम प्रकाशन निकला। १९७७ में सोवियत संघ में प्रकाशित 'विश्व साहित्य पुस्तकालय' के एक खंड में प्राचीन तमिल कवितामाला भी शामिल थी। १९८० में तमिल महाकाव्य का एक और ग्रंथ 'ताड़ पत्तो पर कविताएं। क्लासिकी तमिल पद्य' प्रकाशित हुआ। उसका रूसी रूपातर सोवियत कवि अनातोली नाइमान ने किया। दो वर्ष बाद 'चमेली के गीत' नामक प्राचीन तमिल कवियों की रचनाओं का संग्रह निकला था। समसामयिक तमिल लेखकों की कृतिया भी सोवियत पाठकों को सुलभ है। अनेक दूसरे लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों की कृतियां के रूसी रूपातर भी प्रकाशित हुए।

किंतु सोवियत पुस्तकों के बाजार में भारत के केवल प्राचीन और वर्तमान साहित्य की ही माग नहीं होती। बहुत-से लोगों की भारतीय विज्ञान और तकनीक की उपलब्धियों, उन विद्वानों एवं शोधकर्ताओं की खोजों में भी दिलचस्पी है, जो २१ वीं शती के भारत के निर्माण में योग दे रहे है। इसे ध्यान में रखते हुए १९८४ में भौतिकी और गणित, भूविज्ञान और भूगोल, ऊर्जा और हल्के उद्योग तथा कृषि पर भारतीय विद्वानों एवं विशेषज्ञों की कृतियों को रूसी में अनूदित किया गया।

भारतीय पाठकों के हितार्थ अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं

में सोवियत प्रकाशनों में वृद्धि हो रही है। भारतीय पाठक अ० पुश्किन, न० गोगोल, फ० दोस्तोयेव्स्की, ल० तोलस्तोय, म० गोर्की, व० मयाकोव्स्की तथा समसामयिक सोवियत रचनाकारों की कृतियों से अच्छी तरह परिचित हैं। आधारभूत और खास तौर से अनुप्रयुक्त खोजों के विषय में वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य अधिकाधिक लोकप्रिय बनता जा रहा है। लब्धप्रतिष्ठ सेनापतियों के संस्मरणों में भी रुचि बढ़ी है, जिनके भारतीय पाठकों में लोकप्रिय होने का श्रेय बड़ी हद तक मार्शल ग० क० जूकोव रचित "संस्मरण और विचार-मनन" के अंग्रेजी रूपांतर को प्राप्त है। अभी हाल में मार्शल क० क० रोकोस्सोव्स्की रचित "सैनिक का कर्तव्य" का हिंदी अनुवाद प्रकाशित हुआ है।

भारत के दक्षिण प्रदेशों में सोवियत गणितज्ञों की कृतियों में भी कम दिलचस्पी नहीं है। इतना कहना काफी होगा कि तमिल में पहली सोवियत पुस्तक १९५८ में निकली, जो बच्चों के लिए थी, तब से अब तक रूसी क्लासिकी रचनाओं से लेकर गणित पर लिखी मूल कृतियों तक ३१० भिन्न भिन्न पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए पाठ्यपुस्तकों का चयन करने के लक्ष्य से १९६५ में स्थापित भारत-सोवियत आयोग बहुत उपयोगी काम कर रहा है। गत वर्षों में उसके निर्देशों के तहत कोई ५०० नामों की तरह-तरह की पाठ्यपुस्तकें आदि सामग्री प्रकाशित हो चुकी हैं। सोवियत और भारतीय विद्यार्थियों की सहायतार्थ सम्मिलित पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के बारे में भी समझौता हुआ।

जो कोई विज्ञान, तकनीक, कला और संस्कृति पर उत्कृष्ट प्रकाशनों तथा रूसी व सोवियत लेखकों और कवियों की रचनाओं से निकट का परिचय लेना चाहते हैं, उनके लिए दिल्ली, कलकत्ता, बंबई और मद्रास स्थित सोवियत विज्ञान और संस्कृति भवनों के द्वार सदा खुले रहते हैं। अकेले दिल्ली स्थित भवन के पुस्तकालय में प्राकृतिक विज्ञान से लेकर तकनीक, अंतरिक्षविज्ञान, पर्यावरण, कानून, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, रूस और सोवियत संघ के इतिहास आदि विषयों पर रूसी, अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू और पंजाबी में ३५ हजार से अधिक पुस्तकें रखी हुई हैं। विज्ञान, कला और संस्कृति के क्षेत्र में एक दूसरे की उपलब्धियों में लोगों की दिलचस्पी जितनी अधिक गहरी होगी, सोवियत संघ और भारत के जनगण की, जिनकी कुल आबादी एक

अरब के बराबर है मैत्री और सहयोग उतने ही दृढ होंगे। यह ऊर्जस्वी शक्ति है जिस पर बडी हद तक अतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, शाति और परस्पर समझ का दृढीकरण निर्भर करता है।

भारत मे रूसी भाषा और सोवियत सघ मे भारतीय भाषाओ के अध्ययन का दोनो देशो के बीच मैत्रीपूर्ण सबधो और चौमुखी सहयोग की प्रगति के लिए, निस्सदेह, बहुत महत्व है। जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक सोवियत रूस' मे रूसी भाषा के बारे मे यहा तक कहा था कि रूसी भाषा के माध्यम से भारत रूस के बारे मे जिसकी सबल शक्तियो ने नयी दुनिया को जन्म दिया है और जहा सभी मूल्य पूर्णत बदल गये हैं अधिक जानकारी पा सकता है।*

स्वातत्र्योत्तर काल मे भारतीय बुद्धिजीवियो, विशेष तौर पर युवाजन मे रूसी और सोवियत सस्कृति के बारे मे ज्ञान के एक साधन के नाते, विज्ञान और तकनीक की प्रभावोत्पादक सफलताओ से परिचय के एक साधन के नाते रूसी भाषा मे रुचि अपरिमित रूप से बढ गयी है। भारत मे पाचवे दशक के अत तक रूसी भाषा की शिक्षा देनेवाले विद्यालय इने गिने ही थे परतु आज उनकी सख्या ५०० से ऊपर है। इनमे पूना उस्मानिया विश्वविद्यालय बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, मराठवाडा और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय जैसे विशाल शिक्षालय शामिल हैं।

कुछ समय से तकनीकी और प्राकृतिक विज्ञानो का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियो के बीच भावी वैज्ञानिको, इजीनियरो और चिकित्सको के बीच भी रूसी भाषा के प्रति आकर्षण बढता जा रहा है। यह नियमसगत ही है। रूसी की जानकारी विज्ञान और तकनीक की नवीनतम खोजो अग्रणी टेक्नोलाजी से परिचय को सुगम बनाती है। ससार मे रूसी भाषा मे प्रकाशित विशिष्ट विद्याओ की पाठ्यपुस्तको और वैज्ञानिक पत्रिकाओ की सख्या के मामले मे अग्रेजी के बाद उसका दूसरा स्थान है। अधिकतर भारतीयो के विचार मे भारत का आधुनिकीकरण भविष्य की ओर उसकी द्रुत प्रगति औद्योगिक उत्पादन और अर्थव्यवस्था की दूसरी शाखाओ मे समुन्नत टेक्नोलाजी के प्रयोग से आर्थिक उभार के हेतु वैज्ञानिक-तकनीकी खोजो के व्यापक प्रयोग से

---

* *Soviet Land* August 1985 N 16 p.39

अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं।

मैत्रीपूर्ण सोवियत भारत सबंधो के सफल विकास से रूसी भाषा सीखने की संभावनाए अत्यधिक बढ जाती है। भारतीय विश्वविद्यालयो और कालेजो के रूसी भाषा म जिज्ञासा रखनेवाले सुयोग्य आरंभिक और स्नातकोत्तर विद्यार्थी शिक्षा जारी रखने के लिए सोवियत सघ भेजे जाते हैं। अ० पुश्किन नामक सुविख्यात रूसी भाषा संस्थान भारतीय और अन्य विदेशी विद्यार्थियों के लिए अध्यापन की विधियां उत्कृष्ट करने के लिए बहुत उपयोगी काम कर रहा है। संस्थान के प्रतिनिधि सेमिनार चलाने के लिए नियमित रूप से भारत आया करते हैं जबकि रूसी भाषा और साहित्य का अध्यापन करनेवाले भारतीय अ० पुश्किन संस्थान और जन-मैत्री विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित योग्यतावर्द्धक पाठ्यक्रमों और अतर्राष्ट्रीय सगोष्ठियो में भाग लेने सोवियत सघ आया करते हैं। भारतीय विश्वविद्यालयो और कालेजों को रूसी भाषा पर पाठ्यपुस्तके और विभिन्न सहायक सामग्री मास्को से उपलब्ध होती हैं। रूसी भाषाविदो का सहयोग अनेक दूसरी दिशाओ म भी बढ रहा है। उदाहरण के लिए भारतीय विद्यार्थियो की सहायतार्थ दोनों देशो के विशेषज्ञ सम्मिलित रूप से रूसी भाषा की नयी पाठ्य-पुस्तके तैयार कर रहे हैं।

अनेक भारतीय विश्वविद्यालयो मे सोवियत भाषा विशारद भी शैक्षिक कार्य करते हैं।

दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का रूसी अध्ययन केंद्र रूसी भाषा के अध्ययन का प्रमुख केंद्र बन चुका है। १९६५ में स्थापित इस केंद्र ने रूसी भाषा और साहित्य के बहुत-से अध्यापक एव विशेषज्ञ तैयार किये हैं। संस्थान आधुनिकतम पाठ्यपुस्तको, टेलीविजनो, टेप रिकार्डिंग उपकरणो तथा लिंगाफोनो से लैस है, जो भाषा के तेजी से ज्ञान प्राप्त करने मे सहायता देते हैं। यहा विद्यार्थी रूसी और सोवियत साहित्य तथा इतिहास पढते हैं और सोवियत सघ के जीवन के भिन्न भिन्न पहलुओ से परिचय भी पाते हैं।

भारत म रूसी भाषा की बढ रही लोकप्रियता की चर्चा करते हुए पूना विश्वविद्यालय के अतर्गत आधुनिक यूरोपीय भाषाओ के विभाग के प्राध्यापक डा० योगेन्द्र कुमार ने 'सोवियट लैंड' मे छपे लेख मे कहा "भारतीयो को रूसी भाषा सीखने के लिए उत्प्रेरित करनेवाली

मुख्य शक्ति सोवियत जनता को बेहतर जानने की आकांक्षा है। भाषा और संस्कृति गहरे तौर पर अन्योन्याश्रित हैं अत जनता की भाषा सीखने का अर्थ उसकी संस्कृति, उसके चिंतन, उसके विश्वदृष्टिकोण का ज्ञान पाना है। *

उनके शब्द उस अगाध रुचि पर भी समुचित रूप से लागू किये जा सकते हैं जो सोवियत संघ में भारतीय भाषाओं के अध्ययन में ली जाती है।

कतिपय नगरों में तो ऐसे विशेष स्कूल भी हैं जहां हिंदी और उर्दू पढ़ायी जाती है। इनमें सबसे सुज्ञात है मास्को का छात्रावास स्कूल नं० १६ जिसे १९८४ में श्रीमती इंदिरा गांधी का नाम दिया गया। स्कूल के अतिथियों में प्राय मास्को स्थित भारतीय दूतावास के कर्मी, सोवियत संघ में शिक्षा पा रहे भारतीय विद्यार्थी और भारत-सोवियत मैत्री समाज के शिष्टमंडल होते हैं। इन्दिरा गांधी स्कूल के छात्र और छात्राएं भारतीय क्लासिकी नाटकों का अभिनय करते हैं लोक गीत गाते हैं और कविताओं का पाठ करते हैं—यह सब हिन्दी में ही होता है।

एशियाई और अफ्रीकी देशों का संस्थान सोवियत संघ में ऐसा प्रमुख उच्च विद्यालय है जहां छात्र भारत का इतिहास भाषाएं संस्कृति और सार्वजनिक जीवन पढ़ते हैं। इसे उचित ही भारतविदों और अन्य प्रकार के प्राच्यविद्या विशारदों की पाठशाला कहा जाता है। संस्थान में तमिल, तेलुगू मलयालम कन्नड सहित भारत की सभी मुख्य भाषाएं तथा संस्कृत भी पढ़ायी जाती हैं। भारत की समृद्ध ऐतिहासिक धरोहर तथा विशेषतया विकास के वर्तमानकालीन चरण के अध्ययन पर बड़ा ध्यान दिया जा रहा है। यह ध्यान देने योग्य है कि संस्थान की स्थापना १९५६ में यानी उस समय हुई थी जब भारत और अन्य विकासमान देशों के साथ सोवियत संघ के विविध संपर्क काफी विस्तृत हो चुके थे। इसी कारण सुयोग्य दुभाषियों भाषाविज्ञानियों अर्थशास्त्रियों इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों की तीव्र आवश्यकता अनुभव हुई थी जिनका ज्ञान और अनुभव मैत्री और चौमुखी सहयोग के लिए अपेक्षित थे। स्वाभाविक है कि आज संस्थान के स्नातक प्राय उन सभी सोवियत कार्यालयों एवं संगठनों में काम

* *Soviet Land* September 1985 No 17 p 36

कर रहे हैं, जिनका सोवियत भारतीय संबंधों में सरोकार है। सोवियत भारतीय संबंधों के क्षेत्र में व्यावहारिक कार्य के वास्ते सुदक्ष जानकारों के प्रशिक्षण को बड़ा महत्व दिया जाता है। भारतीय भाषाओं के विभाग मास्को में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के राजकीय संस्थान, लेनिनग्राद, ताशकंद और तार्तू विश्वविद्यालयों तथा कई अन्य उच्च शिक्षा विद्यालयों के अंतर्गत काम कर रहे हैं। सोवियत विद्यार्थी दिल्ली और मद्रास, बंबई और कलकत्ता के विश्वविद्यालयों में प्रायः देखे जा सकते हैं, जहां वे भाषा और देश की जानकारी बढ़ाने के लिए आया करते हैं। वे उसी छात्रावास में रहते हैं, जहां उनके सहपाठी भारतीय भी रहते हैं। वे भाषा सीखने में एक दूसरे की मदद करते हैं।

सोवियत संघ में भारत का सर्वांगीण अध्ययन होता है। सोवियत भारतविद्या का प्रमुख केंद्र विज्ञान अकादमी का विश्वप्रसिद्ध प्राच्यविद्या संस्थान है। लेनिनग्राद, ताशकंद, अशखाबाद, दुशंबे, त्बिलिसी और रीगा स्थित अनुसंधान संस्थानों में भारत के इतिहास, संस्कृति, अर्थशास्त्र, दर्शन तथा भाषाओं पर सैद्धांतिक कार्य चलाया जाता है। मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत को आधार बनाकर सोवियत वैज्ञानिकों ने भारत अध्ययन को बहुत आगे बढ़ाया है, जिसका सूत्रपात रूसी भारतविदों ने १९१७ की महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति के पूर्व किया था। उनके अन्वेषण के मुख्य विषय स्वतंत्र भारत के विकास की वर्तमान अवस्था तथा राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन संबंधी समस्याएं हैं। इ० म० रइस्नेर, न० म० गोल्दबर्ग, अ० म० द्याकोव, अ० म० ओसिपोव और व० व० बलाबुशेविच जैसे विद्वानों को उचित ही सोवियत भारतविद्या के संस्थापक कहा जा सकता है। उन्होंने भारत के नये और आधुनिक इतिहास तथा समसामयिक सामाजिक एवं आर्थिक प्रश्नों की खोज में बड़ा भारी योगदान किया है। उनके अनुयायी और शिष्य र० अ० उल्यानोव्स्की, अ० इ० लेव्कोव्स्की, ग० ग० कोतोव्स्की, क० अ० अन्तोनोवा, व० इ० पाव्लोव, रा० म० मेल्मान, ग० क० शिरोकोव, न० व० अलायेव, ए० न० कोमारोव, अ० इ० चिचेरोव, व० ग० रस्त्यान्निकोव, ग० म० बोगार्द-लेविन, य० या० ल्युस्तेर्निक आदि इस कार्य को जारी रखे हुए हैं। वर्तमानकालीन भारत पर रोचक और गंभीर गवेषणाओं में अ० म० मेल्निकोव, म० इ० त्युल्पानोव, म० न० येगोरोवा, न० फ० दव्यात्किना और ल० व० शापोश्निकोवा की रचनाएं उल्लेखनीय

है। नयी पीढ़ी के शोधकर्ता अ० य० ग्रानोव्स्की, फ० न० नीनाव अ० ग० वोलोदिन म० अ० प्लगोवा, य० म० यूर्नोवा, ग्रै० अ० ग्रा गिना और य० इ० मिगेनोवा सोवियत भारतविदो के विशाल समूह म शामिल हो गये।

सोवियत भारतविदो का बहुवर्षीय शोध-कार्य का फल था १९५६ १९६६ मे भारत के चार खडो वाले इतिहास – प्राचीन, मध्यकालीन, नये और आधुनिक – का प्रकाशन। इस आधारभूत कृति म भारतीय समाज के विकास म आये मौलिक परिवर्तनो, वर्गों और अन्य सामाजिक श्रेणियो की उत्पत्ति एव विघटन की प्रक्रिया जन विद्रोहो व राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन के उत्थान और भिन्न भिन्न अवस्थाओ म सामाजिक आर्थिक सरचनाओ की विशिष्टताओ का गहन अध्ययन किया गया है। साथ ही संस्कृति कला और साहित्य के उभार की खोज पर बहुत ध्यान दिया गया। एक पूर्वी देश की प्राचीन काल से लकर अर्वाचीन काल तक की ऐतिहासिक प्रगति का अन्वेषण सोवियत प्राच्यविज्ञान का प्रथम और सफल अनुभव सिद्ध हुआ।

इसके पश्चात क० अ० अन्तानोवा ग० म० बोगार्द-लेविन और ग० ग० कोनोव्स्की कृत भारत का सक्षिप्त इतिहास निकला, जिसके कई सस्करण छप चुके है।

सोवियत पाठको न इन प्रकाशनो का सहर्ष स्वागत किया। पाठको की गहरी रुचि के पीछे निस्सदेह भारत की वह भूमिका है जो विश्व ऐतिहासिक प्रक्रिया मे भारत निभाता रहा और निभा रहा है, तथा दोनो देशो के बीच सफलतापूर्वक विकसित हो रहे राजनीतिक आर्थिक और सास्कृतिक सबध भी इस रुचि का एक अन्य कारण है।

भारत म राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन और बालगगाधर तिलक के कार्यकलाप (१९५८) और भारत म १८५७ का जन विप्लव' (१९५७) लेख-सग्रहो का प्रकाशन सोवियत भारतविद्या की एक महत्व पूर्ण घटना का द्योतक था। भारत के महान नेता महात्मा गाधी और जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक दर्शन और विश्वदृष्टिकोण के अध्ययन की ओर बडा ध्यान दिया जाता है। इस प्रसग म सर्वाधिक उल्लेखनीय रचनाए ये है ए० न० कोमारोव और अ० द० लिटमान की मोहनदास करमचद गाधी का विश्वदष्टिकोण (महात्मा गाधी की जन्मशती के उपलक्ष्य म) जवाहरलाल नेहरू का विश्वदृष्टिकोण लेख-सग्रह

(१९७३) और ओ० व० मर्तीशिन कृत 'जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक विचार' (१९८१)।

सातवें दशक के मध्य से सोवियत भारतविदों का अधिकाधिक ध्यान देश के सामाजिक राजनीतिक विकास, दलगत-राजनीतिक संघर्ष और सामाजिक वर्गीय संबंधों की विशेषताएं जैसी पचीदा तथा विरोधाभास-पूर्ण प्रक्रियाओं पर केंद्रित रहा है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बारे में त० फ० देव्यात्किना और अ० इ० रेगीनिन के निबंध, जिनका प्रकाशन क्रमश: १९७० और १९७७ में हुआ था, ग्रामीण इलाकों में वर्ग विग्रहों तथा सामाजिक संबंधों, विपक्ष दलों, पश्चिमी बंगाल, उत्तर प्रदेश और नागालैंड में सामाजिक-राजनीतिक समस्याओं के बारे में शोध-कार्य पाठकों में बहुत लोकप्रिय हुए। विश्व मंच पर भारत की बढ़ी हुई भूमिका, गुटनिरपेक्षता की अवधारणा के गठन तथा कार्यान्वयन पर उसका प्रभाव यू० प० नामस्को, ग० व० गोरोस्को और ग० ल० शाउम्यान जैसे विद्वानों के अन्वेषण के विषय बने।

भारत विषयक अध्ययनों में बड़ा स्थान सोवियत-भारतीय संबंधों को प्राप्त है। लेनिनग्रादवासी भारतविद ये० या० ल्युस्तेर्निक का शोध कार्य इस तात्कालिक विषय को अर्पित है।

भारत के दार्शनिक और धार्मिक मत तथा प्रणालियां, महान भारतीय चिंतकों की समृद्ध आत्मिक धरोहर सोवियत भारतविदों के लिए बहुत बड़ी आकर्षक शक्ति है। सोवियत विद्वान अपने सम्मुख जो लक्ष्य रखते हैं, वह भारतीय दर्शन का गहनतर विश्लेषण करना ही नहीं, बल्कि व्यापक सार्वजनिक सस्तरों को इस देश की समृद्ध आत्मिक संस्कृति से, विशेषकर नये और आधुनिक इतिहास की अपेक्षाकृत कम ज्ञात अवधि से परिचित कराना भी है। इस संदर्भ में जाने माने सोवियत भारतविद अ० द० लिट्मान, 'आधुनिक भारतीय दर्शन' तथा अनेक दूसरी कृतियों के रचयिता का एक वक्तव्य बहुत लाक्षणिक प्रतीत होता है। 'सोवियट लैंड' के संवाददाता के इस प्रश्न का कि उक्त रचना रचने का बीड़ा उठाने के लिए उन्हें किस चीज़ ने उत्प्रेरित किया था, उत्तर देते हुए उन्होंने कहा : 'भारतीय दर्शन का अध्ययन करने के लिए मुझे जिस चीज़ ने उत्प्रेरित किया, वह थी महान जर्मन दार्शनिक हेगेल कृत 'दर्शन इतिहास पर व्याख्यान'। यह जानकर मैं चकित-सा रह गया कि हेगेल ने दर्शन के विकास की विश्व

प्रक्रिया मे भारतीय दर्शन के लिए कोई स्थान नही दिया था। उनके विचार म भारतीयो का अपना कोई दर्शन था ही नही। जो उनका अपना था वह धर्मशास्त्र मात्र था। मुझे हेगेल के इस तर्क पर सन्देह हुआ और तब मैने वैज्ञानिक विश्लेषण के एक स्वावलबी विषय के रूप म भारतीय दर्शन का अध्ययन करने का निश्चय किया।"*

भारतीय सभ्यता के विकास और विश्व सस्कृति की धरोहर म उसके वृहत योगदान का सच्चा, वस्तुपरक चित्रण करने की अभिलाषा सोवियत भारतविद्या का एक लाक्षणिक पहलू है। भारत के अध्येताओ का इस देश मे लगाव उसकी जनता के प्रति आदर और स्नेह भी कम लाक्षणिक नही है। उपरोक्त बात मेधावी विद्वान, अकादमीशियन अ० प० बरान्निकोव पर भी पूणत लागू होती है, जिन्हे सोवियत सघ मे भारतीय भाषाए सीखने के कार्य को विकसित करने का श्रेय प्राप्त है। उनकी असख्य रचनाओ म सोवियत सघ म प्रथम हिंदी व्याकरण और तुलसी दास रचित 'रामायण' का रूपातर भी है। उनके प्रतिभा शाली शिष्यो ने हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओ के आगे अध्ययन मे बडा योग दिया है।

स्वतन्त्र भारत के सामाजिक आर्थिक विकास सबधी समस्याओ का अध्ययन सोवियत प्राच्यविद्या का एक स्थायी विषय बना हुआ है। इस अध्ययन का उद्देश्य एक ओर सोवियत लोगो को विकासमान जगत के एक वृहत्तम देश के आर्थिक तथा सामाजिक विकास की आधार भूत नियमसगतियो और विशिष्टताओ से परिचित कराना है और दूसरी ओर दोनो देशो की अर्थव्यवस्था म होनेवाले परिवर्तनो को ध्यान म रखते हुए परस्पर लाभदायक आर्थिक सहयोग के आगे विकास के विज्ञानसम्मत उपाय निर्दिष्ट करना है। सोवियत भारतविदो, अर्थ शास्त्रियो तथा समाजशास्त्रियो की भारत म गहरी रुचि का कारण यह भी है कि स्वाधीनता के वर्षो म इस देश ने आर्थिक प्रगति के मार्ग पर विपुल वर्ई मानी म सचमुच अनुपम अनुभव सचित कर लिया है जिसका अध्ययन ऐसी नियमसगतियो का पता लगाने मे सहायक होगा जो समग्र मुक्तिप्राप्त देशो पर भी लागू हो सकती है।

भारत विषयक अर्थशास्त्रियो के शोध-कार्यो म इस देश के पूजी

Soviet Land December 1983 N 23 p 42

वादी मजधा की उत्पत्ति गहर और देहात म पूजीवादी विकास की विशेषताओ पर बहुत ध्यान दिया जाता है। इस सिलसिले म निम्नाकित रचनाए उल्लेखनीय हैं अ० इ० लव्कोव्स्की की भारत म पूजीवाद क विकास की विशेषताए (१९६३) व० इ० पाव्लोव की भारतीय बुर्जुआ वर्ग का अभ्युदय (१९५८) म० म० मेमान की भारत की अर्थव्यवस्था म विदेशी इजारेदार पूजी (१९५६) अ० इ० चिचेराव की भारत औपनिवेशिक कब्जे स पूर्व भारत का आर्थिक विकास (१९६५), ग० ग० कोतोव्स्की की भारत मे कृषि सुधार (१९५६) और व० ग० रस्त्यान्निकोव की 'बहुपद्धति वाले समाज म कृषि का विकासक्रम (१९७३)।

पूजीवादी और समाजवादी, दोनो प्रकार क देशो क साथ भारत के आर्थिक सबधो तथा भारत सरकार की आर्थिक नीति का भी अध्ययन किया जाता है। इस विषय को निम्नाकित कृतिया समर्पित हैं व० इ० पाव्लोव की साम्राज्यवाद और भारत की आर्थिक स्वाधीनता (१९६२) ग० क० शिरोकोव की भारत का औद्योगीकरण (१९७१) ल० इ० रइस्नर और ग० क० शिरोकोव की भारत मे नियोजन-व्यवस्था (१९६६) और म० न० स्लाडकाव की भारत और समाजवादी देश' (१९८०)।

भारत क समक्ष प्रस्तुत अनेक दूसरी तात्कालिक समस्याए भी विवेचनाधीन हैं जैसी पिछडपन का अत सरकारी राजकीय क्षेत्र की कारगरता म वृद्धि और आर्थिक विकास की योजनाओ का वित्तीय प्रबध, आदि। निस्सदेह यह सूची अपूर्ण ही है, किंतु यह स्पष्ट दिखाती हैं कि सोवियत् भारतविद-अर्थशास्त्रियो की रुचिया की परिधि कितनी विस्तृत ह और भारत विषयक अध्ययन का स्तर कितना ऊचा है।

इन अध्ययनो म, उनके मुख्य परिणामो म वैज्ञानिक क्षेत्रो मे ही नहीं अपितु सोवियत सघ के व्यापक सार्वजनिक हलकों म भी दिलचस्पी ली जाती है। इस कारण सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी न १९८० मे 'भारत वार्षिकी प्रकाशित करन का निर्णय किया जिसम भारत के इतिहास अर्थशास्त्र समाजशास्त्र, राजनीति तथा सस्कृति क बारे मे सामग्री छपा करती है। वार्षिकी म भारतीय गण राज्य क जीवन क विभिन्न पक्षो इतिहास स्वतत्र विकास के मार्ग पर प्राप्त उपलब्धिया और सभावनाओ तथा सोवियत भारत सबधो

व वस्तुपरक एवं सारा विवरण। इस प्रकाशन को साधारण सोवियत पाठकों में लोकप्रिय बनाया है।

सोवियत विद्वान अध्यापकों व परिषदों, अपने अनुभव का भारतीय सहयोगियों के साथ व्यापक आदान-प्रदान कर रहे हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय, आर्थिक विकास संस्थान और भारतीय राष्ट्रीय साहित्य अकादमी के साथ उनके घनिष्ठ फलप्रद संपर्क कई वर्षों से नियमित होते आ रहे हैं। सोवियत वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थाओं का पूना में गोपालकृष्ण गोखले राजनीति और अर्थशास्त्र संस्थान, अहमदाबाद में सरदार पटेल संस्थान और भारत के अन्य अन्वेषण संगठनों के साथ सहयोग नित्य बढ़ रहा है। कई वर्ष पूर्व सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के ध्येय से स्थापित सोवियत भारत आयोग सोवियत और भारतीय विद्वानों के बीच परस्पर लाभदायी संपर्कों के दृढ़ीकरण तथा विस्तार में बहुत कारगर सहायता कर रहा है। भारत और सोवियत संघ में बारी-बारी से होनेवाली संगोष्ठियों और परिचर्चाओं के आयोजन में उसकी खास बड़ी भूमिका है।

१६७० में दो देशों के विद्वानों के सम्मिलित प्रयासों के फलस्वरूप सोवियत संघ और भारत जैसी मौलिक रचना प्रकाशित हुई। अगले वर्षों में सोवियत और भारतीय साहित्य के अनेक खंड प्रकाशित करने की योजना है।

राजनयिक संबंधों की स्थापना के बाद दो देशों के बीच सांस्कृतिक वैज्ञानिक और तकनीकी संपर्कों के द्रुत विकास ने एक तदनुरूप समझौते को आवश्यक बना दिया था। इसलिए १२ फरवरी १६६० को सांस्कृतिक वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के बारे में ऐसे समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। उसके आधार पर संस्कृति, विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में आदान-प्रदान के द्विवर्षीय कार्यक्रम निरूपित होते हैं। इनमें कलाकारों और सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं की एक दूसरे के देश की यात्राएं, प्रदर्शनियां संयुक्त वैज्ञानिक शोध-कार्य, स्नातकों और प्रशिक्षणार्थियों का विनिमय सिनेकला रेडियो टेलीविजन और प्रकाशन-कार्य में सहयोग आदि की व्यवस्था है। हर दो वर्ष में आयोजित होनेवाले दिल्ली और मास्को अंतराष्ट्रीय पुस्तक मेला मे सोवियत और भारतीय प्रकाशकों की सहभागिता परंपरा सी बन गयी है।

स्वतंत्र भारत की ३०वीं जयंती के उपलक्ष्य मे १६७७ में सोवियत

संघ में आयोजित भारतीय संस्कृति और कला उत्सव तथा महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की ६०वीं जयंती के उपलक्ष्य में भारत में आयोजित सोवियत संस्कृति और कला उत्सव परस्पर सांस्कृतिक संबंधों के विकास में भव्य मील-पत्थर था।

यह सब इस बात का ज्वलंत प्रमाण है कि संस्कृति, विज्ञान तथा अन्य क्षेत्रों में संपर्क सोवियत-भारत सहयोग का एक प्रमुख तत्व है। अतएव यह स्वाभाविक ही है कि प्रधानमंत्री राजीव गांधी की मई १९८५ में सोवियत संघ की यात्रा के परिणामों के बारे में स्वीकृत संयुक्त वक्तव्य में दोनों पक्षों ने दृढ़ विश्वास प्रकट किया कि आगे चलकर वे संस्कृति, विज्ञान, स्वास्थ्य-रक्षा, शिक्षा, जन-सूचना, पर्यटन और खेलकूद के क्षेत्र में सहयोग को विस्तृत तथा सुदृढ़ करते रहेंगे।

दो देशों के जनगण में मैत्री और परस्पर समझ बढ़ाने में कई सार्वजनिक संगठन बहुत सक्रिय हैं। इनमें प्रमुख हैं सोवियत-भारत मैत्री समाज (स्थापना वर्ष १९५८), भारत-सोवियत सांस्कृतिक समाज (इस्कस) (स्थापना वर्ष १९५२) तथा १९८१ में स्थापित सोवियत संघ के मित्र समाज। इन संगठनों का बहुविध कार्यकलाप एक तरफ उस सबकी संपुष्टि करता है और उन्हें मजबूत बनाता है जिसके लिए दोनों देशों के राजनेता प्रयत्नशील रहते हैं। वे एक उदात्त और महान ध्येय की पूर्ति करते हुए जनसमुदाय में मित्रता तथा सद्भावना, परस्पर विश्वास एवं समझ बढ़ाने और दृढ़ करने में सहायता देते हैं।

दोनों देशों के मैत्री माहों और मैत्री सप्ताहों के दौरान गणराज्य दिवस तथा स्वतंत्रता दिवस तथा शांति, मैत्री और सहयोग की संधि जैसी विलक्षण तिथियां का बड़े व्यापक पैमाने पर मनाया जाता है। मैत्री समाजों की परिधि में कलाकारों, महिला, युवक, मेहनतकश और ट्रेड-यूनियन शिष्टमंडलों का आदान-प्रदान होता है। जुड़वां नगर मास्को और दिल्ली, लेनिनग्राद और बंबई, वोल्गोग्राद और मद्रास, इवानोवो और अहमदाबाद, ताशकंद और पटियाला के बीच संपर्क बढ़ाने के लिए कदम उठाये जा रहे हैं।

भारत-सोवियत सांस्कृतिक समाज के संस्थापक डा० वालिग, डा० एस० किचलू और जनरल सोखे ने सोवियत-भारत मैत्री के विकास

के ध्येय की पूर्ति के लिए कठिन परिश्रम किया था और अपनी शक्ति लगायी थी। भारत-सोवियत मैत्री के अनन्य समर्थक के० पी० एस० मेनन कई वर्षों तक इस्कस के अध्यक्ष रहे थे। सोवियत संघ में इस्कस के नेताओं — कृष्ण अय्यर, डी० एन० देसाई, मित्र घोष, सुप्रसिद्ध सार्वजनिक नेता अरुणा आसफ अली — 'सोवियत संघ के मित्र समाज' के प्रथम अध्यक्ष प्रोफेसर तुरेन हसन और इस पद पर उनके उत्तराधिकारी वी० पी० पिमनोव — के नाम सुविदित हैं। उन्होंने भारतीय और सोवियत जनगणों की मित्रता में बहुत योग दिया है।

सोवियत-भारत मैत्री समाज का कार्यकलाप निरंतर विस्तृत होता जा रहा है। यह सोवियत संघ के आम संगठनों में से एक विशालतम संगठन है जिसकी पांतों में जाने माने सार्वजनिक तथा राजकीय कार्यकर्ता, विद्वान, लेखक, बुद्धिजीवी लोग, मजदूर व किसानों के बहुमूल्य सम्पर्क एकताबद्ध हैं। उसकी बीस से अधिक जनतंत्रीय, प्रादेशिक और नगर शाखाएं तथा लगभग २५० प्राथमिक संगठन सोवियत संघ और भारत के जनगण के बीच मैत्री, परस्पर समझ और चौमुखी सहयोग के आगे विकास एवं सुदृढ़ीकरण के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

१९८७ और १९८८ में भारत में सोवियत उत्सव और सोवियत संघ में भारतीय उत्सव दोनों देशों के सांस्कृतिक जीवन में अविस्मरणीय परिघटनाएं सिद्ध होंगे। भारत के सभी राज्यों और सोवियत संघ के सभी जनतंत्रों की राजधानियों के निवासी असंख्य प्रदर्शनियों, कंसर्टों और अन्य आयोजनों की बदौलत एक दूसरे की संस्कृति, कला, विज्ञान और तकनीक की उपलब्धियों से परिचित हो सकेंगे। मिखाईल गोर्बाचोव और राजीव गांधी इन उत्सवों के सम्मानित अध्यक्ष होंगे।

एक भारतीय कहावत है कि 'दिल को दिल से राह होती है'। हमारी मित्रता की राह करोड़ों सोवियत और भारतीय जनों के दिल से होकर गुजरती है। इसका अर्थ यह है कि इस मित्रता का भविष्य उज्ज्वल है।

* * *

सोवियत संघ और भारत के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के बाद के चालीस वर्षों में सोवियत भारत मैत्री और सहयोग का शानदार

भवन खडा किया जा चुका है। १९७१ में सपन्न शांति मैत्री और सहयोग की संधि के अटूट आधार पर अवस्थित यह भवन दोनों देशों के जनगण सर्वव्यापी शांति और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के ध्येय की विश्व सनीय सेवा कर रहा है। ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से चालीस वर्ष अपेक्षाकृत अल्पावधि ही है किंतु इस दौरान सोवियत भारत संबंध बढकर ऐसे पैमाने और स्तर पर पहुंचे हैं जिसका भिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं वाले दो राज्यों के बीच संबंधों के इतिहास में शायद ही कोई उदाहरण हो।

अपने भारतीय मित्रों के साथ सोवियत लोग आगे भी मैत्री के सूत्र अविचल रूप से ठोस बनाते रहने दोनों देशों की जनता की भलाई और संसार भर में शांति के सुदृढीकरण के हितार्थ विविध संपर्कों को विकसित तथा सबल बनाने के लिए कृतसंकल्प हैं।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन को इस पुस्तक के अनुवाद और डिजाइन के संबंध में आपकी राय जानकर और आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता होगी। अपने सुझाव हमें इस पते पर भेजें

प्रगति प्रकाशन
१७ जूबोव्स्की बुलवार
मास्को सोवियत संघ